हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी
रह्मतुल्लाहि अलैहि

बिखरे मोती

(चौथा हिस्सा)

लेखक

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

ख़ल्फ़ुर्रशीद

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी
रह्मतुल्लाहि अलैहि

बिखरे मोती-4

लेखक

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

प्रस्तुत कर्ता

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Bikhre Moti (Vol. 4)

Author:

Maulana Muhammad Yunus Sahab Palanpuri

Edition: **2014**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय-सूची

तहरीर

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ज़ैद मुजद्दिहम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ اَمَّا بَعْدُ:

नहमदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम। अम्मा बअद!

''बिखरे मोती' मेरी पसन्दीदा बातों का मज्मूआ है, इसके तीन हिस्से नज़रसानी के बाद प्रकाशित हो चुके हैं। चौथा हिस्सा नज़रसानी और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद प्रकाशित करने की इजाज़त हाजी नासिर ख़ान, फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली को दे रहा हूँ।

फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली से जो ऐडीशन प्रकाशित हो रहा है, उसमें इग़लात की तस्हीह का पूरा एहतिमाम किया गया है, और मुफ़ीद इज़ाफ़े भी किए गए हैं। इसलिए नाशिर कुतुबे-साबिक़ा को प्रकाशित करने की सई न फ़रमाएं, वस्सलाम।

अल्लाह की रिज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

दुनिया और आख़िरत के ख़ज़ानों की कुंजी

عَنْ أَبِى ذَرٍّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : إِنِّىْ لَأَعْلَمُ آيَةً لَوْ أَخَذَ النَّاسُ بِهَا لَكَفَتْهُمْ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِىُّ

(مشکوٰۃ شریف ص:۴۵۳)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : बेशक मैं एक आयत जानता हूँ, अगर लोग उस पर अमल करें तो यक़ीनन वह आयत उनको काफ़ी हो जाए (आयत का तर्जुमा यह है): "और जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है अल्लाह तआला उसके लिए (मज़र्रतों से) नजात की शक्ल निकाल देता है, और उनको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचाता है जहाँ उसका गुमान भी नहीं होता"—इस हदीस को अहमद, इब्ने माजा और दारमी ने नक़ल किया है।

हदीस पाक में ज़िक्र करदा आयते करीमा का मतलब यह है कि : अल्लाह से डरकर उसके अहकाम की बहरहाल तामील करो, चाहे कितनी ही मुश्किलात व शदाइद का सामना करना पड़े, हक़ तआला तमाम मुश्किलात से निकलने का रास्ता बना देगा और सख़्तियों में भी गुज़ारे का सामान कर देगा। क्योंकि अल्लाह का डर दारैन (दुनिया और आख़िरत) के ख़ज़ानों की कुंजी और तमाम कामयाबियों का ज़रीया है। इसी से मुश्किलें आसान होती हैं। बे-क़यासो-गुमान रोज़ी मिलती है, गुनाह माफ़ होते हैं, जन्नत हाथ आती है, अज्र बढ़ता है और एक अजीब क़ल्बी सुकून व इत्मीनान नसीब होता है जिसके बाद कोई सख़्ती, सख़्ती नहीं रहती और तमाम परेशानियाँ अंदर-ही अंदर-काफ़ूर हो जाती हैं। (फ़वाइदे उसमानी, सूरह तलाक़, आयत 2,3)

तक़रीज़

मुफ़स्सिरे कुरआन, मुहद्दिस कबीर, फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद अहमद साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम

(उस्ताद : हदीस दारुल उलूम देवबन्द और शारेह हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ، أَمَّا بَعْدُ :

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन, वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल मुर्सलीन, व अला आलिही व सहबिही अजमईन, अम्मा बअद :

"बिखरे मोती" में जनाब मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ने गुलहाए रंग-रंग चुनकर हसीन गुलदस्ता तैयार किया है। यह किताब मौलाना ज़ैद मुजद्दिहम का कश्कूल है, जिसमें आपने क़ीमती मोती इकट्ठा किए हैं। एक हसीन दस्तरख़्वान है जिस पर अनवाअ व अक़साम के लज़ीज़ खाने चुने गए हैं। इस किताब में जहाँ तफ़सीरी फ़वाइद व निकात हैं, हदीसी नसीहतें व इर्शादात भी हैं। दावती और तब्लीग़ी चाशनी लिए हुए सहाबा और बाद के अकाबिर के वाक़िआत भी हैं जिनसे दिल जल्द असरपज़ीर होता है। नीज़ ऐसी दुआएँ भी शामिले किताब की गई हैं जो गौना अमलियात का रंग लिए हुए हैं। इस तरह किताब बहुत दिलचस्प बन गई है।

नीज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी, उस्ताद हदीस व फ़िक़ह दारुल उलूम देवबन्द की नज़रसानी ने उसकी एतिबारियत में इज़ाफ़ा किया है, गोया किताब में चार चाँद लगाए हैं। इसलिए उम्मीद है के किताब लोगों के लिए बेहद मुफ़ीद साबित होगी। अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाए और मुसन्निफ़ के लिए ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनाए और उम्मत को उससे फ़ैज़याब फ़रमाए। वस्सलाम।

कुतबा

सय्यद अहमद अफ़ाउल्लाह अन्हु पालनपुरी

तआरुफ़ व तबसिरा

अज़ हज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दावत व तब्लीग़ के नामवर ख़तीब व वाइज़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (जिन्होंने अपनी पूरी उम्र दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी थी, जो हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के ख़ास तर्बियतयाफ़्ता थे, और हज़रत जी की वफ़ात के बाद तो बड़े इज्तिमाआत को उमूमन मौलाना ही ख़िताब फ़रमाते थे। मौलाना की तक़रीर बड़ी मुवस्सिर और आम फ़हम होती थी। दुआ भी तवील फ़रमाते थे। मौलाना यूनुस साहब इन्हीं) के फ़रजन्द अर्जमन्द हैं और मौलाना की वफ़ात के बाद अपने वक़्त का बड़ा हिस्सा मर्कज़ निज़ामुद्दीन में गुज़ारते हैं, मौलाना को मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि से बैअत व ख़िलाफ़त का शर्फ़ भी हासिल है, जिसकी वजह से हज़रत की तस्नीफ़ात का भी ज़ौक़ व शौक़ के साथ मुताला फ़रमाते हैं। बड़े इज्तिमाआत में शिर्कत का पूरा एहतिमाम रहता है। जिस वक़्त ये सतरें लिखीं जा रही हैं, दो अहम इज्तिमाआत में शिर्कत के बाद यानी 9 ज़िलहिज्जा को इश्क़ व सरमस्ती के आलम में अरफ़ात में होंगे। अल्लाह तआला हज्ज मबरूर नसीब फ़रमाए, यह एक दूर-इफ़्तादा की दुआ है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ۔

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अंतस्-समीउल अलीम०

मौलाना अपनी तक़ारीर में अहादीस शरीफ़ा और तक़ारीर और बुज़ुर्गों के तज़्किरों में मज़्कूर मुवस्सिर वाक़िआत व हिकायात और नसायेह व हुक्म को बयान करते, और सामईन के दिलों को गर्माते, और दीनी ग़ैरत व हमीयत को जगाते हैं। मौलाना अर्से से ऐसे मुवस्सिर वाक़िआत, तालीमात और बाज़ ज़रूरी मसाइल व फ़तावा की बयाज़ भी तैयार करते जाते हैं, जो वाक़ई बिखरे मोतियों का बड़ा दिलकश हार है, जो पढ़ने

वाले के दिल को खींचता है और रूह को बालीदगी अता करता है, ख़ुसूसन रमज़ानुल मुबारक में मौलाना मौसूफ़ का तरावीह के बाद बम्बई में दो जगह वअज़ और तफ़्सीर क़ुरआन पाक बयान करने का मामूल है, जिसका सिलसिला बारह बजे रात तक जारी रहता है और इख़्तिताम गुलूगीर आवाज़ में तवील दुआ पर होता है। लोगों ने दूर-दूर कनेक्शन ले रखे हैं जिससे घरों में मस्तूरात भी शौक़ के साथ मौलाना के मुवस्सिर वअज़ को सुनती हैं, उन तक़रीरों और बयान में मौलाना के उन्हीं बिखरे मोतियों को मौक़ा व मुनासिबत से ज़ीनते बयान व तक़रीर बनाते जाते हैं; जो अब किताबी शक्ल में आ गए हैं, उन बिखरे मोतियों का मुताला बड़ा मुफ़ीद और दिल को गर्माने वाला है, ज़बान व बयान असान व रवाँ है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इससे ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

(तामीरे हयात, 25 जनवरी, 2005, पृ० 26)

तक़रीज़

मौलाना मुफ़्ती अमीन साहब पालनपुरी

उस्ताद हदीस व फ़िक़ह दारुल उलूम देवबन्द

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهٗ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ، اَمَّا بَعْدُ :

अलहम्दुलिल्लाहि वहदहू, वस्सलातु वस्सलामु अला मन ला नबिय-य बअ़दहू, अम्मा बअ़द :

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी; हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स-सिर्रहू के बड़े साहबज़ादे हैं। मौसूफ़ ने सन् 1393 हि० मुताबिक़ सन् 1973 ई० में मज़ाहिर उलूम सहारनपुर से उलूमे मुतदावला से फ़राग़त हासिल की है। तालिबे इल्मी के ज़माने से आपका महबूब मश्ग़ला अस्लाफ़ व अकाबिर की किताबों का मुताला और पसन्दीदा बातों को कापी में महफ़ूज़ करना है।

उलूम मुतदावला से फ़राग़त के बाद एक तवील अर्से तक वालिद मुहतरम के ज़ेरे साया दावत व तब्लीग़ के काम में शबो-रोज़ लगे रहे और वालिद मुहतरम के औसाफ़ व कमालात को जज़्ब करते रहे। जिन हज़रात ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स सिर्रहू के बयानात सुने हैं और उसको क़रीब से देखा है, वह इस बात की खुले दिल से गवाही देंगे कि मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब अख़्लाक़ व आदात और औसाफ़ व कमालात में उमरसानी हैं।

दावत व तब्लीग़ के काम से मौलाना जो दिलचस्पी रखते हैं वह 'अज़हर मिनश्शम्सि' है, और रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद मुम्बई में मौसूफ़ के जो बयानात होते हैं उनसे आपकी उलूमे क़ुरआन के साथ मुनासिबत अयां है। हज़ारों आदमी अपने घरों में कनेक्शन सिर्फ़ मौलाना के बयानात सुनने के लिए रखते हैं। इस तरह मर्दों के साथ-साथ मस्तूरात भी आपके बयानों से ख़ूब इस्तिफ़ादा करती हैं।

दूसरी तरफ़ मौलाना उन पसन्दीदा बातों को जो आप तालिबे इल्मी

के ज़माने से अब तक मुंतख़ब व महफ़ूज़ फ़रमा रहे हैं "बिखरे मोती" के नाम से शाये फ़रमा कर पूरी उम्मते मुस्लिमा को फ़ैज़ पहुंचा रहे हैं। बिला शुब्हा यह किताब इस्मे-बामुसम्मा है, जो ख़ुशक़िस्मत उसको देखता है, ख़त्म किए बग़ैर दम नहीं लेता।

इस किताब के कई हिस्से "फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली" से शाये (प्रकाशित) हो चुके हैं, अब चौथा हिस्सा पहली बार हिन्दी में "फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली" से प्रकाशित हो रहा है, साबिक़ा हिस्सों की तरह इस हिस्से में भी मौलाना ने इबरतआमेज़ वाक़िआत, निहायत मुफ़ीद मज़ामीन और कारआमद बातें जमा कर दी हैं। अल्लाह तआला इस किताब को उम्मत के लिए रुश्दो-हिदायत का ज़रीया बनाए और मौसूफ़ को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए आमीन या रब्बुल आलमीन!

मुहम्मद अमीन पालनपुरी

ख़ादिम हदीस व फ़िक़ह

दारुल उलूम देवबन्द

अरज़े नाशिर

इस किताब (बिखरे मोती) के सभी तसहीह शुदा हिस्से उर्दू में फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के कई नाशिराने कुतुब ने पाकिस्तानी ऐडीशन को जूं का तूं प्रकाशित किया है। उन ऐडीशनों में बहुत ज़्यादा इग़लात हैं, नीज़ अक्सर अरबी इबारतों पर आराब भी नहीं हैं, और बाज़ जगह सिर्फ़ अरबी इबारत है, उसका तर्जुमा नहीं है। मगर किसी नाशिर ने उसकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

बिल आख़िर साहिबे किताब हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ने नाशिर से राब्ता किया और इग़लात की तस्हीह, अरबी इबारतों पर आराब लगाने और उनके तर्जुमे करने की फ़रमाइश की। इसी फ़रमाइश का नतीजा है कि बिखरे मोती (उर्दू) के सभी हिस्से और हिन्दी के तीन हिस्से शाया हो चुके हैं। चौथा हिस्सा आपके हाथ में है।

अलग़र्ज़ किताब को आसान और उमदा बनाने की पूरी कोशिश की गई है, यह महज़ अल्लाह जल्ले शानुहू का फ़ज़्ल व करम और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की दुआओं की बरकत है। अल्लाह तआला इस किताब को मौलाना और उनके अहले ख़ाना के लिए सदक़-ए-जारियह और क़ारईन के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रिआ बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहम्मद नासिर ख़ान
फ़रीद बुक डिपो,
नई दिल्ली-2

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आपके घर में रहमतों और बरकतों की बारिश

अगर आप रहमतों और बरकतों को हासिल करना चाहते हैं तो इन बातों का एहतिमाम करें :

1. घर के तमाम मर्द व ख़वातीन अपने जिस्म व लिबास की पाकी और तहारत का ख़ूब एहतिमाम रखें। इस एहतिमाम के साथ रात को सोते वक़्त वुज़ू का मामूल भी बना लिया जाए तो बिलशुबहा नफ़ा-ही-नफ़ा होगा।
2. अपने घर को पाक-साफ़ रखने का एहतिमाम करें, नासमझ और छोटे बच्चों को मुक़र्रर जगह पर हवाइज़ ज़रूरिया से फ़ारिग होने का आदी बनाया जाए। बच्चा अगर मुक़र्रर जगह पर गिलाज़त कर दे तो उस जगह को फ़ौरन अच्छी तरह पाक-साफ़ करना चाहिए। बच्चों के जिस्म और लिबास वग़ैरह की सफ़ाई का ख़ास ख़्याल रखा जाए।
3. घरों की सजावट में जानदारों की तसावीर से सख़्त परहेज़ किया जाए। गाने बजाने और मौसीक़ी वग़ैरह और तफ़रीह के लिए नाजाइज़ आलात से अपने घर को पाक रखें कि इन तमाम बातों से तमाम अहले ख़ाना रहमते ख़ुदावंदी से महरूम हो जाते हैं।
4. घर में क़ुरआन करीम की तिलावत, ज़िक्र व अज़्कार और दीन की बातों का बतौरे ख़ास एहतिमाम किया जाए। क़ुरआन करीम की तिलावत से घर से बलाएँ, नहूसतें, बीमारी और परेशानियाँ दूर भागती हैं और घर में अल्लाह तआला की रहमतें नाज़िल होती हैं और सुकून व इत्मीनान की दौलत नसीब होती है। जिस घर में क़ुरआन करीम की तिलावत होती है, अज़ रूए हदीस ऐसा घर आसमानों में ख़ुसूसी तवज्जोहात का मर्कज़ बन जाता है और फ़रिश्तों को ऐसे घर आसमानों में इस तरह नुमायाँ और चमकते हुए नज़र आते हैं जिस तरह ज़मीन में इंसानों को तारे जगमगाते हुए नज़र आते हैं।

यह किस क़दर ख़ुशबख़्ती और सआदत की बात है और कौन साहिबे ईमान ऐसी ख़ुशबख़्ती और सआदत से महरूम होना चाहेगा? लिहाज़ा हर घर का सरबराह नमाज़े फ़ज्र के बाद ख़ुद भी और घर के दीगर अफ़राद को भी तिलावत का पाबन्द बनाने की कोशिश करे और तमाम अहले ख़ाना मिलकर घर में पाकी और सफ़ाई का ख़ास ख़्याल रखें। इंशाअल्लाह आपके घर में रहमतों और बरकतों की बारिश होगी।

करीम व शरीफ़ शौहर बीवियों के नाज़ व नख़रे बरदाश्त करते हैं

बाज़ लोग अपनी बीवियों को सताते हैं। बीवी से ज़रा-सी गुस्ताख़ी हो जाए तो बीवी को डंडा लेकर पिटाई करते हैं; कहते हैं, "तुमको नाज़ करने का क्या हक़ है?"

लेकिन सुनिए! सरवरे आलम सल्ल० से ज़्यादा कौन ग़ैरतमंद हो सकता है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, "ऐ आइशा! जब तू रूठ जाती है, नाज़ करती है तो मुझे पता चल जाता है।" अर्ज़ किया, "ऐ मेरे प्यारे नबी! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान! आप सल्ल० को कैसे मालूम होता है कि मैं आजकल रूठी हुई हूँ?" फ़रमाया कि जब तू मुझसे रूठ जाती है तो क़सम इस तरह खाती है **व रब्बि इबराहीम**! (इबराहीम के रब की क़सम!) और जब ख़ुश रहती है तो कहती है **व रब्बि मुहम्मदिन**! (मुहम्मद सल्ल० के रब के क़सम!) और आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ दुनियावालो! सुन लो जो लोग अपनी बीवियों को पीट-पीटकर सीधा कर रहे हैं, वे कमीने लोग हैं।

तफ़्सीर रूहुल मआनी (जिल्द 5, पे० 14) में अल्लामा आलूसी रह० ने इस रिवायत को नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्ल० इरशाद फ़रमाते हैं कि करीम व शरीफ़ और लाइक़ शौहरों पर ये औरतें ग़ालिब आ जाती हैं क्योंकि जानती हैं कि यह नाज़ उठा लेगा। और कमीने शौहर डंडे के ज़ोर से गाली-गलोज से उन पर ग़ालिब आ जाते हैं। सरवरे आलम सल्ल० फ़रमाते हैं कि मैं पसन्द करता हूँ कि मैं करीम रहूँ चाहे मग़लूब रहूँ, और मैं यह पसन्द नहीं करता कि कमीना और बदअख़्लाक़ बनकर उन पर ग़ालिब हो जाऊँ।

हकीमुल उम्मत रह० फ़रमाते हैं कि एक औरत से अपने शौहर के खाने में नमक तेज़ हो गया, वह ग़रीब आदमी था, छः महीने के बाद मुर्गी लाया था। छः महीने तक दाल खा-खाकर उसकी ज़बान मुर्गी खाने के लिए बेचैन थी। मगर नमक तेज़ कर दिया। लेकिन उसने बीवी को कुछ नहीं कहा। चुपचाप खा लिया और कहा कि या अल्लाह! अगर मेरी बेटी से नमक तेज़ हो जाता तो मैं यह पसन्द करता कि मेरा दामाद उसको माफ़ कर दे, मेरे कलेजे के टुकड़े को कुछ न कहे तो यह मेरी बीवी भी किसी के कलेजे का टुकड़ा है। किसी माँ-बाप की बेटी है और ऐ ख़ुदा! तेरी बन्दी, है बस मैं तेरी रज़ा के लिए इसको माफ़ करता हूँ।

हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह० अपने वअ्ज़ में बयान फ़रमाते हैं कि जब उसका इंतिक़ाल हो गया तो उसे एक बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में देखा। पूछा, "भाई तेरा क्या मामला है?" उसने कहा, अल्लाह ने मुझसे फ़रमाया कि तूने यह गुनाह किया, यह गुनाह किया, मैं समझा कि अब दोज़ख़ में जाऊँगा। आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जाओ तुमको माफ़ करता हूँ; इस नेक अमल पर कि तुमने मेरी बन्दी की एक ख़ता माफ़ की थी और उसको डंडा नहीं मारा। उसको गाली नहीं दी, जिस दिन मेरी बन्दी से नमक तेज़ हो गया था तो तुमने उसकी ख़ता को माफ़ कर दिया था, उसके बदले में आज मैं तुमको माफ़ करता हूँ।

जितना ज़्यादा तहज्जुद पढ़नेवाले और ज़्यादा ज़िक्र करनेवाले हैं मेरा तजुर्बा है कि अगर अहलुल्लाह के सोहबतयाफ़्ता न हों तो अकसर उनमें गुस्सा पैदा हो जाता है। वह कहते हैं कि मुझ पर ज़िक्र का जलाल चढ़ा हुआ है। अरे मेरे भाई तुझ पर तो शैतान का वबाल चढ़ा हुआ है। ज़िक्र से तो ख़ुदा की मख़्लूक़ पर और मेहरबान होना चाहिए, मगर तू इतना गर्म हो गया कि अपने को हर वक़्त फ़रिश्ता समझता है। अपनी बेटी को कोई सताए तो फ़ौरन आमिलों के पास जाएंगे कि हुज़ूर तावीज़ दे दें कि मेरी बेटी को मेरा दामाद सता रहा है, और ख़ुद अपनी बीवियों को डंडे लगाते हैं और गालियाँ सुनाते हैं। मख़्लूक़े ख़ुदा को जो सताएगा, हरगिज़ अल्लाह का वली नहीं हो सकता। एक लाख हज व उमरा कर ले, एक लाख ज़िक्र कर ले, लेकिन जो अल्लाह की मख़्लूक़ को सताएगा, हरगिज़ वह मोमिने कामिल नहीं हो सकता।

أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا (مشکوۃ، صفحہ ۲۸۲)

''कामिलतरीन मोमिन वह है जो बेहतरीन अख़्लाक़वाला है।''

(मिश्कात, पे० 282)

हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहब रह० ने मुझे ख़ुद यह वाक़िआ सुनाया कि बड़ी पीरानी साहिबा ने हज़रत से कहा कि मौलाना ज़रा रिश्तेदारी में जा रही हूँ। ये मुर्ग़ियाँ जो हमने पाली हैं, आठ बजे दिन में इनको दड़बे से निकाल देना और दाना-पानी दे देना। अब इतना बड़ा मुजद्दिदे ज़माना हकीमुल उम्मत जो रोज़ाना साठ ख़त्तों का जवाब लिखे और पंद्रह सौ किताबें लिखनेवाला उसको भला मुर्ग़ियां कहाँ याद रहें? हज़रत भूल गए, मुर्ग़ियाँ दड़बे में बंद रहीं। अब ख़तों का जवाब नदारद, तफ़्सीर बयानुल क़ुरआन के लिए क़लम उठाया, सारे उलूम ख़त्म। कुछ समझ में नहीं आ रहा है। दिल में अंधेरा आ गया, सारे उलूम व मआरिफ़ ग़ायब हो गए। हज़रत रह० सज्दे में गिर कर रोने लगे कि या अल्लाह मुझसे क्या ख़ता हो गई? क्या गुनाह है कि जिससे आज तेरी निगाहे करम मेरे दिल पर से हट गई और मेरे दिल से सारे उलूम ग़ायब हो गए? मैं तो आज दिल को बिल्कुल ख़ाली पा रहा हूँ। आसमान से ज़ोर से आवाज़ आई कि अशरफ़ अली! मेरी मख़्लूक़, मुर्ग़ियाँ दड़बे में बंद हैं। आज वे अंदर-अंदर कुढ़ रही हैं। मेरी मख़्लूक़ को सताकर उलूम व मआरिफ़ का इंतिज़ार करते हो! जाओ जल्दी मुर्ग़ियों को खोलो। हज़रत रह० काँप गए, भागे हुए गए, मुर्ग़ियों को खोला और दाना-पानी रख दिया। जब वापस आए तो दिल में फ़ौरन सारे उलूम का दरिया बहने लगा। एक जानवर पर ज़ुल्म का तो यह अज़ाब है, और हमारा क्या हाल है? सगा भाई सगे भाई को सता रहा है, शौहर बीवी को सता रहा है, माँ बाप से लड़ाई, मुहल्ले में पड़ोसियों को सताया जा रहा है; ज़रा-ज़रा-सी बात पर डंडा चल रहा है। क्या हाल है इस वक़्त?

उम्मत के लिए माफ़ी की दुआ कीजिए सारे मुसलमानों के बराबर नेकियाँ मिलेंगी

इमाम तबरानी रह० ने अपनी मुअ्जमे कबीर में एक हदीस शरीफ़ नक़ल फ़रमाई है जिसमें जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना कम-से-कम एक मर्तबा 'अल्लाहुम्मग़फ़िरली व लिल मुअ्मिनी-न वल मुअ्मिनात' पढ़ेगा उसको दुनिया के तमाम मुसलमानों में

से हर एक की जानिब से एक-एक हसना और नेकी मिलेगी।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि "जो शख़्स रोज़ाना (यह दुआ) "ऐ अल्लाह मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और तमाम मोमिनीन और मोमिनात की मग़फ़िरत फ़रमा" कहा करेगा उसको हर मोमिन की तरफ़ से एक-एक हसना और नेकी का तोहफ़ा मिलेगा। (तबरानी, 23/370, हदीस 877)

शैतान के पंद्रह दुश्मन

हज़रत फ़क़ीह अबुल-लैस समरक़ंदी रह० ने अपनी किताब 'तंबीहुल ग़ाफ़िलीन' में वहब बिन मुनब्बा रज़ि० से एक रिवायत नक़ल फ़रमाई है। उसमें है कि हुज़ूर सल्ल० ने शैतान से पूछा कि ऐ मलऊन! तेरे कितने दुश्मन हैं? तो शैतान ने जवाब दिया कि पंद्रह क़िस्म के लोग मेरे दुश्मन हैं:

1. सबसे पहले दुश्मन आप (सल्ल०) हैं।
2. आदिल बादशाह और आदिल हुक्काम।
3. मुतवाज़े मालदार।
4. सच्चा ताजिर।
5. ख़ुशूअ करनेवाला आलिम।
6. ख़ैरख़्वाही करनेवाला मोमिन।
7. रहम दिल मोमिन।
8. तौबा करके साबित क़दम रहनेवाला।
9. हराम से परहेज़ करनेवाला।
10. हमेशा पाक रहनेवाला मोमिन।
11. कसरत से सदक़ा करनेवाला मोमिन।
12. लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करनेवाला मोमिन।
13. लोगों को नफ़ा पहुँचानेवाला मोमिन।
14. क़ुरआन करीम की हमेशा तिलावत करनेवाला आलिम व हाफ़िज़।
15. रात में ऐसे वक़्त तहज्जुद और नफ़्ल पढ़नेवाला, जिस वक़्त सब लोग सो चुके हों। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन, 479)

जो शख़्स अल्लाह तआला का हो जाता है अल्लाह तआला उसका हो जाता है

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० ने इंतिक़ाल के वक़्त अपनी अहलिया से वसीयत की कि जब मुझे दफ़न कर चुको तो मेरी दोनों बेटियों को फ़लाँ पहाड़ पर ले जाना और आसमान की तरफ़ मुँह करके कहना कि ऐ ख़ुदावंद! फ़ुज़ैल ने मुझे वसीयत की है कि जब तक मैं ज़िंदा रहा अपनी लड़कियों को अपनी ताक़त के मुताबिक़ अपने पास रखा, अब जब तूने क़ब्र के क़ैदख़ाने में मुझे क़ैद कर दिया है तो मैं अपनी लड़कियों को तेरे हवाले करता हूँ और तुझे वापस देता हूँ। बाद तदफ़ीन आप रह० की अहलिया ने वसीयत के मुताबिक़ अमल किया और मुनाजात करके अपनी बेबसी पर बहुत रोई। उस असना में अमीरे यमन अपने दोनों बेटों के साथ उस जगह पहुंच गया और उस नालह व ज़ारी को सुना और हाल पूछा। आप रह० की अहलिया ने तमाम हालत बयान की। अमीरे यमन ने सब बातें सुनकर कहा कि मैं इन दोनों लड़कियों को अपने दोनों बेटों से ब्याह देता हूँ। चुनांचे उनको अपने हमराह यमन ले गया और बुज़ुर्गों को जमा करके दस-दस हज़ार महर पर उनका निकाह कर दिया। जो शख़्स अल्लाह तआला का हो जाता है, हक़ तआला उसका हो जाता है। (मख़्ज़न अख़्लाक़, पे० 253)

मुतकब्बिरीन का अंजाम

तकब्बुर एक ऐसे मुहलिक मर्ज़ का नाम है जो चश्म-ज़दन में आमाल को राएगाँ कर देता है। तकब्बुर से इंसान तबाही के दहाने पर पहुँच जाता है। तकब्बुर से दुनिया में बर्बादी होती है; आख़िरत में भी नाकामी मुक़द्दर बन जाती है। तकब्बुर से इंसानी ज़िंदगी में नफ़रत और बेज़ारी पैदा होती है, और अल्लाह तआला भी सख़्त नाराज़ होता है।

मुतकब्बिर उस इंसान को कहते हैं जो अपने गुमान में अपने आपको सबसे बड़ा समझे, चाहे वह अपने आपको इल्म व अमल के ऐतिबार से बड़ा जाने या जमाल व नसब या क़ुव्वत और माल की कसरत की वजह से। तकब्बुर एक मुहलिक मर्ज़ है, आलिम बहुत जल्द इल्म की जिहत से मग़रूर बनता है और अपने जी में कमाले इल्म से वाक़िफ़ होकर अपने

आपको बड़ा और लोगों को हक़ीर व जाहिल जानता है और इस बात का मुतवक़्क़े होता है कि उसकी ताज़ीम की जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया कि "जिस शख़्स के दिल में राई के बराबर भी तकब्बुर होगा वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।"

घमंड और तकब्बुर हलाकत व तबाही को दावत देता है। तवाज़ो व इंकिसारी मोमिन की शान और नजात का सबब है। पस जो मुतकब्बिर व मग़रूर होगा बर्बादी व हलाकत उसका मुक़द्दर होगी और जो मुतवाज़े और मुंकसिरुल मिज़ाज होगा दुनिया में भी कामरानियों की मनाज़िल से हमकिनार होगा और आख़िरत में भी कामयाबी उसके क़दम चूमेगी। अल्लाह तआला से दुआ है कि हर हाल में हमें मुतवाज़े बनाए, तकब्बुर और घमंड से दूर रखे। आमीन!

समुन्दर में गुमशुदा सूई दुआ की बरकत से मिल गई

क़बीला बनू सअद के ग़ुलाम हज़रत उरवा आमा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबू रीहाना रज़ि० एक मर्तबा समुन्दर का सफ़र कर रहे थे। वह अपनी कुछ कापियाँ सी रहे थे। अचानक उनकी सूई समुन्द्र में गिर गई और उन्होंने उसी वक़्त यूँ दुआ माँगी, "ऐ मेरे रब! मैं तुझे क़सम देता हूँ कि तू मेरी सूई ज़रूर वापस कर दे।" चुनांचे उसी वक़्त वह सूई (सतह समुन्द्र पर) ज़ाहिर हुई और हज़रत अबू रीहाना रज़ि० ने वह सूई पकड़ ली। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पे० 678)

ख़वातीन अपने घर की ज़ीनत बनकर ज़िंदगी गुज़ारें

मुकर्रम व मोहतरम मौलाना साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

सवाल : उम्मीद है कि मिज़ाजे गिरामी बख़ैर होंगे। दिल में यह शौक़ हो रहा है कि मैं भी अपने शौहर की तरह तिजारत करूँ या किसी जगह मुलाज़िमत करूँ, ताकि घरेलू ज़रूरतें पूरी हो सकें और शौहर पर भी ग़ालिब रहूँ। शौहर की कमाई पर ज़िंदगी गुज़ारना यह मेरी समझ में नहीं आता जबकि मैं पढ़ी-लिखी हूँ। ख़ुलासा यह है कि औरतों को भी

कारोबार करने की इजाज़त होनी चाहिए ताकि मर्द के शाना-ब-शाना चल सकें। बेटियाँ भी जवान हैं, रिश्ते नहीं आ रहे हैं। उम्मीद है ऐसा जवाब तहरीर फ़रमाएंगे जिससे मैं और मेरे शौहर मुत्मइन हो जाएँ। मेरे ज़ेहन पर मग़रिबियत छाई हुई है। दुआओं की दरख़्वास्त। वस्सलाम—एक दीनी बहन।

जवाब : औरत माँ भी है, बेटी भी और बीवी भी। माँ की हैसियत से वह एक अज़ीम और बेइंतिहा शफ़ीक़ हस्ती है। बेटी के रूप में इताअत गुज़ार और फ़रमाँबरदार, जबकि बीवी के रूप में एक वफ़ादार रफ़ीक़े हयात है। मग़रिब फ़ख़रिया कह सकता है कि मग़रिबी सक़ाफ़त व तहज़ीब ने बेहतरीन ख़वातीन साइंसदां, पुलिस, वकील और हिसाबदाँ पैदा कीं। लेकिन इससे इंकार नहीं कि मग़रिब सक़ाफ़त व तहज़ीब ने शफ़ीक़ माएँ, इताअत गुज़ार बेटियाँ और वफ़ादार बीवियाँ कम ही पैदा की हैं।

यह तुर्रए इम्तियाज़ तो सिर्फ़ इस्लाम को ही हासिल है। इस्लाम मर्द व औरत को मुसावी हुक़ूक़ देता है, लेकिन जहाँ तक फ़राइज़ का ताल्लुक़ है, वह हुदूदेकार मुक़र्रर करता है। चूंकि मर्द की जिस्मानी साख़्त मज़बूत होती है इसलिए उसे बाहर के कामों की ज़िम्मेदारी दी गई है। मेहनत व मशक़्क़त, दौड़-धूप, बीवी-बच्चों के इख़राजात की ज़िम्मेदारी मर्द पर फ़र्ज़ की गई है। औरत को नाज़ुक अंदाम, निहायत शफ़ीक़, साहिबा और ईसार व क़ुरबानी का मुजस्समा बनाकर घरेलू काम-काज, बच्चों की निगहदाश्त व तर्बियत, शौहर की ख़िदमत और इताअत की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। हुज़ूर सल्ल० का इरशाद है कि औरत घर की मलिका है। नीज़ आँहज़रत सल्ल० ने नेक पाकीज़ा बीवी को मर्द का बेशबहा सरमाया क़रार दिया और माँ के पैरों तले जन्नत की बशारत दी।

हर दौर और दुनिया के हर मज़हब में जब तक औरत घर की चार दीवारी में रहकर अपने फ़राइज़ बख़ूबी अंजाम देती रही मुआशिरे में सुकून ही सुकून रहा। मर्द घर की सारी ज़िम्मेदारियों को औरत के सुपुर्द करके इत्मीनान के साथ बाहर की दुनिया में कामयाबी और कामरानी से हमकिनार होता रहा और तरक़्क़ी उसके क़दम चूमती रही। माँ की शफ़ीक़ गोद में परवान चढ़कर बच्चा अपने वतन का जाँबाज़ सिपाही, अपनी क़ौम का ख़ादिम और अपने दीन व धर्म का अलमबरदार और मुजाहिद बना रहा।

सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजूमईन, ताबईन, बुज़ुर्गाने दीन, मुजाहिदीने इस्लाम वग़ैरह की माओं ने घर की चार दीवारी में रहकर ही अपने बच्चों की तालीम व तर्बियत का बेहतरीन इंतिज़ाम किया। मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० की अम्मीजान की नसीहत ता क़यामत हर दौर में गूँजती रहेगी : "बोलीं अम्मा मुहम्मद अली की, जान बेटा ख़िलाफ़त पर दे दो।"

चौदह सौ साल पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने सफ़्फ़ाक हज्जाज बिन यूसुफ़ के ख़िलाफ़ तलवार उठाई और अपनी बूढ़ी नाबीना माँ हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र से रुख़्सत लेने लगे तो सौ (100) साला नाबीना माँ ने बदन को छुआ और पचहत्तर (75) साला अब्दुल्लाह रज़ि० के बदन पर ज़िरह-बकतर को महसूस किया तो फ़रमाया "अल्लाह की राह में जिहाद पर जा रहे हो तो तुम्हारे बदन पर ज़िरह-बकतर ज़ेब नहीं देता, इसको उतार दो और जाओ अल्लाह की राह में शहीद हो जाओ।" यह थी कल की माएँ, कल की अज़ीम फ़िरदौसी औरतें!

आज की औरत क्या गुल खिला रही है? मग़रिबी तहज़ीब की अंधी तक़लीद में अपने आला व अरफ़ा फ़राइज़ को भूल चुकी हैं। मर्दों की बराबरी के चक्कर में अपनी बर्बादी की तरफ़ रवाँ-दवाँ है, जबकि उस पर आयद की गई ज़िम्मेदारियाँ ही काफ़ी थीं। लेकिन नादान औरत ने बाहर की दुनिया में क़दम रखकर अपने बोझ को बढ़ा लिया है। मर्द के शाना-ब-शाना चलने के चक्कर में मर्दों के हवस भरी नज़रों का निशाना बनकर अपने आपको ज़लील कर रही हैं। घर में पूरी इज़्ज़त व वक़ार और सुकून के साथ रानी बनकर बैठने के बजाए सोसाइटी की तितली बन गई हैं। मर्द बहुत ख़ुश हैं कि औरत ने मर्द की ज़िम्मेदारियों का आधा बोझ अपने सर ले लिया है, हालांकि औरत के बुनियादी फ़राइज़ में वे हिस्सेदार नहीं बनते।

कमाऊ औरत की हालत दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है, लेकिन अफ़सोस उसे होश नहीं। उसकी कमाई से मेयारे ज़िंदगी (Standard of living) ज़रूर बढ़ गया है। घर ऐश व इशरत के सामान से भर रहा है लेकिन फ़ैमिली लाइफ़ और इज़्दिवाजी ज़िंदगी मुंतशिर हो रही है। बच्चे नौकरों और पालना-घरों (बेबी सेंटर्स) के हवाले हो रहे हैं और माओं की मुहब्बत, लाड-प्यार और लोरियों से महरूम हो रहे हैं, महरूमी और

पज़-मुर्दगी का शिकार हो रहे हैं। माओं की ग़ैर हाज़िरी में दरसी किताबों की पढ़ाई कम और टी.वी. ज़्यादा देखते हैं।

एक थकी हुई कमाऊ बीवी शौहर के जाइज़ हुक़ूक़ भी पूरे नहीं कर पाती। इसलिए शौहर शाकी और अज़दिवाजी ज़िंदगी से ग़ैर मुत्मइन रहता है। अपनी परेशानी और झुंझलाहट को सिगरेट और शराब में डुबो देता है। बीवी से जिन्सी आसूदगी न मिलने के नतीजे में ज़ेहनी अय्याशी और बदकारी में मुब्तला हो जाता है। ज़िंदगी में तल्ख़ियाँ बढ़ने लगती हैं। मियाँ-बीवी एक-दूसरे पर इल्ज़ाम तराशने लगते हैं। चूंकि औरत कमाऊ होती है इसलिए वह शौहर के सामने झुकने को तैयार नहीं होती। अना-परस्ती के चक्कर में या तो तलाक़ की नौबत आ जाती है या मर्द ज़िनाकारी या दूसरी बीवी के चक्कर में पड़ जाता है। इन चक्करों में मासूब बच्चों का मुस्तक़बिल तारीक हो जाता है–कमाऊ बीवी का दूसरा पहलू यह भी है कि बेचारा शौहर कमाऊ बीवी के आगे-पीछे उसे मनाने और उसके मूड को ठीक करने के लिए घूमता रहता है। इसके विपरीत आफ़िस में मैडम अपने आफ़िसर के आगे-पीछे यस सर! यस सर! कहती हुई घूमती रहती है। कॉलेज की तालिबात में आवारगी, बेहयाई, उरयानियत आम हो रही है। बॉय फ्रैन्ड्स रखना बाइसे फ़ख़्र समझा जाता है। कॉल सेंटर्स में तबाही ही तबाही है, हव्वा क़ी बेटियों की इज़्ज़त व इफ़्फ़त तार-तार हो रही है।

आजकल शरीफ़ घराने के लड़कों को रिश्ता मिलने में दुश्वारी पेश आ रही है। उन ऐशपरस्त आवारा मिज़ाज पढ़ी-लिखी लड़कियों का चलन देखकर अकसर लड़के कम पढ़ी-लिखी, कम-उम्र, दीनदार और ख़ूबसीरत लड़कियों से शादी करने को तर्जीह दे रहे हैं। दिन दहाड़े ज़िना-बिल-जब्र और अग़वा के वाक़िआत में इज़ाफ़ा होता जा रहा है, नीम उरयाँ बेहया लड़कियों को देखकर मर्द कहां तक अपनी नज़रों और जिन्सी जज़्बात पर क़ाबू पाएँगे?

इन सबके बावजूद औरत मर्दों के शाना-ब-शाना चलने के लिए, उनकी शाबाशी हासिल करने के लिए अपने आपको तबाह कर रही है। अपने आप पर ज़ुल्म कर रही है। हमारी नज़र में ज़ालिम वह है जो इज़्ज़त की चार दीवारी को छोड़कर ज़िल्लत के बाज़ार में जा बैठी है।

जो औरत आंख को न लगे वह दिल को क्या लगेगी

औरत को शौहर के लिए बनना, सँवरना इस्लाम में पसन्दीदा फ़ेल है।

हम अकसर देखते हैं कि ख़्वातीन दिनभर के काम-काज को अंजाम देकर इस क़दर थक जाती हैं कि शाम होते-होते ज़ेहनी और जिस्मानी थकन से चूर हो जाती हैं। सुबह सवेरे उठना, बच्चों के लिए, शौहर के लिए नाश्ता बनाना, बच्चों को खिलाना-पिलाना, उन्हें तैयार करके स्कूल भेजना, फिर सफ़ाई करना, दूसरे काम निमटाना, दोपहर के वक़्त से पहले-पहले उन कामों को निमटाकर दोपहर का खाना बनाना ताकि बच्चों को स्कूल से लौटते ही खाना तैयार मिले। ग़र्ज़ यह कि कामों की एक तवील फ़हरिस्त होती है। बच्चों की आमद के बाद भी कई काम होते हैं जो ख़्वातीन को अंजाम देने होते हैं। अगर कुछ वक़्त दोपहर से सेह-पहर के बीच मिल गया तो आराम कर लेती हैं, वरना फिर शाम के काम। शौहर के घर लौटने का वक़्त हो जाता है और काम है कि फिर भी तक्मील को नहीं पहुँचता।

ऐसे में शौहर घर तशरीफ़ लाते हैं और घर में चारों तरफ़ बिखरे कपड़े, खिलौने और दीगर सामान देखकर उनका मूड कुछ बिगड़ जाता है। बच्चों का बेहंगम शोर नागवारी का एहसास पैदा करता है। किचन से निकलती हुई अपनी बेगम को मलगजे से लिबास, उलझे-उलझे बालों और थके-थके से चेहरे को देखकर मूड मज़ीद बिगड़ जाता है। वह एक कप चाय की फ़रमाइश करना चाहते हैं, मगर बेगम की बेज़ारी-सी सूरत उन्हें ऐसा करने से रोक देती है। नतीजे में शौहर का दिल चाहता है कि चलो, भाग चलो कहीं दूर साफ़-सुथरी जगह पर, जहाँ बच्चों का शोर न हो, कोई बेज़ार-सी शक्ल न हो, कोई मुस्कराकर उसका इस्तक़बाल करनेवाला हो, बहुत ख़ुशगवार माहौल में जहाँ चाय का लुत्फ़ दोबाला हो और जहाँ सुकून के चन्द लम्हे मयस्सर आ सकें। मगर यह सब कुछ मुमकिन नहीं होता। इसलिए शौहर चिड़चिड़ा-सा हो जाता है।

इसमें कोई शक नहीं कि ख़्वातीन मर्दों के मुक़ाबले में ज़्यादा मेहनती और जफ़ाकश होती हैं। ज़्यादा ज़िम्मेदार होती हैं, घर-गृहस्थी के काम में उनकी दिलचस्पी न हो तो घर, घर नहीं रहता। ख़्वातीन सुबह से शाम

तक घरेलू ज़िम्मेदारियाँ पूरी तंदही के साथ अंजाम देती हैं, मगर ख़्वातीन सोच कर बताएँ कि क्या आपके जिस्म का आप पर कोई हक़ नहीं है? क्या आपके शौहर का आप पर कोई हक़ नहीं है? आप शौहर के लिए बनाव-शृंगार क्यों नहीं करतीं?

शौहर के लिए बनना-सँवरना इस्लाम में पसन्दीदा फ़ेल है। हज़रत जाबिर रज़ि० बयान करते हैं कि एक ग़ज़वे से वापसी के बाद हम अपने घर जाने लगे तो हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने फ़रमाया :

> "अभी रुक जाओ और रात को अपने-अपने घर जाओ ताकि जिस औरत ने कंघी-चोटी नहीं की है, वह कंघी-चोटी कर ले और जिस औरत का शौहर ग़ायब था, वह नहा-धोकर साफ़-सुथरी हो जाए।" (बुख़ारी, किताबुन निकाह, बाबुल् वलद और मुस्लिम, किताबुर रिज़ा, बाब इस्तहबाब निकाहुल् बक्र)

हुज़ूरे अकरम सल्ल० को औरतों का कितना ख़्याल था कि ला इल्मी में वह उलझे बालों और गंदे-मैले लिबास में अपने शौहरों के सामने न आ जाएँ इसलिए उन्हें नहा-धोकर कंघी-चोटी करने की मोहलत देना चाहते थे ताकि शौहर के दिल में बेज़ारगी या नफ़रत का जज़्बा न पैदा हो।

आँहज़रत सल्ल० के ज़माने में औरतें अपने ख़ाविन्दों की ख़ातिर ज़ैब व ज़ीनत का सामान किया करती थीं। इसका सुबूत इस वाक़िये से भी मिलता है कि एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि० ने उसमान बिन मज़ऊन रज़ि० की बीवी को देखा कि असबाबे ज़ीनत से या जिनसे उस दौर की औरत शौहर की मौजूदगी में बिल उमूम आरास्ता होती थी, ख़ाली थीं। आपने फ़ौरन दरयाफ़्त किया "क्या उसमान रज़ि० कहीं सफ़र पर गए हुए हैं?" (मुस्नद अहमद, जिल्द 6, पे० 106) यानी हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत उसमान रज़ि० की बीवी को तमाम लवाज़मात से आरास्ता नहीं देखा तो उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ि० कहीं बाहर गए हुए हैं, घर पर मौजूद नहीं हैं।

ख़्वातीन को शौहरों की दिलबस्तगी के लिए, अपने आपका, अपनी सेहत का, अपने रहन-सहन का, अपने लिबास व ज़ीनत का ख़्याल रखना चाहिए। दिन भर के काम का टाइम-टेबल इस तरह तर्तीब दें कि सारा काम शौहर के आने से पहले निमट जाए। अगर कुछ बाक़ी भी रह जाए तो हर्ज नहीं है। आप उसे बाद में भी कर सकती हैं। आप नहा-धोकर

तैयार हो जाएँ और जब सुबह के गए थके-माँदे शौहर घर आएँ तो उन्हें एक अच्छा, ख़ुशगवार-सा माहौल दें। उनका मुस्कुरा कर इस्तक़बाल करें। आपकी मुस्कुराहट देखकर वैसे ही उनकी आधी थकान दूर हो जाएगी। ख़ुशनुमा बातें करें, दिन भर के कमर तोड़ काम का रोना न रोएँ। आपकी मेहनत व मशक़्क़त उनसे छुपी तो नहीं रहती। वह आप की जांफ़शानी का दिल में ऐतिराफ़ करते हैं। दिल ही दिल में तारीफ़ भी करते हैं। हाँ, कुछ मर्द तारीफ़ के मामले में कंजूस होते हैं मगर इसका मतलब यह नहीं कि वे आपकी ख़िदमात के मोतरिफ़ नहीं हैं। अगर मर्द हज़रात भी अपनी बीवी की मेहनत और लगन, ज़िंदगी के तईं उनकी ईमानदारी और संजीदगी का खुले दिल से एतिराफ़ करें तो बीवी के लिए शौहर के चन्द प्यार भरे अल्फ़ाज़ क़ुव्वत बढ़ाने की टॉनिक साबित होंगे।

हज़रत अली रज़ि० के साथ ख़ुदा की ख़ुसूसी क़ुदरत का मुज़ाहिरा

न उन्हें सर्दी लिगती थी, न उन्हें गर्मी लगती थी

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रह० कहते हैं कि हज़रत अली करमुल्लाहु वज्हु सर्दियों में एक लुंगी और एक चादर ओढ़कर बाहर निकला करते थे और यह दोनों कपड़े पतले होते थे, और गर्मियों में मोटे कपड़े और ऐसा जुब्बा पहन कर निकला करते थे जिसमें रूई भरी होती थी। लोगों ने मुझसे कहा आप के अब्बा जान रात को हज़रत अली रज़ि० से बातें करते हैं आप अपने अब्बा जान से कहें कि वह हज़रत अली रज़ि० से इस बारे में पूछें। मैंने अपने वालिद से कहा "लोगों ने अमीरुल मोमिनीन का एक काम देखा है जिससे वह हैरान हैं।" मेरे वालिद ने कहा, वह क्या है? मैंने कहा, "वह सख़्त गर्मी में रूई वाले जुब्बा में और मोटे कपड़ों में बाहर आते हैं और उन्हें गर्मी की कोई परवा नहीं होती और सख़्त सर्दी में पतले कपड़ों में बाहर आते हैं, न उन्हें सर्दी की कोई परवा होती है, और न ही वह सर्दी से बचने की कोशिश करते हैं। तो क्या आपने उनसे इस बारे में कुछ सुना है? लोगों ने मुझे कहा है कि जब आप रात को उनसे बातें करें तो यह बात भी उनसे पूछ लें।"

चुनांचे जब रात को मेरे वालिद हज़रत अली रज़ि० के पास गए तो

उनसे कहा "ऐ अमीरुल मोमिनीन! लोग आप से एक चीज़ के बारे में पूछना चाहते हैं।" हज़रत अली रज़ि० ने कहा, वह क्या? मेरे वालिद ने कहा, "आप सख़्त गर्मी में रूई वाला जुब्बा और मोटे कपड़े पहन कर बाहर आते हैं और सख़्त सर्दी में दो पतले कपड़े पहन कर बाहर आते हैं; न आप को सर्दी की परवाह होती है और न उससे बचने की कोशिश करते हैं। हज़रत अली करमल्लाहु वज्हु ने फ़रमाया, "ऐ अबू लैला! क्या आप ख़ैबर में हमारे साथ नहीं थे?" मेरे वालिद ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं आप लोगों के साथ था।"

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, "हुज़ूर सल्ल० ने पहले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को भेजा, वह लोगों को लेकर हमला आवर हुए लेकिन क़िला फ़तह न हो सका। वह वापस आ गए। हुज़ूर अकरम सल्ल. ने फिर हज़रत उमर रज़ि० को भेजा। वह लोगों को लेकर हमला आवर हुए, लेकिन क़िला फ़तह न हो सका। वह भी वापस आ गए। इस पर हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया कि अब मैं झंडा ऐसे आदमी को दूँगा जिसे अल्लाह और उसके रसूल से बहुत मुहब्बत है। अल्लाह उसके हाथों फ़तह नसीब फ़रमाएगा, और वह भगोड़ा भी नहीं है। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने आदमी भेजकर मुझे बुलाया। मैं आप सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरी आँख दुख रही थी। मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने मेरी आँखों पर लुआन लगाया और यह दुआ की कि अल्लाह! गर्मी और सर्दी से इसकी हिफ़ाज़त फ़रमा!, उसके बाद मुझे न कभी कर्मी लगी और न कभी सर्दी।"—अबू नुऐम रह० की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी दोनों हथेलियों पर लुआन लगाया और फिर दोनों हथेलियों को मेरी आँखों पर मल दीं और यह दुआ फ़रमाई "ऐ अल्लाह! इससे गर्मी और सर्दी दूर कर दे!"—उस ज़ात की क़सम जिसने हुज़ूर सल्ल० को हक़ देकर भेजा है! उसके बाद से आज तक गर्मी और सर्दी ने मुझे कुछ तकलीफ़ नहीं पहुँचाई।

तबरानी रह० की एक रिवायत में है कि हज़रत सवैद बिन ग़फ़ला रज़ि० फ़रमाते हैं, हमारी हज़रत अली रज़ि० से सर्दियों में मुलाक़ात हुई। उन्होंने सिर्फ़ दो कपड़े पहन रखे थे। हमने उनसे कहा, "आप हमारे इलाक़े से धोखा न खाएँ। हमारा इलाक़ा आपके इलाक़े जैसा नहीं है। यहाँ सर्दी बहुत ज़्यादा पड़ती है।" हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, "मुझे

सर्दी बहुत लगा करती थी, जब हुज़ूर सल्ल० मुझे ख़ैबर भेजने लगे तो मैंने अर्ज़ किया कि मेरी आँखें दुख रही हैं। आप सल्ल० ने मेरी आँखों पर लुआन लगाया और उसके बाद न मुझे कभी गर्मी लगी और न कभी सर्दी, और न कभी मेरी आँखें दुखने आईं।"

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पे० 730)

मौत का आना जितना यक़ीनी है आदमी उससे उतना ही ग़ाफ़िल है

याद रखिए रोज़ाना मलकुल-मौत अपने शिकार को देखता रहता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक अंसारी के सरहाने मलकुल-मौत को देखकर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "मलकुल-मौत! मेरे सहाबी के साथ आसानी कीजिए।" मलकुल-मौत ने जवाब दिया कि अल्लाह के नबी (सल्ल.)! तस्कीन ख़ातिर रखिए और दिल ख़ुश कीजिए। वल्लाह मैं ख़ुद बा-ईमान के साथ निहायत नर्मी करनेवाला हूँ। सुनो या रसूलल्लाह! क़सम है ख़ुदा तआला की! तमाम दुनिया के हर कच्चे-पक्के घर में, चाहे वह ख़ुश्की में हो या तरी में, हर दिन में मेरे पाँच फेरे होते हैं। हर छोटे-बड़े को मैं उससे भी ज़्यादा जानता हूँ जितना वह ख़ुद अपने आपको जानता है। या रसूले ख़ुदा! यक़ीन मानिए कि मैं तो एक मच्छर की जान क़ब्ज़ करने की भी क़ुदरत नहीं रखता जब तक कि मुझे ख़ुदा तआला का हुक्म न हो जाए।

हज़रत जाफ़र रह० का बयान है कि मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम का दिन में पाँच वक़्त एक-एक शख़्स की ढूंढ-भाल करना है कि आप अलैहि० पाँच नमाज़ों के वक़्त देख लिया करते हैं, अगर वह नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनेवाला है तो फ़रिश्ते उसके क़रीब रहते हैं और शैतान उससे दूर रहता है और उसके आख़िरी वक़्त फ़रिश्ता उसे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की तल्क़ीन करता है।

मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि हर दिन हर घर पर मलकुल-मौत दो मर्तबा आते हैं। कअ़ब अहबार रज़ि० उसके साथ ही यह भी फ़रमाते हैं कि हर दरवाज़े पर ठहर कर दिन भर में सात दफ़ा नज़र मारते हैं कि

उसमें कोई वह तो नहीं जिसकी रूह निकलने का हुक्म हो चुका हो।
(तफ़सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पे० 204)

अपनी इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिए

पाँच सौ साल की इबादत एक नेमत के बदले में ख़त्म

इमाम हाकिम शहीद ने मुस्तदरक हाकिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से एक लम्बी रिवायत नक़ल फ़रमाई है जो सहीह सनद के साथ मरवी है और उस हदीस को इमाम मुंज़िरी रह० ने अत-तर्ग़ीब वत-तर्हीब में नक़ल की है। अरबी इबादत काफ़ी लम्बी है इसलिए सिर्फ़ उसका ख़ुलासा पेश किया जा रहा है। शायद किसी को फ़ायदा हो।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्ल० ने एक दफ़ा घर के बाहर तशरीफ़ लाकर फ़रमाया कि अभी-अभी मेरे दोस्त हज़रत जिब्रील अलैहि० तशरीफ़ लाए और यह फ़रमाया कि पिछली उम्मतों में से अल्लाह का एक बन्दा अपने घर-बार, अज़ीज़ व अक़ारिब, माल व दौलत सब कुछ छोड़कर समुन्दर के बीच में पहाड़ नुमा एक टीला था उसमें जाकर इबादत करना शुरू कर दी। वह समुन्दर इतना वसीअ था कि उस टीले की हर जानिब चार-चार हज़ार फ़रसख़ दूरी तक समुन्दर था, वहाँ पर कोई खाने की चीज़ नहीं थी और समुन्दर का पानी भी बिल्कुल नमकीन था। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से उसमें एक अनार का दरख़्त उगा दिया और उंगली के बराबर मीठे पानी का एक चश्मा जारी कर दिया। यह आबिद दिन रात चौबीस घंटे अपनी इबादत में गुज़ारता था और चौबीस घंटे में अनार का एक फल खा लेता था और मीठे पानी के चश्मे से एक ग्लास पानी नोश फ़रमा लेता था। इसी हालत में पाँच सौ साल गुज़र गए।

पाँच सौ साल के बाद जब उस आबिद की मौत का वक़्त आया तो उसने अल्लाह तबारक व तआला से यह दुआ माँगी कि सज्दे की हालत में उसकी रूह परवाज़ कर जाए और उसकी नाश-मिट्टी वग़ैरह हर चीज़ पर हराम कर दी जाए और क़ियामत तक सज्दे की हालत में सहीह सालिम रहे। तो अल्लाह तआला ने उसकी दुआ क़बूल फ़रमाई। सज्दे की हालत में उसकी मौत हो गई और अल्लाह तआला ने वहाँ ऐसा इंतिज़ाम

कर रखा है कि क़ियामत तक वहाँ किसी इंसान की रसाई नहीं हो सकती।

क़ियामत के दिन उस आबिद को अल्लाह के दरबार में हाज़िर किया जाएगा तो अल्लाह पाक फ़रिश्तों से फ़रमाएगा कि मेरे इस बन्दे को मेरे फ़ज़्ल से जन्नत में दाख़िल करो, तो वह आबिद कहेगा कि ऐ मेरे रब! बल्कि मेरे अमल के बदले में जन्नत में दाख़िल कर दीजिए। क्योंकि मैंने पाँच सौ साल तक ऐसी इबादत की है जिसमें किसी क़िस्म की रियाकारी का शाएबा भी नहीं था। तो अल्लाह पाक फिर फ़रमाएगा कि मेरी रहमत से दाख़िल कर दो। तो यह बन्दा कहेगा कि मेरे अमल के बदले में दाख़िल कीजिए तो उस पर अल्लाह फ़रमाएगा कि इसके अमल और मेरी दी हुई नेमतों का मुवाज़ना करो। तो मुवाज़ना करके देखा जाएगा कि अल्लाह ने जो उसको बीनाई अता फ़रमाई है सिर्फ़ बीनाई की नेमत उसकी पाँच सौ साल की इबादत का अहाता कर लेगी। उसके बाद पूरे जिस्म में कान की नेमत, ज़बान की नेमत, हाथ की नेमत, नाक की नेमत, पैर की नेमत, दिल व दिमाग़ की नेमत, उन सबका बदल बाक़ी रह जाएगा। फिर उनके अलावा जो पाँच सौ साल तक अल्लाह ने मीठा पानी पिलाया है और अनार का फल खिलाया है उन तमाम का बदल बाक़ी रह जाएगा तो अल्लाह पाक फ़रमाएगा कि उसकी पाँच सौ साल की इबादत तो सिर्फ़ एक नेमत के बदले में ख़त्म हो गई, हमारी बाक़ी नेमतों का बदल कहाँ है? लिहाज़ा उसको जहन्नम में दाख़िल कर दो। तो फ़रिश्ते उसे घसीट कर जहन्नम की तरफ़ ले जाने लगेंगे तो वह चिल्लाने लगेगा कि ऐ मेरे रब! महज़ अपनी रहमत से मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए; तो अल्लाह की तरफ़ से कहा जाएगा कि तुझे तो अपनी पाँच सौ साल की इबादत पर बड़ा नाज़ था। अब तेरी इबादत कहाँ चली गई? और ख़तरनाक समुन्दर के बीच में मैंने तुझे अनार के फल खिलाए और पाँच सौ साल तक मुसलसल मीठा पानी पिलाया, मेरी उन नेमतों के बदले तुम क्या लाए हो? तो वह कहेगा : "ऐ अल्लाह! तू अपनी रहमत से मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमाँ तेरी रहमत के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता है।" फिर आख़िर में जब हुज्जत तमाम हो जाएगी तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "मेरी रहमत व फ़ज़्ल के ज़रिए इसको जन्नत में दाख़िल कर दो।" तो फिर वह अल्लाह की रहमत ही के ज़रिए जन्नत में दाख़िल हो सकेगा।

लायानी बातों से परहेज़ कीजिए

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि "इंसान के इस्लाम की ख़ूबी यह है कि वह लायानी बातों को तर्क कर दे।"

अगर कोई अच्छा मुसलमान बनना चाहता है तो वह लायानी और फ़ुज़ूल बातों से एहतिराज़ करे और लायानी बातों में बकवास करना, ख़्वामख़्वाह चौराहों पर भीड़ लगाना, होटलबाज़ी करना ये तमाम बातें शामिल हैं। मुसलमान को इनसे बचना लाज़िम है। जो शख़्स लायानी और फ़ुज़ूल बातों में पड़ जाता है वह अपनी ज़िम्मेदारी की अदाएगी से लापरवाह हो जाता है और लोगों की निगाहों से गिर जाता है। उसकी मुआशिरे में कोई इज़्ज़त नहीं होती।

तवक्कुल की हक़ीक़त

"इस्लाम और तर्बियते औलाद' के नाम से एक किताब है। उसमें हज़रत उमर रज़ि० का वाक़िआ नक़ल किया गया है कि हज़रत उमर रज़ि० एक ऐसी क़ौम से मिले जो कुछ काम-काज न करती थी। तो आपने फ़रमाया, "तुम लोग क्या हो?" उन्होंने जवाब दिया कि "हम तो मुतवक्किलीन हैं।"

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "तुम झूठ कहते हो, मुतवक्किल तो दरहक़ीक़त वह शख़्स है जो अपना ग़ल्ला ज़मीन में डाल कर अल्लाह पर भरोसा करता है," और फ़रमाया, "तुममें से कोई शख़्स काम-काज से हाथ खींचकर बैठकर यह दुआ न करे कि ऐ अल्लाह! मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा दे, हालांकि वह जानता है कि आसमान से सोना, चांदी नहीं बरसा करते।

और हज़रत उमर रज़ि० ही वह बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने ग़ुरबा व फ़ुक़रा को इस बात से रोका कि वे काम-काज छोड़कर लोगों के सदक़ात व ख़ैरात पर तकिया करके बैठ जाएँ। चुनांचे आपने फ़रमाया : "ऐ ग़ुरबा व फ़ुक़रा की जमाअत! अच्छाइयों में एक-दूसरे से सबक़त ले जाओ और मुसलमानों पर बोझ न बनो।" (इस्लाम और तर्बियते औलाद, 2/343)

हज़रत क़तादा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से तीन चीज़ें माँगीं

1. बीवी की मुहब्बत 2. आंख की बीनाई 3. और जन्नत

उनकी आंख के साथ ख़ुदा की ख़ुसूसी क़ुदरत का मुज़ाहिरा

बैहक़ी और इब्ने इसहाक़ रह० ने रिवायत की है कि जंगे उहुद में हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० की आंख में तीर लगा जिससे आँख निकल कर रुख़्सार पर आ गई। नबी करीम सल्ल० ने हज़रत क़तादा रज़ि० से फ़रमाया कि अगर चाहो कि यह आँख अच्छी हो जाए तो मैं इसको इसकी जगह पर रख दूँ, अच्छी हो जाएगी और अगर चाहते हो कि जन्नत मिले तो सब्र करो। हज़रत क़तादा रज़ि० ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! जन्नत तो बड़ा अच्छा इनाम है, लेकिन मुझे काना होना बुरा मालूम होता है। आप मेरी आँख अच्छी कर दीजिए और जन्नत के लिए भी मेरे वास्ते दुआ फ़रमाइए।" आप सल्ल० ने उनकी आँख का ढेला उठाकर उसको उसके हल्क़े में रख दिया। उसकी रौशनी दूसरी आँख से भी तेज़ हो गई और उनके लिए जन्नत की भी दुआ फ़रमा दी। (रसूल सल्ल० के तीन सौ मोजिज़ात, पे० 101)

एक रिवायत में है हज़रत क़तादा रज़ि० अपनी आँख की पुतली को हाथ में लिए हुए हुज़ूर पुरनूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्ल० ने फ़रमाया : 'अगर तू सब्र करे तो तेरे लिए जन्नत है और अगर चाहे तो उसी जगह रखकर तेरे लिए दुआ कर दूँ।' हज़रत क़तादा रज़ि० ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! मेरी एक बीवी है जिससे मुझको मुहब्बत है। मुझको यह अंदेशा है कि अगर बे-आँख रह गया तो कहीं मेरी बीवी मुझसे नफ़रत न करने लगे।" आप सल्ल० ने दस्ते मुबारक से आँख उसकी जगह पर रख दी और यह दुआ फ़रमाई 'अल्लाहुम-म अअ्तिही जमालहू' (ऐ अल्लाह इसको हुस्न व जमाल-अता फ़रमाँ (अल असाबह, जिल्द 3, पे० 225)

हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं उहुद के दिन आप सल्ल० के चेहरे के सामने खड़ा हो गया और अपना चेहरा दुश्मनों के मुक़ाबिल कर दिया ताकि दुश्मनों के तीर मेरे चेहरे पर पड़ें और आप सल्ल० का चेहरए नूर महफ़ूज़ रहे। दुश्मनों का आख़िरी तीर मेरी आँख

पर ऐसा लगा कि आँख का ढीला बाहर निकल पड़ा जिसको मैंने अपने हाथ में ले लिया और लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। रसूलुल्लाह सल्ल० यह देखकर आब दीदा हो गए और मेरे लिए दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! जिस तरह क़तादा ने तेरे नबी के चेहरे की हिफ़ाज़त फ़रमाई उसी तरह तू इसके चेहरे को महफ़ूज़ रख, और इस आँख को दूसरी आँख से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत और तेज़ नज़र बना। और आँख को उसी जगह रख दिया। उसी वक़्त आँख बिल्कुल सही और सालिम बल्कि पहले से बेहतर और तेज़ हो गई। (तबरानी व अबू नुऐम व दारे क़ुतनी)

हुज़ूर सल्ल० का बच्चों के साथ अजीब मामला

बारहा ऐसा हुआ है कि आप सल्ल० ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास, उबैदुल्लाह बिन अब्बास और कसीर बिन अब्बास रज़ि० को बुलाया और उनसे फ़रमाया, बच्चो! तुममें से जो दौड़कर मुझको सबसे पहले हाथ लगाएगा, मैं उसको फ़लाँ चीज़ दूँगा। तीनों भाई दौड़ कर आप सल्ल० की तरफ़ जाते। कोई आप सल्ल० के सीने से चिमट जाता, कोई पुश्त मुबारक पर चढ़ जाता। आप सल्ल० सबको सीने से लगाते और ख़ूब प्यार करते—और हुज़ूर सल्ल० हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० को यह दुआ देते थे : 'अल्लाहुम-म अल्लिमहुल किता-ब व् फ़क़्क़िहहु फ़िद्दीनि' (ऐ अल्लाह! इसको किताबुल्लाह का इल्म और दीन की समझ अता फ़रमाँ) (सरवरे कायनात सल्ल० के पचास सहाबा, तज़्किरा हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्बास, पे० 462)

आँहज़रत सल्ल० की चन्द अहम नसीहतें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं आंहज़रत सल्ल० के पीछे सवारी पर बैठा हुआ था कि आप सल्ल० ने फ़रमाया : "ऐ लड़के!

1. तू अल्लाह के हक़ की हिफ़ाज़त कर, अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। तू अल्लाह के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त कर, तू हर वक़्त अल्लाह को अपने सामने पाएगा।

2. जब तू माँगे, तो अल्लाह ही से माँग।
3. जब मदद तलब करे तो अल्लाह तआला ही से मदद तलब कर।
4. और इस बात को अच्छी तरह जान ले कि तमाम उम्मत इकट्ठा होकर तुझे नफ़ा पहुंचाना चाहे तो उसके अलावा कोई नफ़ा नहीं पहुंचा सकती जो अल्लाह तआला ने तेरे लिए मुक़द्दर कर दिया है।
5. और तमाम लोग जमा होकर तुझे कोई नुक़्सान पहुचाना चाहें तो उसके सिवा कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते जो अल्लाह तआला ने लिख दिया है। (तिर्मिज़ी, 2 : 78)

इस हदीस शरीफ़ में जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० को मुख़ातिब करके पांच बातों की नसीहत फ़रमाई है।

1. अल्लाह के हक़ की हिफ़ाज़त करो

तुम अल्लाह के हक़ की हिफ़ाज़त और निगरानी करो, अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा। इसका मतलब यह है कि तुम अल्लाह के अहकाम की तामील करो, शरीअत और सुन्नते नबवी तुम्हारी ज़िंदगी से ज़ाहिर होती हो। नमाज़ में, रोज़े में, ज़कात व सदक़ा-ख़ैरात में, अख़्लाक़ में, गुफ़्तगू में, मुआशिरे में अल्लाह के अहकाम और नबी सल्ल० की सुन्नत के तुम पाबन्द हो जाओ तो अल्लाह तआला भी दुनिया व आख़िरत की हर मशक़्क़त और हर परेशानी से तुम्हारी हिफ़ाज़त और तुम्हारी दस्तगीरी करता रहेगा। नीज़ तुम अल्लाह के हक़ की हिफ़ाज़त करोगे, शरीअत के पाबन्द हो जाओगे तो तुम हर वक़्त अल्लाह तआला को अपने सामने पाओगे। जब अल्लाह हर वक़्त तुम्हारे साथ है तो तुमको फिर किसी और का मुहताज होने की ज़रूरत नहीं, और जब अल्लाह की ताक़त तुम्हारे साथ है तो तुम्हारा कौन क्या बिगाड़ सकता है; न मख़्लूक़ से उम्मीद है, न ही मख़्लूक़ से डर है।

2. सिर्फ़ ख़ुदा से माँगो

दूसरी नसीहत आप सल्ल० ने यह फ़रमाई कि जब तुम्हें कुछ माँगने की ज़रूरत पेश आ जाए तो सिर्फ़ अल्लाह से माँगों। अल्लाह तआला की दौलत का समुन्दर इतना वसीअ है कि इंसानी अक़्ल हैरान और शुश्द

रहे। अगर अल्लाह तआला सबको उसकी तमन्ना और आरज़ुओं के मुताबिक़ दे दे तो उसकी दौलत में से इतना भी नहीं जाता है जितना समुन्दर में से सूई की नोक में आ सकता है—और वह साहिबे दौलत भी ख़ुश नसीब है कि इधर तुम अल्लाह से माँगते हो और उधर अल्लाह पाक उसके दिल में डाल देता है और बेचैन होकर तुम्हारे पास लेकर आता है और अगर तुम उसको क़ुबूल कर लेते हो तो वह अपनी ख़ुशनसीबी समझता है। तुम भी मक़बूले बारगाह हुए और उसकी दौलत को भी इंशाल्लाह शर्फ़े क़ुबूलियत हासिल हुआ। तुमने तक़वा इख़्तियार किया और उसका माल एक मुत्तक़ी को पहुँच गया।

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि तुम मोमिन के अलावा किसी दूसरे को अपना दोस्त हरगिज़ मत बनाओ और तुम्हारे यहाँ का खाना मुत्तक़ी लोगों के अलावा कोई दूसरा खाने न पाए। लिहाज़ा तुम्हारा दोस्त भी कामिल मोमिन होना चाहिए और तुम्हारे मेहमान भी मुत्तक़ी लोग होने चाहिएँ। (तिर्मिज़ी, 2 : 65)

3. सिर्फ़ अल्लाह से मदद माँगो

तीसरी नसीहत आप सल्ल० ने यह फ़रमाई है कि जब तुम किसी मुसीबत, दुशवारी में मुब्तला हो जाओ। किसी परेशानी में, बीमारी में, दुश्मनों के नरग़ा में आ जाओ और हर तरफ़ से तुम्हें सताया जा रहा हो तो ऐसे हालात में तुम्हारे दस्तगीर सिर्फ़ ख़ुदा तआला हैं, इसलिए सिर्फ़ उसी से फ़रियादरसी करो और उसी से मदद माँगो।

4. मख़्लूक़ तुमको नफ़ा नहीं पहुंचा सकती

चौथी नसीहत यह फ़रमाई कि अगर दुनिया के तमाम इंसान और तमाम उम्मत मिलकर तुमको किसी बात का नफ़ा पहुँचाना चाहें तो उससे ज़्यादा एक पैसे का भी नफ़ा नहीं पहुँचा सकते जो अल्लाह ने तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दिया है; लिहाज़ा मख़्लूक़ से ज़्यादा उम्मीदें मत बाँधा करो। यह फ़ुज़ूल ख़्यालात हैं। तुम्हें अपनी मेहनत ख़ुद करनी है, जो तुम्हारे मुक़द्दर में है वह तुमको इस बहाने से मिलता रहेगा और हर वक़्त ख़ुदा की याद तुम्हारे अंदर ग़ालिब रहेगी।

5. मख़्लूक़ तुमको नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती

पाँचवीं नसीहत जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह फ़रमाई कि अगर दुनिया के तमाम इंसान इस बात पर मुत्तफ़िक़ होकर जमा हो जाएँ कि तुमको नुक़्सान पहुँचाएँ तो इससे ज़्यादा एक ढेले के बराबर भी तुमको नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते जो अल्लाह ने तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दिया है, किसी की कोई ताक़त नहीं जो तुम्हें नफ़ा पहुँचाए या तुम्हें कुछ नुक़्सान पहुँचाए। इसलिए सारा भरोसा ख़ुदा पर करो। अल्लाह तआला के ही नियाज़मंद बन जाओ।

इमाम बुख़ारी और अमीरे बुख़ारा का वाक़िआ

जब इमाम बुख़ारी रह० मुल्क शाम व इराक़ वग़ैरह से होकर नेशापुर तशरीफ़ लाने लगे तो नेशापुर के मशहूर मुहद्दिस मुहम्मद बिन यहया ज़ेहली ने मुताल्लिक़ीन से कहा कि मैं इमाम बुख़ारी रह० के इस्तक़बाल के लिए जा रहा हूँ, जिसका जी चाहे इस्तिक़बाल करे। इस एलान के बाद नेशापुर शहर से दो-दो तीन-तीन मील दूर तक जाकर लोगों ने इमाम बुख़ारी रह० का इस्तिक़बाल किया, और जब नेशापुर पहुँच कर इमाम बुख़ारी रह० ने दर्से हदीस का सिलसिला शुरू फ़रमाया तो कई हज़ार तलबा ने इमाम बुख़ारी रह० के दर्स में शिरकत की।

मगर चन्द ही दिन के बाद किसी ने ख़ल्क़े क़ुरआन का एक इख़्तिलाफ़ी मसला उठाकर इमाम बुख़ारी रह० पर इल्ज़ाम लगाया और बहुत जल्द उनका हल्क़ाए दर्स ख़त्म हो गया। सिर्फ़ इमाम मुस्लिम रह० उनके साथ रहे। आख़िर इमाम बुख़ारी रह० मायूस होकर अपने वतन बुख़ारा के लिए रवाना हो गए। जब इमाम बुख़ारी रह० के नेशापुर से रवाना होने की इत्तिला अहले बुख़ारा को मिली तो बड़ी शान व शौकत के साथ लोगों ने इमाम बुख़ारी रह० का इस्तिक़बाल किया, और बुख़ारा आकर दर्से हदीस का सिलसिला इमाम बुख़ारी रह० ने शुरू फ़रमाया। हज़ारों तलबा उनके दर्स में शिरकत करने लगे।

मगर हासिदीन को यह गवारा न हो सका। उन्होंने यह तर्कीब निकाली कि अमीरे बुख़ारा ख़ालिद बिन अहमद ज़ेहली को किसी तरह इस बात पर आमादा किया कि वह इमाम बुख़ारी रह० को हुक्म करें कि वह अमीरे के साहबज़ादों को बुख़ारी शरीफ़ और तारीख़े कबीर का दर्स

दें। अमीर बुख़ारा की समझ में बात आई तो अमीर ने कहा कि आप दरबारे शाही में तशरीफ़ लाकर मुझे और मेरे साहबज़ादों को बुख़ारी और तारीख़े कबीर का दर्स दें। मगर इमाम साहब रह० ने उसी क़ासिद की ज़बानी कहला भेजा कि मैं इल्मे दीन को सलातीन के दरवाज़ों पर ले जाकर ज़लील नहीं करूँगा, जिसे पढ़ना हो मेरे पास आकर पढ़े।

अमीरे बुख़ारा ने दोबारा कहलवाया कि अगर आप नहीं आ सकते हैं तो साहबज़ादों के लिए मख़्सूस कोई वक़्त इनायत फ़रमा दें कि उनके साथ कोई दूसरा शरीक न हो इस पर इमाम बुख़ारी रह० ने जवाब दिया कि अहादीसे रसूल सल्ल० पूरी उम्मत के लिए यकसाँ हैं, उनकी समाअत से मैं किसी को महरूम नहीं कर सकता। अगर मेरा यह जवाब नागवार मालूम हो तो आप मेरा दर्स रोकने का हुक्म दे दें ताकि मैं ख़ुदा के दरबार में उज़्र पेश कर सकूँ। इस पर अमीरे बुख़ारा सख़्त नाराज़ हुआ और हासिदों ने अमीर के इशारे पर इमाम साहब को बद्दीन और बिदअती होने का इल्ज़ाम लगाया, फिर हाकिम ने बुख़ारा से निकल जाने का हुक्म दिया तो इमाम बुख़ारी रह० ने निहायत कबीदा ख़ातिर होकर उन मुख़ालिफ़ीन के लिए बद्दुआ की : "ऐ अल्लाह! जिस तरह इस अमीर ने मुझे ज़लील किया है, उसी तरह इसको भी अपनी ज़ात और अपनी औलाद और अपने अहल व अयाल की बेइज़्ज़ती व ज़िल्लत दिखा दे। (नसरुल बारी, 1/44, मुक़द्दिमा फ़तहुल बारी, पाकिस्तान, नुस्ख़ा 493)

चुनांचे अभी एक माह भी नहीं गुज़र पाया था कि ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ने उस अमीर की किसी ग़लती पर सख़्त नाराज़ होकर उसको माज़ूल कर दिया और उसका मुँह काला करके गधे पर सवार कराके पूरे शहर बुख़ारा में उसकी तज़्लील करवाई। उसको जेल में डाल दिया गया और इंतिहाई ज़िल्लत व रुसवाई से चन्द दिन के बाद मर गया, और उस अमीर के मुआविनीन मुख़ालिफ़ बलाओं में मुब्तला होकर हलाक हो गए।

आज तमाम उम्मत देख रही है कि बुख़ारा, समरक़ंद वग़ैरह जो उलमाए दीन के मर्कज़ रहे हैं, वहाँ पर उलमाए दीन की नाक़द्री की वजह से अल्लाह ने वहाँ से इल्म और उलमा को ऐसा उठा लिया कि सदियों तक वहाँ कोई कलिमा सिखाने वाला नहीं रहा है। 'ऐ अल्लाह! हमको अपने ग़ज़ब और अपने औलिया की नाराज़गी से महफ़ूज़ फ़रमा!'

मौलाना रूम के वालिद और बादशाह का वाक़िआ

मौलाना रूम रह० के वालिद अपने ज़माने के बड़े पाये के बुज़ुर्ग थे। उनकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त भी आता था। जब बादशाहे वक़्त ने देखा कि मज्लिस का अजीब हाल है कि वज़ीरे आज़म भी वहाँ मौजूद है, और दूसरे और तीसरे नम्बर के वुज़रा भी वहाँ मौजूद हैं और सल्तनत के बड़े-बड़े हुक्काम व सरकरदा लोग सारे वहाँ मौजूद हैं और दूसरी तरफ़ निगाह उठाकर देखते हैं तो बड़े-बड़े ताजिर भी वहाँ मौजूद हैं और तीसरी तरफ़ देखते हैं कि उलमा और सुलहा भी वहाँ बैठे हैं तो बादशाह को हैरत हुई कि मेरे दरबार में तो ये लोग आते नहीं हैं और उनके यहाँ इस शान और इतनी क़द्र के साथ आकर बैठे हुए हैं कि हर एक की सूरत से सरापा मुहब्बत और अज़्मत टपक रही है और उनकी बुज़ुर्गी सब पर छाई हुई है। थोड़ी देर बैठने के बाद बादशाह को बजाए हैरत के ग़ैरत पैदा होना शुरू हो गई तो बादशाह ने यह तदबीर सोची कि इनको माल और ख़ज़ाने में फाँस दिया जाए। चुनांचे यह कहकर उन बुज़ुर्ग के पास ख़ज़ाने की कुंजियाँ भेज दीं कि मेरे पास और कुछ तो रहा नहीं सब आपके पास है, पस ख़ज़ाने की कुंजियाँ भी आप की ख़िदमत में हाज़िर हैं। रूमी रह० के वालिद ने कुंजियाँ यह कहकर वापस कर दीं कि आज बुध का दिन है और कल तक मुझे मोहलत दीजिए। परसों जुमा है; मैं जुमा की नमाज़ पढ़कर आपका शहर छोड़कर चला जाऊँगा। सब चीज़ें आपको मुबारक हों। यह ख़बर लोगों के दर्मियान उड़ गई तो वज़ीरों की तरफ़ से इस्तीफ़े का सिलसिला शुरू हो गया। एक वज़ीर का इस्तीफ़ा आया, फिर दूसरे का आया, फिर तीसरे का आया कि जब हज़रत यहाँ से जा रहे हैं तो हम भी जा रहे हैं। शहर के जो बड़े मुअज़्ज़िज़ बावक़ार लोग थे वे भी चले जाने के लिए तैयार हो गए। जब बादशाह ने यह मंज़र देखा तो कहने लगा कि अगर यह सब चले जाएँगे तो शहर की रूह निकल जाएगी और शहर की जितनी रौनक़ है सब ख़त्म हो जाएगी। इसलिए ख़ुद हाज़िर होकर मौलाना रूमी रह० के वालिद से माफ़ी माँगी कि मुझसे गुस्ताख़ी हो गई, मैं माफ़ी चाहता हूँ। आप यहाँ से तशरीफ़ न ले जाएँ। यह सब इसलिए हुआ कि मौलाना रूम रह० के वालिद मोहतरम ने हर चीज़ को हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत के मुक़ाबले में क़ुरबान कर दिया था। इसके नतीजे में अल्लाह ने हर चीज़ के दिल में उनकी मुहब्बत पैदा फ़रमा दी थी और

अल्लाह ने उनको कामिल विलायत अता फ़रमाई (जो मेरे दोस्त से दुश्मनी रखता है मैं उससे जंग का एलान करता हूँ) का पूरा मंज़र नज़र आ रहा था।

क़ातिले हुसैन रज़ि० उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का हश्र

रसूलुल्लाह सल्ल० की आँखों की ठंडक यानी हज़रत हुसैन रज़ि० और उनके अहले बैत के क़ातिलों के सरदार उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का हश्र उस ज़माने के लोगों ने देख लिया कि इबराहीम बिन अशतर ने उसके और उसके साथियों के सरों को काट कर एक मस्जिद के सेहन में मूली, गाजर की तरह ढेर लगा दिया।

तिर्मिज़ी शरीफ़ के अंदर हज़रत अम्मारा बिन उमैर से रिवायत मरवी है, वह फ़रमाते हैं कि जब उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सरों को मस्जिद के सेहन में काटकर ढेर लगा दिया गया तो उस मंज़र को देखने के लिए लोगों की एक भीड़ लगी हुई थी, तो मैं भी गया। जिस वक़्त मैं पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि थोड़ी-थोड़ी देर के बाद लोगों में शोर होता रहा और शोर इस बात का हो रहा था कि इन सरों में एक साँप गश्त कर रहा था और गश्त करता हुआ उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद की नाक में घुस जाता था। थोड़ी देर उसकी नाक में ठहरने के बाद फिर निकल कर ग़ायब हो जाता था, फिर थोड़ी देर बाद आकर उसी की नाक में घुसता था। मैंने अपनी आँखों से यह मंज़र मुसलसल दो तीन मर्तबा देखा है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, 2/218, अलबिदाया वननिहाया, 8/281)

जिसने अल्लाह के वली के साथ अदावत की उसका यह हश्र दुनिया में भी लोगों ने देख लिया है, अब आख़िरत में क्या होगा वह अल्लाह को ज़्यादा मालूम है।

हज़रत सअ्द असवद रज़ि० का हूरों से निकाह

हज़रत सअ्द असवद रज़ि० एक जवान क़ाबिले क़द्र सहाबी थे। उनका वाक़िआ सीरत की किताबों में अजीब व ग़रीब अंदाज़ से नक़्ल किया गया है। हज़रत अनस रज़ि० से इमाम अज़ुद्दीन इब्नुल असीर रह० ने अस्दुल ग़ाबा के अंदर मुफ़स्सल तौर पर नक़्ल फ़रमाया है। इस

मुफ़स्सल रिवायत का ख़ुलासा हम आपके सामने पेश करते हैं कि हज़रत सअ्द असवद रज़ि० निहायत काले और निहायत बदसूरत थे। उन्होंने अपनी शादी के लिए मदीना मुनव्वरा के हर क़बीले में पैग़ाम पेश किया और बड़ी कोशिशें कीं, मगर उनकी बदसूरती और उनके ज़्यादा काले होने की वजह से किसी ने अपनी लड़की उनको देना पसन्द नहीं किया। हज़रत सअ्द असवद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह! क्या मेरा कालापन और बदसूरती मुझे जन्नत में दाख़िल होने से रोक सकती है? तो हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह और रसूल पर ईमान ला चुके हो और तक़वा और परहेज़गारी का रास्ता इख़्तियार कर चुके हो तो ऐसा हरगिज़ न होगा, बल्कि अल्लाह के यहाँ तुम्हारा बहुत बुलन्द मक़ाम होगा। तो हज़रत सअ्द असवद रज़ि० ने कलिमा पढ़कर अपना ईमान साबित किया और हुज़ूर सल्ल० के सामने अपनी परेशानी का इज़्हार किया कि या रसूलल्लाह! जो लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और जो आपकी मज्लिस में नहीं आते हैं दोनों क़िस्म के लोगों के यहाँ मैंने अपनी शादी का पैग़ाम दिया है, लेकिन मेरी बदसूरती की वजह से कोई भी अपनी लड़की देने के लिए तैयार नहीं है। तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए मदीना मुनव्वरा की सबसे ख़ूबसूरत और सबसे बाइज़्ज़त घराने की पढ़ी लिखी समझदार लड़की मुंतख़ब फ़रमाई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम उमैर बिन वहब सक़फ़ी रज़ि० के पास जाओ। उनकी लड़की जो सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत, सबसे ज़्यादा समझदार है, उसके साथ मैंने तुम्हारा निकाह कर दिया और तुम जाकर उमैर बिन वहब सक़फ़ी को मेरा पैग़ाम सुना देना कि उनकी लड़की के साथ मैंने तुम्हारा निकाह कर दिया है।

जब हज़रत सअ्द रज़ि० ने जाकर लड़की के माँ-बाप को इत्तिला दी तो माँ-बाप ने उनको क़बूल करने से इंकार कर दिया और वापस कर दिया। जब लड़की ने यह मंज़र देखा तो माँ-बाप से कहने लगी कि अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे ख़िलाफ़ वह्य नाज़िल न हो जाए। अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के ग़ज़ब से बचिए, मैं तो अपने लिए उसको पसन्द करती हूँ जिसको अल्लाह और रसूल सल्ल० ने पसन्द फ़रमाया है। उस लड़की के भी कमाले ईमान की इंतिहा हो गई कि उसने दिलों को

देखा, सूरत को नहीं देखा; अल्लाह और रसूल की ख़ुशी को देखा। जब लड़की के माँ-बाप हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में गए तो हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि तुमने मेरा भेजा हुआ आदमी वापस कर दिया तो उन्होंने शर्मिन्दगी का इज़्हार किया और तौबा की और अर्ज़ किया कि हमको शुबह हुआ कि उन्होंने कहीं झूठ न कहा हो। हम तो आपके ताबेअ हैं। हम उनको अपनी लड़की देते हैं। चुनांचे माँ-बाप ने अपनी चहीती बेटी को हज़रत सअ्द असवद रज़ि० के हवाले कर दिया। लड़की ने माँ-बाप से कहा था कि जब अल्लाह और रसूल का कोई फ़ैसला होता है तो उसमें किसी को इख़्तियार नहीं रहता और लड़की ने क़ुरआन की यह आयत पढ़कर सुनाई :

> "और किसी मर्दे मोमिन और औरत के लिए जब अल्लाह तआला और उसके रसूल कोई फ़ैसला कर दें तो उनको अपनी तरफ़ से कोई इख़्तियार नहीं रहता, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा वह खुली हुई गुमराही में मुब्तला हो जाएगा। (सूरह अहज़ाब, आयत 26,)

इसके बाद हज़रत सअ्द असवद रज़ि० अपनी बीवी के लिए बाज़ार से कुछ सामान ख़रीदने के लिए तशरीफ़ ले गए। उसी असना में जंग का एलान हुआ तो उन्होंने बीवी के लिए सामान ख़रीदने के बजाए उसी पैसे से तलवार, नेज़ा, घोड़ा वग़ैरह जंगी सामान ख़रीद लिया और जंग में जाकर लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके सर मुबारक को अपनी गोद में लिया और फिर उनकी तलवार और घोड़ा वग़ैरह उनकी बीवी के पास भेजा, उनके सुसरालवालों से कहला भेजा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी लड़की से ज़्यादा ख़ूबसूरत लड़कियों से आख़िरत में उसकी शादी करा दी है इसलिए कि अल्लाह तआला ज़ाहिरी ख़ूबसूरती को नहीं देखता बल्कि अंदरूनी सीरत और क़ुलूब को देखता है। अल्लाह तआला ने हज़रत सअ्द असवद रज़ि० को आला मक़ाम अता फ़रमाया है। (असदुल ग़ाबा, 2/184)

बेनमाज़ी की नहूसत

एक बुज़ुर्ग साहिबे कश्फ़ थे। एक बार किसी इकराम करनेवाले ने

उनकी दावत की। दस्तरख़्वान पर खाना रखा गया जिसमें रोटियाँ भी थीं, और रोटियाँ दो औरतों ने बनाई थीं। जब बुज़ुर्ग दस्तरख़्वान पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो रोटी खाने के लिए हाथ बढ़ाया, हाथ रोक लिए और रोटियों को दो हिस्सों में अलग किया। एक हिस्से की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि यह रोटी जिसने भी बनाई है, वह बेनमाज़ी है।

माँ की शान में गुस्ताख़ी करनेवाले की सज़ा

इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी किताबुल मुफ़रद में लिखा है कि एक क़ब्रिस्तान में मग़रिब के बाद एक क़ब्र फटती थी, उसमें एक शख़्स निकलता जिसका सर गधे के मानिन्द था। गधे की आवाज़ निकाल कर चन्द लम्हे बाद क़ब्र में चला जाता था। किसी ने लोगों से पूछा कि आख़िर इस क़ब्रवाले के साथ यह मामला क्यों हो रहा है? क्या वजह है? बतानेवाले ने बताया कि यह आदमी शराब पीता था। जब उसकी माँ उसे डाँटती तो कहता था, "क्यों गधे की तरह चिल्लाती है?"

फ़ायदा : माँ का अदब बहुत ज़रूरी है। हदीस में है माँ के पैरों के नीचे जन्नत है और बाप जन्नत का दरवाज़ा है।

पहलवान इमाम बख़्श का क़िस्सा

एक बुज़ुर्ग का पड़ोस में एक क़ब्रिस्तान में जाना हुआ जहाँ उन्हें फ़ातिहा पढ़नी थी। वह फ़ातिहा पढ़कर आगे बढ़ने लगे। अचानक एक बोसीदा क़ब्र को देखा, गोया वह कह रही है हज़रत! हमें भी कुछ अतिया और तोहफ़ा देते जाइए, हम भी मोहताज हैं। वह बुज़ुर्ग उस क़ब्र पर आए और जो अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी आपने पढ़ा। अचानक उनकी नज़र कुतबा पर पड़ी, जो क़ब्र के क़रीब पड़ा हुआ था। उस कुतबे को उठाकर उन्होंने साफ़ किया। उस पर लिखा हुआ था—— रुस्तमे हिन्द इमाम बख़्श। यह वह पहलवान था जिन्हें राजा-महाराजा हाथी भेजकर घर बुलाते थे और क़ालीन पर बिठाते थे। आज एक सुब्हानल्लाह के मोहताज हैं।

चंगेज़ ख़ाँ और सिकन्दर आज़म की क़ब्रें कहाँ हैं?

तारीख़े इस्लाम में है जब चंगेज़ ख़ाँ का इंतिक़ाल होने लगा तो उसने

अपने साथियों से यह वसीयत की कि जब मैं मर जाऊँ तो फ़लाँ दरख़्त के नीचे मुझे दफ़्ना देना। इंतिक़ाल हुआ, दरख़्त के नीचे दफ़नाया गया। इत्तिफ़ाक़ से दूसरे रोज़ से बारिश शुरू हुई और छः माह तक बारिश होती रही। वह जगह जंगल में तब्दील हो गई और वह दरख़्त उस जंगल में मिल गया। लोगों को पता न रहा कि चंगेज़ ख़ाँ को किस दरख़्त के नीचे दफ़नाया गया था। वह ज़ालिम क़ौमें जिन्होंने बयक वक़्त बीस-बीस लाख इंसानों को क़त्ल किया, जो घोड़ों की पुश्त से तीन-तीन रोज़ तक उतरते नहीं थे, प्यास लगती तो घोड़े की पुश्त पर ख़ंजर मारते। कटोरा साथ होता। कटोरे को ख़ून से भरते और उसे पी जाते। यह उनका पानी था, आज उनके सरदार की क़ब्र का ठिकाना नहीं।

ख़ुतबात हकीमुल इस्लाम में मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब रह० ने लिखा है कि सिकन्दर आज़म की क़ब्र इराक़ के बाबुल के खंडरात में है, लेकिन क़ब्रिस्तान में कोई सहीह क़ब्र नहीं बता सकता। जब कोई सैयाह सैर को या तफ़रीह को जाता है तो वहाँ के गाइड कुछ क़ब्रों की तरफ़ इशारा करके बताते हैं कि इन्हीं क़ब्रों में एक क़ब्र सिकन्दर आज़म की है।

फ़ायदा : जिस इंसान ने दुनिया फ़तह की, आज उसकी क़ब्र की निशानदेही मुश्किल है। इसलिए इंसान अपने ईमान और आमाल बनाने की फ़िक्र करे और अल्लाह की बारगाह में इतना मक़बूल हो जाए कि लोग उसके लिए दुआ करें।

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) के नूरानी इरशादात

1. इल्म का तक़ाज़ा अमल है, अगर तुम इल्म पर अमल करते तो दुनिया से भागते, क्योंकि इल्म में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो हुब्बे दुनिया पर दलालत करती हो।
2. आलिम अगर ज़ाहिद न हो तो अपने ज़मानेवालों पर अज़ाब है।
3. मोमिन अपने अहल व अयाल को अल्लाह पर छोड़ता है और मुनाफ़िक़ ज़र व माल पर।
4. अपनी मुसीबतों को छुपाओ, अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होगा।
5. बेहतरीन अमल लोगों को देना है, लोगों से लेना नहीं।

6. ज़ालिम अपने ज़ुल्म से मज़्लूम की दुनिया ख़राब करता है और अपनी आख़िरत।

7. वह रोज़ी जिस पर शुक्र न हो और वह तंगी जिस पर सब्र न हो फ़ितना है।

8. जिसे कोई ईज़ा न पहुचे उसमें कोई ख़ूबी नहीं।

9. मिस्कीनों को नाख़ुश रखकर अल्लाह तआला को राज़ी रखना मुमकिन नहीं।

10. मैं ऐसे मशाइख़ की सोहबत में रहा हूँ कि उनमें से किसी एक की दाँत की सफ़ेदी मैंने नहीं देखी।

11. दुनियादार दुनिया के पीछे दौड़ते हैं और दुनिया अहलुल्लाह के पीछे।

हुक्मे रसूल पर अमल करने का फल

जो इंसान दीन में अक़्ली घोड़े दौड़ाता है वह गुमराह हो जाता है और जो आँहज़रत सल्ल० के हुक्म पर अमल करता है उसको अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत की नेमतों से मालामाल फ़रमाते हैं। हज़रत अली करमल्लाहु वज्हु हदीस बयान करते हैं कि एक मर्तबा रात में हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात हुई। आप सल्ल० ने दरयाफ़्त फ़रमाया, अली! इतनी रात गए घर से क्यों निकले? हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! भूख ने घर से निकाला, नींद नहीं आ रही थी। कुछ दूर आगे बढ़े तो देखा कि कुछ सहाबा भी बैठे हैं, उनसे जब दरयाफ़्त किया तो उन्होंने भी यही उज़्र पेश किया सामने एक खजूर का दरख़्त था। सर्दी का मौसम था। हालांकि सर्दी के मौसम में खजूर नहीं होती। आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया, "ऐ अली! उस दरख़्त से कहो कि अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खजूरें खिलाओ।"

हज़रत अली रज़ि० दरख़्त के क़रीब गए और फ़रमाया, "ऐ दरख़्त! अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खजूर खिलाओ।" हदीस में है कि दरख़्त के पत्तों से खजूरें गिरने लगीं। हज़रत अली रज़ि० ने दामन भरा और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किया।

क़ुरआन पर अमल करने और उससे रूगरदानी करने वालों का अंजाम

हज़रत उमर रज़ि० बयान करते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि :

> "अल्लाह तआला इस किताब (क़ुरआन करीम) के ज़रिए बहुत-सी क़ौमों को ऊँचा उठाते हैं, और दूसरी क़ौमों को इस (पर अमल न करने) की वजह से नीचे गिराते हैं।" (मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात, पे० 184)

तारीख़ शाहिद है कि जब तक मुसलमान क़ुरआन पाक की पाकीज़ा तालीमात और इरशादाते नबवी पर ज़िंदगी के तमाम शोबों में अमल करते रहे, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसी तरक़्क़ी और ऐसा उरूज अता फ़रमाया जिसकी नज़ीर पेश करने से तमाम अक़वामे आलम आजिज़ हैं, और आज मुसलमान किताब व सुन्नत को छोड़कर ज़लील व ख़्वार हो रहे हैं।

हज़रत अली रज़ि० से मरवी है। वह फ़रमाते हैं कि बेशक मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है। "ऐ लोगो! आगाह हो जाओ। अनक़रीब एक अज़ीमतरीन फ़ितना बरपा होने वाला है।" हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कहा : "या रसूलल्लाह! उस फ़ितने से छुटकारे की राह और मफ़र क्या है?" आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि "उससे हिफ़ाज़त का ज़रिया क़ुरआन करीम है। उसके अंदर तुमसे पहले लोगों के हालात का ज़िक्र है और तुम्हारे बाद क़ियामत तक आनेवाले उमूर और हालात की ख़बर है, और तुम्हारे बाहमी मामलात के फ़ैसले का हुक्म उसमें मौजूद है, और क़ुरआन करीम हक़ व बातिल के दर्मियान फ़ैसला करनेवाली किताब है, इसमें कोई बात मज़ाक़ की नहीं है। जो शख़्स ग़ुरूर और फ़ख़्र की वजह से क़ुरआन को तर्क कर देता है अल्लाह उसको हलाक और बर्बाद करता है और उसकी गर्दन तोड़कर रख देता है। और जो शख़्स क़ुरआन के अलावा किसी और चीज़ में हिदायत ढूँढता है तो अल्लाह उसको गुमराही में मुब्तला कर देता है। क़ुरआन करीम अल्लाह तआला की मज़बूततरीन रस्सी है और वह हक़ तआला की याद दिलानेवाली किताब है। हिक्मत व दानाई अता करनेवाली है और

वही सीधा रास्ता है। और वह ऐसी किताब है कि उसके इत्तिबा के साथ ख़्वाहिशाते नफ़्सानी हक़ से हटाकर दूसरी तरफ़ माइल नहीं कर सकतीं। उसकी ज़बान ऐसी है कि उसके साथ दूसरी ज़बानें मुशाबा नहीं हो सकतीं और उसके उलूम से उलमा की प्यास नहीं बुझती। वह कसरते इस्तेमाल और बार-बार तकरार से पुराना नहीं होती और उसके अजाइबात ख़त्म नहीं होते, क़ुरआन ऐसा कलाम है कि जब जिन्नातों ने उसको सुना तो बिला तवक़्क़ुफ़ कहा कि हमने एक अजीब व ग़रीब क़ुरआन सुना है जो हिदायत का रास्ता दिखलाता है। लिहाज़ा हम उस पर ईमान ले आए। जो क़ुरआन के मुताबिक़ बात करे उसकी तस्दीक़ की जाती है और जो क़ुरआन पर अमल करे उसको अज़ीमतरीन सवाब दिया जाता है, और जिसने क़ुरआन के मुताबिक़ फ़ैसला किया उसने इंसाफ़ किया और जो क़ुरआन करीम की तरफ़ लोगों को बुलाता है उसको सीधे रास्ते की तौफ़ीक़ बख़्शी गई।''

इस हदीस शरीफ़ में ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि हिदायत की सारी ख़ूबियाँ क़ुरआन करीम में मौजूद हैं। जब हर ख़ूबी क़ुरआन करीम में मौजूद है तो जो शख़्स अपनी ज़िंदगी के लिए क़ुरआन करीम को अपना नस्बुल ऐन बना ले और क़ुरआन करीम को अपनी अमली ज़िंदगी में दाख़िल कर ले उसको कोई फ़ितना नुक़्सान नहीं दे सकता। इस हदीस शरीफ़ में क़ुरआन करीम की बीस (20) ख़ूबियाँ बयान की गई हैं जिनको हम निहायत मुख़्तसर अंदाज़ से पेश करते हैं।

1. फ़ीहि न-ब-उ मा क़ब्लकुम

क़ुरआन करीम के अंदर पिछली क़ौमों और पिछली उम्मतों के अच्छे-बुरे वाक़िआत और अहवाल का ज़िक्र है, चुनांचे उसमें हज़रत आदम अलैहि० और उनके बेटे क़ाबील व हाबील का वाक़िआ, हज़रत इदरीस अलैहि० की अहवाल, हज़रत नूह अलैहि० और उनकी क़ौम के वाक़िआत और हज़रत इब्राहीम अलैहि० और नमरूद का वाक़िआ, हज़रत लूत अलैहि० और उनकी क़ौम के वाक़िआत, हज़रत हूद अलैहि० और क़ौमे आद के वाक़िआत, हज़रत सालेह अलैहि० और क़ौमे समूद के वाक़िआत, हज़रत यूनुस अलैहि० का वाक़िआ, हज़रत अय्यूब अलैहि० का वाक़िआ, हज़रत इस्माईल अलैहि० का वाक़िआ, हज़रत इसहाक़ अलैहि० का वाक़िआ, हज़रत याक़ूब अलैहि० का वाक़िआ, हज़रत यूसुफ़ अलैहि०

और उनके भाइयों का वाक़िआ, हज़रत यूसुफ़ अलैहि० और अज़ीज़े मिस्र का वाक़िआ, हज़रत मूसा अलैहि० और फ़िरऔन का वाक़िआ, हज़रत दाऊद अलैहि० और सुलैमान अलैहि० के अहवाल, हज़रत मूसा अलैहि० और ख़िज़र अलैहि० का वाक़िआ, असहाबे कहफ़ और ज़ुलक़रनैन के वाक़िआत, हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहि० के वाक़िआत, क़ारून व हामान व शद्दाद और फ़िरऔन जैसे ज़ालिम बादशाहों के वाक़िआत, ग़र्ज़ यह कि हर क़ौम के हर क़िस्म के अच्छे-बुरे बेशुमार वाक़िआत क़ुरआन मजीद में मौजूद हैं जिनको पढ़कर और सुनकर लोग इबरत हासिल कर सकते हैं। कहीं मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के वाक़िआत और अपनी क़ुदरते कामिला का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया :

"बेशक इसमें बसीरत वालों के लिए बड़ी इबरत की बात है।"

और कहीं हज़रत यूसुफ़ अलैहि० और उनके भाइयों के वाक़िआत ज़िक्र करते हुए फ़रमाया :

"यक़ीनन उनके वाक़िआत और क़िस्सों में अक़्लमंद लोगों के लिए बड़ी इबरत है।"

और कहीं मूसा अलैहि० और फ़िरऔन का वाक़िआ ज़िक्र करते हुए फ़रमाया :

"यक़ीनन इसमें डरने वाले के लिए बड़ी इबरत है।"

2. व ख़्र-ब-रु मा बादकुम

और क़ुरआन करीम के अंदर तुम्हारे बाद पेश आने वाले वाक़िआत, क़ियामत की अलामात और क़ियामत के अहवाल का ज़िक्र है, हिसाब व किताब, जन्नत व जहन्नम के अहवाल का ज़िक्र है। उनसे इबरत हासिल करके अपने आमाल दुरुस्त करने की ज़रूरत है।

3. वहकुम मा बैनकुम

क़ुरआन करीम के अंदर तुम्हारे आपस के मामलात के तै करने और फ़ैसला करने का हुक्म मौजूद है।

पूरे क़ुरआन करीम में 6666 आयतें हैं, उनमें 500 आयतें अहकाम और फ़ैसलों से मुताल्लिक़ हैं। बाज़ उलमा ने उन पांच सौ आयतों की अलग से भी तफ़्सीर लिखी है जैसा कि बादशाह आलमगीर के उस्ताद हज़रत मुल्ला जुयून रह० की "तफ़्सीराते अहमदिया" है और उन 500 के

अलावा 6166 आयतों में पिछली उम्मतों के अहवाल व वाक़िआत, क़ियामत, हिसाब व किताब, जन्नत और जहन्नम के वादे और वईद की बातें हैं जिनसे इंसान इबरत हासिल करके अपनी ज़िंदगी को सँवारे।

4. व हु-व फ़सलु

क़ुरआन करीम हक़ व बातिल के दर्मियान फ़ैसला और इम्तियाज़ पैदा करनेवाली किताब है, इसी को अल्लाह तआला ने सूरह तारिक़ में 'इन्नहू लक़ौलुन फ़स्लुन' से इरशाद फ़रमाया कि क़ुरआन करीम हक़ व बातिल और सिद्क़ व किज़्ब के दर्मियान दो टूक फ़ैसला है।

5. लै-स बिहज़लि

क़ुरआन करीम में मज़ाक़ लग्व और लायानी बातें नहीं हैं, बल्कि जो कुछ क़ुरआन ने कहा है वह हक़ है। इसी को अल्लाह तआला ने सूरह तारिक़ में 'व मा हु-व बिल हज़लि' से इरशाद फ़रमाया है।

6. मन त-र-क-हू मिन जब्बारिन क-स-म-हुल्लाहु

जो शख़्स क़ुरआन करीम को ग़ुरूर व फ़ख़्र से छोड़ देता है, न उस पर ईमान लाता है और न उसकी हिदायत पर अमल करता है, अल्लाह तआला ऐसों को हलाकत व तबाही में मुब्तला कर देता है और उनकी गर्दन तोड़कर रख देता है और उसे अपनी रहमत से दूर कर देता है। वह शैतान का साथी बन जाता है तो अल्लाह तआला शैतान को उसके ऊपर मुसल्लत कर देता है, फिर वह उससे छुटकारा नहीं पाता। ऐसे लोगों की अक़्लें मस्ख़ हो जाती हैं, उन्हें नेकी और बदी की तमीज़ भी बाक़ी नहीं रहती। और इसको अल्लाह तआला ने सूरह ज़ुख़रुफ़ में इन अल्फ़ाज़ के साथ इरशाद फ़रमाया है :

> "और जो शख़्स अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद से आँखें चुराए उस पर हम एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, फिर वही शैतान उसका साथी बना रहता है, यानी वही उसका उस्ताद है जो, वह कहेगा वही करेगा।"

7. व-मनिबतग़ल हुदा फ़ी ग़ैरिही अज़ल्लहुल्लाहु

और जो शख़्स क़ुरआन को छोड़कर दूसरी चीज़ से हिदायत तलब करेगा उसको अल्लाह तआला गुमराही में मुब्तला कर देता है, वह हिदायत पर क़ायम नहीं रह सकता।

इसकी एक ज़िंदा मिसाल दुनिया के सामने यह भी है कि इंसानों का एक बड़ा तबक़ा बुज़ुर्गों के मज़ारात पर जाकर मुरादें माँगता है, वहाँ पेशानी टेकता है और बहुत से ओबाशों ने फ़र्ज़ी मज़ारात बना लिए और उसी को अपना रोज़गार बना बैठे, और यह तब्क़ा अपनी गुमराही से वहाँ भी फँसता है। उनका अक़ीदा यह है कि अगर वहाँ कुछ दिए बग़ैर गुज़रे तो रास्ते में कुछ वाक़िआत पेश आ सकते हैं, गाड़ी में ख़राबी आ सकती है। इसलिए इमाम बुख़ारी रह० ने "बाबु सिफ़ति इब्ली-स व जुनूदिही" के नाम से एक बाब क़ायम फ़रमाया है जिसमें इंसान, शैतान और उसके चेलों का भी ज़िक्र है। जो बुख़ारी शरीफ़ किताब बदइल ख़ल्क़ (1 : 462) में मौजूद है।

8. व हु-व हब्लुल्लाहिल मतीनु

क़ुरआन करीम अल्लाह तआला की एक मज़बूततरीन रस्सी है, अल्लाह और बन्दों के दर्मियान एक मज़बूततरीन ताल्लुक़ और जोड़ पैदा करने की चीज़ है और क़ुरआन करीम के ज़रिए से ही इंसान अल्लाह तआला की मर्ज़ी हासिल कर सकता है, उसी को अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में इन अल्फ़ाज़ से इरशाद फ़रमाया है :

> "अल्लाह की रस्सी को तुम मिलकर एक साथ मज़बूती से पकड़ लो, और आपस में फूट न डालो।"

9. व-हु-वज़्ज़िकरुल हकीमु

वही हक़ तआला को याद करने का ज़रिया है जो हिकमत व दानाई का अहल बनाता है, उसमें अच्छी नसीहतें हैं। उसी को अल्लाह तआला ने इन अल्फ़ाज़ में क़ुरआन करीम में ज़िक्र फ़रमाया है :

> "आप मोमिनीन को अच्छी नसीहतों से अल्लाह की याददिहानी कराते रहा करें, इससे मोमिनीन को दीनी फ़ायदा पहुँचता रहेगा।"

10. व-हु-वस्सिरातुल मुस्तक़ीमु

क़ुरआन करीम इंसान को सीधे रास्ते और ऐतिदाल पर क़ायम रखता है और इफ़रात व तफ़रीत से महफ़ूज़ रखता है और सिराते मुस्तक़ीम की जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक मिसाल पेश फ़रमाई कि एक लम्बा ख़त खींचा, उसके दाएँ और बाएँ बहुत सारे ख़तूत खींचे और फ़रमाया, ये सब

के सब गुमराही और शैतान के रास्ते हैं, जो उनमें पड़ेगा गुमराही में मुब्तला हो जाएगा और जो उनसे बचेगा वह सीधे रास्ते पर क़ायम रहेगा। और जो लम्बा ख़त खींचा है उसके बारे में फ़रमाया, यह सिराते मुस्तक़ीम है, इसी पर तुम्हें क़ायम रहना है। और बाज़ रिवायात में इस बात का भी ज़िक्र है कि सिराते मुस्तक़ीम वही है जो क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ है, उसी पर हज़राते सहाबा किराम रज़ि०, ख़ुल्फ़ाए राशिदीन, आम्मा मुज्तहिदीन साबित क़दमी से चले आ रहे हैं, और इसी की बक़ा और इसी की तब्लीग़ के लिए मदारिस इस्लामिया का क़याम हुआ है और उन मदारिस के अंदर क़ुरआन व हदीस और फ़िक़्ह की जो तालीम दी जाती है वह सिराते मुस्तक़ीम के मुताबिक़ है।

11. वहुवल्लज़ी ला यज़ीग़ु बिहिल अह्वा-उ

जो शख़्स क़ुरआन की तालीमात पर क़ायम रहेगा तो चाहे कितनी ही ख़्वाहिशात उसे सताएँ और कितनी ही गुमराही की बातें उसे रास्ते से हटाकर टेढ़ा करने की कोशिश करें, शैतान और गुमराह लोग उसे अपने रास्ते पर ले जाने की कोशिश करें तो क़ुरआन उसे उधर जाने और टेढ़ा होने नहीं देगा। जब भी वह टेढ़ा चलना चाहेगा और लाइन से हटना चाहेगा, क़ुरआन उसे सीधा कर देगा और लाइन से नीचे उतरने नहीं देगा। हर तरफ़ से दाएँ-बाएँ के सारे रास्ते जाम कर देता है। मजबूरन सीधे रास्ते पर क़ायम रहेगा।

12. वला तलबिसु बिहि अलसि-नतु

दुनिया की कोई ज़बान क़ुरआन की ज़बान के मुशाबा नहीं है। अहले अरब अगरचे अरबी ज़बानें बोलते हैं, मगर क़ुरआन के लहजे और क़ुरआन के मुहावरे और क़ुरआन की फ़साहत व बलाग़त और क़ुरआन के तर्ज़ व सलासत में से उनकी ज़बान किसी भी चीज़ के मुशाबा नहीं है। वह अपनी गुफ़्तुगू में क़ुरआन की एक आयत के मुशाबा भी कोई जुमला नहीं निकाल सकते। जब क़ुरआन नाज़िल हो रहा था तो वह अरब के बड़े-बड़े शुअरा, और ख़ुतबा और उदबा का दौर था। उन्होंने बड़ी कोशिश की कि क़ुरआन की छोटी से छोटी एक आयत के मुशाबा कोई जुमला बनाकर पेश कर दें, मगर सबने उससे आजिज़ आकर घुटने टेक दिए और समझ लिया कि यह इंसान का कलाम नहीं हो सकता। इसलिए कोई भी ज़बान क़ुरआन के मुशाबा नहीं हो सकती।

13. वला तशब-उ मिनहुल उ-ल-मा-उ

और क़ुरआन करीम के उलूम से उलमा के पेट कभी नहीं भरते। क़ुरआन करीम में जितना ग़ौर करते जाओ उसके असरार व रमूज़ बढ़ते जाते हैं तो उनकी तिशनगी भी बढ़ती जाती है। वह कभी आसूदा नहीं होते। आज पंद्रह सौ साल से उलमा क़ुरआन करीम के असरार व रमूज़ पर और उसके मतालिब की गहराई पर ग़ौर करते रहे और हज़ारों और लाखों और करोड़ों की तादाद में किताबें लिखी जा चुकी हैं, मगर क़ुरआन के उलूम और उसके असरार व रमूज़ के हज़ारवें हिस्से तक भी रसाई न कर सके और न ही रसाई हो सकती है।

अल्लामा शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह० का वाक़िआ है, जब वह अपनी आख़िरी उम्र में मर्ज़ुल मौत में मुब्तला हो गए और दस्त की बीमारी शुरू हो गई और बार-बार बैतुलख़ला की ज़रूरत पड़ गई, जिसकी वजह से यकसूई से किताबें मुताला करने का मौक़ा नहीं मिल रहा था तो अपने तल्मीज़े ख़ास अल्लामा इब्नुल क़य्यिम रह० से कहा कि जब मैं बैतुलख़ला के अंदर दाख़िल हो जाऊँ तो तुम बाहर खड़े हो जाना और ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते रहना ताकि मैं बैठे-बैठे सुनता रहूँ। यह वह आलिम हैं जो अपने ज़माने के जबलुल इल्म (इल्म का पहाड़) कहलाते थे। उनकी तस्नीफ़ात सैकड़ों की तादाद में हैं। उन्होंने अपने ज़माने में जो फ़तावा लिखे थे वह उस वक़्त प्रकाशित होकर आ गए थे। हर जिल्द कई-कई सौ सफ़्हात पर मुश्तमिल है। उनके फ़तावा 37 जिल्दों में प्रकाशित होकर आए हैं। अब अंदाज़ा लगा लो कि वह कितने बड़े आलिम थे, मगर क़ुरआन के उलूम से सैराबी हासिल न कर सके और तिशना ही रह गए।

14. वला यख़्लुक़ु अन कसरतिर रद

क़ुरआन करीम बार-बार दोहराने की वजह से पुराना नहीं होता, बल्कि ताज़गी बढ़ती जाती है। दुनिया की हर चीज़ कसरते इस्तेमाल से पुरानी हो जाती है, मगर क़ुरआन करीम बजाए पुराना होने के उसमें ताज़गी आती रहती है और हर मर्तबा उसमें नई चीज़ नज़र आती है।

15. वला तनक़ज़ी अजा-इ-बुहू

और क़ुरआन करीम के अजाइबात और उसके असरार व रमूज़ किसी तरह ख़त्म नहीं हो सकते और कोई इंसान क़ुरआन करीम के असरार व हुक्म की इंतिहा तक नहीं पहुँच सकता। इसको अल्लाह

तबारक व तआला ने सूरह लुक़मान में इन अल्फ़ाज़ के साथ इरशाद फ़रमाया :

"और अगर रूए ज़मीन में जितने दरख़्त हैं उन सबको क़लम बना दिया जाए और समुन्दर को रोशनाई बना दिया जाए उसके बाद मज़ीद सात समुन्दर को रोशनाई बना दिया जाए तब भी अल्लाह तआला के कमालात मुकम्मल और तमाम नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हिक्मतवाला है।"

16. हुवल्लज़ी लम तनत्तहिल जिन्नु इज़्ा समिअतहु हत्ता क़ालू

इन्ना समिअ्ना क़ुरआनन अ-ज-बा, यह्दी इलर्रुशदि फ़-आमन्ना बिहि

बुख़ारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी में एक लम्बी हदीस है। उसका ख़ुलासा यह है कि इस इबादत के ज़रिए एक पूरे वाक़िये की तरफ़ इशारा है कि ज़मानए इस्लाम से पहले शयातीन आसमानों में जाकर वहाँ की बातें लाकर काहिनों को पेश किया करते थे, फिर काहिन लोग उसमें कुछ बढ़ा चढ़ाकर लोगों के सामने पेश किया करते थे। और क़ाहिन लोग जो पेशीन-गोइयाँ किया करते थे, उनमें से बहुत-सी बातें हो जाया करती थीं। इसलिए काहिनों को पैग़म्बरों के दर्जे में मान रखा था। जब अल्लाह तआला ने आप सल्ल० को मबऊस फ़रमाया और क़ुरआन करीम के नुज़ूल का सिलसिला शुरू हो गया तो शयातीन पर आसमानों में जाने पर पाबन्दी लगा दी गई। जब शयातीन आसमानों के क़रीब पहुँचते तो वहाँ के हिफ़ाज़ती फ़रिश्ते शिहाबे-साक़िब यानी आसमानी तीरों और राकिटों से मारकर नीचे गिरा देते। शयातीन और जिन्नात आपस में मशविरा करने लगे कि दुनिया में कोई नई बात पेश आई होगी; जिसकी वजह से आसमानों में जाने पर पाबन्दी शुरू हो गई है। चुनांचे जिन्नातों ने यह फ़ैसला किया कि पूरी रूए ज़मीन में गश्त लगाया जाए, ताकि हमको मालूम हो जाए वह क्या बात है जिसकी वजह से रुकावट पेश आ गई है। चुनांचे हर मुल्क और हर सूबे में जिन्नातों की एक टोली ने गश्त लगाना शुरू कर दिया और उधर हिजाज़ मुक़द्दस में मक्का-मुकर्रमा से शुमाली जानिब मदीना की तरफ़ एक मक़ाम है जिसका नाम उकाज़ है। जाहिलियत के ज़माने में ख़ास-ख़ास अय्याम में वहाँ बाज़ार लगा करता था और हर तरफ़ से अरब क़बाइल उस बाज़ार में ख़रीद व फ़रोख़्त के

लिए जमा होते थे। तो हुज़ूर सल्ल० चन्द सहाबा को लेकर दावते इस्लाम पेश करने की ग़र्ज़ से उकाज़ के बाज़ार के लिए रवाना हो गए और उस बाज़ार में पहुँचने से कुछ पहले एक नख़लिस्तान में आप सल्ल० ने क़याम फ़रमाया और वहाँ रात गुज़ारी। फिर सुबह को फ़ज्र की नमाज़ में जहरी क़िरअत शुरू फ़रमा दी तो जिन्नातों की एक टोली का वहाँ से गुज़र हुआ। वह जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० की क़िरअत सुनकर रुक गई और कहने लगी कि यही वह चीज़ है जो हमारे लिए रुकावट बन गई है। और इसी वक़्त जिन्नातों की उस टोली ने ईमान क़बूल कर लिया और अपनी क़ौम में जाकर कहा : "इन्ना समिअ्ना क़ुरआनन अ-ज-बा, यह्दी इलर्रुशदि फ़-आमन्ना बिहि वलिन नुशरि-क बिरब्बिना अ-ह-दना" कि बेशक हमने एक अजीब व ग़रीब क़ुरआन सुना है जो हिदायत का रास्ता बतलाता है। लिहाज़ा हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते। उसी को जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने मज़्कूरा जुमले में इरशाद फ़रमाया है। (बुख़ारी शरीफ़ 1/106, हदीस 764, 2/732, हदीस 7431, तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/169, मुस्लिम 1/184)

17. व मन क़ा-ल बिही सुदि्-क़

जो शख़्स क़ुरआन के मुताबिक़ बात करेगा उसको झुठलाया नहीं जा सकता, बल्कि उसकी तस्दीक़ की जाएगी।

18. व मन अमि-ल बिही उजि-र

और जो शख़्स क़ुरआन पर अमल करेगा उसको अज़ीमतरीन अज्र व सवाब से माला-माल किया जाएगा।

19. व मन ह-क-म बिही अ-द-ल

और जो शख़्स क़ुरआन करीम के मुताबिक़ लोगों के दर्मियान फ़ैसला करेगा वह कभी बेइंसाफ़ी नहीं कर सकता, बल्कि हक़ के मुताबिक़ अद्ल व इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करेगा।

20. व मन दा-अ् इलैहि हुदि-य इला सिरातिम मुस्तक़ीमि

और जो शख़्स लोगों को क़ुरआन पर ईमान और उसके अहकाम पर अमल की दावत देता है तो ख़ुद उसे सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ होती है और जिनको वह दावत देता है वह भी सिराते मुस्तक़ीम पर चलने लगते हैं। (मिश्क़ात, 356-359)

हज़रत आइशा फ़क़ीर को माल भी देती थीं और दुआ भी

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० के पास जब कोई साइल आता और दुआएँ देता जैसा कि साइलीन का तरीक़ा है तो उम्मुल मोमिनीन भी उस फ़क़ीर को दुआएँ देतीं और बाद में कुछ ख़ैरात देतीं। किसी ने कहा, "ऐ उम्मुल मोमिनीन! आप साइल को सदक़ा भी देती हैं और जिस तरह वह आपको दुआ देता है उसी तरह आप भी दुआ देती हैं।" फ़रमाया कि अगर मैं उसको दुआ न दूँ और फ़क़त सदक़ा दूँ तो उसका एहसान मुझ पर ज़्यादा रहे। इसलिए कि दुआ सदक़े से कहीं बेहतर है इसलिए दुआ की मकाफ़ात दुआ से करती हूँ ताकि मेरा सदक़ा ख़ालिस रहे, किसी एहसान के मुक़ाबिल में न हो।

औरतों की कमज़ोरी

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जब मेराज शरीफ़ जाना हुआ तो वहाँ जन्नत व जहन्नम की भी सैर करना हुआ तो देखा कि जहन्नम के अज़ाब में जो लोग मुब्तला हैं उनमें अकसर औरतें हैं आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि औरतों में दो ख़ामियाँ बहुत कसरत से पाई जाती हैं जिनकी वजह से जहन्नम में जाना होगा।

1. लानत का जुमला कसरत से ज़बान पर जारी हो जाना

जहन्नम में जाने का एक सबब यह है कि औरतें बहुत मामूली मामूली बातों पर ज़बान से लानत का जुमला निकाला करती हैं। मसलन दूध पीते बच्चे से भी अगर कोई बात मिज़ाज के ख़िलाफ़ सादिर हो जाए तो उससे भी कह देती हैं कि तू मरता क्यों नहीं। और जुमला लानत का हाल यह है कि ज़बान से निकलने के बाद वह कभी बेकार नहीं जाता, बल्कि ज़रूर अपना असर दिखा देता है। जिस पर लानत की जाती है अगर वह वाक़ई मुस्तहिक़े लानत है तो उस पर पड़ जाएगी और अगर वह मुस्तहिक़ नहीं है तो जिसने लानत की है उस पर आकर गिरती है। हदीस शरीफ़ मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० से मरवी है कि उन्होंने आप

सल्ल० को कहते हुए सुना है कि "कोई आदमी दूसरे आदमी पर फ़िस्क़ व फ़ुजूर का इल्ज़ाम नहीं लगाता और न ही कुफ़्र की लानत करता है। मगर वह लानत उसकी तरफ़ लौटती है अगर उसका साथी ऐसा नहीं है।" (बुख़ारी शरीफ़ 2/893, हदीस 5810, मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, 5/181)

2. अपने शौहर की नाशुक्री करना

अकसर जहन्नम में जाने का दूसरा सबब यह है कि शौहर की ज़रा-सी बात अपने मिज़ाज के ख़िलाफ़ हो या शौहर कोई मुतालबा उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ पूरा न करे तो पिछले तमाम एहसानात पर एक जुमले से पानी फेर देती हैं कि इस मर्द ने कभी मेरा हक़ अदा नहीं किया, इस मर्द ने तो हमेशा मुझे ज़लील ही किया है, मैंने तो कभी इसमें कोई भलाई नहीं देखी। बस मैं ही हूँ जो उसके पास बांदी बनकर रह रही हूँ वग़ैरह-वग़ैरह। यह सब ऐसे जुमले हैं जो शौहर की ज़िंदगी भर के एहसानात को फ़रामोश कर देनेवाले हैं। यह अल्लाह को किसी तरह पसन्द नहीं है। हदीस पाक मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि आप सल्ल० का इरशाद है कि : "मुझे जहन्नम दिखाई तो देखा कि उसमें अकसर ऐसी औरतें हैं जिन्होंने शौहरों की नाशुक्री की, और उनके एहसानात को फ़रामोश कर दिया था, और अगर तुम उनमें से किसी पर एहसान करो, फिर तुमसे कोई बात ख़िलाफ़े मिज़ाज देख ले तो कह देगी कि मैंने तो कभी भी तुमसे कोई ख़ैर और भलाई नहीं देखी।" (बुख़ारी शरीफ़ 1। 9, हदीस 29, 1/143, हदीस 1042, 2/782, हदीस 5002)

औरतों में नबी सल्ल० का वाज़

एक मर्तबा आप सल्ल० ईदुल फित्र या ईदुल अज़हा की नमाज़ से फ़राग़त के बाद औरतों में वाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए। उस ज़माने में मुसलमानों की तादाद बहुत कम थी। इसलिए शौकते-इसलाम के मुज़ाहिरे की ग़र्ज़ से हर क़िस्म की औरतों को भी ईदगाह ले जाया करते थे, यहाँ तक कि हैज़ व निफ़ास वाली औरतों को भी ले जाया करते थे, जिनके

लिए नमाज़ में शिरकत जाइज़ नहीं है। औरतों के लिए बिल्कुल अलग इंतिज़ाम होता था। बहरहाल आँहज़रत सल्ल० ने जहाँ औरतों का नज़्म था वहां तशरीफ़ ले जाकर एक वाज़ फ़रमाया उसका ख़ुलासा यह है—

"ऐ ख़्वातीन की जमाअत! मैंने तुममें से अकसर को जहन्नम में देखा है और जहन्नम से हिफ़ाज़त का ज़रिया यही है कि तुम कसरत से सदक़ा व ख़ैरात करो और इस्तिग़फ़ार करो, इसलिए कि इस्तिग़फ़ार और सदक़ा तुम्हारे और जहन्नम के दर्मियान दीवार की तरह हाइल हो जाएंगे।"

जब आप सल्ल० ने यह इरशाद फ़रमाया तो एक निहायत समझदार और होशियार क़िस्म की औरत ने खड़े होकर आप सल्ल० से सवाल करना शुरू कर दिया। उसने कहा, या रसूलल्लाह! क्या बात है कि हममें से अकसर जहन्नम में होंगी? तो इस पर आप सल्ल० ने जवाब दिया कि दो ख़राबियों की वजह से जो तुम्हारे अंदर पाई जाती हैं :

1. तुम कसरत के साथ बात-बात पर लानत करती हो। अगर छोटे मासूम बच्चे से भी कोई बात मिज़ाज के ख़िलाफ़ सादिर हो जाए तो कह देती हो कि तू मरता क्यों नहीं? ऐसी औलाद की ज़रूरत नहीं वग़ैरह-वग़ैरह।
2. तुम शौहरों की नाशुक्री करती हो। अगर मर्ज़ी के मुताबिक़ बात पूरी न करे या कोई मुतालबा पूरा न करे तो कह देती हो कि इस शौहर से कभी कोई ख़ैर और भलाई नहीं देखी।

ये दोनों बातें अल्लाह तआला को क़तअन पसन्द नहीं, इसलिए ख़्वातीने इस्लाम! इसकी कोशिश करो कि ये दोनों बातें अपने अंदर से दूर हो जाएँ।"

फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया कि : "मिनजानिब अल्लाह तुम्हारे अंदर दो नुक़्स हैं : एक तुम्हारे अंदर अक़्ल की कमी है। इसी वजह से अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में फ़रमाया कि दो औरतों की शहादत एक मर्द की शहादत के बराबर है। यह अक़्ल की कमी की वजह से है। दूसरी दीन की कमी है। वह यह है कि हर महीने में चन्द रोज़ ऐसे गुज़ारती हो कि उन दिनों में न रोज़ा रख सकती हो और न ही नमाज़ पढ़ सकती हो। नमाज़-रोज़े से महरूम हो जाना दीन की कमी है।

नीज़ आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अक़्ल व दीन की कमी के बावजूद तुम्हारे अंदर एक महारत ऐसी है कि जो किसी में नहीं है, और वह यह है कि शौहर कितना ही होशियार और समझदार क्यों न हो, मगर तुम एक जुमले में उसकी अक़्ल उड़ाकर रख देती हो जिससे वह होश व हवास सब खो बैठता है।

आप सल्ल० की इस तक़रीर के बाद औरतों में से किसी ने अपने गले का हार, किसी ने हाथ का कंगन, किसी ने पाज़ेब, किसी ने कान के बुन्दे, ग़र्ज़ यह कि जिसके पास जो था निकाल-निकाल कर देना शुरू कर दिया और हज़रत बिलाल रज़ि० एक थैली में भरने लगे। इस हदीस शरीफ़ से दीनी काम के लिए चन्दा करना भी हुज़ूर सल्ल० से साबित है।

हदीस शरीफ़ मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० ने फ़रमाया कि आप सल्ल० ईदुल अज़हा या ईदुल फ़ित्र में ईदगाह तशरीफ़ ले गए। फिर औरतों में तशरीफ़ ले गए तो फ़रमाया, "ऐ औरतों की जमाअत! तुम कसरत से सदक़ा करो इसलिए कि मैंने तुममें से अकसर को जहन्नम में देखा है।" तो औरतों ने कहा "या रसूलल्लाह! ऐसा क्यों?" तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि "तुम कसरत से लानत करती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो। दीन और अक़्ल की कमी के बावजूद अक़्लमंद होशियार आदमी की खोपड़ी को उड़ाकर रख देने वाली तुम जैसा किसी को नहीं देखा।" तो औरतों ने कहा कि हमारी अक़्ल और दीन की कमी क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमाया : "क्या एक औरत की शहादत एक मर्द की निस्फ़ शहादत के बराबर नहीं है? यह उनकी अक़्ल की कमी की वजह से है।" नीज़ आप सल्ल० ने फ़रमाया : "क्या औरत जब माहवारी की हालत में होती है तो न नमाज़ पढ़ती है और न ही रोज़ा रखती है?" औरतों ने कहा "कि जी हां।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "यही उनके दीन की कमी है।"

मियाँ-बीवी रफ़ीक़ बनें, फ़रीक़ नहीं

दुनियाए इंसानियत की बक़ा और नस्ले इंसानी का वुजूद मर्द और

औरत के बाहमी इरतिबात व ताल्लुक़ से है। यह ताल्लुक़ जिस क़द्र गहरा और मुहब्बत व उल्फ़त से लबरेज़ होगा, उसी क़द्र उसका नतीजा भी बेहतर और नफ़ाबख़्श होगा। इंसान की फ़ितरत अल्लाह तआला ने ऐसी बनाई है कि जब उसे किसी चीज़ से मुहब्बत और उन्स होता है तो उसके देखने और उसके पास रहने से राहत और सुकून महसूस करता है और जिस चीज़ से तबई तौर पर नफ़रत होती है उससे उसको घुटन और तकलीफ़ का एहसास होता है। चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को दुनिया का निज़ाम और नस्ल इंसानी का वुजूद क़ियामत तक बाक़ी रखना मक़्सूद है इसलिए मर्द के अंदर औरत की तरफ़ रग़बत व ख़्वाहिश और औरत के अंदर मर्द की तरफ़ तबई मैलान वदीअत फ़रमा दिया है, चुनांचे इंसानी ज़िंदगी में एक ऐसा वक़्त आता है जब मर्द व औरत दोनों एक-दूसरे के सख़्त मोहताज होते हैं और एक-दूसरे की ज़रूरत बन जाते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी आख़िरी किताब क़ुरआन करीम में उस ज़रूरत को निहायत लतीफ़ पैराये में बयान फ़रमाया है, अगर हम सिर्फ़ उस पर ग़ौर करें और उसके मुतालबात को पूरा करने की कोशिश करें तो इंशाअल्लाह हमारी इज़दिवाजी ज़िंदगी उतनी ही ख़ुशगवार और इत्मीनानबख़्श होगी जो हमारा मत्लूब व मक़्सूद है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है, "वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो।" यहाँ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक-दूसरे की एहतियाज और ज़रूरत को लिबास से ताबीर किया है और फ़रमाया है कि जिस तरह इंसान को हर मौसम में कपड़े की ज़रूरत होती है और उससे ज़ेब व ज़ीनत इख़्तियार करता है, उसी तरह मर्द व औरत को एक-दूसरे की ज़रूरत होती है और कोई भी एक-दूसरे से बेनियाज़ नहीं हो सकता। इसलिए चाहिए कि दोनों एक-दूसरे की ज़रूरत बनकर ज़िंदगी गुज़ारें न कि एक-दूसरे से बेनियाज़ होकर।

क़ुरआन करीम की इस आयत से यह बात भी मालूम होती है कि जिस तरह लिबास इंसान के जिस्म से जुदा नहीं होता और पूरी ज़िंदगी उसको लिबास की एहतियाज होती है उसी तरह एक औरत को अपने शौहर के साथ और शौहर को अपनी बीवी के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ क़ायम रखना चाहिए। इस अंदाज़े फ़िक्र से एक-दूसरे की कमी को नज़रअंदाज़ करने का जज़्बा पैदा होता है। इसलिए कि मुहब्बत की आँखें

ऐब को छुपाती हैं और चश्मपोशी करती हैं। जबकि नफ़रत व अदावत की आँखें बुराइयों की तलाश करती हैं और उसको ज़ाहिर करती हैं। लिहाज़ा फ़ितरी तौर पर अल्लाह तआला ने ज़ौजैन के दिल में एक-दूसरे से मुहब्बत और जज़्बए रहमत पैदा फ़रमा दिया ताकि उनकी ज़िंदगी ख़ुशगवार हो।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "मर्द को ख़्वामख़्वाह औरत की ऐबजोई और नापसंदीदगी का इज़्हार नहीं करना चाहिए। अगर उसकी कोई आदत बुरी है जो उसे नापसन्द है तो दूसरी आदत और ख़स्लत अच्छी भी होगी जो उसे ख़ुश कर देगी।" (मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि "औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है। अगर तुम उसे सीधी करना चाहोगे तो उसे तोड़ डालोगे, लिहाज़ा उसके साथ अच्छा बर्ताव करो तो अच्छी ज़िंदगी गुज़रेगी।" (इब्ने हिबान)

मालूम हुआ कि औरत के साथ रिफ़ाक़त के लिए ज़रूरी है कि उसकी कमज़ोरियों को नज़रअंदाज़ किया जाए। उसको ज़्यादा सख़्त-सुस्त न कहा जाए और उसके साथ ख़ुशगवार ज़िंदगी गुज़ारने की हर मुमकिन कोशिश की जाए। अगर इस नीयत और इरादे से उसके साथ मामला करेंगे तो इंशाअल्लाह इज़दिवाजी ज़िंदगी हमेशा ख़ुशगवार होगी।

क़ुरआन की इस आयत में इस तरफ़ भी इशारा है कि जिस तरह लिबास इंसान के ज़ाहिरी उयूब की पर्दापोशी करता है, मर्द व औरत भी एक दूसरे के लिए लिबास के मानिन्द हैं। उनमें से हर एक को चाहिए कि एक-दूसरे की पर्दापोशी करें।

अगर एक तरफ़ अल्लाह और उसके प्यारे रसूल सल्ल० ने मर्दों को ताकीद की है कि वह औरतों के साथ अच्छा सुलूक करें और उनके साथ नर्मी और मुहब्बत से पेश आएँ तो उसके साथ औरतों के लिए भी कुछ फ़राइज़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं।

पड़ोसी के शर से बचने का नबवी नुस्ख़ा

हदीस में एक वाक़िआ आता है कि एक शख़्स हाज़िर हुआ। उसने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! मेरा पड़ोसी मुझे इतना सताता है कि उसने

मेरी ज़िंदगी तल्ख़ कर दी। मैंने ख़ुशामदें कर लीं, सब कुछ कर लिया, मगर ऐसा मूज़ी है कि रात-दिन मुझे ईज़ा पहुंचाता है। या रसूलल्लाह! मैं क्या करूँ? मैं तो आजिज़ आ गया।" फ़रमाया, "मैं तदबीर बताता हूँ, वह यह कि सारा सामान घर से निकाल कर सड़क पर रख दे और सामान के ऊपर बैठ जा और जो आगे पूछे कि भाई घर के होते हुए सड़क पर क्यों बैठे हुए हो? कहना कि पड़ोसी सताता है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि भाई घर छोड़ दो, इस वास्ते मैंने छोड़ दिया।" चुनांचे लोग आए पूछा कि भई! घर क्यों छोड़ दिया, घर मौजूद है। सामान यहाँ क्यों है? उसने कहा, जी क्या करूँ, पड़ोसी ने सताने में इंतिहा कर दी। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि भई घर छोड़ दे। तो जो सुने वह कहे लानत उस पड़ोसी के ऊपर। जो आ रहा है, वाक़िआ सुन रहा है, लानत-लानत करता है। मदीना में सुबह से शाम तक हज़ारों लानतें उस पर हुईं। लानतों की तस्बीह पढ़ी जाने लगी।

वह पड़ोसी मूज़ी आजिज़ आया उसने आके हाथ जोड़े और कहा, ख़ुदा के वास्ते घर चल। मेरी ज़िंदगी तो तबाह व बर्बाद हो गई, और मैं वादा करता हूँ कि उम्र भर अब कभी नहीं सताऊँगा, बल्कि तेरी ख़िदमत करूँगा। अब उन्होंने नख़रे करने शुरू कर दिए कि बता फिर तो नहीं सताएगा? उसने कहा, हलफ़ उठाता हूँ, कभी नहीं सताऊँगा। अलग़र्ज़ उसे घर में लाया। सारा सामान ख़ुद रखा और रोज़ाना ईज़ा पहुँचाने के बजाए ख़िदमत शुरू कर दी।

तो तदबीर कारगर हुई। हुज़ूर सल्ल० ने यह तदबीर अक़्ल से बतलाई थी। वह्य के ज़रिए से नहीं। तो पैग़म्बर अक़्लमंद भी इतने होते हैं कि उनकी अक़्ल के सामने दुनिया की अक़्ल गर्द होती है। और उसकी वजह यह है कि अक़्ल अल्लाह से ताल्लुक़े क़वी होने का नाम है। अल्लाह से ताल्लुक़ होगा तो दिल का रास्ता सीधा-सीधा होगा। अक़्लमंदी यही है कि अख़ीर तक की बात आदमी को सीधी नज़र आ जाए। वह बग़ैर ताल्लुक़ मय अल्लाह के नहीं होती। ताल्लुक़ अल्लाह से न रहे फिर आदमी अक़्लमंद बने, वह अक़्ल नहीं चालाकी व अय्यारी होती है। अय्यारी और चीज़, अक़्लमंदी और चीज़ है। चालाकी में धोखादही होती है। धोखादही से अपनी ग़र्ज़ पूरी की जाती है। अक़्ल में किसी को धोखा नहीं दिया जाता। सीधी बात तदबीर से अंजाम दी जाती है तो अंबिया

अलैहि० की निस्बत अल्लाह से किसका ताल्लुक़ ज़्यादा मज़बूत हो सकता है? तो उनसे ज़्यादा अक़्ल भी किसकी कामिल हो सकती है? (इस हदीस का मज़्मून देखिए तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1:659)

सिर्फ़ आँखें ही अंधी नहीं होतीं दिल भी अंधा होता है

"क्या उन्होंने ज़मीन में सैर व सियाहत नहीं की जो उनके दिल इन बातों को समझनेवाले होते या कानों से ही उन वाक़िआत को सुन लेते। बात यह है कि सिर्फ़ आँखें ही अंधी नहीं होतीं, बल्कि वह दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।" (सूरह हज्ज, आयत 46)

तशरीह : सल्फ़ से मंक़ूल है कि फ़िरऔन के ख़ुदाई दावे और ख़ुदा की पकड़ के दर्मियान चालीस साल का अर्सा था। रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला हर ज़ालिम को ढील देता है। फिर जब पकड़ता है तो छुटकारा नहीं होता। फिर आप सल्ल० ने यह आयत पढ़ी।

وَكَذٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهٗٓ أَلِيْمٌ شَدِيْدٌ

फिर फ़रमाया कि कई एक बस्तियोंवाले ज़ालिमों को जिन्होंने रसूलों की तक्ज़ीब की थी हमने ग़ारत कर दिया जिनके महलात खंडर बने पड़े हैं। औंधे गिरे हुए हैं, उनकी मंज़िलें वीरान हो गईं। उनकी आबादियाँ उजड़ गईं। उनके कुएँ ख़ाली पड़े हैं। जो कल तक आबाद थे, आज ख़ाली हैं। उनके चूना गच महल जो दूर से सफ़ेद चमकते हुए दिखाई देते थे, जो बुलन्द व बाला और पुख़्ता थे वह आज उजड़े पड़े हैं। वहाँ उल्लू बोल रहा है। उनकी मज़बूती उन्हें न बचा सकी। उनकी ख़ूबसूरती और पायदारी बेकार साबित हुई। रब के अज़ाब ने उन्हें तहस-नहस कर दिया। जैसे फ़रमान है :

أَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ

गो तुम चूनागच क़िलों में महफ़ूज़ हो लेकिन मौत वहाँ भी तुम्हें छोड़ने की नहीं। क्या वह ख़ुद ज़मीन में चले फिर नहीं? न ही कभी ग़ौर व फ़िक्र किया कि कुछ इबरत हासिल होती।

इमाम इब्ने अबी अद्दुनया रह०, किताब तफ़क्कुर वल ऐतिबार में

रिवायत बक़लम किए हैं कि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहि० के पास वह्य भेजी कि ऐ मूसा! लोहे की नालैन पहन कर लाहे की लकड़ी लेकर ज़मीन में चल फिरकर आसार व इबरत को देख, वे ख़त्म न होंगे यहाँ तक कि तेरी लोहे की जूतियाँ टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ और लोहे की लकड़ी भी टूट-फूट जाए।

इस किताब में बाज़ दानिशमंदों का क़ौल है कि वाज़ के साथ अपने दिल को ज़िंदा कर, और ग़ौर व फ़िक्र के साथ उसे नूरानी कर, और ज़ुहद और दुनिया से बचने के साथ उसे मार दे और यक़ीन के साथ उसे क़वी कर ले, और मौत के ज़िक्र से उसे ज़लील कर दे, और फ़ना के यक़ीन से उसे सब्र दे, दुनिया की मुसीबतें उसके सामने रखकर उसकी आंखें खोल दे, ज़माने की तंगी उसे दिखाकर उसे दहशतनाक बना दे। दिनों के उलट-फेर समझा कर उसे बेदार कर दे, गुज़िश्ता वाक़िआत से उसे इबरतनाक बना, अलगों के क़िस्से सुनाकर होशियार रख, उनके शहरों में और उनके सवानेह में ग़ौर व फ़िक्र करने का आदी बना, और देख कि गुनाहगार के साथ उसका मामला कैसा कुछ हुआ, किस तरह वह लोट-पोट कर दिए गए। पस यहाँ भी यही फ़रमान है कि अगलों के वाक़िआत सामने रखकर दिलों को समझदार बनाओ, उनकी हलाकत के सच्चे फ़साने सुनकर इबरत हासिल करो। सुन लो आँखें ही अंधी नहीं होतीं बल्कि सबसे बुरा अंधापा दिल का है। गो आँखें सही सालिम मौजूद हैं, दिल के अंधापे की वजह से न तो इबरत हासिल होती है, न ख़ैर व शर की तमीज़ होती है। अबू मुहम्मद इब्ने हिब्बान उंदुलुसी रह० ने जिनका इंतिक़ाल सन् 517 हि० में हुआ है इस मज़्मून को अपने चन्द अशआर में ख़ूब निभाया है। वह फ़रमाते हैं :

ऐ वह शख़्स जो गुनाहों में लज़्ज़त पा रहा है क्या अपने बुढ़ापे और बुरे आपे से भी तू बेख़बर है? अगर नसीहत असर नहीं करती तो क्या देखने-सुनने से भी इबरत हासिल नहीं होती? सुन ले! आँखें और कान अपना काम न करें तो इतना बुरा नहीं जितना बुरा यह है कि वाक़िआत से सबक़ हासिल न किया जाए। याद रख न तो दुनिया बाक़ी रहेगी न आसमान, न सूरज-चाँद, गो जी न चाहे मगर दुनिया से तुमको एक दिन बादिले नाख़्वास्ता कूच करना ही पड़ेगा। क्या अमीर हो क्या ग़रीब, क्या शहरी हो क्या देहाती। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3 : 430-431)

सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल होने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने एक मर्तबा आँहज़रत सल्ल० से कहा, "हुज़ूर! जब मैं आपको देखता हूँ मेरा जी ख़ुश हो जाता है और मेरी आँखें ठंडी होती हैं। आप हमें तमाम चीज़ों की असलियत से ख़बरदार कर दें। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अबू हुरैरह! तमाम चीज़ें पानी से पैदा की गई हैं।

फिर मैंने कहा या रसूलल्लाह! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। आप सल्ल० ने फ़रमाया : (1) लोगों को सलाम किया करो, (2) खाना खिलाया करो, (3) सिला रहमी करते रहो, (4) और रात को जब लोग सोए हुए हों तो तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो, ताकि सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3 : 374)

लोगों के ऐब न टटोलो वरना अल्लाह तआला रुसवा कर देगा

हदीस शरीफ़ में है कि बन्दगाने ख़ुदा को ईज़ा न दो, उन्हें आर न दिलाओ, उनकी पोशीदगियाँ न टटोलो। जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के ऐब टटोलेगा, अल्लाह तआला उसके ऐबों के पीछे पड़ जाएगा और उसे यहाँ तक रुसवा करेगा कि उसके घर वाले भी उसे बुरी नज़र से देखने लगेंगे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, 3 : 492)

एक नौजवान सहाबी की हुज़ूर सल्ल० से अजीब मुहब्बत

हुज़ूर सल्ल० ने मुहब्बत पर जो दुआ की है, किसी पर नहीं दी। हज़रत तलहा बिन बरा रज़ि० ने आकर कहा कि हुज़ूर! आपसे मुझे बहुत मुहब्बत है, जो हुक्म दें, करूँगा। फ़रमाया, अपनी माँ का गला काट कर ला। इम्तेहान था। फ़ौरन तलवार उठाकर माँ की तरफ़ चले कि हुज़ूर सल्ल० ने वापस बुलाकर कहा कि मैं रिश्ते काटने के वास्ते नहीं आया।

तेरी मुहब्बत का इम्तेहान था, तेरी माँ नहीं मरवानी। उससे ज़ाती ताल्लुक़ मरवाना है। माँ से मिलो कि ख़ुदा ने कहा है, न कि अपने ज़ाती ताल्लुक़ की वजह से।

इस वाक़िये के बाद हज़रत तलहा रज़ि० बीमार हो गए। हुज़ूर सल्ल० उन्हें पूछने आए। ताल्लुक़ दिलों की पूछ हुआ करती है, जब हुज़ूर सल्ल० पहुँचे तो हज़रत तलहा रज़ि० बेहोश थे। थोड़ी देर बैठने के बाद फ़रमाया कि यह चल देनेवाला है, इसके मरने की इत्तिला मुझे करना। यह कहकर आप सल्ल० तशरीफ़ ले गए। तशरीफ़ ले जाते ही उन्हें होश आया। कहने लगे कि हुज़ूर सल्ल० मुझे पूछने नहीं आए? कहा गया, आए थे। कहने लगे, जब मर जाऊँ ख़ुद ही दफ़न कर देना। हुज़ूर सल्ल० को इसकी इत्तिला न करना कि मेरे मुहल्ले में यहूदी रहते हैं। अगर हुज़ूर सल्ल० मेरी वजह से रात यहाँ तशरीफ़ लाएँ तो मुमकिन है कि किसी यहूदी से उन्हें तकलीफ़ पहुँचे। मेरे नाम पर हबीब को एक ज़र्रा की तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं है।

चुनांचे इंतिक़ाल हुआ। रिश्तेदारों ने नहला-धुलाकर कफ़न पहनाकर दफ़न कर दिया। इस ज़माने में मरनेवाले के रिश्तेदार मुम्बई, कलकत्ता से आने का इंतिज़ार करते हैं और यहाँ हुज़ूर सल्ल० जैसे का भी इंतिज़ार नहीं, मरने और दफ़न में यूँ वक़्त नहीं लगता था। अरे वहाँ तो हुक्म है कि मय्यत को जल्दी लेकर चलो, अगर अच्छा आदमी है तो उसे ताख़ीर करके उसकी नेमतों से क्यों महरूम कर रहे हो? और अगर बुरा आदमी है तो फिर उसे अपने कंधों पर क्यों उठा रखा है? जल्दी इस वजह से करवाई कि उसका अज़ाब घर ही में शुरू न हो जाए। तारीख़ इसकी शाहिद है, उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद जिसके हुक्म पर हज़रत हुसैन रज़ि० शहीद हुए, वह क़त्ल हुआ। उसका सर रखा हुआ था, एक अज़दहा आया, नाक में घुसकर मुँह से निकल आया। दो मर्तबा ऐसा ही किया। सुलैमान (उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० से पहले बादशाह) की मय्यत को जब क़ब्र में रखा जाने लगा। मय्यत हिली। लड़के ने कहा, मेरा बाप ज़िंदा हो गया। हज़रत उमर रह० ने कहा, जल्दी करो, दफ़न में ख़ुदा की पकड़ ने आ लिया है।

अलग़र्ज़ सुबह को हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला मिली। सबब मालूम हुआ। क़ब्र पर गए। दुआ में यह भी कहा : ऐ अल्लाह तू इससे ऐसे

मिल कि तू इसे देखकर हँस रहा हो, यह तुझे देखकर हँस रहा हो। यह मुहब्बत का इनाम है, जिसमें इंसान को महबूब के अलावा और कुछ नहीं भाता। मुहब्बत अगर आ गई तो सारे अमल आ जाएँगे। इस मुहब्बत के वास्ते आमाल पर मेहनत माँगी जाती है। (ख़ुसूसी तक़ादीर हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब, सफ़ा : 5-6, इस क़िस्से का मज़्मून देखिए हयातुस्सहाबा जिल्द 2 : 413)

जन्नत की नेमतों और बिखरे मोतियों का तज़्किरा में है

यह वहाँ तख़्तों पर टेक लगाए हुए बैठेंगे, न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की सख़्ती। उन जन्नतों के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके मेवे और लच्छे नीचे लटकाए हुए होंगे। और उन पर चांदी के बर्तनों और उन जामों का दौर कराया जाएगा जो शीशे के होंगे। शीशे भी चांदी के जिनको साक़ी ने अंदाज़ से नाप रखा होगा, और उन्हें वहाँ वह जाम पिलाए जाएँगे जिनकी मिलोनी ज़ंजबील की होगी, जो जन्नत की एक नहर है जिसका नाम सुलसबील है, और उनके इर्द-गिर्द घूमते-फिरते हैं वे कमसिन बच्चे जो हमेशा रहनेवाले हैं। जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वे बिखरे हुए सच्चे मोती हैं। तू वहाँ जहाँ कहीं भी नज़र डालेगा सरासर नेमतें और अज़ीमुश्शान सल्तनत ही देखेगा। उनके जिस्मों पर सब्ज़ महीन और मोटे रेशमी कपड़े होंगे और उन्हें चांदी के कंगन का ज़ेवर पहनाया जाएगा और उन्हें उनका रब पाक-साफ़ शराब पिलाएगा। (कहा जाएगा) यह ही तुम्हारे आमाल का बदला, और तुम्हारी कोशिशों की क़द्रदानी है। (सूरा दह्र, आयत 13-22)

तशरीह : जन्नतियों की नेमतों और राहतों का, उनके मुल्क व माल और जाह व मनाल का ज़िक्र हो रहा है कि ये लोग बआराम तमाम पूरे इत्मीनान और ख़ुशदिली के साथ जन्नत के मरसा और मुज़य्यन जुड़ाव तख़्तों पर बेफ़िक्री से तकिए लगाए सुरूर व राहत से बैठे मज़े लूट रहे होंगे फिर एक और नेमत बयान हो रही है कि वहाँ न तो सूरज की तेज़ शुआओं से उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी, न जाड़े की बहुत सर्द हवाएँ उन्हें नागवार गुज़रेंगी, बल्कि बहार का-सा मौसम हर वक़्त और हमेशा रहता

हैं। गर्मी, सर्दी के झमेलों से अलग हैं। जन्नती दरख़्तों की शाख़ें झूम-झूमकर उन पर साया किए हुए होंगी और मेवे उनसे बिल्कुल क़रीब होंगे, चाहे लेटे-लेटे तोड़कर खा लें, चाहे बैठे-बैठे ले लें, चाहे खड़े होकर ले लें। दरख़्तों पर चढ़ने की और तकलीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं। सरों पर मेवेदार गुच्छे और लदे हुए लच्छे लटक रहे होंगे कि तोड़ा और खा लिया। अगर खड़े हैं तो मेवे उतने ऊँचे हैं, बैठे तो क़दरे झुक गए, लेटे तो और क़रीब आ गए, न तो काँटों की रुकावट है और न दूरी की सरदर्दी है।

हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की है और उसकी मिट्टी मुश्के ख़ालिस है, उसके दरख़्तों के तने सोने-चाँदी के हैं, डालियाँ लुअलुऊ, ज़बरजद और याक़ूत की हैं। उनके दर्मियान पत्ते और फल हैं जिनके तोड़ने में कोई दिक़्क़त और मुश्किल नहीं। चाहो बैठे-बैठे तोड़ लो, चाहो खड़े-खड़े बल्कि अगर चाहें लेटे लेटे। एक तरफ़ ख़ुश-ख़राम, ख़ुश-दिल, ख़ूबसूरत बाअदब सलीक़ा-शिआर, फ़रमाँबरदार ख़ादिम, क़िस्म-क़िस्म के खाने, चांदी की कश्तियों में लगाए लिए खड़े हैं। दूसरी जानिब शराब तहूर से छलकते हुए बिलोरें जाम लिए साक़ियाने महवश इशारे के मुंतज़िर हैं, यह ग्लास सफ़ाई में शीशे जैसे और सफ़ेदी में चाँदी जैसे होंगे। दरअस्ल होंगे चाँदी के लेकिन शीशे की तरह शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि अंदर की चीज़ बाहर से नज़र आएगी। जन्नत की तमाम चीज़ों की यूँ ही-सी बराए नाम मुशाबहत दुनिया की चीज़ों में भी पाई जाती है। लेकिन इन चाँदी के बिलोरें ग्लासों की मिसाल नहीं मिलती, फिर यह जाम नपे-तुले हुए हैं, साक़ी के हाथ में भी ज़ेब दें, उनकी हथेलियों पर भले मालूम हों और पीनेवालों की हस्बे ख़्वाहिश शराबे तहूर उसमें समा जाए, जो न बचे न घटे। उन नायाब ग्लासों में जो पाक, ख़ुशज़ाइक़ा और सुरूर वाली बेनशे की शराब उन्हें मिलेगी, वह जन्नत की नहर सलसबील के पानी से मख़्लूत करके दी जाएगी, जैसा ऊपर गुज़र चुका है कि नहर काफ़ूर के पानी से मख़्लूत करके दी जाएगी तो मतलब यह है कि कभी उस ठंडक वाले सर्द मिज़ाज पानी से, कभी उस नफ़ीस गर्म मिज़ाज पानी से ताकि ऐतिदाल क़ायम रहे। यह नेक लोगों का ज़िक्र है और ख़ास मुक़र्रबीन ख़ालिस उस नहर का शरबत पिएँगे। सलसबील बक़ौल इकरमा रह० जन्नत के एक चश्मे का नाम है क्योंकि वह तेज़ी के साथ मुसलसल रवानगी से लहरया चाल बह रहा है, उसका पानी बहुत हल्का निहायत शीरीं, ख़ुशज़ाइक़ा और ख़ुश्बू है जो आसानी से पिया जाए और सहता-

पचता रहे।

इन नेमतों के साथ ही ख़ूबसूरत हसीन नौख़ेज़ कमउम्र लड़के उनकी ख़िदमत के लिए कमरबस्ता होंगे। यह ग़ुलमाने जन्नती जिस सिनो साल में होंगे उसी में रहेंगे। यह नहीं कि सिन बढ़कर सूरत बिगड़ जाए। यह नफ़ीस पोशाकें और बेशक़ीमत चढ़ाव ज़ैवर पहने हुए बेतादाद कसीर इधर-उधर मुख़्तलिफ़ कामों पर बटे हुए होंगे जिन्हें दौड़े-भागे मुस्तैदी और चालाकी से अंजाम दे रहे होंगे। ऐसा मालूम होगा गोया सफ़ेद आबदार मोती इधर-उधर जन्नत में बिखरे पड़े हैं। हक़ीक़त में उससे ज़्यादा अच्छी तशबीह उनके लिए कोई और न थी कि ये साहिबे जमाल, ख़ुश-ख़साल बूटे से क़द वाले सफ़ेद नूरानी चहरों वाले पाक-साफ़ सजी हुई पोशाकें पहने हुए जेवर में लदे हुए, अपने मालिक की फ़रमाँबरदारी में दौड़ते-भागते इधर उधर फिरते, ऐसे भले होंगे जैसे सजे-सजाए पुर तकल्लुफ़ फ़र्श पर सफ़ेद चमकीले सच्चे मोती इधर-उधर लुढ़क रहे हों। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हर एक जन्नती के एक हज़ार ख़ादिम होंगे जो मुख़्तलिफ़ काम-काज में लगे हुए होंगे।

फिर फ़रमाता है, ऐ नबी! तुम जन्नत की जिस जगह नज़र डालो तुम्हें नेमतें और अज़ीमुश्शान सल्तनत ही सल्तनत नज़र आएगी। तुम देखोगे कि राहत व सुरूर नेमत व नूर से चप्पा-चप्पा मामूर है। चुनांचे सही हदीस में है कि सबसे आख़िर में जो जहन्नम से निकाला जाएगा और जन्नत में भेजा जाएगा उससे जनाब बारी तबारक व तआला फ़रमाएगा, जा मैंने तुझे जन्नत में वह दिया जो मिस्ल दुनिया के है बल्कि उससे भी दस हिस्से ज़्यादा दिया। और हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत से वह हदीस भी पहले गुज़र चुकी है जिसमें है कि अदना जन्नती की मिल्कियत व मुल्क दो हज़ार साल की मुसाफ़त का होगा। हर क़रीब व बईद की चीज़ पर उसकी बयक नज़र यकसां निगाहें होंगी, यह हाल तो है अदना जन्नती का फिर समझ लो कि आला जन्नती का दर्जा क्या होगा और उसकी नेमतें कैसी होंगी।

ऐ ख़ुदा! ऐ बग़ैर हमारे दुआ और अमल के हमें शीरे मादर के चश्मे इनायत करनेवाले! हम बआजिज़ी व अलहाह तेरी पाक जनाब में अर्ज़ गुज़ार हैं कि तू हमारी ललचाई हुई तबीअत के अरमानों को पूरा कर और हमें भी जन्नतुल फ़िरदौस नसीब फ़रमाँ गो ऐसे आमाल न हों, लेकिन

ईमान है तो तेरी रहमत आमाल पर ही मौक़ूफ़ नहीं। आमीन

तबरानी की एक बहुत ही ग़रीब हदीस में वारिद है कि एक हब्शी दरबारे रिसालत में हाज़िर हुआ। आप सल्ल० ने उसे फ़रमाया, तुम्हें जो कुछ पूछना हो, जिस बात को समझना हो, पूछ लो। उसने कहा, या रसूलल्लाह! सूरत-शक्ल में, रंग-रूप में, नबूवत व रिसालत में आप सल्ल० को हम पर फ़ज़ीलत दी गई है। अब तो यह फ़रमाइए कि अगर मैं भी उन चीज़ों पर ईमान लाऊँ जिन पर आप ईमान लाए हैं और जिन पर आप अमल करते हैं अगर मैं भी उसी पर अमल करूँ तो क्या जन्नत में आपके साथ हो सकता हूँ? आप सल्ल० ने फ़रमाया, "हाँ, क़सम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है कि स्याह रंग लोगों को जन्नत में वह सफ़ेद रंग दिया जाएगा जो एक हज़ार साल के फ़ासले से दिखाई देगा।" फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "जो शख़्स ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहे उसके लिए ख़ुदा के पास अह्द मुक़र्रर हो जाता है और जो शख़्स सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही कहे उसके लिए एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं।" तो एक शख़्स ने कहा, फिर या रसूलल्लाह! हम कैसे हलाक हो जाएँगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया सुनो! एक शख़्स इतनी नेकियाँ लाएगा कि अगर किसी बड़े पहाड़ पर रखी जाएँ तो उस पर बोझिल पड़ें लेकिन फिर जो ख़ुदा की नेमतें उसके मुक़ाबिल आएँगी तो क़रीब होगा कि सब फ़ना हो जाएँ, मगर यह और बात है कि रहमते रब तवज्जोह फ़रमाए, उस वक़्त यह सूरत "मुलकन कबीरा तक उतरी" तो उसी हब्शी ने कहा कि ऐ हुज़ूर! जो कुछ आपकी आँखें जन्नत में देखेंगी क्या मेरी आँखें भी देखेंगी? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि हाँ। पस वह रोने लगा यहाँ तक कि उसकी रूह परवाज़ कर गई। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने मुबारक हाथ से उसे दफ़न किया।

फिर अहले जन्नत के लिबास का ज़िक्र हो रहा है कि वह सब्ज़ हरे रंग का महीन और चमकदार रेशम होगा, सुंदुस आला दर्जे का ख़ालिस नर्म रेशम, जो बदन से लगा हुआ होगा। इस्तबरक़ उम्दा बेशबहा गिराँक़द्र रेशम जिसमें चमक-दमक होगी जो ऊपर पहनाया जाएगा। साथ ही चांदी के कंगन हाथों में होंगे। यह लिबास अबरार का है। और मुक़र्रबीने ख़ास के बारे में और जगह इरशाद है "युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन्

ज़-ह-बिवँ व लुअ्लू अन् व लिबासुहुम फ़ीहा हरीरुन "उन्हें सोने के कंगन हीरे जड़े हुए पहनाए जाएँगे और ख़ालिस नर्म साफ़ रेशमी लिबास होगा उन ज़ाहिरी जिस्मानी इस्तेमाली नेमतों के साथ ही उन्हें पुरकैफ़ बालज़्ज़त, सुरूर वाली, पाक और पाक करने वाली शराब पिलाई जाएगी जो तमाम ज़ाहिरी-बातिनी बुराई दूर कर देगी। हसदव कीना, बदख़ुल्क़ी, ग़ुस्सा वग़ैरह सब दूर कर देगी। जैसे अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ि० से मरवी है कि जब अहले जन्नत, जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचेंगे तो उन्हें दो नहरें नज़र आएँगी और उन्हें अज़ख़ुद ख़्याल पैदा होगा, एक का वह पानी पिएंगे तो उनके दिलों में जो कुछ था सब दूर हो जाएगा। दूसरी में ग़ुस्ल करेंगे जिससे चेहरे तर व ताज़ा, हश्शाश-बश्शाश हो जाएँगे। ज़ाहिरी और बातिनी दोनों ख़ूबियाँ उन्हें बदर्जा कमाल हासिल होंगी, जिसका बयान यहाँ हो रहा है, फिर उनसे उनके दिल ख़ुश करने के लिए और उनकी ख़ुशी दोबाला करने के लिए बार-बार कहा जाएगा कि यह तुम्हारे आमाल का बदला और तुम्हारी भली कोशिशों की क़द्रदानी है। ऐसी और जगह है : दुनिया में जो आमाल तुमने किए उनकी नेक जज़ा में आज तुम ख़ूब सहता-पचता बआराम व इत्मीनान खाते-पीते रहो। और फ़रमान है :

> "मुनादी किए जाएँगे कि उन जन्नतों का वारिस तुम्हें तुम्हारी नेक किरदारियों की बिना पर बनाया गया है।" यहाँ भी फ़रमाया है कि तुम्हारी सई मशकूर है। थोड़ी अमल पर बहुत अज्र है। अल्लाह तआला हमें भी उनमें से करे। आमीन!

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 482-485)

जन्नत में पर्दे गिर गए, शाम हो गई
जन्नत में पर्दे हट गए, सुबह हो गई

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا

"वहाँ लोग कोई लग़्व बात न सुनेंगे। सिर्फ़ सलाम-ही-सलाम सुनेंगे। उनके लिए वहाँ सुबह व शाम उनका रिज़्क़ होगा। (सूरा मरयम, आयत 62)

जन्नत में सुबह व शाम बएतिबार दुनिया के वहाँ रात नहीं, बल्कि

हर वक़्त नूर का समाँ है। पर्दे गिर जाने और दरवाज़े बन्द हो जाने से अहले जन्नत वक़्ते शाम को और इसी तरह पर्दों के हट जाने और दरवाज़ों के खुल जाने से सुबह के वक़्त को जान लेंगे। उन दरवाज़ों का खुलना, बन्द होना भी जन्नतियों के इशारे और हुक्मों पर होगा, ये दरवाज़े भी इस क़द्र साफ़ शफ़्फ़ाफ़ आइना-नुमा हैं कि बाहर की चीज़ें अंदर से नज़र आएँ। चूंकि दुनिया में दिन-रात की आदत थी, इसलिए जो वक़्त जब चाहेंगे पाएंगे। चूंकि अरब सुबह-शाम ही खाना खाने के आदी थे, इसलिए जन्नती रिज़्क़ का वक़्त भी वही बतलाया गया है, वरना जन्नती जो चाहें, जब चाहें मौजूद पाएँगे।

जन्नत में नौजवान कुँवारी लड़कियों की भी बारिश होगी

जन्नत में नेक लोगों के लिए ख़ुदा तआला के यहाँ जो नेमतें व रहमतें हैं उनका बयान हो रहा है कि यह कामयाब मक़्सदवर और नसीबदार हैं कि जहन्नम से नजात पाई और जन्नत में पहुँच गए। उन्हें नौजवान कुँवारी हूरें भी मिलेंगी जो उभरे हुए सीने वालियां और हमउम्र होंगी। एक हदीस में है कि जन्नतियों के लिबास ही ख़ुदा की रज़ामंदी के होंगे। बादल उन पर आएँगे और उनसे कहेंगे कि बताओ हम तुम पर क्या बरसाएँ? फिर वह जो फ़रमाएँगे बादल उन पर बरसाएँगे। यहाँ तक कि नौजवान कुँवारी लड़कियाँ भी उन पर बरसेंगी। (इब्ने अबी हातिम)

उन्हें शराब तहूर के छलकते हुए पाक-साफ़ भरपूर जाम पर जाम मिलेंगे, जिसमें नशा न होगा कि बेहूदागोई और लग़्व बातें मुँह से निकलें और कान में पड़ें जैसे और जगह है **"ला लग़वुन फ़ीहा वला तअ्सीमुन"** उसमें न लग़्व होगा न बुराई और न गुनाह की बातें, कोई बात झूठ और फ़ुज़ूल न होगी। वह दारुस्सलाम है जिसमें कोई ऐब की और बुराई की बात ही नहीं। यह जो कुछ बदले उन पारसा लोगों को मिले हैं यह उनके नेक आमाल के नतीजे हैं जो अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से और उसके एहसान व इनाम की बिना पर उन्हें मिले हैं। जो बेहद काफ़ी-वाफ़ी हैं, जो बकसरत और भरपूर हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, 5 : 499)

जन्नत में दूध, पानी, शहद और शराब के समुन्दर हैं

जन्नत में पानी के चश्मे हैं जो कभी बिगड़ता नहीं। मुतग़य्यिर नहीं होता, सड़ता नहीं, न बदबू पैदा होती है। बहुत साफ़ मोती जैसा है कोई गदलापन नहीं, कूड़ा करकट नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जन्नती नहरें मुश्क के पहाड़ों से निकलती हैं।

उसमें पानी के अलावा दूध की नहरें भी हैं जिसका मज़ा कभी बदलता नहीं, बहुत सफ़ेद, बहुत मीठा और निहायत साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और बामज़ा पुरज़ाइक़ा। एक मरफ़ूअ हदीस में है कि यह दूध जानवरों के थन से निकला हुआ नहीं, बल्कि क़ुदरती है।

और नहरें होंगी, शराब साफ़ की, जो पीनेवाले का दिल ख़ुश कर दें, दिमाग़ कुशादा करें। जो शराब न तो बदबूदार है, न तल्ख़ीवाली, न बदमंज़र है। बल्कि देखने में बहुत अच्छी, पीने में लज़ीज़, निहायत ख़ुश्बूदार, जिससे न अक़्ल में फ़ुतूर आए, न दिमाग़ में चक्कर आएँ, न बहकें, न भटकें, न नशा चढ़े, न अक़्ल जाए। हदीस में है कि यह शराब भी किसी के हाथों से कशीद की हुई नहीं बल्कि ख़ुदा के हुक्म से तैयार हुई है। ख़ुशजाइक़ा और ख़ुशरंग है।

जन्नत में शहद की नहरें भी हैं जो बहुत साफ़ हैं, और ख़ुश्बूदार और ज़ाइक़ा तो कहना ही क्या है हदीस शरीफ़ में है कि यह शहद भी मक्खियों के पेट से नहीं।

मुस्नद अहमद की एक मरफ़ूअ हदीस में है कि जन्नत में दूध, पानी, शहद और शराब के समुन्द्र हैं, जिनमें से उनकी नहरें और चश्मे जारी होते हैं। यह हदीस तिर्मिज़ी में है और इमाम तिर्मिज़ी रह० उसे हसन सहीह फ़रमाते हैं।

इब्ने मर्दूया की हदीस में यह है कि नहरें जन्नत अद्न से निकलती हैं, फिर एक हौज़ में आती हैं, वहाँ से बज़रिए और नहरों के तमाम जन्नतों में जाती हैं।

एक और हदीस में है कि तुम अल्लाह से सवाल करो तो जन्नतुल फ़िरदौस तलब करो, वह सबसे बेहतर और सबसे आला जन्नत है, उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं और उसके ऊपर रहमान का अर्श है।

तबरानी में है कि हज़रत लुक़ैत बिन आमिर रज़ि० जब वफ़्द में आए थे तो रसूलुल्लाह सल्ल० से दरयाफ़्त किया कि जन्नत में क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमाया : साफ़ शहद की नहरें, और बग़ैर नशे के सरदर्द न करनेवाली शराब की नहरें, और न बिगड़ने वाली दूध की नहरें, और ख़राब न होनेवाले शफ़्फ़ाफ़ पानी की नहरें, और तरह-तरह के मेवे जात, अजीब व ग़रीब बेमिस्ल व बिल्कुल ताज़ा और पाक-साफ़ बीवियाँ जो सालेहीन को मिलेंगी और ख़ुद भी सालेहात होंगी। दुनिया की लज़्ज़तों की तरह उनसे लज़्ज़तें उठाएंगे, हाँ, वहाँ बाल-बच्चे न होंगे।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह ख़्याल करना कि जन्नत की नहरें भी दुनिया की नहरों की तरह खुदी हुई ज़मीन में और गढ़ों में बहती हैं, नहीं-नहीं, क़सम ख़ुदा की वह साफ़ ज़मीन पर यकसाँ जारी हैं। उनके किनारे-किनारे लुअ्लुऊ और मोतियों के ख़ैमे हैं, उनकी मिट्टी मुश्क ख़ालिस है। वहाँ उनके लिए हर तरह के मेवे और फूल-फल हैं, जैसे और जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है :"यद ऊना फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन आमिनीन" वहाँ निहायत अम्न व अमान के साथ हर क़िस्म के मेवे वे मंगवाएँगे और खाएँगे। और आयत में है : "फ़ीहिमा मिन कुल्लि फ़ाकिहतिन ज़वजान" दोनों जन्नतों में हर क़िस्म के मेवों के जोड़े हैं। उन तमाम नेमतों के साथ यह कितनी बड़ी नेमत है कि रब ख़ुश है, वह अपनी मग़फ़िरत उनके लिए हलाल कर चुका है, उन्हें नवाज़ चुका है, और उनसे राज़ी हो चुका है, अब कोई खटका ही नहीं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, 5 : 102-103)

जन्नत में छः चीज़ें न होंगी

जन्नत में सब कुछ होगा मगर छः चीज़ें न होंगी : (1) मौत न होगी (2) नींद न होगी (3) हसद न होगा (4) निजासत न होगी (5) बुढ़ापा न होगा (6) दाढ़ी न होगी, बल्कि बग़ैर दाढ़ी के जवान होंगे। (मिश्कात बाब सफ़तुल जन्नत, आख़िरत की याद, मल्फ़ूज़ात अक़दस मौलाना इफ़्तख़ारुल हसन कांधलवी, सफ़ा 30)

हज़रत उम्मे सलमा के जन्नतियों की धूमधाम के मुताल्लिक़ अजीब व ग़रीब आठ सवालात और आंहज़रत सल्ल० के जवाबात

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं :

1. सवाल : मैंने कहा या रसूलल्लाह! हूरे ऐन की ख़बर मुझे दीजिए?

जवाब : आप सल्ल० ने फ़रमाया : "वह गोरे रंग की हैं, बड़ी-बड़ी आँखोंवाली हैं। सख़्त स्याह और बड़े-बड़े बालोंवाली हैं जैसे कि गिद्ध का पर।

2. सवाल : मैंने कहा, "लुअ्लुउम मकनून" की बाबत ख़बर दीजिए?

जवाब : आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया : "उनकी सफ़ाई और जोत (चमक) मिस्ल उस मोती के है जो सीप से अभी-अभी निकला हो, जिसे किसी का हाथ भी न लगा हो।

3. सवाल : मैंने कहा "ख़ैरातुन हिसानुन" की क्या तफ़्सीर है?

जवाब : फ़रमाया : "ख़ुश-ख़ल्क़ व ख़ूबसूरत।"

4. सवाल : मैंने कहा, "बैज़ुम मकनून" से क्या मुराद है?

जवाब : फ़रमाया : उनकी नज़ाकत और नर्मी अंडे की उस झिल्ली के मानिन्द होगी जो अंदर होती है।

5. सवाल : मैंने "उरुबन अतराब" के माना दरयाफ़्त किए।

जवाब : फ़रमाया : "उससे मुराद दुनिया की मुसलमान जन्नती औरतें हैं जो बिल्कुल बुढ़िया फूँस थीं। अल्लाह तआला ने उन्हें नए सिरे से पैदा किया और कुँवारियाँ और ख़ाविन्दों की चहेतियाँ और ख़ाविन्दों से इश्क़ रखने वालियाँ और हमउम्र बना दीं।

6. सवाल : मैंने पूछा या रसूलल्लाह! दुनिया की औरतें अफ़ज़ल हैं या हूरे-ऐन?

जवाब : फ़रमाया : दुनिया की औरतें हूरे ऐन से बहुत अफ़ज़ल हैं। जैसे असतर से अबरा बेहतर होता है।

7. सवाल : मैंने कहा इस अफ़ज़लियत की क्या वजह है?

जवाब : फ़रमाया : नमाज़ें, रोज़े और अल्लाह तआला की इबादतें। अल्लाह तआला ने उनके चहरे नूर से, उनके जिस्म रेशम से सँवार दिए हैं। सफ़ेद रेशम और सब्ज़ रेशम और ज़र्द सुनहरे रेशम और ज़र्द सुनहरे ज़ेवर, बख़ुरदान मोती के, कंघियाँ सोने की, यह कहती रहेंगी :

☆ हम हमेशा रहनेवाली हैं, कभी मरेंगी नहीं।

☆ हम नाज़ और नेमत वालियाँ हैं कि कभी मुफ़्लिस और बेनेमत न होंगी।

☆ हम इक़ामत करनेवाली हैं कि कभी सफ़र में नहीं जाएँगी।

☆ हम अपने ख़ाविन्दों से ख़ुश रहने वालियाँ हैं, कभी रूठेंगी नहीं।

☆ ख़ुशनसीब हैं वे लोग जिनके लिए हम हैं और हम उनके लिए हैं।

8. **सवाल** : मैंने पूछा या रसूलल्लाह! बाज़ औरतों के दो-दो, तीन-तीन, चार-चार ख़ाविन्द हो जाते हैं। उसके बाद उसे मौत आती है। मरने के बाद अगर यह जन्नत में गई और उसके सब ख़ाविन्द भी गए तो यह किसे मिलेगी।

जवाब : आप सल्ल० ने फ़रमाया : उसे इख़्तियार दिया जाएगा कि जिसके साथ चाहे रहे। चुनांचे यह उनमें से उसे पसन्द करेगी जो उसके साथ बेहतरीन बर्ताव करता रहा हो। अल्लाह तआला से कहेगी कि परवरदिगार! यह मुझसे बहुत अच्छी बूदो-बाश रखता था, इसी के निकाह में मुझे दे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, 5 : 255-256)

जन्नत में हूरों की धूमधाम

हूर नाज़ुक, नूरानी, नाज़ और करिश्मा वाली होगी

सौर की मशहूर मुतव्वल हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० तमाम मुसलमानों को जन्नत में ले जाने की सिफ़ारिश करेंगे जिस पर अल्लाह तआला फ़रमाएगा, मैंने आपकी शफ़ाअत क़बूल की और आपको उन्हें जन्नत में पहुँचाने की इजाज़त दी। आप सल्ल० फ़रमाते हैं फिर मैं उन्हें

जन्नत में ले जाऊँगा। ख़ुदा की क़सम! तुम जिस क़दर अपने घरबार और अपनी बीवियों से वाक़िफ़ हो उससे बहुत ज़्यादा अहले जन्नत अपने घरों और बीवियों से वाक़िफ़ होंगे। पस एक-एक जन्नती की बहत्तर (72) बहत्तर (72) बीवियाँ होंगी जो ख़ुदा की बनाई हुई हैं और दो-दो बीवियाँ औरतों में से होंगी कि उन्हें ब-वजह अपनी इबादत के उन सब औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल होगी। जन्नती उनमें से एक के पास जाएगा। यह उस बाला ख़ाने में होगी जो याक़ूत का बना हुआ होगा, उस पलंग पर होगी जो सोने के तारों से बुना हुआ होगा और चढ़ाव चढ़ा हुआ होगा। सत्तर (70) जोड़े पहने हुए होगी जो सब बारीक और सब्ज़ चमकीले ख़ालिस रेशम के होंगे। यह बीवी इस क़दर नाज़ुक नूरानी होगी कि उसकी कमर पर हाथ रखकर सीने की तरफ़ से देखेगा तो साफ़ नज़र आ जाएगा। कपड़े, गोश्त, हड्डी कोई चीज़ रोक न होगी। इस क़दर उसका पिंडा साफ़ और आईना नुमा होगा जिस तरह मरवारीद में सुराख़ करके डोरा डाल दें तो वह डोरा बाहर से नज़र आता है, उसी तरह उसकी पिंडली का गूदा नज़र आएगा, ऐसा ही नूरानी बदन उस जन्नती का भी होगा। अलग़र्ज़ यह उसका आईना होगी और वह उसका आईना। यह उसके साथ ऐश व इशरत में मशग़ूल होगा। न यह थकेगा न वह थकेगी। न इसका दिल भरेगा, न उसका दिल भरेगा। जब कभी नज़दीकी करेगा तो कुंवारी पाएगा, न उसका अज़ू सुस्त हो न उसे गिराँ गुज़रे, मगर ख़ास पानी वहाँ न होगा जिससे घिन आए। यह यूँ ही मशग़ूल होगा जो कान में निदा आएगी कि यह तो हमें ख़ूब मालूम है कि न आप का दिल उनसे भरेगा, न उनका आपसे भरेगा मगर आपकी दूसरी बीवियाँ भी हैं। अब यह यहाँ से बाहर आएगा और एक-एक के पास जाएगा। जिसके पास जाएगा उसे देखकर बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल जाएगा कि रब की क़सम! तुझसे बेहतर जन्नत में कोई चीज़ नहीं, न मेरी मुहब्बत किसी से तुझसे ज़्यादा है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 256)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछते हैं कि या रसूलल्लाह! क्या जन्नत में जन्नती लोग जिमाअ भी करेंगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया "हाँ, क़सम है उस ख़ुदा की जिसके हाथ में मेरी जान है! ख़ूब अच्छी तरह बेहतरीन तरीक़ पर। जब अलग होगा वह उसी वक़्त फिर पाक-साफ़ अछूती बाकरा बन जाएगी।" हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं, "मोमिन को जन्नत में इतनी-इतनी औरतों के पास जाने की क़ुव्वत अता

की जाएगी।" हज़रत अनस रज़ि० ने पूछा, हुज़ूर! क्या इतनी ताक़त रखेगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया, "एक सौ आदमियों के बराबर उसे क़ुव्वत मिलेगी।" तबरानी की हदीस में है एक-एक सौ कुंवारियों के पास एक-एक दिन में हो आएगा। हाफ़िज़ अब्दुल्लाह मुक़द्दसी रह० फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक यह हदीस शर्ते शहीह पर है, वल्लाहु आलम।

जन्नत की औरतें अपने ख़ाविन्दों की महबूबा होंगी। ये अपने ख़ाविन्दों की आशिक़ और ख़ाविन्द उनके आशिक़। जन्नत की औरतें नाज़ व करिश्मा और नज़ाकत वाली हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 257)

जन्नत की औरतें अपने ख़ाविन्द का दिल मुट्ठी में रखेंगी

जन्नत की औरतें अपने ख़ाविन्द का दिल मुट्ठी में रखेंगी। जन्नत की औरतें ख़ुश कलाम हैं। अपनी बातों से अपने ख़ाविन्दों का दिल मोह लेती हैं। जब कुछ बोलें यूँ मालूम होता है कि फूल झड़ते हैं और नूर बरसता है। इब्ने अबी हातिम में है कि उन्हें अरब इसलिए कहा गया है कि उनकी बोल-चाल अरबी ज़बान में होगी। अतराब के माना हैं हमउम्र यानी तैंतीस बरस की और यह माना भी हैं कि ख़ाविन्द की और उनकी तबीअत, ख़ुल्क़ बिल्कुल यकसाँ है जिससे वह ख़ुश, यह ख़ुश, जो उसे नापसंद इसे भी नापसन्द। यह माना भी बयान किए गए हैं कि आपस में उनमें बैर, बुग़्ज़, हसद और रश्क न होगा। यह सब आपस में भी हमउम्र होंगी ताकि बेतकल्लुफ़ी से एक दूसरी से मिलें-जुलें, खेलें-कूदें। तिर्मिज़ी की हदीस में है कि यह जन्नती हूरें एक रूह-अफ़ज़ा बाग़ में जमा होकर निहायत प्यारे गले से गाना गाएंगी कि ऐसी सुरीली और रसीली आवाज़ मख़्लूक़ ने कभी न सुनी होगी। उनका गाना वही होगा जो पहले बयान हुआ। अबू याला में है उनके गाने में यह भी होगा :

نَحْنُ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ   خُبِئْنَا لِأَزْوَاجٍ كِرَامٍ

हम पाक-साफ, ख़ुश वज़अ ख़ूबसूरत औरतें हैं,
जो बुज़ुर्ग और ज़ीइज़्ज़त शौहरों के लिए छुपाकर रखी गई हैं।

हज़रत अबू सुलैमान दारानी रह० से मंक़ूल है कि मैंने एक रात तहज्जुद की नमाज़ के बाद दुआ माँगनी शुरू की। चूँकि सख़्त सर्दी थी, बड़े ज़ोर का पाला पड़ रहा था, हाथ उठाए नहीं जाते थे, इसलिए मैंने

एक ही हाथ से दुआ माँगी और उसी हालत में दुआ माँगते-माँगते मुझे नींद आ गई। ख़्वाब में मैंने एक हूर को देखा कि उस जैसी ख़ूबसूरत नूरानी शक्ल कभी मेरी निगाह से नहीं गुज़री। उसने मुझसे कहा, "ऐ अबू सुलैमान! एक ही हाथ से दुआ माँगने लगे और यह ख़्याल नहीं कि पाँच सौ साल से अल्लाह तआला मुझे तुम्हारे लिए अपनी ख़ास नेमतों में परवरिश कर रहा है।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर 5 : 257)

आइए! जन्नते अद्न की सैर करें, जिसके पांच हज़ार दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े पर पांच हज़ार फ़रिश्ते हैं

उन बुज़ुर्गों की नेक सिफ़तें बयान हो रही हैं और उनके भले अंदाम की ख़बर दी जा रही है जो आख़िरत में जन्नत के मालिक बनेंगे और यहाँ भी जो नेक अंजाम हैं।

वे मुनाफ़िक़ों की तरह नहीं होते कि अहदशिकनी और ग़द्दारी और बेवफ़ाई करें। यह मुनाफ़िक़ की ख़स्लत है कि वादा करके तोड़ दें, झगड़ों में गालियाँ बकें, बातों में झूठ बोलें, अमानत में ख़ियानत करें।

सिलारहमी का, रिश्तेदारों से सुलूक करने का, फ़क़ीर-मोहताज को देने का, भली बातों के निभाने का जो हुक्म ख़ुदा का है यह उसके आमिल हैं। रब का ख़ौफ़ दिल में रचा हुआ है। नेकियाँ करते हैं फ़रमाने ख़ुदा समझकर, बदियाँ छोड़ते हैं नाफ़रमानी-ए-ख़ुदा समझकर। आख़िरत के हिसाब का खटका रखते हैं इसी लिए बुराइयों से बचते हैं। नेकियों की रग़बत करते हैं, ऐतिदाल के रास्ते नहीं छोड़ते। हर हाल में फ़रमाने ख़ुदा का लिहाज़ रखते हैं। हराम कामों और ख़ुदा की नाफ़रमानियों की तरफ़ गो नफ़्स घसीटे लेकिन यह उसे रोक लेते हैं और सवाबे आख़िरत याद दिलाकर मर्ज़ीए मौला, रज़ाए रब के तालिब होकर नाफ़रमानियों से बाज़ रहते हैं। नमाज़ की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं। रुकूअ-सज्दा के वक़्त ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ शरई तौर पर बजा लाते हैं। जिन्हें देना ख़ुदा ने फ़रमाया है उन्हें अल्लाह की दी हुई चीज़ें देते रहते हैं। फ़ुक़रा, मोहताज, मसाकीन, अपने हों या ग़ैर हों उनकी बरकतों से महरूम नहीं रहते। छुपे-खुले दिन-रात वक़्त-बे-वक़्त बराबर राहे अल्लाह ख़र्च करते रहते हैं।

क़बाहत को एहसान से, बुराई को भलाई से, दुश्मनी को दोस्ती से

टाल देते हैं। दूसरा सरकशी करे तो यह नर्मी करते हैं, दूसरा सर चढ़े तो यह सर झुका देते हैं, दूसरों के ज़ुल्म सह लेते हैं और ख़ुद सुलूक करते हैं। तालीम क़ुरआन है : बहुत अच्छे तरीक़े से टाल दो तो दुश्मन भी गाढ़ा दोस्त बन जाएगा। सब्र करने वाले साहिबे नसीब ही इस मर्तबे को पाते हैं। ऐसे लोगों के लिए अच्छा अंजाम है। वह अच्छा अंजाम और बेहतरीन घर जन्नत है जो हमेशगी वाली और पायदार है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, जन्नत के एक महल का नाम अद्न है जिसमें बुरुज और बालाख़ाने हैं जिसके पाँच हज़ार दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े पर पांच हज़ार फ़रिश्ते हैं। वह महल मख़्सूस है, नबियों और सद्दीक़ों और शहीदों के लिए। हज़रत ज़हहाक रह० कहते हैं यह जन्नत का शहर है जिसमें अंबिया होंगे, शुहदा होंगे और हिदायत के अइम्मा होंगे और उनके आसपास और लोग होंगे और उनके इर्द-गिर्द और जन्नतें हैं, वहाँ यह अपने और चहीतों को भी अपने साथ देखेंगे।

उनके बड़े बाप-दादा, उनके छोटे बेटे-पोते, उनके जोड़े भी जो ईमानदार और नेकुकार थे उनके पास होंगे और राहतों में मसरूर होंगे जिससे उनकी आँखें ठंडी रहेंगी यहाँ तक कि अगर किसी के आलाम इस दर्जे बुलन्दी तक पहुँचने के क़ाबिल न होंगे तो ख़ुदाए तआला उन्हें दर्जे बढ़ा देगा और आला मंज़िल तक पहुँचा देगा।

इरशाद ख़ुदावंदी है

जिन ईमानदारों को औलाद उनकी पैरवी ईमान में करती हैं हम उन्हें भी उनके साथ मिला देते हैं। उनके पास मुबारकबाद और सलाम के लिए हर हर दरवाज़े से हर-हर वक़्त फ़रिश्ते आते रहते हैं।

यह भी ख़ुदा का इनाम है ताकि हर वक़्त ख़ुश रहें और बशारतें सुनते रहें। नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों का पड़ोस फ़रिश्तों का सलाम और जन्नतुल फ़िरदौस में मक़ाम।

मुस्नद की हदीस में है कि जानते भी हो कि सबसे पहले जन्नत में कौन जाएँगे? लोगों ने कहा, "ख़ुदा को इल्म है और उसके रसूल सल्ल० को।" फ़रमाया, "सबसे पहले जन्नती मसाकीन, मुहाजिरीन हैं जो दुनिया की लज़्ज़तों से दूर थे, जो तकलीफ़ों में मुब्तला थे, जिनकी उमंगें दिलों में ही रह गईं और क़ज़ा आ गई। रहमत के फ़रिश्तों को हुक्मे ख़ुदा होगा

कि जाओ इन्हें मुबारकबाद दो। फ़रिश्ते कहेंगे, ख़ुदाया! हम तेरे आसमानों के रहने वाले तेरी बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। क्या तू हमें हुक्म देता है कि हम जाकर उन्हें सलाम करें और उन्हें मुबारकबाद पेश करें। जनाबे बारी जवाब देगा कि मेरे वे बन्दे हैं जिन्होंने सिर्फ़ मेरी इबादत की, मेरे साथ किसी को शरीक न किया, दुनियावी राहतों से महरूम रहे, मुसीबतों में मुब्तला रहे, कोई मुराद पूरी न होने पाई और यह साबिर व शाकिर रहे। अब तो फ़रिश्ते जल्दी-जल्दी बशौक़ उनकी तरफ़ दौड़ेंगे। इधर-उधर के हर दरवाज़े से घुसेंगे और सलाम करके मुबारकबाद पेश करेंगे।"

तबरानी में है कि सबसे पहले जन्नत में जानेवाले तीन क़िस्म के लोग हैं : फ़ुक़राए मुहाजिरीन जो मुसीबतों में मुब्तला रहे, जब उन्हें जो हुक्म मिला बजा लाते रहे। उन्हें ज़रूरतें बादशाहों से होती थीं लेकिन मरते दम तक पूरी न हुईं। जन्नत को बरोज़ क़ियामत अल्लाह तआला अपने सामने बुलाएगा, वह बनी-सँवारी अपनी तमाम नेमतों और ताज़गियों के साथ हाज़िर होगी। उस वक़्त नदा होगी कि मेरे वे बन्दे जो मेरी राह में जिहाद करते थे, मेरी राह में सताए जाते थे, मेरी राह में लड़ते-भिड़ते थे वे कहाँ हैं? आओ बग़ैर हिसाब व अज़ाब के जन्नत में चले जाओ। उस वक़्त फ़रिश्ते ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे और अर्ज़ करेंगे कि परवरदिगार! हम तो सुबह व शाम तेरी तस्बीह व तक़्दीस में लगे रहे, यह कौन हैं जिन्हें हम पर भी तूने फ़ज़ीलत अता फ़रमाई? अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएगा कि ये मेरे वे बन्दे हैं जिन्होंने मेरी राह में जिहाद किया, मेरी राह में तकलीफ़ें बरदाश्त की। अब तो फ़रिश्ते जल्दी करके उनके पास हर-हर दरवाज़े से जा पहुँचेंगे। सलाम करेंगे और मुबारकबादियाँ पेश करेंगे कि तुम्हें तुम्हारे सब्र का बदला कितना अच्छा मिला।

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मोमिन जन्नत में अपने तख़्त पर बआराम निहायत शान से तकिया लगाए बैठा हुआ होगा। ख़ादिमों की क़तारें इधर उधर-खड़ी होंगी जो दरवाज़े वाले ख़ादिम से फ़रिश्ता इजाज़त माँगेगा, वह दूसरे ख़ादिम से कहेगा, वह और से, वह और से, यहाँ तक कि मोमिन से पूछा जाएगा। मोमिन इजाज़त देगा कि उसे आने दो। यूं ही एक दूसरे को पैग़ाम पहुँचाएगा और आख़िरी ख़ादिम फ़रिश्ते को इजाज़त देगा और दरवाज़े ख़ोल देगा, वह आएगा और सलाम करेगा और चला जाएगा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, सफ़ा 39-40)

इबादतों की तकलीफ़ जाती रही, मज़े लूटने के दिन आ गए जो चाहो माँगो, पाओगे। आइए! तूबा दरख़्त और जन्नत की सैर करें

हज़रत वहब रह० कहते हैं कि जन्नत में एक दरख़्त है जिसका नाम तूबा है। जिसके साए तले सवार सौ साल तक चलता रहेगा लेकिन ख़त्म न होगा। उसकी तरो-ताज़गी खुले हुए चमन की तरह है, उसके पत्ते बेहतरीन और उम्दा हैं, उसके ख़ोशे अंबरीन हैं, उसके कंकर याक़ूत हैं, उसकी मिट्टी काफ़ूर है, उसका गारा मुश्क है, उसकी जड़ से शराब की, दूध की और शहद की नहरें बहती हैं। उसके नीचे जन्नतियों की मज्लिसें होंगी। ये बैठे हुए होंगे कि उनके पास फ़रिश्ते ऊँटनियाँ लेकर आएँगे जिनकी ज़ंजीरे सोने की होंगी, जिनके चेहरे चिराग़ जैसे चमकते होंगे, बाल रेशम जैसे नर्म होंगे, जिन पर याक़ूत जैसे पालान होंगे, जिन पर सोना जढ़ाव हो रहा होगा, जिन पर रेशमी झूलें होंगी। वे ऊंटनियाँ उनके सामने पेश करेंगे और कहेंगे कि यह सवारियाँ तुम्हें भिजवाई गई हैं और दरबारे ख़ुदा में तुम्हारा बुलावा है। यह उन पर सवार होंगे। वह परिन्दों की रफ़्तार से भी तेज़ रफ़्तार होंगी। जन्नती एक-दूसरे से मिलकर चलेंगे। ऊँटनियों के कान से कान भी न मिलेंगे। पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ चलेंगे। रास्ते में जो दरख़्त आएँगे वे ख़ुद-ब-ख़ुद हट जाएँगे कि किसी को अपने साथी से अलग न होना पड़े, यू ही रहमान व रहीम ख़ुदा के पास पहुंचेंगे। ख़ुदा तआला अपने चेहरे से पर्दे हटा देगा। यह अपने रब को देखेंगे और कहेंगे : **"अल्लाहुम-म अनतस्सलामु व मिनकस्सलामु व हक़्क़ुल ल-कल जलालु वल इकरामु।"** उनके जवाब में अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएगा : **"अनस्सलामु व मिन्नी सलामु"** तुम पर मेरी रहमत साबिक़ हो चुकी और मुहब्बत भी। मेरे उन बन्दों को मरहबा हो जो बिन देखे मुझसे डरते रहे, मेरी फ़रमाँबरदारी करते रहे। जन्नती कहेंगे बारी तआला! न तो हमसे तेरी इबादत का हक़ अदा हुआ न तेरी पूरी क़दर हुई। हमें इजाज़त दे कि तेरे सामने सज्दा करें। अल्लाह फ़रमाएगा, यह मेहनत की जगह नहीं, न इबादत की, यह तो नेमतों, राहतों और मालामाल होने की जगह है। इबादतों की तकलीफ़ जाती रही। मज़े लूटने के दिन आ गए, जो चाहो माँगो, पाओगे, तुममें से जो शख़्स जो माँगे उसे

दूँगा। पस ये माँगेंगे। कम से कम सवाल वाला कहेगा कि ख़ुदाया! तूने दुनिया में जो पैदा किया था जिसमें तेरे बन्दे हाए-वाए कर रहे थे, मैं चाहता हूँ कि शुरू दुनिया से आख़िर दुनिया तक दुनिया में जितना कुछ था, मुझे अता फ़रमाँ अल्लाह तआला फ़रमाएगा, तूने कुछ न माँगा, अपने मर्तबे से बहुत कम चीज़ माँगी। अच्छा हमने दी। मेरी बख़्शिश और देन में क्या कमी है? फिर फ़रमाएगा, जिन चीज़ों तक मेरे उन बन्दों के ख़्यालात की रसाई भी नहीं वह उन्हें दो। चुनांचे दी जाएँगी यहाँ तक कि उनकी ख़्वाहिशें पूरी हो जाएँगी।

उन चीज़ों में जो उन्हें यहाँ मिलेंगी तेज़ रौ घोड़े होंगे, हर चार पर याक़ूती तख़्त होगा, हर तख़्त पर सोने का एक डेरा होगा। हर डेरे में जन्नती फ़र्श होगा जिन पर बड़ी-बड़ी आँखों वाली दो हूरें होंगी, जो दो-दो हुल्ले पहने हुए होंगी जिनमें जन्नत के तमाम रंग होंगे और तमाम ख़ुश्बुएँ। उन ख़ैमों के बाहर से उनके चेहरे ऐसे चमकते होंगे गोया वह बाहर बैठी हैं। उनकी पिंडलियों के अंदर का गूदा बाहर से नज़र आ रहा होगा जैसे सुर्ख़ याक़ूत में डोरा पिरोया हुआ हो और वह ऊपर से नज़र आ रहा हो। हर एक-दूसरे पर अपनी फ़ज़ीलत ऐसी जानती होंगी जैसे फ़ज़ीलत सूरज की पत्थर पर, इस तरह जन्नती की निगाह में भी दोनों ऐसी ही होंगी। यह उनके पास जाएगा और उनसे बोस व किनार में मशग़ूल हो जाएगा। वह दोनों उसे देखकर कहेंगी, वल्लाह हमारे तो ख़्याल में भी न था कि ख़ुदा तुम जैसा ख़ाविन्द हमें देगा। अब बहुक्म ख़ुदा उसी तरह सफ़ बन्दी के साथ सवारियों पर यह वापस होंगे और अपनी मंज़िलों में पहुँचेंगे। देखो तो सही ख़ुदाए वह्हाब ने उन्हें क्या-क्या नेमतें अता फ़रमा रखी हैं!

वहाँ बुलन्द दर्जा लोगों में ऊंचे-ऊंचे बालाख़ानों में जो निरे मोती के बने हुए होंगे, जिनके दरवाज़े सोने के होंगे, जिनके तख़्त याक़ूत के होंगे जिनके फ़र्श नर्म और मोटे रेशम के होंगे। जिनके मिंबर नूर के होंगे, जिनकी चमक सूरज की चमक से बालातर होगी। आला इल्लिय्यीन में उनके महल होंगे, याक़ूत के बने हुए नूरानी जिनके नूर से आँखों की रौशनी जाती रहे; लेकिन ख़ुदा तआला उनकी आँखें ऐसी न करेगा। जो महलात याक़ूत सुर्ख़ के होंगे उनमें सब्ज़ रेशमी फ़र्श होंगे और जो ज़र्द याक़ूत के होंगे उनके फ़र्श सुर्ख़ मख़मल के होंगे जो ज़मुर्रुद और सोने के

जड़ाओ के होंगे, उन तख़्तों के पाए जवाहर के होंगे। उन पर छतें लुअ्लुउ की होंगी। उनके बुर्ज मरजान के होंगे, उनके पहुँचने से पहले ख़ुदाई तोहफ़े वहाँ पहुँच चुके होंगे। सफ़ेद याक़ूती घोड़े ग़ुलमान लिए खड़े हुए होंगे, जिनका सामान चाँदी का जड़ाव होगा। उनके तख़्त पर आला रेशमी नर्म दबीज़ फ़र्श बिछे होंगे।

ये उन सवारियों पर सवार होकर ब-तकल्लुफ़ जन्नत में जाएंगे, देखेंगे कि उनके घरों के पास नूरानी मिंबरों पर फ़रिश्ते उनके इस्तक़बाल के लिए बैठे हुए हैं। वह उनका शानदार इस्तक़बाल करेंगे। मुबारकबाद देंगे, मुसाफ़ा करेंगे, फिर यह अपने घरों में दाख़िल होंगे। इनामाते ख़ुदा वहाँ मौजूद पाएँगे। अपने महलात के पास दो जन्नतें हरी-भरी पाएंगे और दो फली-फूली जिनमें दो चश्मे पूरी रवानी से जारी होंगे और हर क़िस्म के जोड़दार मेवे होंगे और ख़ैमों में पाकदामन भोली-भाली पर्दानशीन हूरें होंगी। जब ये यहाँ पहुँचकर राहत व आराम में होंगे उस वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएगा, "मेरे प्यारे बन्दो! तुमने मेरे वादे सच्चे पाए? क्या तुम मेरे सवाबों से ख़ुश हो गए?" वे कहेंगे, "ख़ुदाया हम ख़ूब ख़ुश हो गए, बहुत ही रज़ामंद हैं, दिल से राज़ी हैं, कली-कली खिली हुई है, तू भी हम से ख़ुश रह।" अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "अगर मेरी रज़ामंदी न होती तो मैं अपने इस मेहमानख़ाने में तुम्हें कैसे दाख़िल होने देता? अपना दीदार कैसे दिखाता? मेरे फ़रिश्ते तुमसे मुसाफ़ा क्यों करते? तुम ख़ुश रहो। बआराम रहो। तुम्हें मुबारक हो तुम फलो-फूलो और सुख-चैन उठाओ। मेरे ये इनामात घटने और ख़त्म होने वाले नहीं।" उस वक़्त वे कहेंगे कि ख़ुदा ही की ज़ात तारीफ़ के क़ाबिल है जिसने हमसे ग़म व रंज को दूर कर दिया और ऐसे मक़ाम पर पहुँचाया कि जहाँ हमें कोई तकलीफ़, कोई मशक़्क़त नहीं। यह उसी का फ़ज़्ल है। वह बड़ा ही बख़्शनेवाला और क़द्रदान है।

उसके बाज़ शवाहिद भी मौजूद हैं। चुनांचे सहीहीन में है कि अल्लाह तआला उस बन्दे से, जो सबसे आख़िर में जन्नत में जाएगा, फ़रमाएगा कि माँग और वह माँगता जाएगा और करीम देता जाएगा, यहाँ तक कि उसका सवाल पूरा हो जाएगा। अब उसके सामने कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहेगी। तो अब अल्लाह तआला ख़ुद उसे याद दिलाएगा कि यह माँग, यह माँग, यह माँगेगा फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा, ये सब मैंने

तुझे दिया और इतना ही और भी दस मर्तबा अता फ़रमाया।

सहीह मुस्लिम शरीफ़ की क़ुदसी हदीस में है कि ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे अगले-पिछले इंसान-जिन्नात सब एक मैदान में खड़े हो जाएँ और मुझसे दुआएँ करें और माँगें, मैं हर एक के तमाम सवालात पूरे करूँ लेकिन मेरे मिल्क में इतनी भी कमी न आए जितनी कमी सूई को समुन्द्र में डुबोने से समुन्द्र के पानी में आए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, सफ़ा 43-44)

इबरत की बातें

(1) हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! हज़रत मूसा अलैहि० के सहीफ़े क्या थे? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि उनमें सब इबरत की बातें थीं (मसलन उनमें यह मज़्मून भी था कि) :

1. मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे मौत का यक़ीन है और वह फिर ख़ुश होता है।
2. मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे जहन्नम का यक़ीन है और वह फिर हँसता है।
3. मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे तक़्दीर का यक़ीन है और वह फिर अपने आप को बिला ज़रूरत थकाता है।
4. मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसने दुनिया को देखा और यह भी देखा कि दुनिया आनी-जानी चीज़ है, एक जगह रहती नहीं और फिर मुत्मइन होकर उससे दिल लगाता है।

5. मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे कल क़ियामत के हिसाब किताब पर यक़ीन है और फिर अमल नहीं करता।

(हयातुस सहाबा, जिल्द 3, सफ़ा 556)

(2) हज़रत उमर रज़ि० ने अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर को ख़त में यह लिखा :

1. अम्मा बाद, तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ, क्योंकि जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसे हर शर और फ़ितने से बचाता है और जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है अल्लाह तआला उसके कामों की किफ़ालत करता है।

2. और जो अल्लाह को क़र्ज़ देता है, यानी दूसरों पर अपना माल अल्लाह के लिए ख़र्च करता है, अल्लाह तआला उसे बेहतरीन बदला अता फ़रमाता है।
3. और जो अल्लाह का शुक्र अदा करता है, अल्लाह तआला उसकी नेमत बढ़ाता है।
4. और तक़्वा हर वक़्त तुम्हारा नस्बुल ऐन और तुम्हारे आमाल का सहारा और सुतून और तम्हारे दिल की सफ़ाई करनेवाला होना चाहिए।
5. जिसकी कोई नीयत नहीं होगी उसका कोई अमल मोतबर नहीं होगा।
6. जिसने सवाब लेने की नीयत से अमल न किया उसे कोई अज्र नहीं मिलेगा।
7. जिसमें नर्मी नहीं होगी उसे अपने माल से भी फ़ायदा नहीं होगा।
8. जब तक पहला कपड़ा पुराना न हो जाए, नया नहीं पहनना चाहिए।

(हयातुस सहाबा, 3 : 564)

(3) हज़रत उक़बा बिन अबुस-सहबा रह० कहते हैं कि जब इब्ने मुल्जम ने हज़रत अली रज़ि० को ख़ंजर मारा तो हज़रत हसन रज़ि० उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत हसन रज़ि० रो रहे थे, हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे! क्यों रो रहे हो? अर्ज़ किया, मैं क्यों न रोऊँ जबकि आज आपका आख़िरत का पहला दिन और दुनिया का आख़िरी दिन है। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, चार और चार (कुल आठ) चीज़ों को पल्ले बांध लो, इन आठ चीज़ों को तुम इख़्तियार करोगे तो फिर तुम्हारा कोई अमल तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा। हज़रत हसन रज़ि० ने अर्ज़ किया, अब्बा जान! वे चीज़ें क्या हैं? फ़रमाया :

1. सबसे बड़ी मालदारी अक़्लमंदी है, यानी माल से भी ज़्यादा काम आने वाली चीज़ अक़्ल और समझ है।
2. और सबसे बड़ी फ़क़ीरी हिमाक़त और बेवक़ूफ़ी है।
3. सबसे ज़्यादा वहशत की चीज़ और सबसे बड़ी तंहाई उजब और ख़ुद- पसन्दी है।

4. सबसे ज़्यादा बड़ाई अच्छे अख़्लाक़ हैं।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कहा, अब्बा जान! यह चार चीज़ें तो हो गईं, बाक़ी चार चीज़ें भी बता दें। फ़रमाया :

5. बेवक़ूफ़ की दोस्ती से बचना क्योंकि वह फ़ायदा पहुँचाते-पहुँचाते तुम्हारा नुक़्सान कर देगा।
6. झूठे की दोस्ती से बचना क्योंकि जो तुमसे दूर है, यानी तुम्हारा दुश्मन है, उसे तुम्हारे क़रीब कर देगा और जो तुम्हारे क़रीब है, यानी तुम्हारा दोस्त है, उसे तुमसे दूर कर देगा (या वह दूर वाली चीज़ को नज़दीक और नज़दीक वाली चीज़ को दूर बताएगा और तुम्हारा नुक़्सान कर देगा)।
7. कंजूस की दोस्ती से भी बचना क्योंकि जब तुम्हें उसकी सख़्त ज़रूरत होगी वह उस वक़्त तुमसे दूर हो जाएगा।
8. बदकार की दोस्ती से बचना क्योंकि वह तुम्हें मामूली-सी चीज़ के बदले में बेच देगा।

(हयातुस सहाबा, 3 : 566)

(4) हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने लोगों के लिए अठारह बातें मुक़र्रर कीं जो सब की सब हिक्मत व दानाई की बातें थीं। उन्होंने फ़रमाया :

1. जो तुम्हारे बारे में अल्लाह की नाफ़रमानी करे, तुम उसे उस जैसी और कोई सज़ा नहीं दे सकते कि तुम उसके बारे में अल्लाह की इताअत करो।
2. और अपने भाई की बात को किसी अच्छे रुख़ की तरफ़ ले जाने की पूरी कोशिश करो। हाँ, अगर वह बात ऐसी हो कि उसे अच्छे रुख़ की तरफ़ ले जाने की तुम कोई सूरत न बना सको तो और बात है।
3. और मुसलमान की ज़बान से जो बोल भी निकला है और तुम उसका कोई भी ख़ैर का मतलब निकाल सकते हो तो उससे बुरे मतलब का गुमान मत करो।
4. जो आदमी ख़ुद ऐसे काम करता है जिससे दूसरों को बदगुमानी का मौक़ा मिले तो वह अपने से बदगुमानी करनेवाले को हरगिज़

मलामत न करे।

5. जो अपने राज़ को छुपाएगा, इख़्तियार उसके हाथ में रहेगा।
6. सच्चे भाइयों के साथ रहने को लाज़िम पकड़ो। उनके साय-ए-ख़ैर में ज़िंदगी गुज़ारो क्योंकि वुसअत और अच्छे हालात में वे लोग तुम्हारे लिए ज़ीनत का ज़रिया और मुसीबत में हिफ़ाज़त का सामान होंगे।
7. हमेशा सच बोलो, चाहे सच बोलने से जान ही चली जाए।
8. बेफ़ायदा और बेकार कामों में न लगो।
9. जो बात अभी पेश नहीं आई उसके बारे में मत पूछो, क्योंकि जो पेश आ चुका है उसके तक़ाज़ों से ही कहाँ फ़ुरसत मिल सकती है।
10. अपनी हाजत उसके पास न ले जाओ जो यह नहीं चाहता कि तुम उसमें कामयाब हो जाओ।
11. झूठी क़सम को हल्का न समझो, वरना अल्लाह तुम्हें हलाक कर देगा।
12. बदकारों के साथ न रहो वरना तुम भी उनसे बदकारी सीख लोगे।
13. अपने दुश्मन से अलग रहो।
14. अपने दोस्त से भी चौकन्ने रहो, लेकिन अगर वह अमानतदार है तो फिर इसकी ज़रूरत नहीं, और अमानतदार सिर्फ़ वही हो सकता है जो अल्लाह से डरनेवाला हो।
15. क़ब्रिस्तान में जाकर ख़ुशूअ इख़्तियार करो।
16. और जब अल्लाह की फ़रमाँबरदारी का काम करो तो आजिज़ी और इंकिसारी इख़्तियार करो।
17. और जब अल्लाह की नाफ़रमानी हो जाए तो अल्लाह की पनाह चाहो।
18. और अपने तमाम उमूर में उन लोगों से मशविरा किया करो जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ (سورۃ فاطر آیات ۲۸)

ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी अज़्मत का) इल्म रखते हैं। (हयातुस सहाबा, 3 : 560-561)

जिहालत की नहूसत

एक शख़्स के दो बेटे थे। वालिद ने अपनी हयात ही में अपनी जायदाद तक़्सीम कर दी। वालिद के इंतिक़ाल के बाद दोनों भाइयों के खेत के दर्मियान एक दरख़्त उगा, बदक़िस्मती से वह दरख़्त बबूल का था। दोनों भाइयों के दर्मियान झगड़ा शुरू हुआ। एक ने कहा यह मेरा, दूसरे ने कहा यह मेरा। बिल आख़िर यह झगड़ा अदालत में पहुँचा। तीस साल तक मुक़द्दमा चलता रहा। दोनों की जायदादें बिक गईं। मुक़द्दमा में यह फ़ैसला तै हुआ कि दरख़्त को काटो और आधा उसके घर और आधा उसके घर भेज दो। अल्लाह तआला जिहालत से हम सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीनः

बुढ़ापा वफ़ादार होता है
इंसान किन-किन स्टेशनों से गुज़रता है

"अल्लाह तआला वह है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा किया; फिर उस कमज़ोरी के बाद तवानाई दी, फिर उस तवानाई के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा कर दिया। जो चाहता है पैदा करता है, वह सबसे पूरा वाक़िफ़ और सब पर पूरा क़ादिर है।" (सूरह रूम आयत 54)

तशरीह : इंसान की तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुल पर नज़र डालो! उसकी असल तो मिट्टी से है, फिर नुत्फ़े से, फिर ख़ून बस्ता से, फिर गोश्त के लोथड़े से, फिर उसे हड्डियाँ पहनाई जाती हैं, फिर हड्डियों पर गोश्त-पोश्त पहनाया जाता है, फिर रूह फूँकी जाती है। फिर माँ के पेट से ज़ईफ़ व नहीफ़ होकर निकलता है; फिर थोड़ा-थोड़ा बढ़ता जाता है और मज़बूत होता जाता है। फिर बचपन के ज़माने की बहारें देखता है; फिर जवानी के क़रीब आ पहुँचता है, फिर जवान होता है आख़िर नशो-नुमा मौक़ूफ़ हो जाती है। अब क़ुवा फिर मुज़्महिल होने शुरू होते हैं, ताक़तें घटने लगती हैं, अधेड़ उम्र को पहुँचता है, फिर बूढ़ा होता है, फिर बूढ़ा फूस हो जाता है।

ताक़त के बाद की यह नाताक़ती भी क़ाबिले इबरत होती है कि हिम्मत पस्त है। देखना, सुनना, चलना, फिरना, उठना, उचकना, पकड़ना

ग़र्ज़ हर ताक़त घट जाती है। रफ़्ता-रफ़्ता बिल्कुल जवाब दे जाती है और सारी सिफ़तें मुतग़य्यर हो जाती हैं। बदन पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रुख़्सार पिचक जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं, बाल सफ़ेद हो जाते हैं। यह है क़ुव्वत के बाद की ज़ईफ़ी और बुढ़ापा। अल्लाह जो चाहता है करता है, बनाना, बिगाड़ना उसकी क़ुदरत के अदना करिश्मे हैं। सारी मख़्लूक़ उसकी गुलाम, वह सबका मालिक, वह आलिम व क़ादिर, न उसका-सा किसी का इल्म, न उस जैसी किसी की क़ुदरत। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, सफ़ा 180)

हलाल माल से दिया हुआ सदक़ा अल्लाह तआला अपने दाहिने हाथ में रखकर पालते हैं

सहीह हदीस में है कि जो शख़्स एक खजूर भी सदक़ा में दे—लेकिन हो हलाल तौर से हासिल की हुई—तो उसे अल्लाह तआला रहमान व रहीम अपने दाएँ हाथ में लेता है और इस तरह पालता और बढ़ाता है जिस तरह तुममें से कोई अपने घोड़े या ऊँट के बच्चे की परवरिश करता है, यहाँ तक कि वही एक खजूर उहुद पहाड़ से भी बड़ी हो जाती है।

अल्लाह तआला ही ख़ालिक़ व राज़िक़ है, इंसान अपनी माँ के पेट से नंगा, बेइल्म, बेकान, बे आँख, वेताक़त निकलता है, फिर ख़ुदा तआला उसे सब चीज़ें अता फ़रमाता है। माल भी, मिल्कियत भी, कमाई भी, तिजारत भी, ग़र्ज़ बेशुमार नेमतें अता फ़रमाता है। दो सहाबियों रज़ि० का बयान है कि हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त आप सल्ल० किसी काम में मशग़ूल थे। हमने भी आप सल्ल० का हाथ बटाया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, देखो! सर हिलने लगे तब तक भी रोज़ी से कोई महरूम नहीं रहता। इंसान नंगा-भूखा दुनिया में आता है। एक छिलका भी उसके बदन पर नहीं होता, फिर रब तआला ही उसे रोज़ियाँ देता है, वह इस हयात के बाद तुम्हें मार डालेगा, फिर क़ियामत के दिन ज़िंदा करेगा। ख़ुदा तआला के सिवा तुम जिन-जिन की इबादत कर रहे हो उनमें से एक भी इन बातों में से किसी एक पर क़ाबू नहीं रखता। इन कामों में से एक भी कोई नहीं कर सकता। अल्लाह तआला ही तनहा ख़ालिक़, राज़िक़ और मौत व ज़िंदगी का मालिक है; वही क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ को जिला देगा। उसकी मुक़द्दस, मुनज़्ज़ह,

मुअज़्ज़म और इज़्ज़त व जलाल वाली ज़ात इससे पाक है कि कोई उसका शरीक हो या उस जैसा हो या उसके बराबर हो या उसकी औलाद हो या माँ-बाप हों। वह *अहद* है, *समद* है, *फ़र्द* है, माँ-बाप से, औलाद से पाक है। उसकी कुफ़ू का कोई नहीं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, 4 : 175)

हज़रत लुक़मान की नसीहतें

हिक्मत से मिस्कीन लोग बादशाह बन जाते हैं

हज़रत लुक़मान हकीम का एक क़ौल यह भी मरवी है कि ख़ुदा तआला को जब कोई चीज़ सौंप दी जाती है तो अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त करता है—आपने अपने बेटे से यह भी फ़रमाया था कि हिक्मत से मिस्कीन लोग बादशाह बन जाते हैं।

आपका फ़रमान है कि जब किसी मज्लिस में पहुँचो, पहले इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ सलाम करो, फिर मज्लिस के एक तरफ़ बैठ जाओ। दूसरे न बोलें तो तुम भी ख़ामोश रहो। अगर वे लोग अल्लाह का ज़िक्र करें तो तुम उनमें सबसे ज़्यादा हिस्सा लेने की कोशिश करो और अगर गपशप शुरू कर दें तो तुम उस मज्लिस को छोड़ दो।

मरवी है कि आप अपने बच्चे को नसीहत करने के लिए जब बैठे तो राई की भरी हुई एक थैली अपने पास रख ली थी और हर-हर नसीहत के बाद एक दाना उसमें से निकाल लेते, यहाँ तक कि थैली ख़ाली हो गई तो आपने फ़रमाया, बच्चे अगर इतनी नसीहत किसी पहाड़ को करता तो वह भी टुकड़े-टुकड़े हो जाता। चुनांचे आपके साहबज़ादे का भी यही हाल हुआ।

रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि हब्शियों को देखा कि उनमें से तीन शख़्स अहले जन्नत के सरदार हैं, लुक़मान हकीम रह०, नजाशी रह० और बिलाल मुअज़्ज़िन रज़ि०। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, 4 : 190-191)

दीनदार फ़ुक़रा जन्नत के बादशाह

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि जन्नत के बादशाह वे लोग हैं जो परागंदा और बिखरे हुए बालों वाले हैं, ग़ुबार आलूद और गर्द से अटे हुए, वह अमीरों के घर जाना चाहें तो उन्हें इजाज़त नहीं मिलती, वे अगर

किसी बड़े घराने में माँगा डालें तो वहाँ की बेटी उन्हें नहीं मिलती। उन मिस्कीनों से इंसाफ़ के बर्ताव नहीं बरते जाते। उनकी हाजतें और उनकी उमंगें और मुरादें पूरी होने से पहले वे ख़ुद ही फ़ौत हो जाते हैं और आरज़ुएँ दिल की दिल में ही रह जाती हैं। उन्हें क़ियामत के दिन इस क़दर नूर मिलेगा कि अगर वह तक़्सीम किया जाए तो तमाम दुनिया को काफ़ी हो जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के अशआर में है कि बहुत-से वे लोग जो दुनिया में हक़ीर व ज़लील समझे जाते हैं कल क़ियामत के दिन तख़्त व ताजवाले, मुल्क व मालवाले, इज़्ज़त व जलाल वाले बने हुए होंगे। बाग़ात में, नहरों में, नेमतों में, राहतों में मशग़ूल होंगे।

रसूल करीम सल्ल० फ़रमाते हैं कि जनाब बारी तआला का इरशाद है कि सबसे ज़्यादा मेरा पसन्दीदा वली वह है जो मोमिन हो कम माल वाला, कम जानों वाला, नमाज़ी, इबादत व इताअत-गुज़ार, पोशीदा व एलानिया मुतीअ हो, लोगों में उसकी इज़्ज़त और उसका वक़ार न हो, उसकी जानिब उंगलियों न उठती हों और वह उस पर साबिर हो। फिर हुज़ूर सल्ल० ने चुटकी बजाकर फ़रमाया : "उसकी मौत जल्दी आ जाती है, उसकी मीरास बहुत कम होती है, उस पर रोने वालियाँ थोड़ी होती हैं।"

आंहज़रत सल्ल० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के सबसे ज़्यादा महबूब बन्दे ग़ुरबा हैं जो अपने दीन को लिए फिरते हैं। जहाँ दीन के कमज़ोर होने का ख़तरा होता है वहाँ से निकल खड़े होते हैं। यह क़ियामत के दिन ईसा अलैहि० के साथ जमा होंगे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, 4 : 190-192)

दुआ माँगने के आदाब

1. दुआ सिर्फ़ ख़ुदा तआला से माँगनी चाहिए

दुआ सिर्फ़ ख़ुदा से माँगिए। उसके सिवा कभी किसी को हाजतरवाई के लिए न पुकारिए। इसलिए कि दुआ इबादत का जौहर है, और इबादत का मुस्तहिक़ तनहा ख़ुदा है। क़ुरआन पाक का इरशाद है :

उसी को पुकारना बरहक़ है। और ये लोग उसको छोड़कर जिन

हस्तियों को पुकारते हैं, वे उनकी दुआओं का कोई जवाब नहीं दे सकते। उनको पुकारना तो ऐसा है जैसे कोई शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाकर चाहे कि पानी (दूर ही से) उसके मुँह में आ पहुँचे, हालांकि पानी उस तक कभी नहीं पहुँच सकता। बस इसी तरह काफ़िरों की दुआएँ बेनतीजा भटक रही हैं। (सूरह रअद, आयत 14)

यानी हाजतरवाई और कारसाज़ी के सारे इख़्तियारात ख़ुदा ही के हाथ में हैं। उसके सिवा किसी के पास कोई इख़्तियार नहीं। सब उसी के मोहताज हैं। उसके सिवा कोई नहीं जो बन्दों की पुकार सुने और उनकी दुआओं का जवाब दे।

इंसानो! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो, अल्लाह ही ग़नी और बेनियाज़ और अच्छी सिफ़ातवाला है। (सूरह फ़ातिर, आयत 15)

नबी करीम सल्ल० का इरशाद है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है :

☆ मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म हराम कर लिया है तो तुम भी एक-दूसरे पर ज़ुल्म व ज़्यादती को हराम समझो।

☆ मेरे बन्दो! तुममें से हर एक गुमराह है सिवाय उसके जिसको मैं हिदायत दूं, पस तुम मुझ ही से हिदायत तलब करो। मैं तुम्हें हिदायत दूँगा।

☆ मेरे बन्दो! तुममें से हर एक नंगा है सिवाय उसके जिसको मैं पहनाऊँ, पस तुम मुझी से लिबास माँगो, मैं तुम्हें पहनाऊँगा।

☆ मेरे बन्दो! तुम रात में भी गुनाह करते हो और दिन में भी, और मैं सारे गुनाह माफ़ कर दूंगा।" (सहीह मुस्लिम)

☆ और आप सल्ल० ने यह भी इरशाद फ़रमाया है कि "आदमी को अपनी सारी हाजतें ख़ुदा ही से माँगनी चाहिएँ। यहाँ तक कि अगर जूती का तसमा टूट जाए तो ख़ुदा ही से माँगे और अगर नमक की ज़रूरत हो तो वह भी उसी से माँगे।" (तिर्मिज़ी)

☆ मतलब यह है कि इंसान को अपनी छोटी से छोटी ज़रूरत के लिए ख़ुदा ही की तरफ़ मुतवज्जेह होना चाहिए। उसके सिवा न कोई दुआओं का सुनने वाला है और न कोई मुरादें पूरी करनेवाला है।

2. नाजाइज़ और नामुनासिब बातों की दुआ न माँगो

ख़ुदा से वही कुछ माँगिए जो हलाल और तय्यब हो, नाजाइज़ मक़ासिद और गुनाह के कामों के लिए ख़ुदा के हुज़ूर हाथ फैलाना इंतिहाई दर्जे की बेअदबी, बेहयाई और गुस्ताख़ी है। हराम और नाजाइज़ मुरादों के पूरा होने के लिए ख़ुदा से दुआएँ करना और मन्नतें मानना दीन के साथ बदतरीन क़िस्म का मज़ाक़ है।

इसी तरह उन बातों के लिए भी दुआ न माँगिए जो ख़ुदा ने अज़ली तौर पर तै फ़रमा दी हैं और जिनमें तब्दीली नहीं हो सकती। मसलन कोई पस्ताक़द इंसान अपने क़द के दराज़ होने की दुआ करे, या कोई ग़ैर मामूली दराज़क़द इंसान क़द के पस्त होने की दुआ करे, या कोई दुआ करे कि मैं हमेशा जवान रहूँ और कभी बुढ़ापा न आए, वग़ैरह। क़ुरआन का इरशाद है :

> "और हर इबादत में अपना रुख़ ठीक उसी तरफ़ रखो, और उसी को पुकारो उसके लिए अपनी इताअत को ख़ालिस करते हुए।"

ख़ुदा के हुज़ूर अपनी ज़रूरतें रखने वाला नाफ़रमानी की राह पर चलते हुए नाजाइज़ मुरादों के लिए दुआएँ न माँगे, बल्कि अच्छा किरदार और पाकीज़ा जज़्बात पेश करते हुए नेक मुरादों के लिए ख़ुदा के हुज़ूर अपनी दरख़्वास्त रखे।

3. दुआ इख़्लास और यक़ीन के साथ माँगनी चाहिए

दुआ, गहरे इख़्लास और पाकीज़ा नीयत से माँगिए और इस यक़ीन के साथ माँगिए कि जिस ख़ुदा से आप माँग रहे हैं, वह आपके हालात का पूरा-पूरा यक़ीनी इल्म रखता है और आप पर इंतिहाई मेहरबान भी है, और वही है जो अपने बन्दों की पुकार सुनता और उनकी दुआएँ क़ुबूल करता है। नमूद व नुमाइश, रियाकारी और शिर्क के हर शाएबे से अपनी दुआओं को बेआमेज़ रखिए। क़ुरआन में है :

> "पस अल्लाह को पुकारो उसके लिए अपनी इताअत को ख़ालिस करते हुए।" (सूरह मोमिन, आयत 6)

और सूरह बक़रा में है :

"और ऐ रसूल! जब आपसे मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक़ पूछें तो उन्हें बता दीजिए कि मैं उनसे क़रीब ही हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ को क़बूल करता हूँ, लिहाज़ा उन्हें मेरी दावत क़बूल करनी चाहिए और मुझ पर ईमान लाना चाहिए ताकि वे राहे-रास्त पर चलें। (सूरा बक़रा, आयत 186)

4. दुआ पूरी तवज्जोह और हुज़ूरे क़ल्ब से माँगनी चाहिए

दुआ पूरी तवज्जोह, यकसूई और हुज़ूरे क़ल्ब से माँगिए और ख़ुदा से अच्छी उम्मीद रखिए। अपने गुनाहों के अंबार पर निगाह रखने के बजाय ख़ुदा के बेपायां अफ़ू व करम और बेहदो-हिसाब, जूद व सख़ा पर नज़र रखिए। उस शख़्स की दुआ दरहक़ीक़त दुआ ही नहीं है जो ग़ाफ़िल और लापरवा हो और ला उबालीपन के साथ महज़ नोके ज़बान से कुछ अल्फ़ाज़ बेदिली के साथ अदा कर रहा हो और ख़ुदा से ख़ुशगुमान न हो। हदीस में है :

"अपनी दुआओं के क़बूल होने का यक़ीन रखते हुए (हुज़ूरे क़ल्ब से) दुआ कीजिए। ख़ुदा ऐसी दुआ को क़बूल नहीं करता जो ग़ाफ़िल और बेपरवा दिल से निकली हो।" (तिर्मिज़ी)

5. दुआ इंतिहाई आजिज़ी और ख़ुशूअ के साथ माँगनी चाहिए

दुआ इंतिहाई आजिज़ी और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ माँगिए। ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से मुराद यह है कि आप का दिल ख़ुदा की हैबत और अज़्मत व जलाल से लरज़ रहा हो और जिस्म की ज़ाहिरी हालत पर भी ख़ुदा का ख़ौफ़ पूरी तरह ज़ाहिर हो, सर और निगाहें झुकी हुई हों, आवाज़ पस्त हो, आज़ा ढीले पड़े हुए हों, आँखें नम हों और तमाम अंदाज़ व अतवार से मिस्कीनी और बेकसी ज़ाहिर हो रही हो। नबी करीम सल्ल० ने एक शख़्स को देखा कि वह नमाज़ के दौरान अपनी दाढ़ी के बालों से खेल रहा है तो आप सल्ल० ने फ़रमाया "अगर उसके दिल में ख़ुशूअ होता तो उसके जिस्म पर भी ख़ुशूअ तारी होता।"

दरअस्ल दुआ माँगते वक़्त आदमी को उस तसव्वुर से लरज़ना चाहिए कि मैं एक दरमाँदा फ़क़ीर, एक बेनवा मिस्कीन हूँ। अगर ख़ुदा नख़्वास्ता मैं उस दर से ठुकरा दिया गया तो फिर मेरे लिए कहीं कोई

ठिकाना नहीं। मेरे पास अपना कुछ नहीं है, जो कुछ मिला है ख़ुदा ही से मिला है और अगर ख़ुदा न दे तो दुनिया में कोई दूसरा नहीं है जो मुझे कुछ दे सके। ख़ुदा ही हर चीज़ का वारिस है। उसी के पास हर चीज़ का ख़ज़ाना है। बन्दा महज़ फ़क़ीर और आजिज़ है। क़ुरआन पाक में हिदायत है :

"अपने रब को आजिज़ी और ज़ारी के साथ पुकारो।"

अबदियत की शान ही यही है कि बन्दा अपने परवरदिगार को निहायत आजिज़ी और मस्कनत के साथ गिड़गिड़ा कर पुकारे। और उसका दिल व दिमाग़ जज़्बात व एहसासात और सारे आज़ा उसके हुज़ूर झुके हुए हों, और उसके ज़ाहिर व बातिन की पूरी कैफ़ियत से एहतियाज व फ़रियाद टपक रही हो।

6. दुआ चुपके चुपके धीमी आवाज़ से माँगनी चाहिए

दुआ चुपके-चुपके धीमी आवाज़ से माँगिए। ख़ुदा के हुज़ूर ज़रूर गिड़गिड़ाइए लेकिन उस गिरया व ज़ारी की नुमाइश हरगिज़ न कीजिए। बन्दे की आजिज़ी और इंकसारी और फ़रियाद सिर्फ़ ख़ुदा के सामने होनी चाहिए।

बिलाशुब्हा बाज़ औक़ात दुआ ज़ोर-ज़ोर से भी कर सकते हैं; लेकिन या तो तंहाई में ऐसा कीजिए या फिर जब इज्तिमाई दुआ करा रहे हों तो उस वक़्त बुलन्द आवाज़ से दुआ कीजिए ताकि दूसरे लोग आमीन कहें। आम हालात में ख़ामोशी के साथ पस्त आवाज़ में दुआ कीजिए और इस बात का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए कि आपकी गिरया व ज़ारी और फ़रियाद बन्दों को दिखाने के लिए हरगिज़ न हो :

> "और अपने रब को दिल ही दिल में ज़ारी और ख़ौफ़ के साथ याद किया करो और ज़बान से भी हल्की आवाज़ से सुबह व शाम याद करो। और उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।"

हज़रत ज़करिया अलैहि० की शाने बन्दगी की तारीफ़ करते हुए क़ुरआन में कहा गया है : *"इज़ नादा रब्बहू निदाअन ख़ुफ़िय-या"* (मरयम आयत : 3) जब उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा।

7. दुआ करने से पहले कोई नेक काम कीजिए या नेक काम का वास्ता देकर दुआ कीजिए

दुआ करने से पहले कोई नेक अमल ज़रूर कीजिए, मसलन कुछ सदक़ा व ख़ैरात कीजिए, किसी भूखे को खाना खिला दीजिए, या नफ़्ल नमाज़ और रोज़ों का एहतिमाम कीजिए और अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाएँ तो अपने आमाल का वास्ता देकर दुआ कीजिए जो आपने पूरे इख़्लास के साथ सिर्फ़ ख़ुदा के लिए किए हों। क़ुरआन में है :

> "उसी की तरफ़ पाकीज़ा कलिमात चढ़ते हैं और नेक अमल उन्हें बुलन्द मदारिज तै कराते हैं।" (सूरा फ़ातिर, 10)

नबी करीम सल्ल० ने एक बार तीन ऐसे असहाब का वाक़िआ सुनाया जो एक अंधेरी रात में एक ग़ार के अंदर फँस गए थे। उन लोगों ने अपने मुख़्लिसाना अमल का वास्ता देकर ख़ुदा से दुआ की और ख़ुदा ने उनकी मुसीबत को दूर फ़रमा दिया।

वाक़िआ यह हुआ कि तीन साथियों ने एक रात एक ग़ार में पनाह ली। ख़ुदा का करना, पहाड़ से एक चट्टान फिसल कर ग़ार के मुँह पर आ पड़ी और ग़ार बन्द हो गया। देव क़ामत चट्टान थी, भला उनके बस में कहाँ था कि उसको हटाकर ग़ार का मुँह खोल दें। मशविरा यह हुआ कि अपनी-अपनी ज़िंदगी के मुख़्लिसाना अमल का वास्ता देकर ख़ुदा से दुआ की जाए, क्या अजब कि ख़ुदा सुन ले और इस मुसीबत से नजात मिल जाए। चुनांचे एक ने कहा :

> "मैं जंगल में बकरियाँ चराया करता था और उसी पर गुज़ारा था मेरा। जब मैं जंगल से वापस आता तो सबसे पहले अपने बूढ़े माँ-बाप को दूध पिलाता और फिर अपने बच्चों को। एक दिन मैं देर से आया। बूढ़े माँ-बाप सो चुके थे। बच्चे जाग रहे थे और भूखे थे। लेकिन मैंने यह गवारा न किया कि माँ-बाप से पहले बच्चों को पिलाऊँ और यह भी गवारा न किया कि वालिदैन को जगाकर तकलीफ़ पहुँचाऊँ। चुनांचे मैं रात भर दूध का प्याला लिए उनके सरहाने खड़ा रहा। बच्चे मेरे पैरों में चिमट-चिमट कर रोते रहे लेकिन मैं सुबह तक उसी तरह खड़ा

रहा। ख़ुदाया! मैंने यह अमल ख़ालिस तेरी ख़ातिर किया। तू उसकी बरकत से ग़ार के मुँह से चट्टान हटा दे।"

चट्टान इतनी हटी कि आसमान नज़र आने लगा।

दूसरे ने कहा

"मैंने कुछ मज़दूरों से काम लिया और सबको मज़दूरी दे दी, लेकिन एक शख़्स अपनी मज़दूरी छोड़कर चला गया। कुछ अर्से के बाद जब वह मज़दूरी लेने आया तो मैंने उससे कहा कि ये गायें, बकरियां और यह नौकर-चाकर सब तुम्हारे हैं, ले जाओ। वह बोला, ख़ुदा के लिए मज़ाक़ न करो। मैंने कहा, मज़ाक़ नहीं वाक़ई यह सब कुछ तुम्हारा है। तुम जो रक़म छोड़कर गए थे मैंने उसको कारोबार में लगाया। ख़ुदा ने उसमें बरकत दी और यह जो कुछ तुम देख रहे हो सब उसी से हासिल हुआ है। यह तुम इत्मीनान के साथ ले जाओ, सब कुछ तुम्हारा है। वह शख़्स सब कुछ लेकर चला गया। ख़ुदाया! यह मैंने महज़ तेरी रज़ा के लिए किया। ख़ुदाया! तू उसकी बरकत से ग़ार के मुंह से चट्टान को दूर फ़रमा दे।"

ख़ुदा के करम से चट्टान और हट गई।

तीसरे ने कहा

"मेरी एक चचाज़ाद बहन थी, जिससे मुझको ग़ैर मामूली मुहब्बत हो गई थी। उसने कुछ रक़म माँगी। मैंने रक़म मुहय्या कर दी, लेकिन जब मैं अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए उसके पास बैठा तो उसने कहा, ख़ुदा से डरो और इस काम से बाज़ रहो। मैं फ़ौरन उठ गया और मैंने वह रक़म भी उसको बख़्श दी। ऐ ख़ुदा! तू ख़ूब जानता है कि मैंने यह सब महज़ तेरी ख़ुशनूदी के लिए किया। ख़ुदाया! तू उसकी बरकत से ग़ार के मुँह को खोल दे।"

ख़ुदा ने ग़ार के मुँह से चट्टान हटा दी और तीनों को ख़ुदा ने उस मुसीबत से नजात बख़्शी।

8. अच्छे कामों की तरफ़ सबक़त और हराम कामों से परहेज़ कीजिए

नेक मक़ासिद के लिए दुआ करेन के साथ-साथ अपनी ज़िंदगी को ख़ुदा की हिदायत के मुताबिक़ संवारने और सुधारने की कोशिश कीजिए। गुनाह और हराम से पूरी तरह परहेज़ कीजिए। हर काम में ख़ुदा की हिदायत का पास व लिहाज़ कीजिए और परहेज़गारी की ज़िंदगी गुज़ारिए। हराम खाकर, हराम पीकर, हराम पहनकर और बेबाकी के साथ हराम के माल से अपने जिस्म को पाल कर दुआ करनेवाला यह आरज़ू करे कि मेरी दुआ क़बूल हो, तो यह ज़बरदस्त नादानी और ढिठाई है। दुआ को क़ाबिले क़बूल बनाने के लिए ज़रूरी है कि आदमी का क़ौल व अमल भी दीन की हिदायत के मुताबिक़ हो।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा पाकीज़ा है और वह सिर्फ़ पाकीज़ा माल ही को क़बूल करता है, और ख़ुदा ने मोमिनों को उसी बात का हुक्म दिया है, जिसका उसने रसूलों को हुक्म दिया है चुनांचे उसने फ़रमाया है :

"ऐ रसूलो! पाकीज़ा रोज़ी खाओ, और नेक अमल करो।"

"ऐ ईमानवालो! जो हलाल और पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको बख़्शी हैं, वह खाओ।"

फिर आप सल्ल० ने एक ऐसे शख़्स का ज़िक्र किया जो लम्बी मसाफ़त तै करके मुक़द्दस मक़ाम पर हाज़िरी देता है, गुबार में अटा हुआ है, गर्द आलूद है और अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैलाकर कहता है : "ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब!" हालांकि उसका खाना हराम है, उसका पीना हराम है, उसका लिबास हराम है और हराम ही से उसके जिस्म की नशो नुमा हुई है। तो ऐसे (बाग़ी और नाफ़रमान) शख़्स की दुआ क्योंकर क़बूल हो सकती है? (सहीह मुस्लिम)

9. अल्लाह तआला से बराबर दुआ माँगते रहो

बराबर दुआ करते रहो। ख़ुदा के हुज़ूर अपनी आजिज़ी और एहतियाज और उबूदियत का इजहार ख़ुद एक इबादत है। ख़ुदा ने ख़ुद दुआ करने का हुक्म दिया है और फ़रमाया है कि बन्दा जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी सुनता हूँ। दुआ करने से कभी न उकताइए। और इस

चक्कर में कभी न पड़िए कि दुआ से तक़्दीर बदलेगी या नहीं, तक़्दीर का बदलना या न बदलना, दुआ का क़बूल करना या न करना ख़ुदा का काम है, जो अलीम व हकीम है। बन्दे का काम बहरहाल यह है कि वह एक फ़क़ीर, मोहताज की तरह बराबर उससे दुआ करता रहे और लम्हा भर के लिए भी ख़ुद को बेनियाज़ न समझे। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "सबसे बड़ा आजिज़ वह है जो दुआ करने में आजिज़ है।" (तबरानी)

और नबी करीम सल्ल० ने यह भी फ़रमाया है कि "ख़ुदा के नज़दीक दुआ से ज़्यादा इज़्ज़त व इकराम वाली चीज़ और कोई नहीं है।" (तिर्मिज़ी)

मोमिन की शान ही यह है कि वह रंज व राहत, दुख और सुख, तंगी और ख़ुशहाली, मुसीबत व आराम हर हाल में ख़ुदा ही को पुकारता है, उसी के हुज़ूर अपनी हाजतें रखता है और बराबर उससे ख़ैर की दुआ करता रहता है। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है, "जो शख़्स ख़ुदा से दुआ नहीं करता। ख़ुदा उस पर ग़ज़बनाक होता है।" (तिर्मिज़ी)

10. दुआ क़बूल न हो फिर भी दुआ माँगते रहो

दुआ की क़बूलियत के मामले में ख़ुदा पर पूरा भरोसा रखिए। अगर दुआ की क़बूलियत के असरात जल्द ज़ाहिर न हो रहे हों तो मायूस होकर दुआ छोड़ देने की ग़लती कभी न कीजिए। क़बूलियते दुआ की फ़िक्र में परेशान होने के बजाय सिर्फ़ दुआ माँगने की फ़िक्र कीजिए।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, "मुझे दुआ क़बूल होने की फ़िक्र नहीं है, मुझे सिर्फ़ दुआ माँगने की फ़िक्र है। जब मुझे दुआ माँगने की तौफ़ीक़ हो गई तो क़बूलियत भी उसके साथ हासिल हो जाएगी।"

नबी करीम सल्ल० का इरशाद है, "जब कोई मुसलमान ख़ुदा से कुछ माँगने के लिए ख़ुदा की तरफ़ मुँह उठाता है तो ख़ुदा उसका सवाल ज़रूर पूरा कर देता है– या तो उसकी मुराद पूरी हो जाती है या ख़ुदा उसके लिए उसकी माँगी हुई चीज़ को आख़िरत के लिए जमा फ़रमा देता है।"

क़ियामत के दिन ख़ुदा एक बन्द-ए-मोमिन को अपने हुज़ूर तलब फ़रमाएगा और उसको अपने सामने खड़ा करके पूछेगा, "ऐ मेरे बन्दे! मैंने तुझे दुआ करने का हुक्म दिया था और यह वादा किया था कि मैं तेरी

दुआ को क़बूल करूँगा। तो क्या तूने दुआ माँगी थी?" वह कहेगा, "परवरदिगार! माँगी थी।" फिर ख़ुदा फ़रमाएगा, "तूने मुझसे जो दुआ भी माँगी थी मैंने वह क़बूल की, क्या तूने फ़लाँ दिन यह दुआ न की थी कि मैं तेरा रंज व ग़म दूर कर दूँ जिसमें तू मुब्तला था और मैंने तुझे उस रंज व ग़म से नजात बख़्शी थी?" बन्दा कहेगा, "बिल्कुल सच है परवरदिगार।"

फिर ख़ुदा फ़रमाएगा, "वह दुआ तो मैंने क़बूल करके दुनिया ही में तेरी आरज़ू पूरी कर दी थी और फ़लाँ रोज़ फिर तूने दूसरे ग़म में मुब्तला होने पर दुआ की कि ख़ुदाया! इस मुसीबत से नजात दे, मगर तूने उस रंज व ग़म से नजात न पाई और बराबर उसमें मुब्तला रहा।" वह कहेगा, "बेशक परवरदिगार!" तो ख़ुदा फ़रमाएगा, "मैंने उस दुआ के बदले जन्नत में तेरे लिए तरह-तरह की नेमतें जमा कर रखी हैं।" और इसी तरह दूसरी हाजतों के बारे में भी दरयाफ़्त करके यही फ़रमाएगा।

फिर नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "बन्द-ए-मोमिन की कोई दुआ ऐसी न होगी जिसके बारे में ख़ुदा यह बयान न फ़रमा दे कि यह मैंने दुनिया में क़बूल की और यह तुम्हारी आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा करके रखी। उस वक़्त बन्द-ए-मोमिन सोचेगा कि काश! मेरी कोई दुआ भी दुनिया में क़बूल न होती, इसलिए बन्दे को हरहाल में दुआ माँगते रहना चाहिए। (हाकिम)

11. दुआ के वक़्त ज़ाहिर व बातिन पाक-साफ़ होना चाहिए

दुआ माँगते वक़्त ज़ाहिरी आदाब, तहारत, पाकीज़गी का पूरा-पूरा ख़्याल रखिए और क़ल्ब को भी नापाक जज़्बात, गन्दे ख़्यालात और बेहूदा मोतक़िदात से पाक रखिए। क़ुरआन में है :

> "बेशक ख़ुदा के महबूब बन्दे वे हैं जो बहुत ज़्यादा तौबा करते हैं और निहायत पाक-साफ़ रहते हैं।"

और सूरह मुद्दस्सिर में है :

> "और अपने रब की किबरियाई बयान कीजिए और अपने नफ़्स को पाक रखिए।"

12. पहले अपने लिए फिर दूसरों के लिए दुआ कीजिए

दूसरों के लिए भी दुआ कीजिए। लेकिन हमेशा अपनी ज़ात से शुरू कीजिए। पहले अपने लिए माँगिए फिर दूसरों के लिए। क़ुरआन पाक में हज़रत इब्राहीम अलैहि० और हज़रत नूह अलैहि० की दो दुआएँ नक़ल की गई हैं जिनसे यही सबक़ मिलता है :

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلاةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاء رَبَّنَا اغْفِرْ لِي
وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ (ابراہیم، آیت: ۴۰، ۴۱)

"ऐ मेरे रब! मुझे नमाज़ क़ायम करनेवाला बना और मेरी औलाद को भी। परवरदिगार! मेरी दुआ क़बूल फ़रमाँ और मेरे वालिदैन और सारे मुसलमानों को उस दिन माफ़ फ़रमा दे जबकि हिसाब क़ायम होगा।"

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِناً وَّلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ

"मेरे रब! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, और मेरे माँ-बाप की मग़फ़िरत फ़रमा और उन मोमिनों की मग़फ़िरत फ़रमा जो ईमान लाकर तेरे घर में दाख़िल हुए और सारे ही मोमिन मर्दों और औरतों की मग़फ़िरत फ़रमाँ" (सूरा नूह, आयत : 28)

हज़रत अबी बिन कअ्ब रज़ि० फ़रमाते हैं, "नबी करीम सल्ल० जब किसी शख़्स का ज़िक्र फ़रमाते तो उसके लिए दुआ करते और दुआ अपनी ज़ात से शुरू करते।" (तिर्मिज़ी)

13. इमाम को जामेअ और जमा के सीग़ों के साथ दुआ माँगनी चाहिए

अगर आप इमामत कर रहे हैं तो हमेशा जामेअ दुआएँ माँगिए और जमा के सेग़े इस्तेमाल कीजिए। क़ुरआन पाक में जो दुआएँ नक़ल की गई हैं, उनमें बिल उमूम जमा ही के सेग़े इस्तेमाल किए गए हैं।

14. दुआ में तंगनज़री से परहेज़ कीजिए

दुआ में तंगनज़री और ख़ुदग़र्ज़ी से भी बचिए और ख़ुदा की आम रहमत को महदूद समझने की ग़लती करके उसके फ़ैज़ व बख़्शिश को

अपने लिए ख़ास करने की दुआ न कीजिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी में एक बद्दू आया। उसने नमाज़ पढ़ी, फिर दुआ माँगी और कहा ऐ ख़ुदा मुझ पर और मुहम्मद सल्ल० पर रहम फ़रमा और हमारे साथ किसी और पर रहम न फ़रमाँ तो नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया, "तूने ख़ुदा की वसीअ रहमत को तंग कर दिया।" (बुख़ारी)

15. दुआ में बातकल्लुफ़ क़ाफ़ियाबन्दी से परहेज़ कीजिए

दुआ में बातकल्लुफ़ क़ाफ़ियाबन्दी से भी परहेज़ कीजिए और सादा अंदाज़ में गिड़गिड़ा कर दुआ माँगिए, गाने और सर हिलाने से इज्तिनाब कीजिए। अलबत्ता बग़ैर किसी तकल्लुफ़ के कभी ज़बान से मौज़ूं अल्फ़ाज़ निकल जाएँ या क़ाफ़िया की रिआयत हो जाए तो कोई मुज़ाइक़ा भी नहीं है। नबी करीम सल्ल० से भी बाज़ दुआएँ ऐसी मंक़ूल हैं जिनमें बेसाख़्ता क़ाफ़ियाबन्दी और वज़न की रिआयत की गई है। मसलन आप सल्ल० की एक निहायत ही जामेअ दुआ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० से मरवी है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِکَ مِنْ قَلْبٍ لَّا یَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ عِلْمٍ
لَّا یَنْفَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا یُسْتَجَابُ لَهَا.

"ख़ुदाया! मैं तेरी पनाह में आता हूँ, उस दिल से जिसमें ख़ुशूअ न हो, उस नफ़्स से जिसमें सब्र न हो, उस इल्म से जो नफ़ा बख़्श न हो, और उस दुआ से जो क़बूल न हो।"

16. दुआ का आग़ाज़ अल्लाह की हम्द व सना और सलात व सलाम से कीजिए

दुआ की इब्तिदा अल्लाह तआला की हम्द व सना और दुरूद व सलाम से कीजिए। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है : "जब किसी शख़्स को ख़ुदा या किसी इंसान से ज़रूरत व हाजत पूरी करने का मामला दरपेश आए तो उसको चाहिए कि पहले वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़े और फिर ख़ुदा की हम्द व सना करे और नबी करीम सल्ल० पर दुरूद व सलाम भेजे, उसके बाद ख़ुदा की बारगाह में अपनी ज़रूरत को बयान करे।" (तिर्मिज़ी)

नबी करीम सल्ल० की शहादत है कि बन्दे की जो दुआ ख़ुदा की हम्द व सना और नबी सल्ल० पर दुरूद व सलाम के साथ पहुँचती है, वह शेर्फ़ क़बूलियत पाती है।

हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे कि एक शख़्स आया। उसने नमाज़ पढ़ी और नमाज़ के बाद कहा : *"अल्लाहुम्मग़फ़िरली"*, ख़ुदाया! मेरी मग़फ़िरत फ़रमाँ आप सल्ल० ने यह सुनकर उनसे कहा, "तुमने माँगने में जल्दबाज़ी से काम लिया। जब नमाज़ पढ़कर बैठो तो पहले ख़ुदा की हम्द व सना करो फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, फिर दुआ माँगो।" आप सल्ल० यह फ़रमा ही रहे थे कि दूसरा आदमी आया और उसने नमाज़ पढ़कर ख़ुदा की हम्द व सना बयान की, दुरूद शरीफ़ पढ़ा। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया "अब दुआ माँगो, दुआ क़बूल होगी।" (तिर्मिज़ी)

17. दुआ की क़बूलियत के ख़ास औक़ात और हालात

ख़ुदा से हर वक़्त, हर आन दुआ माँगते रहो, इसलिए कि वह अपने बन्दों की फ़रियाद सुनने से कभी नहीं उकताता। अलबत्ता अहादीस से मालूम होता है कि कुछ ख़ास औक़ात और मख़्सूस हालात ऐसे हैं जिनमें ख़ुसूसियत के साथ दुआएँ जल्द क़बूल होती हैं, लिहाज़ा उन मख़्सूस औक़ात और हालात में दुआओं का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाइए—

1. रात के पिछले हिस्से के सन्नाटे में जब आम तौर पर लोग मीठी नींद के मज़े में मस्त पड़े होते हैं। जो बन्दा उठकर अपने रब से राज़ व नियाज़ की गुफ़्तुगू करता है और मिस्कीन बनकर अपनी हाजतें उसके हुज़ूर रखता है तो अल्लाह तआला ख़ुसूसी करम फ़रमाता है। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है : "ख़ुदा हर रात को आसमाने दुनिया पर नुज़ूले अजलाल फ़रमाता है यहाँ तक कि जब रात का पिछला हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो फ़रमाता है : कौन मुझे पुकारता है कि मैं उसकी दुआ क़बूल करूँ, कौन मुझसे माँगता है कि मैं उसको अता करूँ, कौन मुझसे मग़फ़िरत चाहता है कि मैं उसे माफ़ करूँ।" (तिर्मिज़ी)
2. शबे क़द्र में ज़्यादा-से-ज़्यादा दुआ कीजिए कि यह रात ख़ुदा के नज़दीक एक हज़ार महीनों से ज़्यादा बेहतर है और यह दुआ ख़ास

तौर पर पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ.

"ख़ुदाया तू बहुत ज़्यादा माफ़ करने वाला है, माफ़ करने को पसन्द करता है, पस तू मुझे माफ़ फ़रमा दे।" (तिर्मिज़ी)

3. मैदाने अरफ़ात में जब 9 ज़िलहिज्जा को ख़ुदा के मेहमान जमा होते हैं।
4. जुमा की मख़्सूस साअत में जो जुमा का ख़ुतबा शुरू होने से नमाज़ के ख़त्म होने तक, या नमाज़े अस्र के बाद से नमाज़े मग़रिब तक है।
5. अज़ान के वक़्त और मैदाने जिहाद में जब मुजाहिदों की सफ़बन्दी की जा रही हो। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है : "दो चीज़ें ख़ुदा के दरबार में रद्द नहीं की जातीं, एक अज़ान के वक़्त की दुआ, दूसरी जिहाद (में सफ़बन्दी) के वक़्त की दुआ।" (अबू दाऊद)
6. अज़ान और तकबीर के दर्मियानी वक़्फ़े में। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है, "अज़ान और इक़ामत के दर्मियानी वक़्फ़े की दुआ रद्द नहीं की जाती।" सहाबा किराम रज़ि० ने दरयाफ़्त किया, "या रसूलल्लाह! उस वक़्फ़े में क्या दुआ माँगा करें?" फ़रमाया कि यह दुआ माँगा करो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

"ख़ुदाया! मैं तुझसे अफ़्फ़त व करम और आफ़ियत व सलामती माँगता हूँ, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।"

7. रमज़ान के मुबारक अय्याम में बिल ख़ुसूस इफ़्तार के वक़्त।
(बज़्ज़ार)
8. फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। (तिर्मिज़ी)
9. सज्दे की हालत में। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है, "सज्दे की हालत में बन्दा अपने रब से बहुत ही क़ुरबत हासिल कर लेता है। पस तुम उस हालत में ख़ूब-ख़ूब दुआ माँगा करो।"
10. जब आप किसी शदीद मुसीबत या इंतिहाई रंज व ग़म में मुब्तला

हों। (हाकिम)

11. जब ज़िक्र व फ़िक्र की कोई दीनी मज्लिस मुंअक़िद हो। (बुख़ारी, मुस्लिम)
12. जब क़ुरआन पाक ख़त्म हो। (तबरानी)

18. क़बूलियते दुआ के मख़्सूस मक़ामात

हज़रत हसन बसरी रह० जब मक्का से बसरा जाने लगे तो आपने मक्का वालों के नाम एक ख़त लिखा जिसमें मक्का के क़याम की एहमियत और फ़ज़ाइल बयान किए और यह भी वाज़ेह किया कि मक्का में इन मक़ामात पर ख़ुसूसियत के साथ दुआ क़बूल होती है।

1. मुल्तज़िम के पास।
2. मीज़ाबे रहमत के नीचे।
3. काबा के अंदर।
4. चाह ज़मज़म के पास।
5. सफ़ा-मरवा पर।
6. सफ़ा व मरवा के पास जहाँ सई की जाती है।
7. मक़ामे इबराहीम के पीछे।
8. अरफ़ात में।
9. मुज़दलिफ़ा में।
10. मिना में।
11. जमरात के पास। (हिस्ने हसीन)

19. मंक़ूल दुआओं का एहतिमाम कीजिए

बराबर कोशिश करते रहें कि आपको ख़ुदा से दुआ माँगने के वही अल्फ़ाज़ याद हो जाएँ जो क़ुरआन पाक और अहादीसे रसूल में आए हैं। ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों और नेक बन्दों को दुआ माँगने के जो अंदाज़ और अल्फ़ाज़ बताए हैं, उनसे अच्छे अल्फ़ाज़ और अंदाज़ कोई कहाँ से लाएगा। फिर ख़ुदा के बताए हुए और रसूलों के इख़्तियार किए हुए अल्फ़ाज़ में जो असर, मिठास, जामिअत, बरकत और क़बूलियत की शान

होती है यह किसी दूसरे कलाम में कैसे मुमकिन है। इसी तरह नबी करीम सल्ल० ने शबो-रोज़ जो दुआएँ माँगी हैं उनमें भी सोज़, मिठास, जामिअत और उबूदियते कामिला की ऐसी शान पाई जाती है कि उनसे बेहतर दुआओं, इल्तिजाओं और आरज़ुओं का तसव्वुर नहीं किया जा सकता।

क़ुरआन व हदीस की बताई हुई दुआओं का विर्द रखने और उनके अल्फ़ाज़ और मफ़्हूम पर ग़ौर करने से ज़ेहन व फ़िक्र की यह तर्बियत भी होती है कि मोमिन की तमन्नाएँ और इल्तिजाएँ क्या होनी चाहिएँ, किन कामों में उसको अपनी क़ुव्वतों को खपाना चाहिए और किन चीज़ों को अपना मुंतहाए मक़्सूद बनाना चाहिए।

बिला शुब्हा दुआ के लिए किसी ज़बान, अंदाज़ या अल्फ़ाज़ की कोई क़ैद नहीं है। बन्दा अपने ख़ुदा से जिस ज़बान और जिन अल्फ़ाज़ में जो चाहे माँगे। मगर यह ख़ुदा का मज़ीद फ़ज़्ल व करम है कि उसने यह भी बताया कि मुझसे यह माँगो और इस तरह माँगों और दुआओं के अल्फ़ाज़ तल्क़ीन करके बता दिया कि मोमिन को दीन व दुनिया की फ़लाह के लिए क्या नुक़त-ए-नज़र रखना चाहिए, और किन तमन्नाओं और आरज़ुओं से दिल की दुनिया को आरास्ता रखना चाहिए और फिर दीन व दुनिया की कोई हाजत और ख़ैर का कोई पहलू ऐसा नहीं जिसके लिए दुआ न सिखाई गई हो। इसलिए बेहतर यही है कि आप ख़ुदा से क़ुरआन व सुन्नत के बताए हुए अल्फ़ाज़ ही में दुआ माँगें और उन्हीं दुआओं का विर्द रखें जो क़ुरआन में नक़ल की गई हैं या मुख़्तलिफ़ औक़ात में ख़ुद नबी करीम सल्ल० ने माँगी हैं। अलबत्ता जब तक आपको क़ुरआन व सुन्नत की ये दुआएँ याद नहीं हो जातीं, उस वक़्त तक के लिए आप कम-से-कम यही एहतिमाम कीजिए कि अपनी दुआओं में किताब व सुन्नत की बताई हुई दुआओं के मफ़्हूम ही को पेश-नज़र रखें।

आगे, क़ुरआन पाक और नबी करीम सल्ल० की चन्द जामेअ दुआएँ नक़ल की जाती हैं, इन मुबारक दुआओं को धीरे-धीरे याद कीजिए और फिर इन्हीं का विर्द रखिए।

20. चन्द जामेअ दुआएँ

رَبَّنَا آتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(سورۂ بقرہ آیت:۲۰۱)

"ऐ हमारे रब! हमको दुनिया में भी बेहतरी इनायत कीजिए और आख़िरत में भी बेहतरी दीजिए और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचाइए।" (सूरा बक़रा, आयत 201)

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

"ऐ हमारे रब! हमको हमारी औरतों (या हमारे शौहरों) और हमारी औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक अता फ़रमा और हमको परहेज़गारों का पेशवा बना दे।"

(सूरा फ़ुरक़ान, आयत 74)

رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

"ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए, सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लीजिए।" (आले इमरान, आयत 16)

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (سورۂ فاتحہ)

"बता हम को सीधी राह।" (सूरा फ़ातिहा)

وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ (سورۂ بقرہ کی آخری آیت)

"और दरगुज़र कीजिए हमसे! और बख़्श दीजिए हमको! और रहम कीजिए हम पर! आप हमारे कारसाज़ हैं, सो आप हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए।"

(सूरा बक़रा की आख़िरी आयत)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِيْنَ، وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ (سورۂ یونس آیت:۸۵،۸۶)

"ऐ हमारे रब! हमको उन ज़ालिम लोगों का तख़्त-ए-मश्क़ न

बना, और हमको मेहरबानी फ़रमा कर उन काफ़िरों से नजात दे।" (सूरा यूनुस, आयत 75-76)

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

"ऐ हमारे रब! मेरी मग़फ़िरत कर दीजिए! और मेरे माँ-बाप की और तमाम मोमिनीन की भी, हिसाब क़ायम होने के दिन।" (सूरा इबराहीम, आयत 41)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى

(رواہ مسلم، مشکوٰۃ ص:۲۱۸)

"ऐ अल्लाह! मैं आपसे हिदायत, परहेज़गारी, पाकदामनी और बेनियाज़ी तलब करता हूँ।" (मुस्लिम, मिश्कात, पेज : 218)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

(رواہ الترمذی وابن ماجہ، مشکوٰۃ ص:۲۱۹)

"ऐ अल्लाह! मैं आपसे बख़्शिश और आफ़ियत तलब करता हूँ दुनिया और आख़िरत में।"

(तिर्मिज़ी व इब्ने माजा, मिश्कात, सफ़ा : 219)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ وَالْاَمَانَةَ وَحُسْنَ الْخُلُقِ وَالرِّضَا بِالْقَدْرِ

(رواہ البیہقی فی الدعوات الکبیر، مشکوٰۃ ص:۲۲۰)

"ऐ अल्लाह ! मैं आपसे सेहत व तंदुरुस्ती और पाकदामनी व पारसाई, अमानत और अच्छी सीरत और तक़्दीर पर राज़ी रहने की दरख़्वास्त करता हूँ।"

(बैहक़ी फ़िद दावतुल कबीर, मिश्कात, पेज : 220)

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِيْ مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِيْ مِنَ الرِّيَاءِ وَلِسَانِيْ مِنَ الْكَذِبِ وَعَيْنِيْ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ

(حوالہ بالا)

"या इलाही! पाक कर दे मेरे दिल को निफ़ाक़ से, और मेरे अमल को रियाकारी से, और मेरी ज़बान को झूठ से, और मेरी निगाह को ख़यानत से, आप ख़ूब जानते हैं आँखों की ख़यानत को और उन बातों को जिनको छुपाते हैं। (बैहक़ी, मिश्कात)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیٓ اَسْأَلُکَ عِلْمًانَافِعًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلاً وَ رِزْقًا طَیِّبًا (حوالہ بالا)

"या इलाही! मैं आपसे नफ़ाबख़्श इल्म, मक़्बूल अमल और पाकीज़ा रोज़ी माँगता हूँ।" (बैहक़ी मिश्कात)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ

(رواہ مسلم، مشکوٰۃ ص:۲۱۸)

"या इलाही! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा! और मुझ पर रहम फ़रमा! और मुझे हिदायत नसीब फ़रमा! और मुझे आफ़ियत अता फ़रमा, और मुझे रोज़ी अता फ़रमाँ"

(मुस्लिम, मिश्कात, पेज : 218)

اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَفَاعْفُ عَنِّیْ

"या इलाही! आप माफ़ करने वाले हैं, माफ़ करने को पसन्द करते हैं। पस मेरी ख़ताएँ माफ़ फ़रमाँ" (मिश्कात, पेज : 182)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْیَا وَالْمَمَاتِ (رواہ مسلم، مشکوٰۃ ص:۸۷)

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ दोज़ख़ के अज़ाब से, और मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, और मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ काने दज्जाल के फ़ितने से, और मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ ज़िंदगी और मौत के फ़ितने से।"

(मुस्लिम, मिश्कात, पेज : 87)

رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ

(رواہ احمد وابوداؤد والنسائی مشکوٰۃ ص:۸۸)

"ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा, तेरा ज़िक्र करने, तेरा शुक्र करने और तेरी अच्छी इबादत करने पर।"

(अहमद, अबू दाऊद, नसई, मिश्कात पेज : 88)

رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا (سورۂ طٰہٰ آیت : ۱۱۴)

"ऐ मेरे रब! मेरे इल्म व फ़हम में इज़ाफ़ा फ़रमाँ"

(सूरा ताहा, आयत 114)

परेशानियों से नजात और रिज़्क़ में बरकत के लिए आसान नबवी नुस्ख़ा

مَاشَاءَ اللّٰہُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ، اَشْھَدُ اَنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

"वही होगा जो अल्लाह चाहे, न कोई ताक़त है न क़ुव्वत सिवाय अल्लाह के, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह पाक हर चीज़ पर क़ादिर है।"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, "जो शख़्स सुबह में यह दुआ पढ़ ले तो उस दिन बेहतरीन रिज़्क़ से नवाज़ा जाएगा और बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा, और जो शाम को पढ़ ले तो उस रात बेहतरीन रिज़्क़ से नवाज़ा जाएगा और बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा।

(कंज़ुल अमाल, 2 : 106, अद् दुआ अल् मसनून, पेज : 254)

बिसमिल्लाह की ख़ासियतें

1. मुजर्रबात देरबी, मत्बूआ मिस्र, पेज : 4 पर शैख़ अहमद देरबी कबीर फ़रमाते हैं कि बिसमिल्लाह के बाज़ ख़वास में से एक यह है कि अगर कोई मुहर्रम की एक तारीख़ को बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम एक वर्क़ (काग़ज़) पर एक सौ तेरह (113) बार लिखकर अपने पास रखे तो पूरी ज़िंदगी उसको कोई नाख़ुशगवार वाक़िआ पेश न आए।
2. बाज़ सालिहीन से मंक़ूल है कि जो शख़्स *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* को बारह हज़ार बार पढ़े, और हर एक हज़ार के बाद दो रकअत

नमाज़ पढ़े और नबी करीम सल्ल० पर दुरूद भेजे और उसके साथ हक़ तआला से अपनी हाजत का सवाल करे, फिर दोबारा बिसमिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम पढ़े और एक हज़ार के बाद दो रकअत नमाज़ और दुरूद शरीफ़ पढ़कर तलबे हाजत करे, इसी तरह पढ़ता रहे यहाँ तक कि बारह हज़ार अदद मज़्कूर पूरे हो जाएँ। पस जो कोई इस पर अमल करेगा, हाजत उसकी जिस तरह की होगी बिइज़्निल्लाह पूरी होगी। (मुजर्रबात देरबी, पेज-4)

3. जो शख़्स *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* सात सौ छियासी (786) बार लगातार सात दिन जिस काम के वास्ते पढ़ेगा, चाहे नफ़ा हासिल करने के वास्ते हो या मुसीबत को हटाने के वास्ते, या कारोबार के वास्ते हो, इंशाअल्लाह वह मक़सद पूरा होगा।

   (मुजर्रबात देरबी, पेज-4)

4. ख़ज़ीनतुल् इसरारुन्नाज़िली में लिखा है कि जो शख़्स रात को सोते वक़्त इक्कीस (21) बार *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* पढ़कर सोए वह तमाम इंसानी, शैतानी शरारतों और जिन, भूत और आग से महफ़ूज़ रहेगा।

5. मिर्गी वाले के कान में इक्तालीस (41) मर्तबा बिसमिल्ला-हिर्रहमा निर्रहीम पढ़कर दम करने से वह होश में आ जाता है।

6. दर्द या जादू वग़ैरह पर मुतवातिर (लगातार) सात दिन सौ (100) सौ (100) मर्तबा बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम पढ़ने से दर्द और जादू दूर हो जाता है।

7. इतवार की सुबह सूरज निकलते ही तीन सौ तेरह (313) मर्तबा *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* और सौ (100) दफ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ने से ग़ैबी रिज़्क़ का दरवाज़ा खुल जाता है।

8. इक्कीस (21) मर्तबा *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* लिखकर बच्चों के गले में डालने से बच्चा तमाम आफ़ात व बलाओं से मामून रहता है।

9. *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* इकसठ (61) बार किसी काग़ज़ पर लिखी जाए और जिस औरत की औलाद ज़िंदा न रहती हो वह उसको अपने पास बतौर तावीज़ रखे। इंशाअल्लाह उसकी औलाद ज़िंदा रहेगी, यह अम्र मुजर्रब और आज़मूदा है। (मुजर्रबात देरबी)

10. अगर कोई शख़्स *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* एक सौ एक (101) बार लिखकर अपने खेत में दफ़न करे तो मूजिब सरसब्ज़ी खेत व फ़रावानी ग़ल्ला व हिफ़ाज़त अज़ जुमला आफ़ात व बाइसे हुसूले बरकत होगा। (मुजर्रबात देरबी, पेज-6)

11. एक मर्द सालेह ने कहा कि जो कोई *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* छः सौ पच्चीस (625) बार लिखकर अपने पास रखेगा, अल्लाह तआला उसको हैबते अज़ीम देगा। कोई शख़्स उसको सता न सकेगा। बिइज़्निल्लाह। (किताबुद्-दुआ वद दवा लिल नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान, पेज-17)

12. इमाम राज़ी रह० तफ़्सीर कबीर जल्द अव्वल पेज– 168, पर *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* की बरकात बयान फ़रमाते हुए लिखते हैं कि फ़िरऔन ने दावए उलूहियत करने से पहले एक मकान बनाया था और उसके बेरूनी दरवाज़े पर *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* लिखी थी। जब उसने ख़ुदाई दावा किया और हज़रत मूसा अलैहि० ने उसको तब्लीग़ की और उसने क़बूल न की तो हज़रत मूसा अलैहि० ने उसके हक़ में बद्दुआ की, "ख़ुदावंद! तूने इस ख़बीस को किस लिए मोहलत दे रखी है?" वह्य आई कि ऐ मूसा! यह है तो इस क़ाबिल कि इसको हलाक कर दिया जाए लेकिन इसके दरवाज़े पर *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* लिखी हुई है जिसकी वजह से वह अज़ाब से बचा हुआ है। इसी वजह से फ़िरऔन पर घर में अज़ाब नहीं आया, बल्कि वहां से निकाल कर दरिया में ग़र्क़ कर दिया गया।

    सुब्हानल्लाह! जब एक काफ़िर का घर *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* की वजह से अज़ाब से बच गया तो अगर कोई मुसलमान इसको अपने दिल व दिमाग़ और ज़बान पर लिख ले तो क्यों न वह अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहे।

13. हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी रह० तफ़्सीर अज़ीज़ी में लिखते हैं कि मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि जब तूफ़ाने नूह ने इस दुनिया को अपने ख़ौफ़नाक अज़ाब के चंगुल में घेर लिया और हज़रत नूह अलैहि० अपनी कश्ती में सवार हुए तो वह भी ख़ौफ़े ग़र्क़ से बहुत हिरासाँ व लरज़ाँ थे। उन्होंने ग़र्क़ से नजात पाने और उस अज़ाबे ख़ुदावंदी से महफ़ूज़ रहने के लिए *"बिसमिल्लाहि मजरीहा*

व मुरसाहा" कहा। इस कलिमे की बरकत से उनकी कश्ती ग़रक़ाबी से महफ़ूज़ व सालिम रही।

मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि जब इस आधे कलिमे की वजह से इतने हैबतनाक तूफ़ान से नजात हासिल हुई तो जो शख़्स अपनी पूरी ज़िंदगी इस पूरे कलिमे यानी *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* से अपने हर काम की इब्तिदा करने का इल्तिज़ाम कर ले वह नजात से क्योंकर महरूम रह सकता है? (तफ़्सीर अज़ीज़ी, सफ़ा-16 व तफ़्सीर कबीर, जिल्द-1, पेज- 169)

14. हज़रत सुलैमान अलैहि० ने जब बिल्क़ीस मल्क-ए-यमन को पहला ख़त लिखा तो *"इन्नहू मिन सुलैमा-न व इन्नहू बिसमिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम"* लिखा तो उसकी बरकत से बिल्क़ीस उनके निकाह में आई और उसका पूरा मुल्क हज़रत सुलैमान अलैहि० के क़ब्ज़े में आया।

(तफ़्सीर कबीर, पेज-169, जिल्द-1)

15. हज़रत ईसा अलैहि० का एक दफ़ा क़ब्रिस्तान से गुज़र हुआ तो देखा कि एक शख़्स को निहायत शिद्दत के साथ अज़ाब दिया जा रहा है। यह देखकर हज़रत ईसा अलैहि० चन्द क़दम आगे तशरीफ़ ले गए और वुज़ू और नहाकर वापस हुए। अब वापसी पर जो उस क़ब्र के पास से गुज़रे तो मुलाहिज़ा फ़रमाया कि उस क़ब्र में नूर ही नूर है और वहाँ रहमते इलाही की बारिश हो रही है। आप बहुत हैरान हुए और बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि मुझे इसका राज़ बताया जाए? इरशाद हुआ कि रूहुल्लाह! यह शख़्स सख़्त गुनाहगार व बदकार था, इस वजह से अज़ाब में गिरफ़्तार था। लेकिन इसने अपनी बीवी हामिला छोड़ी थी, उसके यहाँ लड़का पैदा हुआ और आज उसको मक्तब भेजा गया, वहाँ उसको *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* पढ़ाई। मुझे हया आई कि ज़मीन के अंदर उस शख़्स को अज़ाब दूँ कि जिसका बच्चा ज़मीन पर मेरा नाम ले रहा है। (तफ़्सीर कबीर, जिल्द-1, पेज-172)

16. हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के पास कोई शख़्स ज़हर हलाहल (मुहलिक) का लबरेज़ प्याला लाया और कहा कि अगर आप इस ज़हर को पीकर सहीह सलामत ज़िंदा रहें तो हम जान लेंगे कि

आपका मज़हब इस्लाम सच्चा मज़हब है। आपने *बिसमिल्ला-हिर्रहमा निर्रहीम* पढ़कर वह ज़हर पी लिया और ख़ुदा के फ़ज़्ल से कुछ भी असर न हुआ।

17. क़ैसरे रूम को बड़ी शिद्दत से दर्दे सर हुआ। इलाज मुआलिजा से मायूसी के बाद उसने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि० की ख़िदमत में लिखा कि मुझे दर्दे सर की शिकायत है कुछ इलाज कीजिए। आपने उसके पास एक टोपी भेज दी। जब बादशाह वह टोपी ओढ़ता था तो दर्द काफ़ूर हो जाता और जब उतार देता था तो दर्दे सर शुरू हो जाता, उसको सख़्त ताज्जुब हुआ। उसने टोपी को खुलवा कर देखा तो उसमें एक पर्चा रखा हुआ था जिसमें *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* लिखा हुआ था। (तफ़्सीर कबीर, पेज-171, जिल्द-1)

18. नीज़ उलमा ने यह भी लिखा है कि दिन रात के चौबीस घंटे होते हैं। पाँच घंटों के लिए तो पाँच वक़्त की नमाज़ें मुक़र्रर हैं और बक़िया उन्नीस (19) घंटों के लिए यह उन्नीस हुरूफ़ अता फ़रमाए गए ताकि उन्नीस घंटों में हर नशिस्त व बरख़ास्त, हर हरकत व सुकून और हर काम के वक़्त इन उन्नीस हुरूफ़ के ज़रिए बरकत व इबादत हासिल हो। यानी इन हुरूफ़ *"बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम"* की बरकत से यह उन्नीस घंटे भी इबादत में लिखे जाएँ। (तफ़्सीर अज़ीज़ी, 1 : 16)

19. *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* की बरकात में से एक यह है कि आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स बैतुल-ख़ला जाना चाहे तो चाहिए कि वह *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* कहकर जाए ताकि (इसकी वजह से) उसकी शर्मगाह और जिन्नात के दर्मियान पर्दा वाक़ेअ हो जाए। यानी जब कोई शख़्स *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम* कहकर बैतुल-ख़ला जाता है तो इसका ख़ास्सा यह है कि जिन्नात की नज़र उसकी शर्मगाह की तरफ़ नहीं जाती। लिहाज़ा जब इसकी तासीर यह है कि यह आयत इंसान और उसके दुश्मन (जिन्नात) के दर्मियान पर्दा बन जाती है तो उम्मीद है कि यह एक मुसलमान और अज़ाबे उक़बा के दर्मियान भी यक़ीनन पर्दा बनकर हाइल होगी। (तफ़्सीर अज़ीज़ी)

20. हज़रत बशर हाफ़ी रह० ने एक पर्चे पर *बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम*

लिखी हुई ज़मीन पर पाई। उसको उठा लिया। उनके पास सिवाए दो दिरहम के और कुछ न था। ख़ुश्बू ख़रीद कर उस पर्चे को आपने ख़ुश्बू लगाई, उसके सिले में ख़्वाब के अंदर हक़ सुब्हानहू व तआला की ज़ियारत नसीब हुई और फ़रमाया : "ऐ बशर! तूने मेरे नाम को ख़ुश्बूदार बनाया, मैं तेरे नाम को दुनिया और आख़िरत में ख़ुश्बूदार बनाऊँगा।" (किताबुद-दुआ वद दवा लिल नवाब सिद्दीक़ हसन, तफ़्सीर कबीर, पेज-171)

एक यतीम बच्चे का दर्द भरा क़िस्सा

वह ख़ुशनसीब सहाबी जिनकी क़ब्र में ख़ुद हुज़ूर सल्ल० उतरे और फ़रमाया : "ऐ अल्लाह! मैं इससे राज़ी हूँ, तू भी इससे रोज़ी हो जा।"

एक यतीम बच्चा था, उसका नाम अब्दुल्लाह था। चचा ने परवरिश की थीं, जब जवान हुए तो चचा ने ऊँट, बकरियाँ, ग़ुलाम देकर उनकी हैसियत दुरुस्त कर दी थी। अब्दुल्लाह ने इस्लाम के मुताल्लिक़ कुछ सुना और दिल में तौहीद का शौक़ पैदा हुआ लेकिन चचा से इस क़दर डरता था कि इज़्हार इस्लाम न कर सका। जब नबी करीम सल्ल० फ़तह मक्का से वापस गए तो अब्दुल्लाह ने चचा से कहा, "प्यारे चचा! मुझे बर्सों इंतिज़ार करते गुज़र गए कि कब आपके दिल में इस्लाम की तहरीक पैदा होती है और आप कब मुसलमान होते हैं? लेकिन आप का हाल वही पहले का-सा चला आता है, मैं अपनी उम्र पर ज़्यादा एतिमाद नहीं कर सकता, मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं मुसलमान हो जाऊँ।"

चचा ने जवाब दिया, "देख, अगर तू मुहम्मद (सल्ल०) का दीन क़ुबूल करना चाहता है तो मैं सब कुछ तुझसे छीन लूँगा, तेरे बदन पर चादर और तहबन्द तक बाक़ी न रहने दूँगा।"

अब्दुल्लाह ने जवाब दिया, "चचा जान! मैं मुसलमान ज़रूर बनूँगा और मुहम्मद सल्ल० की इत्तिबा क़बूल करूँगा, शिर्क और बुतपरस्ती से मैं बेज़ार हो चुका हूँ। अब जो आपकी मंशा है कीजिए और जो कुछ मेरे क़ब्ज़े में ज़र व माल वग़ैरह है सब कुछ सँभाल लीजिए, मैं जानता हूँ कि इन चीज़ों को आख़िर एक दिन यहीं दुनिया में छोड़ जाना है, इसलिए मैं इनके लिए सच्चे दीन को तर्क नहीं कर सकता।"

अब्दुल्लाह ने यह कहकर कपड़े उतार दिए और माँ के सामने गए। माँ देखकर हैरान हुई कि क्या हुआ। अब्दुल्लाह ने कहा, "मैं मोमिन और मुवहिहद हो गया हूँ, नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में जाना चाहता हूँ, सतरपोशी के लिए कपड़े की ज़रूरत है, मेहरबानी करके दे दीजिए।" माँ ने एक कम्बल दे दिया। अब्दुल्लाह ने कम्बल फाड़ा। आधे का तहबन्द बना लिया, आधा ऊपर कर लिया और मदीना को रवाना हो गया। अलस्सुबह मस्जिद नबवी में पहुँच गया और मस्जिद से तकिया लगाकर आंहज़रत सल्ल० के इंतिज़ार में बैठ गया। नबी करीम सल्ल० जब मस्जिदे मुबारक में आए, उसे देखकर पूछा कि कौन हो? कहा, "मेरा नाम अब्दुल उज़्ज़ा है, फ़क़ीर व मुसाफ़िर हूँ, आशिक़े जमाल और तालिबे हिदायत होकर दरे दौलत आ पहुँचा हूँ।"

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "तुम्हारा नाम अब्दुल्लाह है, 'ज़ूलबिजा दैन' लक़ब, तुम हमारे क़रीब ही ठहरो और मस्जिद में रहा करो।" अब्दुल्लाह असहाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गया। नबी करीम सल्ल० से क़ुरआन सीखता और दिन भर अजब ज़ौक़ व शौक़ और जोश व निशात से पढ़ा करता।

एक बार हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने कहा कि लोग तो नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह इराक़ी इस क़दर बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र कर रहा है कि दूसरों की क़िरात में मज़ाहमत होती है। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "उमर! इसे कुछ न कहो। यह तो ख़ुदा और रसूल के लिए सब कुछ छोड़-छाड़ कर आया है।"

अब्दुल्लाह के सामने ग़ज़व-ए-तबूक की तैयारी होने लगी तो यह भी रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में आए। अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! दुआ फ़रमाइए कि मैं भी राहे ख़ुदा में शहीद हो जाऊँ। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ किसी दरख़्त का छिलका उतार लाओ। अब्दुल्लाह ले आए तो नबी करीम सल्ल० ने वह छिलका उनकी बाज़ू पर बांध दिया और ज़बाने मुबारक से फ़रमाया : "इलाही! मैं कुफ़्फ़ार पर इसका ख़ून हराम करता हूँ।" अब्दुल्लाह ने कहा, "या रसूलल्लाह! मैं तो शहादत का तालिब हूँ।" नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "जब अल्लाह के रास्ते में निकलो और फिर बुख़ार आए और मर जाओ तब भी तुम शहीद ही होगे।"

तबूक पहुँचकर यही हुआ कि बुख़ार चढ़ा और इंतिक़ाल कर गए। बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ि० का बयान है कि मैंने अब्दुल्लाह के दफ़्न की कैफ़ियत देखी है। रात का वक़्त था, हज़रत बिलाल रज़ि० के हाथ में चिराग़ था। हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ि० उनकी लाश को लहद में रख रहे थे। नबी करीम सल्ल० भी उनकी क़ब्र में उतरे और हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ि० से फ़रमा रहे थे : अपने भाई को मुझसे क़रीब करो, आंहज़रत सल्ल० ने क़ब्र में ईंटें भी अपने हाथ से रखीं और फिर दुआ में फ़रमाया, "ऐ अल्लाह मैं इससे राज़ी हुआ, तू भी इनसे राज़ी हो जा।" हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं, काश! इस क़ब्र में मैं दफ़्न किया जाता।

(मदारिजुल नबुव्वह मुतर्जम, 2:90-91, इब्ने हिशाम, 2:527-528)

क़ियामत के दिन सिलारहमी की रानें हिरन की रानों की तरह होंगी

मुस्नद अहमद में है कि सिलारहमी क़ियामत के दिन रखी जाएगी। उसकी रानें होंगी मिस्ल हिरन की रानों के। वह बहुत साफ़ और तेज़ ज़बान से बोलेगी, पस वह (रहमत से) काट दिया जाएगा जो उसे काटता था और वह मिलाया जाएगा जो उसे मिलाता था।

सिलारहमी के मानी हैं : क़राबतदारों के साथ बातचीत में, काम-काज में सुलूक व एहसान करना और उनकी माली मुश्किलात में उनके काम आना। इस बारे में बहुत-सी हदीसें मरवी हैं।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो रहम (रिश्तेदारी) खड़ी हुई और रहमान से चिमट गई। उससे पूछा गया कि क्या बात है? उसने कहा, यह मक़ाम है टूटने से तेरी पनाह में आने का। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया : क्या तू इससे राज़ी नहीं कि तेरे मिलानेवाले को मैं (अपनी रहमत में) मिलाऊँ और तेरे काटनेवाले को मैं (अपनी रहमत से) काट दूँ? उसने कहा, हाँ, इस पर मैं बहुत ख़ुश हूँ।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स कुशादा रोज़ी और उम्रदराज़ चाहता है, उसको चाहिए कि

सिलारहमी करे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : रहम (रिश्तेदारी) अर्श के साथ लटकी हुई है और कहती है कि जो सिलारहमी करेगा अल्लाह तआला उसको अपनी रहमत से मिलाएँगे, और जो क़तारहमी करेगा अल्लाह तआला उसको अपनी रहमत से काटेंगे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान करते हैं कि एक मर्द ने कहा, "या रसूलल्लाह! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं उनके साथ मैं सिलारहमी करता हूँ और वे मेरे साथ क़तारहमी का मामला करते हैं, मैं उनके साथ एहसान करता हूँ, वे मेरे साथ बुरा बर्ताव करते हैं, मैं उनकी ग़लतियों को नज़रअंदाज़ करता हूँ और वे मेरे साथ जाहिलाना बर्ताव करते हैं? "(इस पर) आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया : अगर तू ऐसा ही है जैसा तू कह रहा है तो गोया तू उनके मुँह पर गर्म राख डाल रहा है (यानी तू उनको ज़लील व रुसवा कर रहा है) और जब तक तेरी यही हालत रहेगी तेरे साथ अल्लाह की तरफ़ से एक मददगार (फ़रिश्ता) रहेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत जिब्रील अलैहि० ने हुज़ूर सल्ल० को परेशानियों से नजात की दुआ सिखाई

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी पाक सल्ल० ने फ़रमाया : जब भी हमें कोई मुसीबत पेश आती हज़रत जिब्रील अलैहि० तशरीफ़ लाते और फ़रमाते, यह पढ़ो :

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا.

"भरोसा किया मैंने उस ज़ात पर जो ज़िंदा है, मरेगी नहीं, जिसने नहीं बनाया बेटा, न उसका कोई सल्तनत में शरीक है, न कोई ज़िल्लत में मददगार है। उसकी बड़ाई बयान कीजिए।"
(कंज़ुल आमाले 2:72, अद्दुआ अल-मस्नून, सफ़ा : 418-419)

घर के मुलाज़िम और पड़ोसियों के शर से बचिए

सारा जहाँ जानता है कि माँ के क़दमों तले जन्नत है और बाप जन्नत का दरवाज़ा है। इसी तरह यह भी सच है कि बहू के हाथ में जन्नत और जहन्नम की चाबी है। अब यह बहू की मर्ज़ी पर मुंहसिर है कि वह कौन-सी चाबी इस्तेमाल करती है। मुआशिरे का जाइज़ा लेने पर पता चलता है कि अकसर बहू जहन्नम की चाबी इस्तेमाल करती है। यही वजह है कि अकसर घरों से सुकून और इत्मीनान ग़ायब हो जाता है और बरकत उठ जाती है। ख़ुशहाली रूठ जाती है, घर जहन्नम बन जाता है। आप हमेशा उलझन का शिकार रहती हैं जिसका असर पूरे ख़ानदान पर पड़ता है। पड़ोस और मोहल्ले में आपके चर्चे होने लगते हैं, आपको देखकर लोग नाक सिकोड़ने लगते हैं। बेज़ारगी के आलम में आपसे मुलाक़ात के वक़्त मजबूरन मुस्कुराते हैं, लेकिन इन सब बातों का आपको इल्म नहीं होता, क्योंकि आप समझती हैं कि घर की बातें घर का मामला है, घर ही तक महदूद है। लेकिन आपके नौकर आपके पड़ोसियों से मुफ़्त की चाय पीने की ख़ातिर आपके घर की बातें नमक-मिर्च लगाकर उन तक पहुँचाते हैं और पड़ोसी आपके मामले को मोहल्लेवालों तक पहुँचाते हैं। मामूली-सी बात, मामूली-सी तल्ख़ी, मामूली-सी ग़लतफ़हमी आपकी और आपके ख़ाविन्द की इज़्ज़त की धज्जियाँ उड़ा देती हैं जिसका असर आपके ख़ाविन्द पर ही नहीं पड़ता बल्कि आनेवाली नस्लों को भी उसका ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ता है। साथ ही बच्चों के होने वाले रिश्तों पर भी उसका बहुत बुरा असर पड़ता है। आप अच्छे रिश्तों की तलाश में रहते हैं लेकिन चाहते हुए आप उन रिश्तों को हासिल करने में कामयाब नहीं होते। वजह यह होती है कि आपके माज़ी की घरेलू तल्ख़ियाँ, जिसका लुत्फ़ पड़ोसी उठा चुके होते हैं, अब वही पड़ोसी इंक्वायरी करनेवालों के हमदर्द बनकर बताते हैं कि लड़के की वालिदा निहायत गर्म मिज़ाज है, अपनी ही सास से तो उसकी कभी नहीं बनी। अब बताइए, कौन बेवक़ूफ़ वालिदैन होंगे जो ऐसी रिपोर्ट मिलने के बाद अपनी बेटी को, आपकी बहू बनाने के लिए राज़ी हो जाएंगे?

इसी तरह आपके करतूत के फल आपकी लाडली के रास्ते में भी रुकावट पैदा करते हैं। आपकी तल्ख़ मिज़ाजी व सुलूक और सास व ससुर से आपके रवैये को आपके लाडली के मिज़ाज से जोड़कर देखा

जाता है। नतीजा आपकी बेटी ख़ूबसूरत है, ख़ूब सीरत है, तालीमयाफ़्ता है, हुनरमंद है, हर लिहाज़ से वह एक कामयाब बहू साबित हो सकती है और अच्छे ख़ाविन्द उसे अपनी बहू बनाने के मुतमन्नी हैं, लेकिन आपके मिज़ाज के सिलसिले में जो ख़बरें मुआशिरे में फैली हुई हैं, आपकी बेटी को अच्छा घर और अच्छा शौहर पाने से, जिसकी वह हक़दार है, महरूम कर देती हैं।

आपको/अपने सुसराल, पड़ोस और मुआशिरे में अपने आपको हरदिल अज़ीज़ बनाने के लिए अलग से कुछ करने की ज़रूरत नहीं, बल्कि दीनें इस्लाम और प्यारे नबी सल्ल० की बताई हुई बातों पर अमल करने की ज़रूरत है और अपने अंदर मौजूद बाग़ीपन को क़ाबू में रखने की ज़रूरत है।

लड़की को अपने मैके से सुसराल जाने से पहले अपने आपको तैयार कर लेना चाहिए कि अब आप अपने हक़ीक़ी मैके जा रही हैं, जहाँ आपको ताहयात रहना है और ज़िम्मेदारियों को अच्छे अंदाज़ से निभाना है। मैका तो सिर्फ़ दर्सगाह है जो आपको रिश्तों और ज़िम्मेदारियों को निभाने का सलीक़ा सिखाता है। सास और सुसर आपके हक़ीक़ी वालिद हैं। देवर और ननदें आपके हक़ीक़ी भाई-बहनें हैं। जिस तरह मैके में सब मिलकर आपको ख़ुश रखने की कोशिश करते थे और आपकी ख़्वाहिशों का एहतिराम करते थे, उसी तरह अब बारी आपकी है कि सुसराल में आपको सबको ख़ुशी देनी है, सबकी ख़्वाहिशों के साथ-साथ जज़्बात का भी एहतिराम करना है और यह सब आपके बाएँ हाथ का खेल है।

अव्वल आपको हर एक रिश्ते को मैके के रिश्ते से जोड़कर देखना है। दूसरे अपनी ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी समझना है, कुशादा दिल रखकर हर वक़्त क़ुरबानी के जज़्बे से सरशार रहना है। अपने अंदर के बाग़ियाना जज़्बात पर क़ाबू रखना है, ज़बान को हर हाल में शीरीं रखना है। सबकी मंशा और उम्मीदों से एक क़दम आगे चलना है। फिर देखिए सुसराल का हर एक फ़र्द आपकी दिल से इज़्ज़त व एहतिराम करने लगेगा और जहाँ दो इंसानों के दर्मियान इज़्ज़त व एहतिराम का पुल तामीर हो जाए वहाँ तमाम मुश्किलें आसान हो जाती हैं। ख़ुशियाँ दर की ग़ुलाम बन जाती हैं, नेक नामी सायाफ़गन रहती हैं। इज़दिवाजी ज़िंदगी ख़ुशगवार हो जाती है। आपकी नेक नामी के सबब आपकी औलाद दुनिया के हर मैदान में

कामरान रहती हैं, आपका बुढ़ापा महफ़ूज़ और पुरसुकून हो जाता है। यानी आपकी ज़िंदगी कामयाब हो जाती है और घर जन्नत का नमूना बन जाता है।

वालिदैन भी इस बात का ख़्याल रखें कि लड़की हमेशा पराई होती है। इसलिए उसकी तर्बियत में कोई कमी न बरतें। बाज़ औक़ात जब लड़की ब्याह कर सुसराल जाती है तो न उसे ससुराल के तौर-तरीक़ों का पता होता है और न ही शौहर की पसन्द और नापसन्द का। ऐसे हालात में लड़की से बहुत-सी ग़लतियाँ हो जाती हैं जो घरेलू झगड़ों का सबब बनती हैं। इसलिए यह वालिदैन का फ़र्ज़ है कि वे अपनी बच्चियों को अच्छी तर्बियत दें और पहले से सुसराल के तौर-तरीक़ों और सुसराल में उठने-बैठने का सलीक़ा सिखाएँ तो बहुत-सी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। साथ ही अपनी बच्चियों को यह तालीम ज़रूर दें कि वह अपने सास-सुसर को अपने वालिदैन का दर्जा दें। बेशतर घरानों में इज़दिवाजी ज़िंदगी के मसाइल की शुरुआत इन्हीं मसलों की बिना पर होती है।

कहते हैं ताली दोनों हाथों से बजती है। हम उन ससुरालियों से भी यही बात कहेंगे कि वे अपनी बहुओं को अपनी बेटियाँ जानें। उन्हें नए माहौल में रचने-बसने की मोहलत दें। उन्हें वह मुहब्बत व शफ़क़त अता करें जो वे अपनी बच्चियों के लिए पसन्द करते हैं। अक़सर घरों में झगड़े का सबब दूसरों की बातों पर कान धरने से भी होता है। जो आम तौर पर सास-बहू के मामले में ज़्यादा कारगर होता है और यह इस वजह से होता है कि दोनों ही कच्चे कान की होती हैं। इसलिए दोनों इस बात को अपनी गिरह में अच्छी तरह बाँध लें कि किसी भी मामले में एक-दूसरे से बदज़न होने से पहले मामले को समझें और ग़ैरों की बातों पर आँख मूँदकर यक़ीन करने से पहले आपस में एक-दूसरे की ग़लतफ़हमी को दूर कर लें तो ज़िंदगी आसान हो जाएगी।

औरत का हुस्ने किरदार रूह की पाकीज़गी है

हर इंसान की ख़्वाहिश होती है कि वह हमेशा तंदरुस्त रहे। इसी तरह ख़वातीन भी तंदरुस्त रहना चाहती हैं। मगर ख़वातीन में एक और भी जज़्बा होता है और वह है ख़ूबसूरती बढ़ाने और शृंगार करने का। ये दोनों जज़्बे हमारे जिस्म से ताल्लुक़ रखते हैं, यानी तंदरुस्त रहने और

ख़ूबसूरती बढ़ाने का जज़्बा। मगर क्या कभी आपने यह भी सोचा है कि अपनी रूह की बालीदगी, रूह की सेहत और रूह के हुस्न के लिए आप क्या करती हैं?

अमूमन देखा गया है कि इंसान अच्छी ग़िज़ा इस्तेमाल करता है, वरज़िश करता है, ख़ूबसूरती बढ़ानेवाली मस्नूआत का इस्तेमाल करता है। ये सारी चीज़ें आपके जिस्म को तंदरुस्त और ख़ूबसूरत बनाती हैं। इससे जिस्मानी आज़ा बेहतर तौर पर काम अंजाम देते हैं। अच्छी ग़िज़ा और अच्छे मेकअप के इस्तेमाल से चेहरे पर निखार आ जाता है और चेहरे के दाग़-धब्बे दूर हो जाते हैं और हर फ़र्द आपकी तारीफ़ करने लगता है कि आपने क्या हुस्न व सेहत पाई है और ख़वातीन अपनी तारीफ़ सुनकर बहुत ख़ुश होती हैं। ख़वातीन को अगर हफ़्त अक़लीम भी मिल जाए तो उन्हें वह ख़ुशी नहीं होती ज़ो किसी दूसरे से अपने हुस्न और सेहत की तारीफ़ सुनकर होती है।

कहने का मतलब यह है कि हुस्न व सेहत से रूह का गहरा ताल्लुक़ है। आपके हुस्न और सेहतमंद जिस्म में एक रूह होती है जिसकी पाकीज़गी और ख़ूबसूरती ज़्यादा माना रखती है बनिस्बत ख़ूबसूरती और सेहतमंद जिस्म के। रूह को पाकीज़ा रखने वाला इंसान ज़ाहिरी तौर पर भी ख़ूबसूरत होता है और बातिनी तौर पर भी अपने हुस्ने अख़्लाक़ से दूसरों को मुत्मइन और ख़ुश रखता है। वह अपने बर्ताव से, अपनी आदतों से दूसरों में न सिर्फ़ मक़बूल होता है, बल्कि लोग उसका एहतिराम और इज़्ज़त करते हैं।

अमूमन ऐसे लोगों में यह भी देखा गया है कि वह बड़ी-से-बड़ी मुश्किलों में होने के बावजूद अपनी ज़िंदगी मामूल के मुताबिक़ गुज़ारते हैं और किसी को एहसास तक नहीं होने देते कि इन्हें किसी बात की तकलीफ़ है, चाहे उन्हें कोई बड़ी बीमारी हो, माली तंगी का सामना हो या किसी और बात की परेशानी हो। वह बिल्कुल अपना काम उसी अंदाज़ में अंजाम देते हैं जिस तरह वह अपनी सेहतमंद ज़िंदगी में अंजाम दिया करते थे।

रूह की पाकीज़गी रखने वाले अपना काम ख़ुद करते हैं, हर वक़्त ख़ुश व ख़ुर्रम नज़र आते हैं। किसी मेकअप के बग़ैर उनका हुस्न पुरनूर होता है पेशानी चमकती है। ऐसा क्यों होता है, कभी ग़ौर किया है

आपने? यह सिर्फ़ इसलिए होता है कि वे रूह की पाकीज़गी पर यक़ीन रखते हैं। ऐसे लोग अपने जिस्म और हुस्न से ज़्यादा अपनी रूह की परवरिश करते हैं। उन्हें संवारते हैं, सजाते हैं। रूह की ख़ूबसूरती और ग़िज़ा इबादत है। नेक और सालेह इंसान-अपनी रूह को ग़िज़ा किस तरह देता है यह भी ग़ौर तलब बात है। मसलन एक माँ अपने बच्चे की सेहत और तालीम व तर्बियत से मुताल्लिक़ हमेशा कोशाँ रहती है। बच्चा ज़रा-सा बीमार पड़ जाए तो वह रात-भर बैठकर उसकी तीमारदारी करती है। ख़ुदा की बारगाह में उसकी सेहत और तंदुरुस्ती के लिए गिड़गिड़ाती है और जब बच्चा ख़ुश और सेहतमंद होता है तो उसकी रूह को अपने आप ग़िज़ा मिल जाती है।

इसी तरह रूह की पाकीज़गी हमें उन लोगों में भी दिखाई देती है जो अपने ग़मों से ज़्यादा दूसरों के दुख को अपना समझते हैं और उनकी हर मुमकिन मदद करते हैं। गोया दूसरों की मदद करना भी रूह की पाकीज़गी की अलामत है। ख़ुश नसीब होते हैं वे लोग जिन्हें अपनी रूह की परवरिश करना आता है, जो अपनी रूह को दूसरों की ग़ीबत, चुग़ली, कीना, झूठ, बुग़्ज़ जैसे अमराज़ में मुब्तला नहीं करते। जो सिर्फ़ अपने नफ़्स को सुकून नहीं पहुँचाते बल्कि अपने नफ़्स पर क़ाबू पाते हुए दूसरों के लिए आसानियाँ पैदा करते हैं। ऐसे लोग जो दूसरों की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझते हैं, दूसरों की मदद करते हैं, अपनी ख़ुशियों का गला घोंटकर दूसरों को सुख पहुँचाते हैं और अपने नफ़्स पर हर मुमकिन क़ाबू पाते हैं, वही इंसान पाकीज़ा रूह रखते हैं।

नफ़्स इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। इंसान पर ज़लज़ले सैलाब वग़ैरह जैसे अज़ाब नाज़िल हुआ करते हैं, तबाही और बर्बादी को इंसान ख़ुद ही दावत देता है। मगर हम यह सारी बातें मानने से इंकार करते हैं और ख़्वाबे ख़रगोश में मुब्तला रहते हैं। जिन गुनाहों के सबब हम पर अज़ाब आया उन गुनाहों से हम फिर भी तौबा नहीं करते।

मेरी मुख़ातब तो ख़ास ख़्वातीन हैं। औरतें गो कि मलिका हैं, अगर वे चाहें कि उनका घर गुनाहों से पाक रहे तो रह सकता है। अब भी वक़्त है, अपना मुहासबा करें। अपनी बीमार रूह का इलाज करें। जितना हमारा जिस्म तंदरुस्त है रूह को भी उतना ही सेहतमंद बनाएँ। आप जानती हैं कि रूह की बालीदगी के लिए क्या करना है।

इससे पहले की हम पर कोई आफ़त आए, माफ़ी माँग कर अपने आपको आने वाले रौशन मुस्तक़बिल के लिए तैयार कर लें। दूसरों से अपना मुक़ाबला न करें, दूसरों ने क़ुरआन मजीद जैसे लाइह-ए-अमल को पढ़ा ही नहीं है। वह इस्लाम की चाशनी से रौशनास ही नहीं हुए हैं। वे अगर प्यासे हैं तो मजबूर हैं, दरिया उनसे काफ़ी दूर है। मगर हम तो दरिया के क़रीब रहकर भी प्यासे हैं।

रूह की प्यास बुझाना कोई बहुत बड़ा अमल नहीं है और न ही बहुत बड़ा काम है। इंसान को अपनी रूह की ख़ूबसूरती और सेहत के लिए सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने नफ़्स पर क़ाबू पाने की ज़रूरत है। आज अगर हमारी रूह ज़ख़्मी है तो उसकी वजह भी हम ख़ुद ही हैं कि हमने घरों में नहूसतें पाल रखी हैं। अपनों से नाता तोड़ लिया है। मुहब्बत को बालाए ताक़ रख दिया है, दौलत के पुजारी हैं, उरयानियत को अपना सरमाय-ए-ज़िंदगी बना लिया है। इंसानी जिस्म में अगर यह सारी ख़ुराफ़ात मौजूद हैं तो उसकी रूह कभी ख़ूबसूरत और पाकीज़ा नहीं हो सकती, भले ही जिस्मानी शक्ल व सूरत में ख़ूबसूरत दिखाई देते हों। लेकिन उसकी कोई वक़अत नहीं होती। क्योंकि जिस इंसान के दिल में किसी और के लिए हमदर्दी न हो, दूसरों के लिए प्यार न हो, क़ुरबानी का जज़्बा न हो, वह न तो जिस्मानी तौर पर ख़ूबसूरत कहलाता है और न रूहानी तौर पर ख़ूबसूरत हो सकता है।

रूह का सारा हुस्न इबादत, तक़वा और परहेज़गारी पर मुंहसिर होता है। इंसान पर जहाँ अल्लाह तआला की इबादत फ़र्ज़ है वहीं एक इंसान के लिए दूसरे इंसान के तईं हमदर्दी और भाई-चारगी और इज़्ज़त व एहतिराम का जज़्बा भी लाज़मी क़रार दिया गया है। अगर यह सारी ख़ूबियाँ इंसान में न हों तो वह दुनिया में भी ज़लील व ख़्वार होगा और आख़िरत में भी। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपने जिस्म और हुस्न की ख़ूबसूरती के साथ-साथ रूह को सेहतमंद और पाकीज़ा बनाने की कोशिश करे।

ग़ुस्सा पी जाइए और जैसी हूर चाहिए ले लीजिए

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं—

"जो शख़्स अपना ग़ुस्सा उतारने की ताक़त रखता है फिर भी

ज़ब्त करता है अल्लाह तआला उसका दिल अम्न व अमान से पुर कर देता है। जो शख़्स बावजूद मौजूद होने के शोहरत के कपड़े को तवाज़ोअ करके छोड़ दे, उसे अल्लाह तआला करामत और इज़्ज़त का जोड़ा क़ियामत के दिन पहनाएगा, और जो किसी का सर छुपाए अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन बादशाहत का ताज पहनाएगा।" (अबू दाऊद)

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं :

"जो शख़्स बावजूद क़ुदरत के अपना गुस्सा ज़ब्त कर ले उसे अल्लाह तआला तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाकर इख़्तियार देगा कि जिस हूर को चाहे पसन्द कर ले।"

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 458)

हबीब अपने हबीब को अज़ाब नहीं देता

एक मर्तबा रसूले ख़ुदा सल्ल० अपने असहाब रज़ि० की एक जमाअत के साथ राह से गुज़र रहे थे। एक छोटा-सा बच्चा राह में खेल रहा था। उसकी माँ ने जब देखा कि एक जमाअत की जमाअत आ रही है तो उसे डर लगा कि बच्चा रौंदन में न आ जाए। मेरा बच्चा, मेरा बच्चा कहती हुई दौड़ी आई और झट से बच्चे को गोद में उठा लिया। इस पर सहाबा रज़ि० ने कहा हुज़ूर! यह औरत तो अपने प्यारे बच्चे को कभी भी आग में नहीं डाल सकती। आप सल्ल० ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला भी अपने प्यारे बन्दों को हरगिज़ जहन्नम में नहीं ले जाएगा।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 730)

अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को हलाक करने का इरादा करता है तो उससे हया खींच लेता है

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ बुराई और हलाकत का इरादा फ़रमाता है तो उससे हया निकाल लेता है। जिसका नतीजा यह होता है कि लोग भी उससे बुग़्ज़ रखते हैं और वह भी लोगों से बुग़्ज़ रखता है। जब वह ऐसा हो जाता है, तो फिर उससे रहम करने और तरस खाने की सिफ़त निकाल दी

जाती है, जिसका नतीजा यह होता है कि वह बदअख़्लाक़, अक्खड़ तबीअत और सख़्त दिल हो जाता है। जब वह ऐसा हो जाता है तो उससे अमानतदारी की सिफ़त छीन ली जाती है, जिसका नतीजा यह होता है कि वह लोगों से ख़यानत करता है और लोग भी उससे ख़यानत करते हैं। जब वह ऐसा हो जाता है तो फिर इस्लाम का पट्टा उसकी गर्दन से उतार लिया जाता है और फिर अल्लाह और उसकी मख़्लूक़ भी उस पर लानत करती है और वह भी दूसरों पर लानत करता है। (हयातुस-सहाबा, जिल्द 3, सफ़ा 574-575)

यह क़ंदीले हया या रब! रहे फ़ानूस के अंदर

इलाही माँओं, बहनों, बेटियों को दीनदारी दे
इलाही पौध को इस्लाम की फ़स्ले बहारी दे

बचा ले मोमिना को ऐ ख़ुदा मग़रिबपरस्ती से
बचा इस शमा को बादे फ़ना की चीरादस्ती से

यह क़ंदीले हया या रब! रहे फ़ानूस के अंदर
यह जिस्म पारसा या रब! रहे मल्बूस के अंदर

पता बुझने का दे जाती है शोले की परेशानी
कफ़न की चादरों का नाम है मल्बूसे उरयानी

इलाहुल आलमीन यह वक़्त फ़ितनों का ज़माना है
हज़ारों बिजलियों में एक अपना आशियाना है

सरों में अक़्ल दे या रब, दिलों में नूरे ईमानी
कि ख़ीरा हो गई इन ताबिशों में चश्मे निस्वानी

ख़िल्वत के गुनाहों की वजह से मोमिनीन के दिलों में नफ़रत डाल दी जाती है

हज़रत सालिम इब्ने अबी अल-जअद रह० कहते हैं हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया : "आदमी को इससे बचते रहना चाहिए कि मोमिनों के

दिल उससे नफ़रत करने लग जाएँ और उसे पता भी न चले।" फिर फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो ऐसा क्यों होता है?" मैंने कहा: नहीं। फ़रमाया : "बन्दा ख़िल्वत में अल्लाह की नाफ़रमानी करता है इस वजह से अल्लाह तआला उसकी नफ़रत मोमिनों के दिल में डाल देते हैं और उसे पता भी नहीं चलता।" (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, सफ़ा 376)

एक मक्खी की वजह से एक आदमी जन्नत में और एक आदमी दोज़ख़ में गया

तारिक़ बिन शहाब मरफ़ूअन रिवायत करते हैं कि सिर्फ़ एक मक्खी की बदौलत एक शख़्स तो जन्नत में दाख़िल हो गया और दूसरा दोज़ख़ में। लोगों ने ताज्जुब से पूछा, "या रसूलल्लाह! यह कैसे?" फ़रमाया : किसी क़ौम का एक बुत था, उनका दस्तूर यह था कि कोई शख़्स उस पर भेंट चढ़ाए बग़ैर उधर से गुज़र नहीं सकता था। इत्तिफ़ाक़ से दो शख़्स उधर से गुज़रे, उन्होंने अपने दस्तूर के मुताबिक़ उनमें से एक शख़्स से कहा, नियाज़ चढ़ा। वह बोला, इसके लिए मेरे पास तो कुछ नहीं है। वह बोला, कुछ न कुछ तो ज़रूर चढ़ा दे चाहे एक मक्खी ही सही। उसने एक मक्खी चढ़ा दी और इस वजह से वह तो दोज़ख़ में गया। उन्होंने उसको तो छोड़ दिया। अब दूसरे से कहा कि तू भी कुछ चढ़ा। वह बोला अल्लाह की ज़ात के सिवा मैं तो किसी और के नाम की नियाज़ नहीं दे सकता। यह सुनकर उन्होंने उसकी गर्दन उड़ा दी, इसलिए यह जन्नत में दाख़िल हो गया। (अहमद, तर्जुमानुस-सुन्नह, जिल्द 2, सफ़ा 344)

आशूरा के दिन पेश आने वाले अहम वाक़िआत

यौमे आशूरा बड़ा ही मुहतम-बिश्शान और अज़्मत का हामिल है। तारीख़ के अज़ीम वाक़िआत इससे जुड़े हुए हैं। चुनांचे मुअर्रख़ीन ने लिखा है कि :

1. यौमे आशूरा में ही हज़रत आदम अलैहि० की तौबा क़बूल हुई।
2. इसी दिन हज़रत नूह अलैहि० की कश्ती हौलनाक सैलाब से महफ़ूज़ होकर कोहे जूदी पर लंगर अंदाज़ हुई।
3. इसी दिन अल्लाह तआला ने हज़रत इबराहीम अलैहि० को "ख़लीलुल्लाह" बनाया और उन पर आग गुलज़ार बनी।

4. इसी दिन हज़रत मूसा अलैहि० और उनकी क़ौम बनी इसराईल को अल्लाह तआला ने फ़िरऔन के ज़ुल्म व इस्तबदाद से नजात दिलाई।
5. इसी दिन हज़रत सुलैमान अलैहि० को बादशाहत मिली।
6. इसी दिन हज़रत अय्यूब अलैहि० को सख़्त बीमारी से शिफ़ा हुई।
7. इसी दिन हज़रत यूनुस अलैहि० मछली के पेट से निकाले गए।
8. इसी दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहि० की मुलाक़ात एक तवील अर्से के बाद हज़रत याक़ूब अलैहि० से हुई।
9. इसी दिन हज़रत ईसा अलैहि० पैदा हुए।
10. और इसी दिन हज़रत ईसा अलैहि० यहूदियों के शर से नजात दिलाकर आसमान पर उठाए गए।

बाज़ उलमाए किराम ने मज़्कूरा बाला अहम वाक़िआत के अलावा कुछ और वाक़िआत भी बयान किए हैं जो यौमे आशूरा से मुताल्लिक़ हैं। मसलन :

1. इसी दिन अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन, क़लम और हज़रत आदम अलैहि० को पैदा किया।
2. इसी दिन क़ियामत क़ायम होगी।
3. इसी दिन हज़रत मूसा अलैहि० पर तौरात नाज़िल हुई।
4. इसी दिन हज़रत इस्माईल अलैहि० की पैदाइश हुई।
5. इसी दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहि० को क़ैदख़ाने से रिहाई नसीब हुई और मिस्र की हुकूमत मिली।
6. इसी दिन दुनिया में पहली बाराने रहमत (रहमत की बारिश) हुई।
7. इसी दिन हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने हज़रत ख़दीजा रज़ि० से निकाह फ़रमाया।
8. इसी दिन अबू लूलू मजूसी के हाथों से मुसल्ला-ए-रसूलुल्लाह सल्ल० पर हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि० ने ज़ख़्मी होकर जामे शहादत नोश फ़रमाया। (असमाउर-रिजाल, मिश्कात)
9. इसी दिन कूफ़ी फ़रेबकारों ने नवासए रसूल सल्ल० और जिगर गोश-ए-फ़ातिमा हज़रत हुसैन रज़ि० को शहीद किया।

10. इसी दिन क़ुरैश ख़ाना काबा पर नया ग़िलाफ़ डालते थे। (मआरिफ़ुल हदीस 4/168, पैग़ामे हक़ व सदाक़त 168)

11. इसी दिन हज़रत यूनुस अलैहि० की क़ौम की तौबा क़ुबूल हुई और उनके ऊपर से अज़ाब टला। (मआरिफ़ुल क़ुरआन, पारा 11, आयत 98)

12. इसी दिन हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० का इंतिक़ाल हुआ।

हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने हज़रत तमीम दारी से फ़रमायाः

अगर मेरी लड़की होती तो तुझे अपना दामाद बना लेता

हज़रत तमीम दारी रज़ि० जब शाम से मदीना आए तो आप अपने साथ कुछ क़ंदीलें और थोड़ा-सा तेल भी लेते आए। मदीना पहुँच कर क़ंदीलों में तेल डालकर मस्जिद नबवी में लटका दीं और जब शाम हुई तो उन्होंने उन्हें जला दिया, इससे पहले मस्जिद में रौशनी नहीं होती थी। आंहज़रत सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए और मस्जिद को रौशन पाया, तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि मस्जिद में रौशनी किसने की है?

सहाबा ने हज़रत तमीम रज़ि० का नाम बताया। आप सल्ल० बेहद ख़ुश हुए, उनको दुआएँ दीं और फ़रमाया कि अगर कोई मेरी लड़की होती तो मैं तमीम से उसका निकाह कर देता। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त नौफ़िल बिन हारिस रज़ि० मौजूद थे। उन्होंने अपनी बेवा साहबज़ादी उम्मुल मुग़ीरा को पेश किया। आपने उसी मज्लिस में उम्मुल मुग़ीरा से हज़रत तमीमदारी रज़ि० का निकाह कर दिया।

हज़रत तमीमदारी रज़ि० शाम के रहनेवाले थे। क़बील-ए-लख़्म से निस्बती ताल्लुक़ था और मज़हबन ईसाई था। इस्लाम लाने के बाद जितने ग़ज़वात पेश आए सबमें शरीक हुए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने किफ़ाफ़ (गुज़ारे) के लिए शाम में क़ुरया ईनो का एक हिस्सा आप को दे दिया था और उसकी तहरीरी सनद भी लिख दी। मगर दियारे महबूब की मुहब्बत ने वतन की मुहब्बत फ़रामोश कर दी। चुनांचे अहदे नबवी के बाद ख़ुल्फ़ा-ए-सलासा के ज़माने तक आप मदीना ही में रहे। हज़रत उसमान रज़ि० की शहादत के बाद मिल्ली फ़ितना व फ़साद शुरू हुआ तो आप

बादिले-नाख़्वास्ता मदीना छोड़कर अपने वतन शाम चले गए।

फ़तहुल बारी में है कि हज़रत उमर रज़ि० ने तरावीह बाजमाअत क़ायम की तो मर्दों का इमाम हज़रत अबी बिन कअब रज़ि० को और औरतों का इमाम हज़रत तमीम दारी रज़ि० को मुक़र्रर किया। एक मर्तबा रूह बिन ज़ंबाअ रज़ि० आपकी ख़िदमत में गए तो देखा कि घोड़े के लिए जौ साफ़ कर रहे हैं और घर के तमाम लोग आपके गिर्द बैठे हुए हैं। रूह ने अर्ज़ किया क्या इन लोगों में से कोई शख़्स ऐसा नहीं है जो इस काम को कर सके? आप रज़ि० ने फ़रमाया कि यह ठीक है, लेकिन मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि : "जब कोई मुसलमान अपने घोड़े के लिए दाना साफ़ करता है और फिर उसको खिलाता है तो हर दाना के बदले उसे एक नेकी मिलती है।" इसलिए मैं ख़ुद अपने हाथ से काम करता हूँ ताकि सवाब से महरूम न रह जाऊँ। उन्होंने एक बहुत क़ीमती जोड़ा ख़रीदा था, जिस रोज़ उनको शबे क़द्र की तौफ़ीक़ होती थी उसे उस रोज़ पहनते थे। हज़रत उमर रज़ि० के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में एक मर्तबा मक़ामे हिरा में आग लगी। हज़रत उमर हज़रत तमीम दारी रज़ि० के पास आए और उनसे वाक़िआ बयान किया। हज़रत तमीम रज़ि० वहाँ गए और बेख़तर आग में घुस गए और उसे बुझाकर सहीह व सालिम वापस चले आए। हज़रत उमर रज़ि० आपको 'ख़ैर अहलुल मदीना' (मदीना के सबसे अच्छे और नेक आदमी) फ़रमाया करते थे।

(सियरुस्सहाबा 4 : 140)

अल्लाह का वादा है

ऐ मुहम्मद! हम तुमको तुम्हारी उम्मत के बारे में राज़ी कर देंगे

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने दोनों हाथ उठाकर करामत के लिए यह दुआ माँगी, "ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत।" और आप सल्ल० रोने लगे, इस पर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया, "ऐ जिब्रील! तुम्हारा रब सब कुछ अच्छी तरह जानता है लेकिन तुम मुहम्मद के पास जाओ और उनसे पूछो कि वह क्यों रो रहे हैं?" चुनांचे हज़रत जिब्रील अलैहि० ने हाज़िर होकर पूछा और हुज़ूर सल्ल० ने रोने की वजह बताई (कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत का क्या होगा?) हज़रत जिब्रील अलैहि० ने वापस आकर अल्लाह

तआला को वजह बताई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मुहम्मद के पास वापस जाओ और उनसे कहो कि हम तुमको तुम्हारी उम्मत के बारे में राज़ी करेंगे और तुम्हें रंजीदा और ग़मगीन न होने देंगे।"

(हयातुस-सहाबा 3 : 371-372)

बीस अहम नसीहतें

1. क़ियामत उस वक़्त आएगी जब ज़मीन पर कोई अल्लाह का नाम लेनेवाला न होगा।
2. जब बन्दा झूठ बोलता है तो उसकी बदबू से फ़रिश्ते एक मील दूर हट जाते हैं।
3. अल्लाह की याद और अमल सालेह के लिए नीयत लाज़िम है।
4. ज़रूरत की एक हद है, मगर हिर्स की कोई हद नहीं।
5. बहादुरी यह है कि कमज़ोर होने के बावजूद दूसरों को अपनी कमज़ोरी का एहसास मत होने दो।
6. कामयाबी के हुसूल के लिए ज़रूरी है कि कामयाबी हासिल करने का एहसास दिल में ज़िंदा रखा जाए।
7. मुंजमिद लोगों का सहारा मत लो वरना वे तुम्हें भी मुंजमिद कर देंगे।
8. अल्लाह वाले बात-बात पर तकलीफ़ का इज़्हार नहीं करते।
9. जिसका कोई मक़्सद नहीं उसकी कोई मंज़िल नहीं।
10. सख़्तियाँ इंसान को ताक़तवर बना देती हैं, अगर इंसान को सब्र करने की ताक़त हासिल हो।
11. शख़्सियत की नशो नुमा उस वक़्त रुकती है जब इंसान अपने आपको कामिल समझता है।
12. कोशिश तुम्हारा काम है और नतीजा निकालना ख़ुदा का काम है।
13. शैख़ी इंसान के दिल में चुपके से पैदा होती है, उसे बर्बाद कर देती है और उसे पता भी नहीं चलता।
14. तुम जिस काम की ज़िम्मेदारी उठाओगे तुम्हारा ज़ेहन उसके लिए ही

काम करेगा।

15. दुनिया में ज़िल्लत की हज़ारों सूरतें हैं, लेकिन उनमें से ज़िल्लते क़र्ज़ सबसे सख़्त-तर है।
16. तुम्हारा क़र्ज़ ख़्वाह तुम्हारी सेहत चाहेगा और तुम्हारा मक़रूज़ तुम्हारी मौत।
17. बीमार तो सो भी जाता है, मगर मक़रूज़ को नींद नहीं आती।
18. अक़्लमंद वह है जो कम बोले और ज़्यादा सुने।
19. जो शख़्स इल्म रखता है लेकिन अमल नहीं करता, वह उस मरीज़ के मानिन्द है जो दवा तो रखता है, इस्तेमाल नहीं करता।
20. अपनी ज़रूरत को महदूद कर लेना ही बड़ी दौलत है।

साँप-बिच्छू वग़ैरह से बचने की नबवी दुआ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि एक शख़्स आप सल्ल० की ख़िदमत में आया और शिकायत की कि मुझे बिच्छू ने काट लिया है। आप सल्ल० ने फ़रमाया अगर तुम शाम को यह दुआ पढ़ लेते तो वह तुमको ज़रर नहीं पहुँचा सकता था :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

"अल्लाह के कलिमात ताम्मा के ज़रिए मख़्लूक़ की बुराई से पनाह माँगता हूँ।"

(अमलुल यौम 388, मुस्लिम 347, इब्ने माजा 251)

पेशाब की बन्दिश और पत्थरी का नबवी इलाज

हज़रत अबू दरदा रज़ि० के पास एक आदमी आया और यह कहा कि उसके वालिद का पेशाब रुक गया है और पेशाब में पत्थरी आ गई है। उन्होंने दर्जे-ज़ेल दुआ सिखाई जो उन्होंने रसूले पाक सल्ल० से हासिल की थी।

رَبُّنَا الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ تَقَدَّسَ اسْمُكَ . اَمْرُكَ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

كَمَا رَحْمَتُكَ فِي السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِي الْاَرْضِ وَاغْفِرْلَنَا
حُوْبَنَا وَخَطَايَانَآ اَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِيْنَ فَاَنْزِلْ شِفَاءً مِّنْ شِفَائِكَ وَرَحْمَةً
مِّنْ رَّحْمَتِكَ عَلٰى هٰذَا الْوَجْعِ

"हमारा रब जो आसमान में है, मुक़द्दस है तेरा नाम, तेरा हुक्म ज़मीन व आसमान में है जिस तरह तेरी रहमत आसमान में है। पस डाल दे अपनी रहमत ज़मीन में, हमारे गुनाह और हमारी ख़ताएँ माफ़ फ़रमा, तू ही पाकीज़ा हस्तियों का रब है, अपनी शिफ़ा से शिफ़ा और अपनी रहमत से रहमत इस बीमारी पर नाज़िल फ़रमाँ (अमलुल यौम, नसई 566, अबू दाऊद 543)

इमाम नसाई रह० ने बयान किया कि दो शख़्स इराक़ से किसी के पेशाब की शिकायत लेकर आए। लोगों ने हज़रत अबू दरदा रज़ि० की निशानदेही की तो हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने रसूले पाक सल्ल० से सुना है कि जिसे या जिसके भाई को यह शिकायत हो इसे पढ़े। (अमलुल यौम 567)

फ़ायदा : बीमार इस दुआ को पढ़ता रहे, यह न हो सके तो कोई दूसरा शख़्स पढ़कर उस पर दम करे या काग़ज़ में लिखकर उसका पानी पिलाया जाए। (अद-दुआ-ए-मसनून, सफ़ा 339)

हर बला से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

मुस्नद बज़्ज़ार में अपनी सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : जो शख़्स शुरू दिन में आयतुलकुर्सी और सूरा मोमिन की पहली तीन आयतें पढ़ ले, वह उस दिन हर बुराई से और तकलीफ़ से महफ़ूज़ रहेगा। इसको तिर्मिज़ी ने भी रिवायत किया है। (मआरिफ़ुल क़ुरआन 7 : 581, इब्ने कसीर 4 : 449)

एक चींटी की दुआ से सुलैमान अलैहि० को पानी मिला

इब्ने अबी हातिम में है कि एक मर्तबा हज़रत सुलैमान अलैहि इस्तिसक़ा (बारिश की दुआ माँगने) के लिए निकले तो देखा कि एक चींटी उल्टी लेटी हुई अपने पाँव आसमान की तरफ़ उठाए हुए दुआ कर

रही है कि ख़ुदाया! हम भी तेरी मख़्लूक़ हैं। पानी बरसने की ज़रूरत हमें भी है। अगर पानी न बरसा तो हम हलाक हो जाएँगी। चींटी की यह दुआ सुनकर आप अलैहि० ने लोगों में एलान किया कि लौट चलो, किसी और ही की दुआ से तुम पानी पिलाए गए।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, सफ़ा 63)

दर्द वग़ैरह दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत उसमान बिन अबी अलआस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० से उन्होंने जिस्म में किसी दर्द व तकलीफ़ की शिकायत की तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस्म के जिस हिस्से में दर्द हो वहाँ हाथ रखो और यह पढ़ो। तीन मर्तबा बिसमिल्लाह और सात मर्तबा यह दुआ :

اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّمَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ.

"क़ुदरत व इज़्ज़ते ख़ुदावंदी के वास्ते से उसकी बुराई से पनाह माँगता हूँ, जिसकी तकलीफ़ और जिससे डर महसूस करता हूँ।

(मुस्लिम 224, अज़्कार 114, अद्दुआ-ए-मसनून, सफ़ा 336)

आठ आयतों का सवाब एक हज़ार आयतों के बराबर

रसूलुल्लाह सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से ख़िताब करके फ़रमाया कि "क्या तुममें से कोई आदमी इसकी क़ुदरत नहीं रखता कि हर दिन क़ुरआन की एक हज़ार आयतें पढ़ा करे।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें कौन पढ़ सकता है? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि "तुममें कोई "अलहाकु मुत्तकासुर" नहीं पढ़ सकता।" मतलब यह है कि "अलहाकु मुत्तकासुर" रोज़ाना पढ़ना एक हज़ार आयतों के पढ़ने के बराबर है। (मज़्हरी ब-हवाला हाकिम व बैहक़ी अन इब्ने उमर रज़ि०, मआरिफ़ुल क़ुरआन 8 : 810)

तवाज़ोअ की चन्द अज़ीम मिसालें

1. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० रात को लिख रहे थे कि उनके पास एक मेहमान आ गया। चिराग़ बुझ रहा था। मेहमान चिराग़ दुरुस्त

करने के लिए जाने लगा तो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने कहा, "मेहमान से ख़िदमत लेना करम व शर्फ़ के ख़िलाफ़ है।" मेहमान ने कहा, "मैं नौकर को उठा देता हूँ।" उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "वह अभी-अभी सोया है, उसे उठाना मुनासिब नहीं है।" चुनांचे ख़ुद उठे, तेल की बोतल से चिराग़ भर कर रौशन कर दिया। जब मेहमान ने कहा, "आपने ख़ुद ही यह काम कर लिया?" तो फ़रमाया, "मैं पहले भी उमर था और अब भी वही हूँ, मेरे अंदर कोई भी कमी नहीं हुई और इंसानों में अच्छा वह है जो अल्लाह के यहां मुतवाज़ेअ है।"

2. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० लकड़ियों का गट्ठा उठाए मदीना के बाज़ार से गुज़र रहे थे और वह उन दिनों मदीना में मरवान के क़ायम मक़ाम थे जो फ़रमा रहे थे कि "अमीर (यानी अबू हुरैरह) आ रहा है, गुज़रने के लिए रास्ता खुला कर दो, इसलिए कि वह लकड़ियों को गट्ठा उठाए हुए हैं।"

3. सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० एक दिन बाएँ हाथ में गोश्त उठाए हुए थे और दाएँ हाथ में कोड़ा था, और यह उन दिनों ख़लीफ़ा और अमीरुल मोमिनीन थे।

4. सय्यदना अली रज़ि० ने गोश्त ख़रीदा और अपनी चादर में बाँध लिया, साथियों ने कहा हम उठा लेते हैं। फ़रमाया, "जिन बच्चों को खाना है उनका बाप उठाए, यह बेहतर है।"

5. सय्यदना हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मदीना मुनव्वरा की लौंडी भी रसूलुल्लाह सल्ल० को जहाँ चाहती दूसरे लोगों से अलग (बात करने के लिए) ले जाती।

6. अबू सलमा रह० का बयान है कि मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से कहा, "लोगों ने लिबास, तआम, सवारी और पीने की चीज़ों में क्या-क्या ईजादात कर ली हैं?" अबू सईद रज़ि० ने जवाब दिया, "भतीजे! आपका खाना, पीना और पहनना सब अल्लाह के लिए होना चाहिए। उसमें अगर ख़ुदपसन्दी, फ़ख़रिया और नुमाइश पैदा हो जाए तो यह गुनाह और इसराफ़ है। तू घर के कामों में वह सब काम कर जो रसूलुल्लाह सल्ल० करते थे। आप सल्ल० ऊँट को चारा डालते और उसे बांधते, घर में झाड़ू देते, बकरी दुहते, जूते गांठते, कपड़े पेवन्द कर लेते, नौकर के साथ बैठकर खाना खा लेते,

वह थक जाता तो आटा पीस देते, बाज़ार से चीज़ें ख़रीद लाते और उसमें कभी कोई आर महसूस न करते और ख़रीदी हुई चीज़ अपने हाथ में पकड़े हुए आते, या कपड़े में बांध कर घर वापस ले आते। ग़नी, फ़क़ीर, बड़े और छोटे सबसे मुसाफ़ा करते और नमाज़ियों में से जो सामने आ जाता, छोटा या बड़ा, काला या गोरा, आज़ाद या ग़ुलाम, हर एक को सलाम करने में पहल करते।'' (मिंहाजुल मुस्लिम, सफ़ा 277-278)

7. अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० का एक वाक़िआ उनकी ख़िलाफ़त के वक़्त का है। ग़ुलाम को साथ लेकर बाज़ार गए। ग़ुलाम से फ़रमाया कि मुझको कपड़ा बनवाना है और तुमको भी कपड़ों की ज़रूरत है। तुम कपड़े की दुकान पर मेरे लिए और अपने लिए कपड़े पसन्द करो। ग़ुलाम ने दो तरह के कपड़े ख़रीद लिए। एक क़ीमती और एक कम क़ीमत वाला। अमीरुल मोमिनीन जब वह कपड़ा दर्ज़ी को देने लगे तो सस्ते कपड़े के मुताल्लिक़ अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया, यह मेरे लिए है और मँहगे कपड़े के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि यह ग़ुलाम के लिए क़तअ कर दो। ग़ुलाम ने कहा कि आप आक़ा हैं, अमीरुल मोमिनीन हैं। आपको अच्छे कपड़ों की ज़रूरत है और अच्छा लिबास चाहिए। आप रज़ि० ने फ़रमाया, ''मैं बूढ़ा हूँ, तुम जवान हो, तुमको अच्छे लिबास की ज़्यादा ज़रूरत है।" (निदाए शाही, सितम्बर 2005 ई०)

पहली सफ़वालों से दो गुना अज्र व सवाब

जुमा की नमाज़ जामा मस्जिद में पढ़िए और जहाँ जगह मिल जाए वहीं बैठ जाइए। लोगों के सरों और कंधों पर से फाँद-फाँद कर जाने की कोशिश न कीजिए। इससे लोगों को जिस्मानी तकलीफ़ भी होती है और क़ल्बी कोफ़्त भी और सुकून, यकसूई और तवज्जोह में भी ख़लल पड़ता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल० का इरशाद है, ''जो शख़्स पहली सफ़ को छोड़कर दूसरी सफ़ में इसलिए खड़ा हुआ कि उसके भाई मुसलमान को कोई तकलीफ़ न पहुंचे तो ख़ुदा तआला उसको पहले सफ़ वालों से दो गुनाह अज्र व सवाब अता फ़रमाएगा।'' (तबरानी, आदाबे ज़िंदगी, सफ़ा 101)

रमज़ानुल मुबारक में तिलावते क़ुरआन का ख़ुसूसी एहतिमाम कीजिए

रमज़ान के महीने को क़ुरआन पाक से ख़ुसूसी मुनासिबत है। क़ुरआन पाक माहे रमज़ान में नाज़िल हुआ और दूसरी आसमानी किताबें भी माहे रमज़ाने में नाज़िल हुईं। हज़रत इबराहीम अलैहि० को रमज़ान की पहली या तीसरी तारीख़ को सहीफ़े अता किए गए। हज़रत दाऊद अलैहि० को रमज़ान के महीने की 12 या 18 को ज़बूर दी गई। हज़रत मूसा अलैहि० पर रमज़ान के महीने की 6 तारीख़ को तौरात नाज़िल हुई और हज़रत ईसा अलैहि० को भी रमज़ानुल मुबारक की 12 या 13 तारीख़ को इंजील दी गई। इसलिए रमज़ान के महीने में ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरआन पाक पढ़ने की कोशिश कीजिए। हज़रत जिब्रील अलैहि० हर साल रमज़ान में नबी करीम सल्ल० को पूरा क़ुरआन सुनाते और सुनते थे और आख़िरी साल आप अलैहि० नें दो बार रमज़ान में नबी करीम सल्ल० के साथ दौर फ़रमाया। (आदाबे ज़िंदगी, सफ़ा 117)

हज़रत दाऊद अलैहि० की मौत का अजीब व ग़रीब क़िस्सा

मुस्नद इमाम अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि "हज़रत दाऊद अलैहि० बहुत ही ग़ैरतवाले थे। जब आप अलैहि० घर से बाहर जाते तो दरवाज़े बन्द करते जाते फिर किसी को अंदर जाने की इजाज़त न थी। एक मर्तबा आप अलैहि० इसी तरह बाहर तशरीफ़ ले गए। थोड़ी देर बाद एक बीवी साहिबा की नज़र उठी तो देखती हैं कि घर के बीचों बीच एक साहब खड़े हैं। हैरान हो गईं, और दूसरों को दिखाया। आपस में सब कहने लगीं कि यह कहाँ से आ गए? दरवाज़े बन्द हैं यह दाख़िल कैसे हुए? ख़ुदा की क़सम हज़रत दाऊद अलैहि० के सामने हमारी सख़्त रुसवाई होगी। इतने में हज़रत दाऊद अलैहि भी आ गए। आप अलैहि० ने भी उन्हें खड़ा देखा और दरयाफ़्त किया कि तुम कौन हो? उसने जवाब दिया, वह जिसे कोई रोक और दरवाज़ा रोक न

सके, वह जो किसी बड़े से बड़े की मुतलक़ परवाह न करे। हज़रत दाऊद अलैहि समझ गए और फ़रमाने लगे : *मरहबा* (ख़ुश आमदीद) : *मरहबा* (ख़ुश आमदीद) : आप मलकुल मौत हैं। उसी वक़्त मलकुल मौत ने आप अलैहि० की रूह क़ब्ज़ की। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, सफ़ा 63)

ख़ुदा की नज़र में बदतरीन आदमी

हज़रत आइशा रज़ि० का बयन है कि नबी करीम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा की नज़र में बदतरीन आदमी क़ियामत के दिन वह होगा, जिसकी बदज़बानी और फ़हश-कलामी की वजह से लोग उससे मिलना छोड़ दें।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

हर मोमिन अपने भाई का आइना है

अपने दोस्तों की इस्लाह व तर्बियत से कभी ग़फ़लत न कीजिए और अपने दोस्तों में वह बीमारी कभी न पैदा होने दीजिए जो इस्लाह व तर्बियत की राह में सबसे बड़ी रुकावट है, यानी ख़ुदपसन्दी और किब्र। दोस्तों को हमेशा आमादा करते रहिए कि वह अपनी कोताहियों और ग़लतियों को महसूस करें। अपनी ख़ताओं के ऐतिराफ़ में जुर्रत से काम लें। और इस हक़ीक़त को हमा वक़्त निगाह में रखें कि अपनी कोताही को महसूस न करने और अपनी बराअत पर इसरार करने से नफ़्स को बदतरीन ग़िज़ा मिलती है।

दरअसल नुमाइशी आजिज़ी दिखाना, अल्फ़ाज़ में अपने को हक़ीर कहना, रफ़्तार और अंदाज़ में ख़ुशूअ का इज़्हार करना, यह निहायत आसान है, लेकिन अपने नफ़्स पर चोट सहना, अपनी कोताहियों को ठंडे दिमाग़ से सुनना और तस्लीम करना और अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ दोस्तों की तंक़ीदें बरदाश्त करना इंतिहाई मुश्किल काम है। लेकिन हक़ीक़ी दोस्त वही हैं जो बेदार ज़ेहन के साथ एक-दूसरे की ज़िंदगी पर निगाह रखें और उस पहलू से एक-दूसरे की तर्बियत व इस्लाह करते हुए किब्र और ख़ुदपसन्दी से बचाते रहें। नबी करीम सल्ल० फ़रमाते हैं कि "तीन बातें हलाकत में डालने वाली हैं।

1. ऐसी ख़्वाहिश कि इंसान उसका ताबेअ और ग़ुलाम बनकर रह जाए।

2. ऐसी हिर्स जिसको पेशवा मानकर आदमी उसकी पैरवी करने लगे।
3. और ख़ुदपसन्दी। और यह बीमारी इन तीनों में सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है।" (बैहक़ी, मिश्कात)

तंक़ीद व एहतिसाब एक ऐसा नशतर है जो अख़्लाक़ी वुजूद के तमाम फ़ासिद माद्दों को बाहर निकाल फेंकता है और अख़्लाक़ी तवानाइयों में ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा करके फ़र्द और मुआशिरे में नई रूह फूँक देता है। दोस्तों के एहतिसाब और तंक़ीद पर बिफरना, नाक-भौं चढ़ाना और ख़ुद को उससे बेनियाज़ समझना भी हलाकत है और इस ख़ुशगवार फ़रीज़े को अदा करने में कोताही बरतना भी हलाकत है। दोस्तों के दामन पर घिनौने धब्बे नज़र आएँ तो बेचैनी महसूस कीजिए और उन्हें साफ़ करने की हकीमानी तदबीरें कीजिए और इसी तरह ख़ुद भी फ़राख़दिली और आजिज़ी के साथ दोस्तों को हर वक़्त यह मौक़ा दीजिए कि वह आपके दाग़-धब्बों को आप पर नुमायाँ करें। और जब वह यह तल्ख़ फ़रीज़ा अंजाम दें तो अपने नफ़्स को फुलाने के बजाए इंतिहाई आला ज़र्फ़ी, ख़ुशदिली और एहसासमंदी के जज़्बात से उनकी तंक़ीद का इस्तक़बाल कीजिए और उनके इख़्लास व करम का शुक्रिया अदा कीजिए। नबी करीम सल्ल० ने मिसाली दोस्ती को एक बलीग़ तमसील से इस तरह वाज़ेह फ़रमाया है, "तुममें से हर एक अपने भाई का आइना है। पस अगर वह अपने भाई में कोई ख़राबी देखे तो उसे दूर करे।"

(तिर्मिज़ी)

इस तमसील में पांच ऐसे रौशन इशारे मिलते हैं जिसको पेशे-नज़र रखकर आप अपनी दोस्ती को वाक़ई मिसाली दोस्ती बना सकते हैं –

1. आइना आपके दाग़-धब्बे उसी वक़्त ज़ाहिर करता है जब आप अपने दाग़-धब्बे देखने के इरादे से उसके सामने जा खड़े होते हैं, वरना वह भी मुकम्मल ख़ामोशी इख़्तियार कर लेता है।

   इसी तरह आप भी अपने दोस्त के उयूब उसी वक़्त वाज़ेह करें जब वह ख़ुद को तंक़ीद के लिए आपके सामने पेश करे और फ़राख़दिली से तंक़ीद व एहतिसाब का मौक़ा दे और आप भी महसूस करें कि इस वक़्त उसका ज़ेहन तंक़ीद सुनने के लिए तैयार है और दिल में इस्लाह क़बूल करने के लिए जज़्बात मोजज़न हैं, और अगर आप यह कैफ़ियत न पाएं तो हिक्मत के साथ अपनी बात को किसी और

मौक़े के लिए उठा रखें और ख़ामोशी इख़्तियार करें। और उसकी ग़ैर-मौजूदगी में तो इस क़दर एहतियात करें कि आपकी ज़बान पर कोई ऐसा लफ़्ज़ भी न आए जिससे उसके किसी ऐब की तरफ़ इशारा होता हो। इसलिए कि यह ग़ीबत है और ग़ीबत से दिल जुड़ते नहीं, बल्कि टूटते हैं।

2. आइना चेहरे के उन्हीं दाग़ धब्बों की सही-सही तस्वीर पेश करता है जो फ़िल वाक़ेअ चेहरे पर मौजूद होते हैं, वह कम बताता है और न वह उनकी तादाद बढ़ाकर पेश करता है। फिर वह चेहरे के सिर्फ़ उन्हीं ऐबों को नुमायाँ करता है जो उसके सामने आते हैं, वह छुपे हुए ऐबों का तजस्सुस नहीं करता और न कुरेद-कुरेद कर ऐबों की कोई ख़्याली तस्वीर पेश करता है।

   इसी तरह आप भी अपने दोस्त के ऐबों को बेकम-व-कास्त बयान करें, न तो बेजा मुरव्वत और ख़ुशामद में उयूब छुपाएँ और न अपनी ख़ित्तबत और ज़ोरे बयान से उसमें इज़ाफ़ा करें। और फिर सिर्फ़ वही उयूब बयान करें जो आम ज़िंदगी से आपके सामने आएँ। तजस्सुस और टोह में न लगें। पोशीदा ऐबों को कुरेदना कोई अख़्लाक़ी ख़िदमत नहीं बल्कि एक तबाहकुन और अख़्लाक़ सोज़ ऐब है। नबी क़रीम सल्ल० एक मर्तबा मिंबर पर चढ़े और निहायत ऊँची आवाज़ में आप सल्ल० ने हाज़िरीन को तंबीह फ़रमाई :

   ''मुसलमानों के ऐबों के पीछे न पड़ो। जो शख़्स अपने मुसलमान भाइयों के पोशीदा उयूब के दरपे होता है, ख़ुदा उसके पोशीदा उयूब को तश्त अज़ बाम करने पर तुल जाता है, और जिसके ऐब अफ़शा करने पर ख़ुदा तुल जाए उसको रुसवा करके ही छोड़ता है। अगरचे वह अपने घर के अंदर घुसकर ही क्यों न बैठ जाए।'' (तिर्मिज़ी)

3. आइना हर ग़र्ज़ से पाक होकर बेलाग अंदाज़ में अपना फ़र्ज़ अदा करता है और जो शख़्स भी उसके सामने अपना चेहरा पेश करता है वह बग़ैर किसी ग़र्ज़ के उसका सही नक़्शा उसके सामने रख देता है। न वह किसी से बुग़्ज़ और कीना रखता है और न किसी से इंतिक़ाम लेता है। आप भी ज़ाती अग़राज़, जज़्ब-ए-इंतिक़ाम, बुग़्ज़ व कीना और हर तरह की बदनीयती से पाक होकर बेलाग

एहतिसाब कीजिए और इसलिए कीजिए कि आपका दोस्त अपने को सँवार ले, जिस तरह आइने को देखकर आदमी अपने को सँवार लेता है।

4. आइने में अपनी सही तस्वीर देखकर न तो कोई झुंझलाता है और न गुस्से से बेक़ाबू होकर आइने को तोड़ देने की हिमाक़त करता है। बल्कि फ़ौरन अपने को बनाने और सँवारने में लग जाता है और दिल ही दिल में आइने की क़दर व क़ीमत महसूस करते हुए ज़बाने हाल से उसका शुक्रिया अदा करता है और कहता है वाक़ई आइने ने मेरे बनने-संवरने में मेरी बड़ी मदद की और फ़ितरी फ़रीज़ा अंजाम दिया और फिर निहायत एहतियात के साथ दूसरे वक़्त के लिए उसको बहिफ़ाज़त रख देता है।

   इसी तरह जब आपका दोस्त अपने अल्फ़ाज़ के आइने में आपके सामने आपकी सही तस्वीर रखे तो आप झुंझलाकर दोस्त पर जवाबी ज़हमला न करें। बल्कि उसके शुक्र गुज़ार हों कि उसने दोस्ती का हक़ अदा किया और न सिर्फ़ ज़बान से बल्कि दिल से उसका शुक्रिया अदा करते हुए उसी लम्हे अपनी इस्लाह व तर्बियत के लिए फ़िक्रमंद हो जाएँ और इंतिहाई फ़राख़दिली और एहसानमंदी के साथ दोस्त की क़दर व अज़्मत महसूस करते हुए उससे दरख़्वास्त करें कि आइंदा भी वह आपको अपने क़ीमती मशविरों से नवाज़ता रहे।

5. और आख़िरी इशारा यह है कि मुसलमानों में से हर एक अपने भाई का आइना है और भाई-भाई के लिए इख़्लास व मुहब्बत का पैकर होता है, वफ़ादार और ख़ैरख़्वाह होता है, हमदर्द और ग़मगुसार होता है। भाई को मुसीबत में देखकर तड़प उठता है और ख़ुश देखकर बाग़-बाग़ हो जाता है। इसलिए भाई और दोस्त जो तंक़ीद करेगा उसमें इंतिहाई दिल-सोज़ी और ग़म-ख़्वारी होगी, मुहब्बत और ख़ुलूस होगा, बेपाया दर्दमंदी और ख़ैरख़्वाही होगी, और लफ़्ज़-लफ़्ज़ जज़्बए इस्लाह का आइनादार होगा। और ऐसी ही तंक़ीद से दिलों को जोड़ने और ज़िंदगियों को बनाने की तवक़्क़ो की जा सकती है।

गुनाहों से तौबा करने वाले बन्दे अल्लाह तआला को बहुत पसन्द हैं

1. रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं, "उसकी क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर तुम ख़ताएँ करते-करते ज़मीन व आसमान पुर कर दो फिर अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो तो यक़ीनन वह तुम्हें बख़्श देगा। उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है! अगर तुम ख़ताएँ करो ही नहीं तो अल्लाह इज़्ज़ोजल्ल तुम्हें फ़ना करके उन लोगों को लाए जो ख़ता करके इस्तिग़फ़ार करें और फिर ख़ुदा उन्हें बख़्शे।" (मुस्नद इमाम अहमद रह०)

2. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० अपने इंतिक़ाल के वक़्त फ़रमाते हैं : एक हदीस मैंने तुमसे आज तक बयान नहीं की थी। अब बयान करता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, "अगर तुम गुनाह ही न करते तो अल्लाह ऐसी क़ौम को पैदा करता जो गुनाह करती फिर ख़ुदा उन्हें बख़्शता।" (सहीह मुस्लिम वग़ैरह)

3. हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं, "गुनाह का कफ़्फ़ारा नदामत और शर्मसारी है।" और आप सल्ल० ने फ़रमाया, "अगर तुम गुनाह न करते तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को लाता जो गुनाह करें फिर वह उन्हें बख़्श दे।" (मुस्नद अहमद)

4. आप सल्ल० फ़रमाते हैं, "अल्लाह तआला उस बन्दे को पसन्द फ़रमाता है जो कामिल यक़ीन रखनेवाला और गुनाहों से तौबा करनेवाला हो।" (मुस्नद अहमद, तफ़्सीर इब्ने कसीर, 4 : 436)

फ़ायदा : इन हदीसों का यह मतलब नहीं कि अल्लाह तआला को गुनाह पसन्द हैं, बल्कि इन हदीसों का मतलब यह है कि गुनाहों से तौबा करने वाले बन्दे अल्लाह तआला को बहुत पसन्द हैं, लिहाज़ा गुनाहगार बन्दे अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हों, गुनाहों से तौबा करें, अल्लाह तआला ख़ुश होकर माफ़ फ़रमाएंगे।

बेहतरीन राज़दार बनो

दोस्त आप पर ऐतिमाद करके आप से दिल की बात कह दे तो उसकी हिफ़ाज़त कीजिए और कभी दोस्त के ऐतिमाद को ठेस न लगाइए। अपने सीने को राज़ों का महफ़ूज़ दफ़ीना बनाइए ताकि दोस्त बग़ैर किसी झिझक के हर मामले में आपसे मश्विरा तलब करे और आप दोस्त को अच्छे मश्विरे दे सकें और तआवुन कर सकें।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हफ़सा रज़ि० जब बेवा हुईं तो मैं हज़रत उसमान रज़ि० से मिला और कहा कि अगर तुम चाहो तो हफ़सा रज़ि० का निकाह तुमसे कर दूँ। हज़रत उसमान रज़ि० ने जवाब दिया कि मैं इस मामले पर ग़ौर करूँगा। मैंने कई रातों तक उनका इंतिज़ार किया। फिर हज़रत उसमान रज़ि० मुझसे मिले और बोले, मेरा अभी शादी करने का ख़्याल नहीं है। मैं फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास गया। और कहा अगर आप पसन्द फ़रमाएँ तो हफ़सा को अपनी ज़ौजियत में ले सकते हैं। वह ख़ामोश रहे और कोई जवाब नहीं दिया। मुझे उनकी ख़ामोशी बहुत खली। हज़रत उसमान रज़ि० से भी ज़्यादा खली। इसी तरह कई दिन गुज़र गए, फिर नबी करीम सल्ल० ने हफ़सा रज़ि० का पैग़ाम भेजा और मैंने नबी करीम सल्ल० से हफ़सा का निकाह कर दिया।

उसके बाद हज़रत अबू बक्र रज़ि० मुझसे मिले और फ़रमाया, "तुमने मुझसे हफ़सा रज़ि० का ज़िक्र किया था और मैंने ख़ामोशी इख़्तियार की थी, हो सकता है तुम्हें मेरी ख़ामोशी से तकलीफ़ हुई हो।" मैंने कहा, हां, तकलीफ़ तो हुई थी।" फ़रमाया "मुझे मालूम था कि रसूलुल्लाह सल्ल० का ख़ुद ऐसा ख़्याल है और यह आप सल्ल० का एक राज़ था जिसको मैं ज़ाहिर करना न चाहता था। अगर नबी करीम सल्ल० हज़रत हफ़सा रज़ि० का ज़िक्र न फ़रमाते तो मैं ज़रूर क़ुबूल कर लेता।" (बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ि० एक दिन लड़कों में खेल रहे थे कि इतने मैं नबी करीम सल्ल० तशरीफ़ लाए और हमें सलाम किया, फिर अपनी एक ज़रूरत बताकर मुझे भेजा। मुझे इस काम के करने में देर लगी। काम से फ़ारिग़ होकर जब मैं घर गया तो माँ ने पूछा, "इतनी देर कहां लगाई?" मैंने कहा, "नबी करीम सल्ल० ने अपनी एक ज़रूरत से भेजा था।" बोलें, "क्या ज़रूरत थी?" मैंने कहा, "वह राज़ की बात है।" माँ ने कहा, "देखो रसूल सल्ल० का राज़ किसी को न बताना।" (मुस्लिम)

दोस्तों के दर्मियान हश्शाश-बश्शाश रहो

दोस्तों पर ऐतिमाद कीजिए, उनके दर्मियान हश्शाश-बश्शाश रहिए। अफ़सुर्दा रहने और दूसरों को अफ़सुर्दा करने से परहेज़ कीजिए। दोस्तों की सोहबत में बेतकल्लुफ़ और ख़ुश मिज़ाज रहिए। त्योरी चढ़ाने और लिए-दिए रहने से परहेज़ कीजिए। दोस्तों के साथ एक बेतकल्लुफ़ साथी, ख़ुशमिजाज़ हमनशीन और ख़ुशतबा रफ़ीक़ बनने की कोशिश कीजिए। आपकी सोहबत से अहबाब उक्ताए नहीं बल्कि मसर्रत, फ़रहत और ख़ुशी महसूस करें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ि० फ़रमाते हैं, "मैंने नबी करीम सल्ल० से ज़्यादा किसी को मुस्कराते हुए नहीं देखा।" (तिर्मिज़ी)

हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम सल्ल० की सोहबत में सौ (100) मज्लिसों से भी ज़्यादा मज्लिसों में बैठा हूँ, उन मज्लिसों में सहाबा किराम रज़ि० अशआर भी पढ़ते थे और ज़मानए जाहिलियत के क़िस्से-कहानियाँ भी सुनाते थे। नबी करीम सल्ल० ख़ामोशी से यह सब सुनते रहते थे बल्कि कभी-कभी ख़ुद भी उनके साथ हँसने में शरीक हो जाया करते थे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत शुरैद रज़ि० कहते हैं कि मैं एक बार नबी करीम सल्ल० के साथ सवारी पर आप सल्ल० के पीछे बैठा हुआ था। सवारी पर बैठे-बैठे मैंने नबी करीम सल्ल० को उमैया बिन अबी सलत के सौ (100) अशआर सुनाए, हर शेर पर आप सल्ल० फ़रमाते, कुछ और सुनाओ और मैं सुनाता। (तिर्मिज़ी)

इसी तरह नबी करीम सल्ल० अपनी मज्लिस में ख़ुद भी कभी-कभी क़िस्से सुनाते। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक बार आप सल्ल० ने घर वालों को एक क़िस्सा सुनाया। एक औरत ने कहा, यह अजीब व ग़रीब क़िस्सा तो बिल्कुल ख़ुराफ़ा के क़िस्सों की तरह है। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "तुम्हें ख़ुराफ़ा का सहीह क़िस्सा भी मालूम है?" और फिर ख़ुद ही आप सल्ल० ने ख़ुराफ़ा का असल क़िस्सा तफ़्सील से सुनाया। इसी तरह एक बार हज़रत आइशा रज़ि० को ग्यारह औरतों की एक बहुत ही दिलचस्प कहानी सुनाई।

हज़रत बक्र बिन अब्दुल्लाह ने सहाबा किराम रज़ि० की बे-तकल्लुफ़ी

और ख़ुश-तबई का हाल बयान करते हुए फ़रमाया, "सहाबा किराम रज़ि० हँसी और तफ़रीह के तौर पर एक-दूसरे की तरफ़ तरबूज़ के छिलके फेंका करते थे। लेकिन जब लड़ने और मुदाफ़अत करने का वक़्त आता तो उस मैदान के शहसवार भी सहाबा ही होते थे।" (अल अदबुल मुफ़रद)

लड़कियों की पैदाइश को बोझ मत समझिए

लड़की की पैदाइश पर भी उसी तरह ख़ुशी मनाइए जिस तरह लड़के की पैदाइश पर मनाते हैं। लड़की हो या लड़का दोनों ही ख़ुदा का अतिया हैं और ख़ुदा ही बेहतर जानता है कि आपके हक़ में लड़की अच्छी है या लड़का। लड़की की पैदाइश पर नाक-भौं चढ़ाना और दिल शिकस्ता होना इताअत शिआरे मोमिन के लिए किसी तरह ज़ेब नहीं देता। यह नाशुक्री भी है और नाक़दरी भी।

1. हदीस में है कि जब किसी के यहाँ लड़की पैदा होती है तो ख़ुदा उसके यहाँ फ़रिश्ते भेजता है जो आकर कहते हैं, "ऐ घरवालो! तुम पर सलामती हो।" वह लड़की को अपने परों के साय में लेते हैं और उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, "यह कमज़ोर जान है जो एक कमज़ोर जान से पैदा हुई है, जो इस बच्ची की निगरानी और परवरिश करेगा, क़ियामत तक ख़ुदा की मदद उसके शामिले हाल रहेगी।" (तबरानी)
2. लड़कियों की तर्बियत व परवरिश इंतिहाई ख़ुशदिली, रूहानी मसर्रत और दीनी एहसास के साथ कीजिए और उसके सिले में ख़ुदा से बहिश्ते बरीं की आरज़ू कीजिए। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है कि "जिस शख़्स ने तीन लड़कियों या तीन बहनों की सरपरस्ती की उन्हें तालीम व तहज़ीब सिखाई और उनके साथ रहम का सुलूक किया, यहाँ तक कि ख़ुदा उनको बेनियाज़ कर दे, तो ऐसे शख़्स के लिए ख़ुदा ने जन्नत वाजिब फ़रमा दी।" इस पर एक आदमी बोला, "अगर दो ही हों तो?" नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, "दो लड़कियों की परवरिश का भी यही सिला है।" हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अगर लोग एक के बारे में पूछते तो आप सल्ल० एक की परवरिश पर भी यही बशारत देते। (मिश्कात)
3. हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक दिन एक औरत

अपनी दो बच्चियों को लिए मेरे पास आई और उसने कुछ माँगा। मेरे पास सिर्फ़ एक ही खजूर थी। वह मैंने उसके हाथ पर रख दी। उस औरत ने खजूर के दो टुकड़े किए और आधी-आधी दोनों बच्चियों में बाँट दी और ख़ुद न खाई। उसके बाद वह उठ खड़ी हुई और बाहर निकल गई। उसी वक़्त नबी करीम सल्ल० घर तशरीफ़ लाए। मैंने आप सल्ल० को यह सारा माजरा कह सुनाया। आप सल्ल० ने यह सुनकर फ़रमाया, "जो शख़्स भी लड़कियों की पैदाइश के ज़रिए आज़माया जाता है और वह उनके साथ अच्छा सुलूक करके आज़माइश में कामयाब हो तो यह लड़कियाँ उसके लिए क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से ढाल बन जाएँगी।"

(मिश्कात)

4. लड़कियों को हक़ीर न जानिए, न लड़के को उस पर किसी मामले में तर्जीह दीजिए। दोनों के साथ यकसाँ मुहब्बत का इज़्हार कीजिए और यकसाँ सुलूक कीजिए। नबी करीम सल्ल० का इरशाद है कि "जिसके यहाँ लड़की पैदा हुई और उसने जाहिलियत के तरीक़े पर उसे ज़िंदा दफ़न नहीं किया और न उसको हक़ीर जाना और न लड़के को उसके मुक़ाबले में तर्जीह दी तो ऐसे आदमी को ख़ुदा जन्नत में दाख़िल करेगा।" (अबू दाऊद)

5. जायदाद में लड़की का मुक़र्ररा हिस्सा पूरी ख़ुशदिली और एहतिमाम के साथ दीजिए। यह ख़ुदा का फ़र्ज किया हुआ हिस्सा है, उसमें कमीबेशी करने का किसी को कोई इख़्तियार नहीं। लड़की का हिस्सा देने में हीले करना या अपनी सवाबदीद के मुताबिक़ कुछ दे-दिलाकर मुत्मइन हो जाना इताअत शिआरे मोमिन का काम नहीं है। ऐसा करना ख़यानत भी है और ख़ुदा के दीन की तौहीन भी। अल्लाह तआला हम सबको सहीह समझ अता फ़रमाए। आमीन!

नौ अहम नसीहतें

1. पढ़ें..........................इंतिख़ाब के साथ।
2. ग़ौर करें......................गहराई के साथ।
3. ख़िदमत करें.................लगन के साथ।

4. बहस करें..................दलील के साथ।
5. बोलें.........................इख़्तिसार के साथ।
6. मुक़ाबला करें..................जुर्रत के साथ।
7. इबादत करें..................मुहब्बत के साथ।
8. बात सुनें.......................तवज्जोह के साथ
9. ज़िंदगी तय करें..........ऐतिदाल के साथ।

ताज्जुब है चार क़िस्म के आदमियों परद जो चार बातों से ग़ाफ़िल हैं

सारी परेशानियाँ दूर करने का क़ुरआनी इलाज

हज़रत जाफ़र सादिक़ रह० एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो लोग उनसे इल्मी इस्तिफ़ादे के लिए आए। आपने लोगों से कहा कि मुझे ताज्जुब है चार क़िस्म के आदमियों पर जो चार बातों से ग़ाफ़िल हैं :

1. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो मुसीबत में फँसा हुआ हो और *'या अरहमर्राहिमीन'* न पढ़ता हो, हालांकि क़ुरआन पाक में हज़रत अय्यूब अलैहि० के बारे में इरशाद है :

وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

(سورۂ انبیاء آیت ۸۳)

"और अय्यूब ने जब अपने रब को पुकारा कि मैं मुसीबत में फंसा हुआ हूँ और आप अरहमर्राहिमीन हैं।"

(सूरा अंबिया, आयत 83)

इस दुआ का फ़ायदा ख़ुद क़ुरआन करीम में यह बयान किया गया है कि :

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِن ضُرٍّ (حوالہ بالا آیت ۸۴)

"पस हमने उनकी दुआ क़बूल की और उनकी तकलीफ़ दूर फ़रमाई।" (हवाला बाला, आयत 84)

2. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो ग़म में फँसा हुआ हो और वह दुआ न पढ़े जो हज़रत यूनुस अलैहि० ने मछली के पेट में पढ़ी थी—वह दुआ यह है :

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ ۔ (الانبیاء آیت ۸۷)

"तेरे सिवा कोई हाकिम नहीं, तू बे ऐब है, मैं गुनाहगार हूँ।" (सूरा अंबिया, आयत 87)

इसका फ़ायदा क़ुरआन पाक में यह बयान किया गया है :

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ

(الانبیاء آیت ۸۸)

"पस हमने उनकी दुआ क़बूल की और उनको ग़म से नजात दी और इसी तरह हम मोमिनीन को नजात दिया करते हैं।"

(सूरा अंबिया, आयत 88)

3. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसे कोई ख़ौफ़ लाहिक़ हो और वह यह दुआ न पढ़े जो सहाबा किराम रज़ि० ने ख़ौफ़ के वक़्त पढ़ी थी—वह दुआ यह है :

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ (آل عمران آیت ۱۷۳)

"काफ़ी है हमको अल्लाह, और क्या ख़ूब कारसाज़ है।" (सूरा आले इमरान, आयत 173)

इसका फ़ायदा क़ुरआन पाक में यह बयान किया गया है :

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْءٌ

(آل عمران آیت ۱۷۴)

"पस लौटे वह अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ और उनको कोई परेशानी नहीं हुई।"

(सूरा आले इमरान, आयत 174)

4. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो दुश्मनों के मक्र व फ़रेब में मुब्तला हो और वह दुआ न पढ़े जो फ़िरऔन के ख़ानदान के एक मोमिन ने पढ़ी थी—वह दुआ यह है:

أُفَوِّضُ أَمْرِيْ إِلَى اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ (سورۂ مؤمن آیت ۴۴)

"मैं सौंपता हूँ अपना काम अल्लाह को, बेशक अल्लाह की निगाह में हैं सब बन्दे।" (सूरह मोमिन, आयत 44)

इसका फ़ायदा क़ुरआन में यह बयान किया गया है :

فَوَقٰهُ اللّٰهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوْا (حوالہ بالا آیت ۴۵)

"पस अल्लाह ने उसको उनके बुरे मक्र व फ़रेब से बचा लिया।" (हवाला बाला, आयत 45)

इस्लामी सलाम में सलामती ही सलामती है

सलाम एक ऐसी अज़ीम चीज़ है जो झगड़ों को ख़त्म कर देती है। सलाम आदमी न करे तो बुरा समझा जाता है और अगर सलाम कर ले तो जाहिल भी झुक जाएंगे कि यह बड़ा अच्छा आदमी है, सलाम कर रहा है। इस वास्ते फ़रमाया गया कि अगर आपसी दुश्मनियाँ भी हों, अदावतें भी हों, अगर दुश्मन को आप सलाम करेंगे तो दुश्मनियाँ ढीली पड़ जाएँगी। वह 'व अलैकुमुस्सलाम' कहने पर मजबूर होगा। जिसका मतलब है कि तुम्हारे लिए भी सलामती हो। जब सलामती की दुआ देगा तो झगड़ा उठाएगा क्यों? ख़ुद कह रहा है कि अल्लाह तुम्हें सहीह सलामत रखे, तो दुआ भी दे और ऊपर से झगड़ा भी उठाए? इस सलाम ने सारी दुश्मनी ख़त्म कर दी। इस वास्ते हदीस में फ़रमाया गया कि :

تَقْرِئُ السَّلَامَ عَلٰى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَّمْ تَعْرِفْ (بخاری، مسلم)

"सलाम करने की आदत डालो, चाहे तआरुफ़ हो या न हो।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

आज के ज़माने का तमद्दुन यह है कि जब तक तीसरा आदमी तआरुफ़ न कराए न बोल, न चाल, न सलाम, न कलाम, यह मुतकब्बिराना तमद्दुन है। यह इस्लाम का तमद्दुन नहीं है। इस्लाम का तमद्दुन यह है कि जब हममें और तुममें इस्लाम का रिश्ता मुश्तरक और इस्लामी अख़ुव्वत और भाई-बन्दी फैली हुई है तो क्या ज़रूरत है कि कोई तीसरा तआरुफ़ कराए। पहले से ही तआरुफ़ हासिल है। यह हमारा भाई

मुसलमान है। इसमें इस्लाम भरा हुआ है। मिलें तो यह इंतिज़ार न करें कि दूसरा मुझे सलाम कहे। बल्कि सलाम करने में पहल कीजिए, इसमें ज़्यादा सवाब है।

हदीस में फ़रमाया गया है कि यहूदियों का सलाम उँगलियों से है, नसारा का सलाम हथेली से है और मुसलमान का सलाम *'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'* है। यानी यहूद व नसारा का सलाम सिर्फ़ इशारा है और मुसलमानों का सलाम एक मुस्तक़िल दुआ है कि तुम पर सलामती हो, अल्लाह की रहमतें तुम पर नाज़िल हों, बरकतें तुम पर नाज़िल हों। हर मुसलमान दूसरे को दुआ करे। इससे उसकी ख़ैरख़्वाही और मुहब्बत ज़ाहिर होगी। ताल्लुक़ भी मज़बूत हो जाएगा।

क़िस्सा मशहूर है कि किसी आदमी के सामने जिन्न आ गया तो उसे ख़तरा लाहिक़ हो गया कि यह तो खा जाएगा। उसने आगे बढ़कर कहा मामूं जान! सलाम। उसने कहा, भांजे व *अलैकुमुस्सलाम,* और कहा कि मेरा इरादा तुझे खाने का था लेकिन तूने मामूं कहा और सलाम कहा, इसलिए मेरे दिल में रहम आ गया। मैंने छोड़ दिया अब तू आज़ाद है। जहाँ चाहे चला जा, तूने सलाम करके जान बचाई। यही सूरत दुश्मन की भी है। अगर किसी से पक्की दुश्मनी है और आप कहें, अस्सलामु अलैकुम तो वह पसीज जाएगा। दुश्मनी ढीली पड़ जाएगी। अलग़र्ज़ यह बहुत बड़ी नेमत और अज़ीम दुआ है।

हज़रत तुफ़ैल कहते हैं कि मैं अकसर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होता और आप रज़ि० के हमराह बाज़ार जाया करता। जब हम दोनों बाज़ार जाते तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जिसके पास से भी गुज़रते उसको सलाम करते। चाहे वह कोई कबाड़िया होता, चाहे कोई दुकानदार होता, चाहे कोई ग़रीब और मिस्कीन होता, ग़र्ज़ कोई भी होता आप उसको सलाम ज़रूर करते। एक दिन मैं आपकी ख़िदमत में आया तो आपने कहा, चलो बाज़ार चलें। मैंने कहा, हज़रत! बाज़ार जाके क्या कीजिएगा? आप न तो किसी सौदे की ख़रीदारी के लिए खड़े होते हैं, न किसी माल के बारे में मालूमात करते हैं, न मोल-भाव करते हैं, न बाज़ार की महफ़िलों में बैठते हैं। आइए यहीं बैठकर कुछ बातचीत करें। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ बड़े पेट वाले! हम तो सिर्फ़ सलाम करने की ग़र्ज़ से बाज़ार

जाते हैं कि हमें जो मिले हम उसे सलाम करें। (मुवत्ता इमाम मालिक)

हमेशा ज़बान से अस्सलामु अलैकुम कह कर सलाम कीजिए और ज़रा ऊंची आवाज़ से सलाम कीजिए ताकि वह शख़्स सुन सके जिसको आप सलाम कर रहे हैं। अलबत्ता अगर कहीं ज़बान से *अस्सलामु अलैकुम* कहने के साथ हाथ या सर से इशारा करने की ज़रूरत हो तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं। मसलन आप जिसको सलाम कर रहे हैं वह दूर है और ख़्याल है कि आपकी आवाज़ उस तक न पहुँच सकेगी या कोई बहरा है और आपकी आवाज़ नहीं सुन सकता तो ऐसी हालत में इशारा भी कीजिए। (आदाबे ज़िंदगी, सफ़ा 218)

बहरहाल इस हदीस में हिदायत की गई है कि पहचान-पहचान कर सलाम न करो। इस वास्ते कि तआरुफ़ कराने में अकसर ऐसा होता है कि कोई बड़ा आदमी हो उसका तो तआरुफ़ हो गया और अगर कोई छोटा-मोटा आदमी आए तो उसका कोई तआरुफ़ नहीं कराता। गोया आपका सलाम बड़े आदमी को तो होगा, छोटे को नहीं होगा। यह ख़ुद एक तकब्बुर है कि छोटों को मुँह न लगाया जाए और बड़ों के सामने झुके।

इसी वास्ते फ़ुक़हा लिखते हैं कि अगर कोई सवारी पर सवार जा रहा हो और लोग सड़क पर सामने बैठे हों तो सवार होने वाले का फ़र्ज़ है कि वह बैठने-वालों को सलाम करे, अपने अंदर ख़ाकसारी पैदा करे। ऐसी सूरत न पैदा होने दे जिसमें यह इंतिज़ार हो कि यह मुझे सलाम करें, क्योंकि यह मेरे से छोटे हैं। यह छोटाई-बड़ाई कहाँ की? आदमी ख़ुद ही छोटा है। बड़ा अल्लाह है। सबसे बड़ी ज़ात वह है। उसके सामने सब छोटे हैं। इसलिए हर शख़्स यह समझे कि मैं छोटा हूँ और वह बड़ा है। जब यह समझेगा तो सलाम की इब्तिदा करने की कोशिश करेगा।

शहीद को छः इनामात मिलते हैं

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि शहीद को छः इनामात हासिल होते हैं–

1. उसके ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही उसके कुल गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

2. उसे उसका जन्नत में मकान दिखला दिया जाता है।
3. और निहायत ख़ूबसूरत बड़ी-बड़ी आँखोंवाली हूरों से उसका निकाह करा दिया जाता है।
4. वह बड़ी घबराहट से अम्न में रहता है।
5. वह अज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाता है।
6. उसे ईमान के ज़ेवर से आरास्ता कर दिया जाता है।

एक और हदीस में यह भी है कि उसके सर पर वक़ार का ताज रखा जाता है, जिसमें का एक याक़ूत तमाम दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से गिराँ-बहा है। उसे बहत्तर (72) हूरे ऐन मिलती हैं और अपने ख़ानदान के सत्तर (70) शख़्सों के बारे में उसकी शफ़ाअत क़बूल की जाती है। यह हदीस तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी है। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि सिवाए फ़र्ज़ के शहीदों के सब गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। शहीदों के फ़ज़ाइल की हदीसें और भी बहुत हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, सफ़ा 99-100)

हराम लुक़मे की वजह से चालीस दिन तक इबादत क़बूल नहीं होती

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने खड़े होकर कहा, या रसूलल्लाह! मेरे लिए दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला मेरी दुआओं को क़बूल फ़रमाया करे। आप सल्ल० ने फ़रमाया : ऐ सअद! पाक चीजें और हलाल लुक़मा खाते रहो, अल्लाह तआला तुम्हारी दुआएँ क़बूल फ़रमाता रहेगा। क़सम है उस ख़ुदा की जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! हराम लुक़मा जो इंसान अपने पेट में डालता है उसकी नहूसत की वजह से चालीस दिन की उसकी इबादत क़बूल नहीं होती, जो गोश्त-पोस्त हराम से पला वह जहन्नमी है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, 1 : 235)

माँगी रोटी और मिले चालीस हज़ार दीनार

मंक़ूल है कि एक दिन हज़रत इबराहीम बिन अदहम रह० को भूख

लगी तो उन्होंने एक शख़्स को एक चीज़ दी जो उनके पास मौजूद थी और उससे कहा कि इसको गिरवी रख कर खाने का इंतिज़ाम करो। जब वह शख़्स वह चीज़ लेकर वहाँ से निकला तो अचानक उसको एक और शख़्स मिला जो एक ख़च्चर के साथ चला आ रहा था। उस ख़च्चर पर चालीस हज़ार दीनार लदे हुए थे, उसने उस शख़्स से हज़रत इबराहीम बिन अदहम रह० के बारे में पूछा और कहा कि यह चालीस हज़ार दीना इबराहीम रह० की मीरास हैं जो उन तक उनके वालिद के माल से पहुँची है। मैं उनका ग़ुलाम हूँ, मीरास का यह माल मैं उनकी ख़िदमत में लाया हूँ। उसके बाद वह शख़्स हज़रत इबसहीम बिन अदहम रह० के पास पहुंचा और चालीस हज़ार दीनार उनके हवाले किए। हज़रत इबराहीम बिन अदहम रह० ने कहा कि अगर तुम सच कहते हो कि तुम मेरे ही ग़ुलाम हो और यह माल भी मेरा ही है तो मैं तुम्हें ख़ुदा की ख़ुशनूदी के लिए आज़ाद करता हूँ और यह चालीस हज़ार दीनार भी तुम्हें बख़्शता हूँ। बस तुम अब मेरे पास से चले जाओ। जब वह शख़्स वहाँ से चला गया तो हज़रत इबराहीम बिन अदहम रह० ने कहा कि "परवरदिगार! मैंने तेरे सामने सिर्फ़ रोटी की ख़्वाहिश का इज़्हार किया था तूने मुझे इतनी मिक़्दार में दुनिया दे दी। पस क़सम है तेरी ज़ात की! अब अगर तू मुझे भूख से मार भी डाले तो तुझसे कुछ नहीं माँगूँगा।"

(मज़ाहिरे हक़, जदीद 3 : 142)

अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है जब तक रूह नरख़रे में न आ जाए

1. रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल फ़रमाता है जब तक ग़रग़रा शुरू न हो। (तिर्मिज़ी)
2. जो भी मोमिन बन्दा अपनी मौत से महीना भर पहले तौबा कर ले उसकी तौबा अल्लाह तआला क़बूल फ़रमा लेता है यहाँ तक कि उसके बाद भी, बल्कि मौत से एक दिन पहले भी, बल्कि एक साअत पहले भी जो भी इख़्लास और सच्चाई के साथ अपेन रब की तरफ़ झुके अल्लाह तआला उसे क़बूल फ़रमाता है।
3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो अपनी मौत से

एक साल पहले तौबा करे, अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमाता है और जो महीना भर पहले तौबा करे, अल्लाह तआला उसकी तौबा भी क़बूल फ़रमाता है और जो हफ़्ता भर पहले तौबा करे, अल्लाह तआला उसकी तौबा भी क़बूल फ़रमाता है और जो एक दिन पहले तौबा करे, अल्लाह तआला उसकी तौबा भी क़बूल फ़रमाता है।

4. मुस्नद अहमद में है कि चार सहाबी रज़ि० जमा हुए। उनमें से एक ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि जो शख़्स अपनी मौत से एक दिन पहले भी तौबा करे अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमाता है। दूसरे ने पूछा, क्या सचमुच तुमने हुज़ूर सल्ल० से इसे सुना है? उसने कहा, हाँ। तो दूसरे ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि अगर आधा दिन पहले भी तौबा करे तो भी अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है। तीसरे ने कहा, तुमने यह सुना है? कहा, हाँ। मैंने ख़ुद सुना है। कहा, मैंने सुना है अगर एक पहर पहले तौबा नसीब हो जाए तो वह भी क़बूल होती है। चौथे ने कहा तुमने यह सुना है? उसने कहा, हाँ। कहा, मैंने तो हुज़ूर सल्ल० से यहाँ तक सुना है कि जब तक उसके नरख़रे में रूह न आ जाए तौबा के दरवाज़े उसके लिए भी खुले रहते हैं।

5. हज़रत अबू क़लाबा रह० फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला ने इब्लीस पर लानत नाज़िल फ़रमाई तो उसने ढील तलब की और कहा तेरी इज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम कि इब्ने आदम के जिस्म में जब तक रूह रहेगी; मैं उसके दिल से न निकलूँगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मुझे अपनी इज़्ज़त और अपने जलाल की क़सम! जब तक उसमें रूह रहेगी उसकी तौबा क़बूल करूँगा।

6. एक मरफ़ूअ हदीस में इसके क़रीब-क़रीब मरवी है। पस इन तमाम अहादीस से मालूम होता है कि जब तक बन्दा ज़िंदा है और उसे अपनी हयात की उम्मीद है तब तक वह ख़ुदा तआला की तरफ़ झुके तौबा करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और उस पर रुजूअ करता है। अल्लाह तआला अलीम व हकीम है। हाँ, जब ज़िंदगी से मायूस हो जाए, फ़रिश्तों को देख ले और रूह बदन से निकल कर हलक़ तक पहुँच जाए, सीने में घुटने लगे, हलक़

में अटके, ग़रग़रा शुरू हो तो उसकी तौबा क़बूल नहीं होती।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 523)

सग़ीरा गुनाहों को भी हक़ीर न समझो, ये सग़ीरा कल कबीरा हो जाएँगे

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं, "सग़ीरा गुनाह को भी हल्का न समझो। ख़ुदा की तरफ़ से इसका भी मुतालबा होनेवाला है।" (नसई और इब्ने माजा वग़ैरह)

हज़रत सुलैमान बिन मुग़ीरा रह० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुझसे एक गुनाह सरज़द हो गया जिसे मैंने हक़ीर समझा। रात को ख़्वाब में देखता हूँ कि एक आनेवाला आया और मुझसे कह रहा है, ऐ सुलैमान!

1. सग़ीरा गुनाहों को भी हक़ीर और नाचीज़ न समझ, ये सग़ीरा कल कबीरा हो जाएँगे।
2. गो गुनाह छोटे-छोटे हों और उन्हें किए हुए भी अर्सा गुज़र चुका हो, अल्लाह के पास वह साफ़-साफ़ लिखे हुए मौजूद हैं।
3. बदी से अपने नफ़्स को रोके रख और ऐसा न हो जाए कि मुश्किल से नेकी की तरफ़ आए, बल्कि ऊँचा दामन करके भलाई की तरफ़ लपक।
4. जब कोई शख़्स सच्चे दिल से अल्लाह से मुहब्बत करता है तो उसका दिल उड़ने लगता है और उसे ख़ुदा की जानिब से ग़ौर व फ़िक्र की आदत इलहाम की जाती है।

अपने रब से हिदायत तलब कर और नर्मी और *मुलाइमत* कर, हिदायत और नुसरत करने वाला रब तुझे काफ़ी होगा।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, सफ़ा 227)

कोई तदबीर मौत को टाल नहीं सकती

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम में एक लम्बा क़िस्सा बज़ुबान हज़रत मुजाहिद रह० मरवी है कि अगले ज़माने में एक औरत हामिला थी। जब उसे दर्द होने लगा और बच्ची पैदा हुई तो उसने अपने मुलाज़िम

से कहा कि जाओ कहीं से आग ले आओ। वह बाहर निकला तो देखा कि दरवाज़े पर एक शख़्स खड़ा है। पूछता है कि क्या हुआ, लड़की या लड़का? उसने कहा, लड़की हुई है। कहा, सुन यह लड़की एक सौ (100) आदमियों से ख़िल्वत कराएगी। फिर उसके वहाँ अब जो शख़्स मुलाज़िम है उसी से उसका निकाह होगा और एक मकड़ी उसकी मौत का बाइस बनेगी। वह मुलाज़िम यहीं से पलट आया और आते ही एक तेज़ छुरी लेकर उस लड़की के पेट को चीर डाला और उसे मुर्दा समझ कर भाग निकला। उसकी माँ ने यह हाल देखा तो अपनी बच्ची के पेट में टाँके दिए और इलाज मुआलिज शुरू किया जिससे उसका ज़ख़्म भर गया। अब एक ज़माना गुज़र गया, उधर यह लड़की बलूग़त को पहुँच गई और थी भी अच्छी शक्ल व सूरत की, बदचलनी में पड़ गई।

उधर वह मुलाज़िम समुन्द्र के रास्ते कहीं चला गया। काम काज शुरू किया और बहुत रक़म पैदा की। कुल माल समेट कर बहुत मुद्दत बाद यह फिर उसी अपने गांव में आ गया और एक बुढ़िया औरत को बुलाकर कहा कि मैं निकाह करना चाहता हूँ। गाँव में जो बहुत ख़ूबसूरत औरत हो उससे मेरा निकाह करा दो। यह औरत गई और चूंकि शहर भर में उस लड़की से ज़्यादा ख़ुश-शक्ल कोई औरत न थी। यहीं पैग़ाम डाला, मंज़ूर हो गया, निकाह भी हो गया और विदा होकर यह उसके यहाँ आ भी गई।

दोनों मियाँ-बीवी में बहुत मुहब्बत हो गई। एक दिन ज़िक्र-अज़्कार में उस औरत ने उससे पूछा, आख़िर आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं? यहाँ कैसे आ गए? वग़ैरह। उसने अपना तमाम माजरा बयान कर दिया कि मैं यहाँ एक औरत के यहाँ मुलाज़िम था। वहाँ से उसकी लड़की के साथ हरकत करके भाग गया था। अब इतने बर्सों बाद यहाँ आया हूँ। तो उस लड़की ने कहा, जिसका पेट चीर कर तुम भागे थे, मैं वही हूँ। यह कहकर अपने उस ज़ख़्म का निशान भी उसे दिखाया, तब तो उसे यक़ीन आ गया और कहने लगा, जब तू वही है तो एक बात तेरी निस्बत मुझे और भी मालूम है, वह यह कि तू एक सौ आदमी से मुझसे पहले मिल चुकी है। उसने कहा, ठीक है, यह काम तो मुझसे हुआ है लेकिन गिनती याद नहीं।

उसने कहा कि मुझे तेरी निस्बत एक और बात भी मालूम है, वह

यह कि तेरी मौत का सबब एक मकड़ी बनेगी। ख़ैर, चूंकि मुझे तुझसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत है, मैं तेरे लिए एक बुलन्द व बाला पुख़्ता और आला महल तामीर करा देता हूँ। उसी में तू रह ताकि वहाँ तक ऐसे कीड़े-मकोड़े पहुँच ही न सकें। चुनांचे ऐसा ही महल तामीर हुआ और वह वहाँ रहने-सहने लगी। एक मुद्दत के बाद एक रोज़ दोनों मियाँ-बीवी बैठे थे कि अचानक छत पर एक मकड़ी दिखाई दी। उसे देखते ही उस शख़्स ने कहा, देखो! आज यहाँ मकड़ी दिखाई दी। औरत बोली, अच्छा यह मेरी जान-लेवा है? जब ही सहमी कि मैं इसकी जान लूँ। गुलाम को हुक्म दिया कि इसे ज़िंदा पकड़ कर मेरे सामने लाओ। वह पकड़ कर लाया। उसने ज़मीन पर रखकर अपने पैर के अंगूठे से उसे मल डाला। उसकी जान निकल गई। उससे जो पीप निकला उसका एक-आध क़तरा उसके अंगूठे के नाख़ून और गोश्त के दर्मियान उड़कर पड़ा। उसका ज़हर चढ़ा। पैर स्याह पड़ गया और उसी में मर गई।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, 1 : 602-603)

बहुत बड़ा मुजरिम और मफ़रूर शख़्स एक आयत सुनकर सालेह हो गया

सल्तनत बनू उमैया का एक बाग़ी शख़्स जिसका नाम अली असदी था, उसने लड़ाई की। रास्ते पुरख़तर कर दिए। लोगों को क़त्ल किया, माल लूटा। सालारे लश्कर और रिआया ने हर चन्द उसे गिरफ़्तार करना चाहा लेकिन यह हाथ न लगा। एक मर्तबा यह जंगल में था कि एक शख़्स को क़ुरआन पढ़ते सुना। वह उस वक़्त यह आयत तिलावत कर रहा था :

"मेरी जानिब से कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो जाओ, बिल यक़ीन अल्लाह तआला सारे गुनाह बख़्श देता है। वाक़ई वह बड़ी बख़्शिश, बड़ी रहमतवाला है।"

(सूरह ज़ुमर, आयत 53)

यह उसे सुनकर ठिठ्क गया और उससे कहा, "ऐ ख़ुदा के बन्दे! यह आयत मुझे दोबारा सुना।" उसने फिर पढ़ी। ख़ुदा के इस इरशाद को

सुनकर कि वह फ़रमाता है, "ऐ मेरे गुनाहगार बन्दो! तुम मेरी रहमत से मायूस न हो जाओ, मैं सब गुनाहों के बख़्शने पर क़ादिर हूँ। मैं ग़फ़ूर व रहीम हूँ।" उस शख़्स ने झट से अपनी तलवार को मयान में कर लिया। उसी वक़्त सच्चे दिल से तौबा की और सुबह की नमाज़ से पहले मदीना पहुँच गया। गुस्ल किया और मस्जिदे नबवी में नमाज़े सुबह जमाअत के साथ अदा की और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के पास जो लोग बैठे थे उन्हीं में एक तरफ़ यह भी बैठ गया।

जब चांदना हो गया तो लोगों ने उसे देखकर पहचान लिया कि यह तो सल्तनत का बाग़ी, बहुत बड़ा मुजरिम और मफ़रूर शख़्स अली असदी है। लोग उठ खड़े हुए कि इसे गिरफ़्तार कर लें। उसने कहा, "सुनो भाइयो! तुम मुझे गिरफ़्तार नहीं कर सकते इसलिए कि तुम मुझ पर क़ाबू पाओ उससे पहले ही मैं तौबा कर चुका हूँ, बल्कि तौबा के बाद तुम्हारे पास आ गया हूँ।"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, "यह सच कहता है" वे उसका हाथ पकड़ कर मरवान बिन हकम के पास चले। यह उस वक़्त हज़रत मुआविया रज़ि० की तरफ़ से मदीना के गवर्नर थे। वहाँ पहुँच कर फ़रमाया, यह अली असदी हैं, यह तौबा कर चुके हैं, इसलिए अब तुम इन्हें कुछ कर नहीं सकते।

चुनांचे किसी ने उसके साथ कुछ न किया। जब मुजाहिदीन की एक जमाअत रूमियों से लड़ने के लिए चली तो उन मुजाहिदों के साथ यह भी हो लिए। समुन्द्र में उनकी कश्ती जा रही थी कि सामने से चन्द कश्तियाँ रूमियों की आ गईं। यह अपनी कश्ती में से, रूमियों की गर्दनें मारने के लिए, उनकी कश्ती में कूद गए। उनकी आबदार ख़ार अशगाफ़ तलवार की चमक की ताब रूमी न ला सके और नामर्दी से एक तरफ़ को भागे। यह भी उनके पीछे इसी तरह चले, चूंकि सारा बोझ एक तरफ़ हो गया इसलिए कश्ती पलट गई जिससे वे सारे रूमी हलाक हो गए और हज़रत अली असदी रह० भी डूब कर। शहीद हो गए (ख़ुदा उन पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए)। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 748)

दज्जाल के बारे में आंहज़रत सल्ल० का दर्द भरा बयान

सहीह मुस्लिम में है कि एक दिन सुबह को आंहज़रत सल्ल० ने

दज्जाल का ज़िक्र किया और इस तरह उसे बुलन्द व पस्त किया कि हम समझे कहीं मदीना के नख़लिस्तान में मौजूद न हो। फिर जब हम लौटकर आप सल्ल० की तरफ़ आए तो हमारे चेहरों से आप सल्ल० ने जान लिया और दरयाफ़्त फ़रमाया, क्या बात है? हमने बयान कर दिया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, अगर वह मेरी मौजूदगी में निकला तो मैं ख़ुद उससे समझ लूँगा और अगर वह मेरे बाद आया तो हर मुसलमान उससे आप भुगत लेगा। मैं अपना ख़लीफ़ा हर मुसलमान पर ख़ुदा को बनाता हूँ, वह जवान होगा, आँख उसकी उभरी हुई होंगी। पस यूँ समझ लो कि अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़तन की तरह होगा। तुममें से जो उसे देखे उसको चाहिए कि सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयतें पढ़े। वह शाम व इराक़ के दर्मियानी गोशे से निकलेगा और दाएँ-बाएँ गश्त करेगा। ऐ अल्लाह के बन्दो! ख़ूब साबित क़दम रहना।

हमने पूछा, "हुज़ूर! वह कितनी मुद्दत रहेगा?" आप सल्ल० ने फ़रमाया, "चालीस दिन। एक दिन एक साल के बराबर, एक दिन एक महीने के बराबर, एक दिन एक हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन तुम्हारे मामूली दिनों की तरह।" फिर हमने दरयाफ़्त किया कि जो दिन साल भर के बराबर होगा उसमें एक ही दिन की नमाज़ें काफ़ी होंगी? आप सल्ल० ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि अंदाज़ा कर लो।" हमने पूछा, या रसूलल्लाह! उसकी रफ़्तार की सुरअत कैसी होगी? फ़रमाया, ऐसी जैसे बादल हवाओं से भागते हैं।

एक क़ौम को अपनी तरफ़ बुलाएगा। वह मान लेंगे तो आसमान से उन पर बारिश होगी, ज़मीन से खेती और फल उगेंगे। उनके जानवर तर व ताज़ा और ज़्यादा दूध देनेवाले हो जाएंगे।

एक क़ौम के पास जाएगा जो उसे झुठलाएगी और उसका इंकार करेगी, यह वहाँ से वापस होगा तो उनके हाथ में कुछ न रहेगा।

वह बंजर ज़मीन पर खड़ा होकर हुक्म देगा कि ऐ ज़मीन के ख़ज़ानो! निकल आओ तो वह सब निकल आएँगे और शहद की मक्खियों की तरह उसके पीछे-पीछे फिरेंगे।

यह एक नौजवान को बुलाएगा, उसे क़त्ल करेगा और उसके ठीक दो टुकड़े करके इतनी दूर डाल देगा कि एक तीर की रफ़्तार हो, फिर उसे आवाज़ देगा तो वह ज़िंदा होकर हँसता हुआ उसके पास आ जाएगा।

अब अल्लाह तआला मसीह बिन मरयम अलैहि० को भेजेगा। वह दमिश्क़ के सफ़ेद मशरिक़ी मीनार के पास दो चादरें ओढ़े दो फ़रिश्तों के परों पर बाज़ू रखे हुए उतरेंगे। जब सर झुकाएंगे तो क़तरे टपकेंगे और जब उठाएंगे तो मिस्ल मोतियों के वे क़तरे लुढ़केंगे। जिस काफ़िर तक उनका साँस पहुँच जाएगा, वह मर जाएगा और आप अलैहि० का साँस वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ तक निगाह पहुँचे। आप अलैहि० दज्जाल का पीछा करेंगे और बाबे लुद के पास उसे पाकर क़त्ल कर देंगे।

फिर उन लोगों के पास आएंगे जिन्हें ख़ुदा तआला ने इस फ़ितने से बचाया हुआ होगा। उनके चेहरों पर हाथ फेरेंगे और उनके जन्नती दर्जों की उन्हें ख़बर देंगे।

अब ख़ुदा की तरफ़ से हज़रत ईसा अलैहि० के पास वह्य आएगी कि मैं अपने बन्दों को भेजता हूँ, जिनका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। तो तुम मेरे उन ख़ास बन्दों को तूर की तरफ़ ले जाओ। फिर याजूज व माजूज निकलेंगे और वे हर तरफ़ से कूदते-फाँदते आ जाएँगे। बहीर-ए-तबरिया पर उनका पहला गिरोह आएगा और उसका सारा पानी पी जाएगा। जब उनके बाद ही दूसरा गिरोह आएगा तो वह ऐसा सूखा पड़ा होगा कि वे कहेंगे, शायद यहाँ कभी पानी होगा।

हज़रत ईसा अलैहि० और आपके साथी मोमिन वहाँ (कोहे तूर पर) इस क़दर महसूर रहेंगे कि एक बैल का सर उन्हें उससे भी अच्छा लगेगा जैसे तुम्हें आज एक सौ दीनार महबूब हैं। अब आप अलैहि० और मोमिन ख़ुदा से दुआएं और इल्तिजाएँ करेंगे। अल्लाह तआला उन (याजूज व माजूज) पर गर्दन की गिल्टी की बीमारी भेज देगा, जिसमें सारे के सारे एक साथ एक दम में फ़ना हो जाएंगे। फिर हज़रत ईसा अलैहि० और आपके साथी ज़मीन पर उतरेंगे, मगर ज़मीन पर बालिश्त भर जगह भी ऐसी न पाएंगे जो उनकी लाशों और बदबू से ख़ाली हो। फिर आप अल्लाह तआला से दुआएँ और इल्तिजाएँ करेंगे तो बख़्ती ऊँटों की गर्दनों के बराबर एक क़िस्म के परिन्दे अल्लाह तआला भेजेगा जो उनकी लाशों को जहाँ ख़ुदा चाहे डाल आएंगे। फिर बारिश होगी जिससे तमाम ज़मीन धुल-धुलाकर आइना की तरह साफ़ हो जाएगी, फिर ज़मीन को हुक्म होगा कि अपने ख़ज़ाने निकाल और अपनी बरकतें लौटा। उस दिन एक अनार एक जमाअत को काफ़ी होगा और वे सब उसके छिलके तले

आराम हासिल कर सकेंगे। एक ऊँटनी का दूध एक पूरे क़बीले से नहीं पिया जाएगा। फिर परवरदिगारे आलम एक लतीफ़ और पाकीज़ा हवा चलाएगा जो तमाम ईमानदारों, मर्द-औरतों के बग़ल तले से निकल जाएगी और साथ ही उनकी रूह भी परवाज़ कर जाएगी और बदतरीन लोग बाक़ी रह जाएंगे जो आपस में गधों की तरह धींगा मश्ती में मशग़ूल हो जाएंगे, उन पर क़ियामत क़ायम होगी। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 672-673)

दज्जाल के फ़ितने और क़ियामत की निशानियाँ

मुहद्दिसीन ने लिखा है कि दर्ज ज़ैल हदीस अपने बच्चों को सिखाइए बल्कि लिखवाइए ताकि उन्हें भी याद रहे।

इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने एक ख़ुत्बे का कम व बेश हिस्सा दज्जाल का वाक़िआ बयान करने, उससे डराने में ही सर्फ़ किया। जिसमें यह भी फ़रमाया कि दुनिया की इब्तिदा से लेकर इंतिहा तक कोई फ़ितना उससे बड़ा नहीं। तमाम अंबिया अलैहि० अपनी-अपनी उम्मतों को उससे आगाह करते रहे हैं। मैं सबसे आख़िरी नबी हूँ और तुम सबसे आख़िरी उम्मत हो, वह यक़ीनन तुम्हीं में आएगा। अगर मेरी मौजूदगी में आ गया तब तो मैं उससे निमट लूँगा और अगर बाद में आया तो हर शख़्स को अपना आपा उससे बचाना पड़ेगा। मैं अल्लाह तआला को हर मुसलमान का ख़लीफ़ा बनाता हूँ।

वह शाम व इराक़ के दर्मियान निकलेगा, दाएँ-बाएँ ख़ूब घूमेगा। लोगो! ऐ अल्लाह तआला के बन्दो! देखो! देखो! तुम साबित क़दम रहना। सुनो! मैं तुम्हें उसकी ऐसी सिफ़त सुनाता हूँ जो किसी नबी ने अपनी उम्मत को नहीं सुनाई।

वह इब्तिदाअन दावा करेगा कि मैं नबी हूँ, पस तुम याद रखना कि मेरे बाद कोई नबी नहीं। फिर वह उससे भी बढ़ जाएगा और कहेगा मैं ख़ुदा हूँ, पस तुम याद रखना कि ख़ुदा को इन आँखों से कोई नहीं देख सकता; हाँ, मरने के बाद दीदारे बारी तआला हो सकता है। और सुनो! वह काना होगा और तुम्हारा रब काना नहीं, उसकी दोनों आँखों के दर्मियान काफ़िर लिखा हुआ होगा। जिसे पढ़ा-लिखा और अनपढ़ ग़र्ज़ हर ईमानदार पढ़ लेगा।

उसके साथ आग होगी और बाग़ होगा। उसकी आग दरअस्ल जन्नत है और उसका बाग़ दरअस्ल जहन्नम है। सुनो! तुममें से जिसे वह आग में डाले, वह अल्लाह तआला से फ़रियादरसी चाहे और सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़े, उसकी वह आग उस पर ठंडी और सलामती बन जाएगी, जैसे कि ख़लीलुल्लाह अलैहि० पर नमरूद की आग हो गई थी।

उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह एक आराबी से कहेगा अगर मैं तेरे मरे हुए माँ-बाप को ज़िंदा कर दूँ, फिर तो तू मुझे रब मान लेगा। वह इक़रार करेगा। इतने में दो शैतान उसकी माँ और बाप की शक्ल में ज़ाहिर होंगे और उसे कहेंगे, "बेटे! यही तेरा रब है, तू इसे मान ले।"

उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह एक शख़्स पर मुसल्लत कर दिया जाएगा। उसे आरे से चिरवा कर दो टुकड़े करवा देगा। फिर लोगों से कहेगा कि मेरे इस बन्दे को देखना, अब मैं इसे ज़िंदा कर दूँगा। लेकिन फिर भी यह यही कहेगा-- "इसका रब मेरे सिवा और है" चुनांचे यह उसे उठाए बिठाएगा और यह ख़बीस उससे पूछेगा कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देगा मेरा रब अल्लाह तआला है और तू ख़ुदा का दुश्मन दज्जाल है। ख़ुदा की क़सम! अब तो मुझे पहले से भी बहुत ज़्यादा यक़ीन हो गया। दूसरी सनद से मरवी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : यह मोमिन मेरी तमाम उम्मत से ज़्यादा बुलन्द दर्जे का उम्मती होगा।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस हदीस को सुनकर हमारा ख़्याल था कि यह शख़्स हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ही होंगे। आप रज़ि० की शहादत तक हमारा यही ख़्याल रहा।

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं, "उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह आसमान को पानी बरसाने का हुक्म देगा और आसमान से बारिश होगी। वह ज़मीन को पैदावार उगाने का हुक्म देगा और ज़मीन से पैदावार होगी। उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह एक क़बीले के पास जाएगा और वह उसे न मानेंगे, उसी वक़्त उनकी तमाम चीज़ें बर्बाद और हलाक हो जाएँगी। दूसरे क़बीले के पास जाएगा जो उसे ख़ुदा मान लेगा। उसी वक़्त उसके हुक्म से उन पर आसमान से बारिश बरसेगी और ज़मीन फल और खेती उगाएगी, उनके जानवर पहले से ज़्यादा मोटे-ताज़े और दूधवाले हो जाएंगे।

सिवाय मक्का और मदीना के तमाम ज़मीन (मुमालिक) का दौरा करेगा। जब मदीना का रुख़ करेगा तो यहाँ हर-हर राह पर फ़रिश्तों को खुली तलवारें लिए हुए पाएगा तो सबख़ा की इंतिहाई हद पर *ज़रीब अहमर* के पास ठहर जाएगा। फिर मदीना में तीन भूंचाल आएंगे, इस वजह से जितने मुनाफ़िक़ मर्द और जिस क़दर मुनाफ़िक़ा औरतें होंगी वे सब मदीना से निकल कर उसके लश्कर में मिल जाएंगे और मदीना उन गन्दे लोगों को इस तरह अपने में से दूर फेंक देगा जिस तरह भट्टी लोहे के मैल-कुचेल को अलग कर देती है। उस दिन का नाम यौमिलू-ख़लास होगा।

उम्मे शुरैक रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! उस दिन अरब कहाँ होंगे? फ़रमाया : अव्वल तो होंगे ही बहुत कम और अकसरियत उनकी बैतुल मुक़द्दस में होगी। उनका इमाम एक सालेह शख़्स होगा जो आगे बढ़कर सुबह की नमाज़ पढ़ा रहा होगा। जब हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहि० नाज़िल होंगे, यह इमाम पिछले पैरों पीछे हटेगा। ताकि आप अलैहि० आगे बढ़कर इमामत कराएँ। लेकिन आप अलैहि० उसकी कमर पर हाथ रखकर फ़रमाएंगे कि आगे बढ़ो और नमाज़ पढ़ाओ! इक़ामत तुम्हारे लिए कही गई है। पस उनका इमाम ही नमाज़ पढ़ाएगा।

नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप अलैहि० फ़रमाएंगे, दरवाज़ा खोल दो। पस खोल दिया जाएगा। उधर दज्जाल सत्तर हज़ार यहूदियों का लश्कर लिए हुए मौजूद होगा। जिनके सिर पर ताज और जिनकी तलवारों पर सोना होगा। दज्जाल आप अलैहि० को देखकर इस तरह घुलने लगेगा जिस तरह नमक पानी में घुलता है और एक दम पीठ फेरकर भागना शुरू कर देगा। लेकिन आप अलैहि० फ़रमाएंगे, ख़ुदा ने मुक़र्रर कर दिया कि तू मेरे हाथ से एक ज़र्ब खाएगा। तू उसे टाल नहीं सकता। चुनांचे आप अलैहि० उसे बाबे लुद्द के पास पकड़ लेंगे और वहीं उसे क़त्ल कर देंगे। अब यहूदी बदहवासी से मुंतशिर होकर भागेंगे। लेकिन उन्हें कहीं सर छुपाने को जगह न मिलेगी। हर पत्थर, हर दरख़्त, हर दीवार और हर जानवर बोलता होगा कि मुसलमानो! यहाँ यहूदी है, आकर इसे मार डाल। हाँ, बबूल का दरख़्त यहूदियों का दरख़्त है, यह नहीं बोलेगा।

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि फिर ईसा इब्ने मरयम अलैहि० मेरी

उम्मत में हाकिम होंगे, आदिल होंगे, इमाम होंगे, बाइंसाफ़ होंगे, सलीब को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, जिज़ये को हटा देंगे, हसद और बुग़्ज़ बिल्कुल जाता रहेगा। हर ज़हरीले जानवर का ज़हर हटा दिया जाएगा। बच्चे अपनी उँगली साँप के मुँह में डालेंगे, लेकिन वह उन्हें कोई ज़रर न पहुंचाएगा। शेरों से लड़के खेलेंगे, नुक़्सान कुछ न होगा। भेड़िये बकरियों के गल्ले (रेवड़) में इस तरह फिरेंगे जैसे रखवाला कुत्ता हो। तमाम ज़मीन इस्लाम और इस्लाह से इस तरह भर जाएगी जैसे कोई बर्तन पानी से लबालब भरा हुआ हो। सबका कलिमा एक हो जाएगा। अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न होगी। लड़ाई और जंग बिल्कुल मौक़ूफ़ हो जाएगी। ज़मीन मिस्ल सफ़ेद चांदी के मुनव्वर हो जाएगी। एक जमाअत को एक अंगूर का ख़ोशा पेट भरने के लिए काफ़ी होगा। एक अनार इतना बड़ा होगा कि एक जमाअत खाए और सैर हो जाए। बेल इतनी इतनी क़ीमत पर मिलेगा और घोड़ा चन्द दिरहमों पर मिलेगा। लोगों ने पूछा कि उसकी क़ीमत गिर जाने की क्या वजह होगी? फ़रमाया, इसलिए कि लड़ाइयों में उसकी सवारी बिल्कुल न ली जाएगी। दरयाफ़्त किया गया कि बैल की क़ीमत बढ़ जाने की क्या वजह है? फ़रमाया, इसलिए कि तमाम ज़मीन में खेतियाँ होनी शुरू हो जाएँगी।

दज्जाल के ज़हूर से तीन साल पेशतर से सख़्त क़हतसाली होगी। पहले साल बारिश का तीसरा हिस्सा बहुक्मे ख़ुदा रोक लिया जाएगा और ज़मीन की पैदावार का भी तीसरा हिस्सा कम हो जाएगा। फिर दूसरे साल ख़ुदा आसमान को हुक्म देगा कि बारिश की दो तिहाइयाँ रोक ले और यही हुक्म ज़मीन को होगा कि अपनी पैदावार दो तिहाई कम कर दे। तीसरे साल आसमान से बारिश का एक क़तरा न बरसेगा, न ज़मीन से कोई रूवेदगी पैदा होगी। तमाम जानवर उस क़हत से हलाक हो जाएंगे, मगर जिसे ख़ुदा चाहे। आप सल्ल० से पूछा गया कि फिर उस वक़्त लोग ज़िंदा कैसे रह जाएंगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया : उनकी ग़िज़ा के क़ायम मक़ाम उस वक़्त उनका 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहना और 'अल्लाहु अकबर' कहना और 'सुब्हानल्लाह' कहना और 'अलहम्दुलिल्लाह' कहना होगा।

इमाम इब्ने माजा रह० फ़रमाते हैं कि मेरे उस्ताद ने अपने उस्ताद से सुना, वह फ़रमाते थे, यह हदीस इस क़ाबिल है कि बच्चों के उस्ताद इसे

बच्चों को भी सिखा दें बल्कि लिखवाएँ ताकि उन्हें भी याद रहे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 670-672)

क़ियामत के दिन मुतकब्बिर लोग चींटियों की शक्ल में जमा किए जाएँगे

मुस्नद अहमद में है कि क़ियामत के दिन मुतकब्बिर लोग चींटियों की शक्ल में जमा किए जाएँगे। छोटी-से-छोटी चीज़ भी उनके ऊपर होगी, उन्हें जहन्नम के जेलख़ाने में डाला जाएगा और भड़कती हुई सख़्त आग उनके सरों पर शोले मारेगी, उन्हें जहन्नमियों का लहू, पीप और पाख़ाना-पेशाब पिलाया जाएगा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, सफ़ा 474)

बादलों से आवाज़ आई, चलो मदीने! उमर ने बुलाया है

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब ने पाकिस्तान में तक़रीर करते हुए इरशाद फ़रमाया कि हज़रत उमर रज़ि० के दौरे ख़िलाफ़त (सन् 18 हि०) में पूरे जज़ीर-ए-अरब में ऐसा क़हत पड़ा कि खाने-पीने की चीज़ें भी किसी क़ीमत पर नहीं मिलीं। फ़ाक़ों की शिद्दत की वजह से लोग इंतिक़ाल कर रहे थे। उसी दौरान हज़रत उमर रज़ि० को यह इत्तिला मिली कि मिस्र के अंदर बेशुमार पैदावार है। मिस्र पहले ही फ़तह हो चुका था और हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ि० वहाँ के गवर्नर थे। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको ख़त लिखा कि :

"यहाँ हिजाज़ में बिल्कुल ग़ल्ला नहीं है, और मुझे मालूम हुआ है कि मिस्र में बहुत ग़ल्ला है, लिहाज़ा यहाँ वालों के लिए वहाँ से ग़ल्ला भेजो।"

गवर्नर साहब ने जवाब तहरीर फ़रमाया :

"आप मुत्मइन रहें, मैं इतना बड़ा क़ाफ़िला ग़ल्ले से लदवा कर भेजूँगा कि उसका पहला ऊँट मदीना में उतर रहा होगा और आख़िरी ऊँट मिस्र में लद रहा होगा।"

मिस्र और हिजाज़ का एक महीना का रास्ता है। जो उस ज़माने में ऊँटों के ज़रिए तय किया जाता था। यह सारा रास्ता ग़ल्ले के ऊँटों से भर दूँगा। चुनांचे ग़ल्ला आया और उतना ही आया और मदीना पाक में और इतराफ़ में मुनादी करवा दी गई कि जिसका जी चाहे हज़रत उमर रज़ि० के दस्तरख़्वान पर खाना खाए और जिसका जी चाहे अपना राशन अपने घर ले जाए। चुनांचे हज़ार-हा-हज़ार लोगों ने वहीं दस्तरख़्वान पर खाना खाया और बहुत-से अपने घर ले गए।

एक सहाबी जो जंगल में अपने ठठान (ठिकाने) पर रहते थे, उन्होंने भी आने जानेवालों से सुना कि मदीना पाक में ग़ल्ला आ गया है और तक़्सीम हो रहा है। उनके पास एक बकरी थी, उन्होंने सोचा कि मैं चला जाऊँगा और अकेली बकरी को कोई जानवर वग़ैरह खा जाएगा। लाओ बकरी को ज़िब्ह कर लूँ और खा लूँ कि चलने की कुछ ताक़त आ जाएगी। चुनांचे बकरी को ज़िब्ह किया तो एक क़तरा भी ख़ून न निकला। यह मंज़र देखकर वह सहाबी रो पड़े और सर पकड़ कर बैठ गए कि हमारा भी बुरा हाल है, और तो और हमारे जानवरों का भी ख़ून ख़ुश्क हो गया (बकरी में ख़ून जब होता जब चारा खाती, पानी पीती, जब न चारा खाया न पानी पिया, तो न ख़ून रहा, न निकला) वह सहाबी सर पकड़ कर रोने लगे और रोते-रोते गिर गए और गिरकर नींद आ गई। नींद में उन्होंने देखा कि रसूले पाक सल्ल० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि : उमर रज़ि० के पास जाओ और मेरी तरफ़ से सलाम कह दो और कह दो कि तू तो बड़ा अक़्लमंद था; तेरी अक़्ल को क्या हुआ? यह सहाबी उठे और गिरते-पड़ते मदीना पहुँचे और हज़रत उमर रज़ि० के दरवाज़े पर दस्तक दी और कहा, "रसूलुल्लाह सल्ल० का क़ासिद इजाज़त तलब करता है।"

हज़रत उमर रज़ि० नंगे पैर मकान के बाहर तक आए। पूछा कि क्या बात है? उन्होंने ख़्वाब का पूरा क़िस्सा बयान किया। हज़रत उमर रज़ि० सुनकर लरज़ गए और कहने लगे कि मुझसे कोई ग़लती हुई? उसी वक़्त मदीना पाक में जो अहलुर्राय थे उनको जमा किया और इरशाद फ़रमाया कि भाई! बार-बार मैं ने तुम लोगों से कहा कि अगर मुझसे कोई चूक हो जाए तो मुझे मुतनब्बे कर दिया जाए। मगर तुम लोगों ने मुझे मुतनब्बे नहीं किया। मेरे आक़ा जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे

यह पैग़ाम भेजा है। बताओ! मुझसे क्या ग़लती हुई? सहाबा ने कहा कि हमारी समझ में तो कोई ग़लती नहीं आती। एक सहाबी खड़े हुए और उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरी समझ में एक बात आई है कि आपके मुल्क में क़हत पड़ रहा था और ग़ल्ला नहीं था और लोग भूख की वजह से मर रहे थे, मगर बजाए इसके कि आप अल्लाह तआला से माँगते, आपने अपने गवर्नर और अपने ही जैसे इंसान से दरख़्वास्त की। यह है वह ग़लती। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया : वाक़ई यही ग़लती है। फिर सबने कहा कि वाक़ई यही ग़लती है। हज़रत उमर रज़ि० ने उसी वक़्त दुआ माँगी और अपनी ख़ता की माफ़ी चाही, दुआ करना था कि आसमान के बादलों में खलबली मच गई और दौड़ लग गई और हर बादल एक-दूसरे से आगे बढ़ रहा था और यह कह रहा था :

चलो मदीने उमर रज़ि० ने बुलाया है!

चलो मदीने उमर रज़ि० ने बुलाया है!

(तारीख़े कामिल, जिल्द 2, सफ़ा 235, आख़िरत की याद मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़दस मौलाना इफ़्तिख़ारुल हसन कांधलवी, सफ़ा : 60)

नेक और दीनदार की मौत पर धूमधाम
आशिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले

इस मज़्मून को ज़रा ग़ौर से पढ़ें।

अल्लाह तबारक व तआला मलकुल मौत से फ़रमाता है कि तू मेरे दोस्त के पास जा, मैंने उसे आसमानी सख़्ती से हर तरह आज़मा लिया है, हर एक हालत में उसे अपनी ख़ुशी में ख़ुश पाया, तू जा और उसे मेरे पास ले आ कि मैं उसे हर तरह का आराम व ऐश दूँ। मलकुल मौत अपने साथ पाँच सौ फ़रिश्तों को लेकर चलते हैं। उनके पास जन्नती कफ़न, वहाँ की ख़ुश्बू और रैहान के ख़ोशे होते हैं जिसके सिरे पर बीस रंग होते हैं, हर रंग की ख़ुश्बू अलग-अलग होती है। सफ़ेद रेशमी कपड़े में आला मुश्क बतकल्लुफ़ लिपटी हुई होती है। ये सब आते हैं। मलकुल मौत अलैहि० तो उसके सरहाने बैठ जाते हैं और फ़रिश्ते उसके चारों तरफ़ बैठ जाते हैं। हर एक के साथ जो कुछ जन्नती तोहफ़ा है, वह उसके आज़ा पर रख दिया जाता है और सफ़ेद रेशम और मुश्क उसकी

थोढ़ी तले रख दिया जाता है। उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उसकी रूह कभी जन्नती फूलों से, कभी जन्नती लिबासों से, कभी जन्नती फलों से इस तरह बहलाई जाती है जैसे रोते हुए बच्चे को लोग बहलाते हैं। उस वक़्त उसकी हूरें हँस-हँसकर उसकी चाहत करती हैं। रूह उन मनाज़िर को देखकर बहुत जल्द जिस्मानी क़ैद से निकल जाने का क़स्द करती है।

मलकुल मौत फ़रमाते हैं, हाँ ऐ पाक रूह! बग़ैर कांटे की बेरियों की तरफ़ और लदे हुए केलों की तरफ़ और लम्बे-लम्बे छाओं की तरफ़ और पानी के झरनों की तरफ़ चल। वल्लाह, माँ जिस क़दर बच्चे पर मेहरबान होती है उससे भी ज़्यादा मलकुल मौत उस पर शफ़क़त व रहमत करता है इसलिए कि उसे इल्म है कि यह महबूबे ख़ुदा है, अगर इसे ज़रा सी भी तकलीफ़ पहुंची तो मेरे रब की नाराज़गी मुझ पर होगी। बस इस तरह उस रूह को उस जिस्म से अलग कर लेता है जैस गुंदे हुए आटे में से बाल।

मलकुल मौत के रूह को क़ब्ज़ करते ही रूह जिस्म से कहती है कि अल्लाह तआला तुझे जज़ाए ख़ैर दे। तू ख़ुदा की इताअत की तरफ़ जल्दी करनेवाला और ख़ुदा की मासियत से देर करनेवाला था। तूने आप भी नजात पाई और मुझे भी नजात दिलवाई। जिस्म भी रूह को ऐसा ही जवाब देता है। ज़मीन के वे तमाम हिस्से जिन पर यह इबादते ख़ुदा करता था, उसके मरने से चालीस दिन तक रोते हैं। इसी तरह आसमान के वे कुल दरवाज़े जिनसे उसके नेक आमाल चढ़ते थे और जिनसे उसकी रोज़ियाँ उतरती थीं, उस पर रोते हैं।

उसी वक़्त वह पाँच सौ फ़रिश्ते उस जिस्म के इर्द-गिर्द खड़े हो जाते हैं और उसके नहलाने में शामिल रहते हैं। इंसान उसकी करवट बदले, इससे पहले ख़ुद फ़रिश्ते बदल देते हैं और उसे नहला कर इंसानी कफ़न से पहले अपने साथ लाया हुआ कफ़न पहना देते हैं और उनकी ख़ुश्बू से पहले अपनी ख़ुश्बू लगा देते हैं और उसके घर के दरवाज़े से लेकर उसकी क़ब्र तक दो रुख़ सफ़ें बाँधकर खड़े हो जाते हैं और उसके लिए इस्तिग़फ़ार करने लगते हैं। उस वक़्त शैतान इस ज़ोर से रंज के साथ चींखता है कि उसके जिस्म की हड्डियाँ टूट जाएँ और कहता है कि मेरे लश्करो! तुम बर्बाद हो जाओ। हाय, यह तुम्हारे हाथों से कैसे बच गया?

वे जवाब देते हैं कि यह तो मासूम था।

जब उसकी रूह को लेकर मलकुल मौत चढ़ते हैं तो हज़रत जिब्रील अलैहि० सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को लेकर उसका इस्तिक़बाल करते हैं। हर एक उसे जुदागाना बशारते ख़ुदावंदी सुनाता है। यहाँ तक कि उसकी रूह अर्शे ख़ुदा के पास पहुँचती है। वहाँ जाते ही सज्दे में गिर पड़ती है। उसी वक़्त जनाबे बारी तआला का इरशाद होता है कि मेरे बन्दे की रूह को बग़ैर कांटों की बेरियों में और तह-ब-तह केलों के दरख़्तों में और लम्बे सायों में और बहते पानियों में जगह दो।

फिर जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो दाएँ तरफ़ नमाज़ खड़ी हो जाती है, बाएँ जानिब रोज़ा खड़ा हो जाता है, सर की तरफ़ क़ुरआन आ जाता है, नमाज़ों को चलकर जाना पैरों की तरफ़ होता है। एक किनारे सब्र खड़ा हो जाता है। अज़ाब की एक गर्दन लपकती आती है लेकिन दाएँ जानिब से नमाज़ उसे रोक देती है कि यह हमेशा चौकन्ना रहा, अब इस क़ब्र में आकर ज़रा राहत पाई। वह बाएँ तरफ़ से आती है, यहाँ से रोज़ा यही कहकर उसे आने नहीं देता। सरहाने से आती है, यहाँ से क़ुरआन और ज़िक्र यही कहकर आड़े आते हैं। वह पैरों की तरफ़ से आती है, यहाँ से उसका नमाज़ों के लिए चलकर जाना उसे रोक देता है। ग़र्ज़ चौरों तरफ़ से ख़ुदा के महबूब के लिए रोक हो जाती है और अज़ाब को कहीं से राह नहीं मिलती, वह वापस चला जाता है।

उस वक़्त सब्र कहता है कि मैं देख रहा था कि अगर तुमसे ही यह अज़ाब दफ़ा हो जाए तो मुझे बोलने की क्या ज़रूरत? वरना मैं भी इसकी हिमायत करता, अब मैं पुलसिरात पर और मीज़ान के वक़्त इसके काम आऊँगा।

अब दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं। एक को नकीर कहा जाता है, दूसरे को मुंकर। यह उचक ले जाने वाली बिजली जैसे होते हैं। उनके दाँत स्याह जैसे होते हैं। साँस से शोले निकलते हैं। उनके बाल पैरों तले लटके होते हैं। उनके दोनों कंधों के दर्मियान इतनी-इतनी मुसाफ़त होती है। उनके दिल नर्मी और रहमत से बिल्कुल ख़ाली होते हैं। उनमें से हर एक के हाथ में हथौड़े होते हैं कि अगर क़बीला रबीआ और क़बीला मज़र जमा होकर उसे उठाना चाहें तो नामुमकिन है। वह आते ही उसे कहते हैं, उठ बैठ। यह उठकर सीधी तरह बैठ जाता है। उसका कफ़न उसके पहलू

पर आ जाता है। वह उससे पूछते हैं! तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? तेरा नबी कौन है?

सहाबा रज़ि० से रहा न गया, उन्होंने कहा, "या रसूलल्लाह! ऐसे डरावने फ़रिश्तों को कौन जवाब देगा? आप सल्ल० ने इसी आयत *"युसब्बितुल्लाहु"* की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि वह बेझिझक जवाब देता है कि मेरा रब *अल्लाह वहदहू ला शरी-क-लहू है।* और मेरा दीन इस्लाम है। जो फ़रिश्तों का भी दीन है और मेरे नबी मुहम्मद सल्ल० हैं जो *ख़ातिमुन्नबिय्यीन* थे।

वे कहते हैं, आपने सही जवाब दिया। अब तो वह उसके लिए उसकी क़ब्र को उसके दाएँ से उसके बाएँ से, उसके आगे से, उसके पीछे से, उसके सर की तरफ़ से, उसके पाँव की तरफ़ से, चालीस-चालीस हाथ कुशादा कर देते हैं। वे दो सौ हाथ की वुसअत कर देते हैं और चालीस हाथ का अहाता कर देते हैं और उससे फ़रमाते हैं, अपनी नज़रें ऊपर उठा। यह देखता है कि जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ है। वह कहते हैं "ऐ ख़ुदा के दोस्त! चूंकि तूने ख़ुदा की बात मान ली है, तेरी मंज़िल यह है।"

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद सल्ल० की जान है! उस वक़्त जो सुरूर व राहत उसके दिल को होती है वह लाज़वाल होती है। फिर उससे कहा जाता है, अब अपने नीचे देख। यह देखता है कि जहन्नम का दरवाज़ा खुला हुआ है। फ़रिश्ते कहते हैं कि देख इससे ख़ुदा ने तुझे हमेशा के लिए नजात बख़्शी। फिर तो उसका दिल इतना ख़ुश होता है कि यह ख़ुशी अबदल-आबाद तक हटती नहीं।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि उसके लिए सत्तर दरवाज़े जन्नत के खुल जाते हैं, जहाँ से बादे सबा की लपटें ख़ुश्बू और ठंडक के साथ आती रहती हैं; यहाँ तक कि अल्लाह उसकी उस ख़्वाबगाह से क़ियामत के क़ायम हो जाने पर उठाए।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, सफ़ा 72-74)

मय्यत पर आँसू बहाना जाइज़ है, मगर मय्यत पर नौहा और मातम नहीं करना चाहिए

ज़मानए जाहिलियत में यह दस्तूर था कि जब कोई बड़ा आदमी मर जाता था तो वह वसीयत करके जाता कि छः महीने तक या साल या दो साल तक मुझे रोया जाए। अब ज़ाहिर बात है कि इतने दिनों तक आँखों में कोई आँसू लेकर बैठ जाए तो यह हो नहीं सकता और न रोए तो लोग कहेंगे, भई कोई बड़ा आदमी नहीं था, मामूली था, मर गया। लिहाज़ा छः महीने रोओ ताकि मालूम हो कि बड़ा आदमी गुज़रा है। मगर अब छः महीने तक रोए कौन? तो रोने वालियाँ किराए पर ली जाती थीं कि वे छः महीने तक बैठ कर रोएँ। और वे औरतें ही रखी जाती थीं; इसलिए कि आँसू बहाना उन्हें आसानी से आता है, बस इरादा किया और टप-टप आँसू टपकने शुरू हो गए तो रोने और रुलाने के लिए औरतों से बेहतर दूसरा किरायदार नहीं मिल सकता था। इसलिए औरतों को किराए पर रखते थे। उजरत भी दी जाती और खाना-कपड़ा भी।

और उनका तरीक़ा क्या था? घर में बैठी हुई हैं। खा-पी रही हैं उन्होंने देखा कि कोई ताज़ियत के लिए आया, बस वह फ़ौरन घेरा बनाकर बैठ गई और उन्होंने ''राँ राँ'' करके रोना शुरू कर दिया कि :''व कज़ा!!! व जबाल-ह!! व शम्सा-ह'' "तू तो पहाड़ था, तू तो आफ़ताब था, चाँद था, वग़ैरह।"

हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि० मरीज़ हुए तो रसूले अकरम सल्ल०, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़्क़ास और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० को साथ लिए हुए उनकी अयादत के लिए आए। आप सल्ल० जब अंदर तशरीफ़ लाए तो उनको ग़ाशिया में यानी बड़ी सख़्त हालत में पाया। या आप सल्ल० ने उनको इस हालत में देखा कि उनके गिर्द आदमियों की भीड़ लगी हुई थी तो आप सल्ल० ने फ़रमाया : ''ख़त्म हो चुके'' (बतौर मायूसी या हाज़िरीन से इस्तिफ़सार के तौर पर आप सल्ल० ने यह बात फ़रमाई) तो लोगों ने अर्ज़ किया, ''नहीं हज़रत! अभी ख़त्म नहीं हुए।'' तो रसूलुल्लाह सल्ल० को उनकी हालत देखकर रोना आ गया। जब और लोगों ने आप सल्ल० पर गिरया के आसार देखे तो वे भी रोने लगे। आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया, ''लोगो! अच्छी

तरह सुन लो और समझ लो कि अल्लाह तआला आँख के आँसू और दिल के ग़म पर तो सज़ा नहीं देता, क्योंकि उस पर बन्दे का इख़्तियार और क़ाबू नहीं है।'' फिर ज़बान की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, ''लेकिन इसकी ग़लती पर यानी ज़बान से नौहा व मातम करने पर सज़ा भी देता है और पढ़ने पर और दुआ व इस्तिग़फ़ार करने पर रहमत भी फ़रमाता है।'' (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि उनके शौहर अबू सलमा रज़ि० की वफ़ात के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ लाए। उनकी आंखें खुली रह गई थीं। आप सल्ल० ने उनको बन्द किया और फ़रमाया, ''जब रूह जिस्म से निकाली जाती है तो बीनाई भी उसके साथ चली जाती है, इसलिए मौत के बाद आँखों को बन्द कर देना चाहिए।'' आप सल्ल० की यह बात सुनकर उनके घर के लोग चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगे और इस रंज व सदमे की हालत में उनकी ज़बान से ऐसी बातें निकलने लगीं जो ख़ुद उन लोगों के हक़ में बद्दुआ थीं। तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, ''लोगो! अपने हक़ में ख़ैर और भलाई की दुआ करो, इसलिए कि तुम जो कुछ कह रहे हो मलाइका उस पर आमीन कहते हैं।'' फिर आप सल्ल० ने ख़ुद इस तरह दुआ फ़रमाई :

> ''ऐ अल्लाह! अबू सलमा रज़ि० की मग़फ़िरत फ़रमा और अपने हिदायतयाब बन्दों में उनका दर्जा बुलन्द फ़रमा और उसके बजाए तू ही सरपरस्ती और निगरानी फ़रमा उसके पसमाँदगान की, और रब्बुल आलमीन! बख़्श दे हमको और इसको और इसकी क़ब्र को वसीअ और मुनव्वर फ़रमा''

(सही मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

आप सल्ल० ने अपनी उम्मत के लिए जुमला इस्तरजाअ *''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''* और अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहना मसनून क़रार दिया और ये बातें गिरय-ए-चश्म और ग़म दिल के मनाफ़ी नहीं। यही वजह है कि आप सल्ल० तमाम मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा राज़ी ब-क़ज़ाए इलाही और सबसे ज़्यादा हम्द करने वाले थे और इसके बावजूद अपने साहबज़ादे इबराहीम रज़ि० पर वफ़ूरे मुहब्बत व शफ़क़त से रिक़्क़त के बाइस रो दिए और आप सल्ल० का क़ल्ब अल्लाह तबारक व तआला की रिज़ा व शुक्र से भरपूर और ज़बान से उसके ज़िक्र व हम्द में मशग़ूल थी। (ज़ादुल मआद)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० की मईयत में अबू सैफ़ आहंगर के घर गए। यह अबू सैफ़ रसूलुल्लाह सल्ल० के फ़रज़न्द इबराहीम की दाया ख़ौला बिन्ते मुंज़िर के शौहर थे और इबराहीम रज़ि० उस वक़्त के रिवाज के मुताबिक़ अपनी दाया के घर ही रहते थे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने साहबज़ादे को उठा लिया, चूमा और उनके रुख़्सार पर नाक रखी, जैसा कि बच्चों को प्यार करते वक़्त किया जाता है।

उसके बाद एक दफ़ा फिर आपके साहबज़ादे इबराहीम रज़ि० की आख़िरी बीमारी में हम वहाँ गए। उस वक़्त इबराहीम जान दे रहे थे। नज़अ के आलम में थे। उनकी उस हालत को देखकर रसूलुल्लाह सल्ल० की आँखों से आँसू बहने लगे। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने (जो नावाक़फ़ियत की वजह से समझते थे कि रसूलुल्लाह सल्ल० इस क़िस्म की चीज़ों से मुतास्सिर नहीं हो सकते) ताज्जुब से कहा, "या रसूलल्लाह! आपकी भी यह हालत?" आप सल्ल० ने फ़रमाया, "ऐ इब्ने औफ़! यह कोई बुरी बात और बुरी हालत नहीं, बल्कि यह शफ़क़त और दर्दमंदी है।" फिर दोबारा आप सल्ल० की आँखों में आँसू बहे तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, "आँख आँसू बहाती है और दिल मग़मूम है और ज़बान से हम वही कहेंगे जो अल्लाह को पसन्द है यानी, 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' और ऐ इबराहीम! तुम्हारी जुदाई का हमें सदमा है।" (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस, उसव-ए-रसूले अकरम सल्ल०, सफ़ा : 557-559)

अल्लाह तआला की शानदार तारीफ़ पर मुश्तमिल एक देहाती की दुआ और आंहज़रत सल्ल० का क़ीमती हदिया

हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० एक देहाती के पास से गुज़रे, वह अपनी नमाज़ में दुआ माँग रहा था और कह रहा था :

1. ऐ वह ज़ात जिसको आँखें देख नहीं सकतीं!
2. ऐ वह ज़ात कि किसी का ख़्याल व गुमान उस तक नहीं पहुँच सकता!

3. ऐ वह ज़ात कि औसाफ़ बयान करनेवाले उसके औसाफ़ बयान नहीं कर सकते!
4. ऐ वह ज़ात कि हवादिसे ज़माना उस पर असरअंदाज़ नहीं हो सकते!
5. ऐ वह ज़ात कि उसे गर्दिशे ज़माना से कोई अंदेशा नहीं!
6. ऐ वह ज़ात जो पहाड़ों के वज़नों को जानती है!
7. ऐ वह ज़ात जो समुन्द्रों के पैमानों को जानती है!
8. ऐ वह ज़ात जो बारिश के क़तरों की तादाद को जानती है!
9. ऐ वह ज़ात जो दरख़्तों के पत्तों की तादाद को जानती है!
10. ऐ वह ज़ात जो उन तमाम चीज़ों को जानती है जिन पर रात की तारीकी छाती है और जिनको दिन रौशन करता है!
11. ऐ वह ज़ात जिसको आसमान दूसरे आसमान से छुपा नहीं सकता!
12. ऐ वह ज़ात जिसको ज़मीन दूसरी ज़मीन से छुपा नहीं सकती!
13. ऐ वह ज़ात कि समुन्द्र के पेट में क्या है वह भी तुझे मालूम है!
14. ऐ वह ज़ात कि चट्टानों में क्या छुपा है वह भी तू जानता है!

तू मेरी उम्र के आख़िरी हिस्से को सबसे बेहतर बना दे।

और मेरे आख़िरी अमल को सबसे बेहतर अमल बना दे।

और मेरा बेहतरीन दिन वह बना जिस दिन मेरी तुझसे मुलाक़ात हो।

आप सल्ल० ने एक आदमी के ज़िम्मे लगाया कि जब यह देहाती नमाज़ से फ़ारिग हो जाए तो इसे मेरे पास ले आना। चुनांचे वह नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० के पास एक कान से कुछ सोना हदिये में आया हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने उसे वह सोना हदिये में दिया, फिर उसे पूछा कि ऐ आराबी! तुम कौन से क़बीले के हो? उसने कहा, या रसूलल्लाह! बनी आमिर बिन सअ्सअह क़बीले का हूँ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : क्या तुम जानते हो मैंने तुमको यह सोना क्यों हदिया किया है? उसने कहा कि या रसूलल्लाह! हमारी आपकी जो रिश्तेदारी है उसकी वजह से। आप सल्ल० ने फ़रमाया : रिश्तेदारी का भी हक़ होता है, लेकिन मैंने तुम्हें सोना इस वजह से हदिया किया है कि तुमने बहुत उम्दा तरीक़े से अल्लाह की सना बयान की है।

(हयातुस्सहाबा, 3 : 368, 369)

अल्लाह तआला का वह नाम कि उसके वसीले से जब दुआ की जाती है तो ज़रूर क़बूल होती है

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह दुआ माँगते हुए सुना है :

أَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الطَّاهِرِ الطَّيِّبِ الْمُبَارَكِ الْأَحَبِّ إِلَيْكَ الَّذِيْ إِذَا دُعِيْتَ بِهٖ أَجَبْتَ وَإِذَا سُئِلْتَ بِهٖ أَعْطَيْتَ وَإِذَا اسْتُرْحِمْتَ بِهٖ رَحِمْتَ وَإِذَا اسْتُفْرِجْتَ بِهٖ فَرَّجْتَ.

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे नाम के वसीले से सवाल करता हूँ, जो पाक उम्दा मुबारक और तुझे सबसे ज़्यादा महबूब है, जब तुझे उसके ज़रिए पुकारा जाता है तो तू ज़रूर मुतवज्जेह होता है और जब तुझसे उसके वसीले से माँगा जाता है तो तू ज़रूर देता है, और जब तुझसे उसके ज़रिए रहम तलब किया जाता है तो तू ज़रूर रहम फ़रमाता है, और जब उसके वसीले से तुझसे कुशादगी माँगी जाती है तो तू ज़रूर कुशादगी देता है।"

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "ऐ आइशा! क्या तुम्हें पता चला कि अल्लाह ने मुझे वह नाम बता दिया है कि जब उस नाम के वसीले से उससे दुआ की जाती है तो वह ज़रूर क़बूल फ़रमाता है।" मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान हों, वह नाम मुझे भी सिखा दें। आप सल्ल० ने फ़रमाया, "ऐ आइशा! तुझे सिखाना मुनासिब नहीं।" वह फ़रमाती हैं मैं एक तरफ़ होकर बैठ गई फिर मैं खड़ी हुई और हुज़ूर सल्ल० के सर का बोसा लिया। फिर मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मुझे वह नाम सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "ऐ आइशा! तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं कि मैं तुम्हें सिखाऊँ क्योंकि तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं कि तुम उसके ज़रिए दुनिया की कोई चीज़ माँगो।" मैं वहाँ से उठी और वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर यह दुआ माँगी :

أَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَدْعُوْكَ اللّٰهَ وَأَدْعُوْكَ الرَّحْمٰنَ وَأَدْعُوْكَ الْبَرَّ الرَّحِيْمَ، وَأَدْعُوْكَ بِأَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ أَنْ تَغْفِرَ لِيْ وَتَرْحَمَنِيْ.

"ऐ अल्लाह! मैं तुझे अल्लाह कहकर पुकारती हूँ, तुझे रहमान कहकर पुकारती हूँ, तुझे नेकोकार रहीम कहकर पुकारती हूँ और तुझे तेरे उन अच्छे नामों से पुकारती हूँ, और यह सवाल करती हूँ कि तू मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे और मुझ पर रहम फ़रमा दे।"

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं हुज़ूर सल्ल० मेरी यह दुआ सुनकर बहुत हंसे और फ़रमाया, "तुमने जिन नामों से अल्लाह को पुकारा है उनमें वह ख़ास नाम भी शामिल है।"

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 369-370)

हुज़ूर सल्ल० की दुआ की बरकत से हज़रत अली रज़ि० की तबीअत ठीक हो गई

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा मैं बीमार हुआ। मैं नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्ल० ने मुझे अपनी जगह बिठाया और ख़ुद ख़ड़े होकर नमाज़ शुरू कर दी और अपने कपड़े का एक किनारा मुझ पर डाल दिया। फिर नमाज़ के बाद फ़रमाया, "ऐ इब्ने अबी तालिब! अब तुम ठीक हो गए हो, कोई फ़िक्र न करो। मैंने जो चीज़ भी अल्लाह से अपने लिए माँगी उस जैसी मैंने अल्लाह से तुम्हारे लिए भी माँगी। और मैंने जो चीज़ भी अल्लाह से माँगी वह अल्लाह ने मुझे ज़रूर दी। बस इतनी बात है कि मुझसे यूँ कहा गया है कि आपके बाद कोई नबी नहीं होगा।" चुनांचे मैं वहाँ से उठा तो मैं बिल्कुल ठीक हो चुका था और ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं बीमार ही नहीं हुआ था। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 373)

परेशानी और ग़म दूर करने का एक नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं नबी करीम सल्ल० जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो दायाँ हाथ अपने सर पर फेरते और फ़रमाते :

بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ. اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّى الْهَمَّ وَالْحُزْنَ

"अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जिसके सिवा कोई माबूद नहीं वह बड़ा मेहरबान और बहुत रहम करनेवाला है। ऐ अल्लाह! तू हर फ़िक्र और ग़म को मुझसे दूर फ़रमा दे।"

एक रिवायत में यह है कि अपना दायाँ हाथ अपनी पेशानी पर फेरते और फ़रमाते,

"अल्लाहुम्मा अज़्हिब अनियूयिल हम्मा वलहुज़्ना"

"ऐ अल्लाह! तू हर फ़िक्र और ग़म को मुझसे दूर फ़रमा दे।"

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज : 384-385)

अपने बीवी बच्चों को अल्लाह की हिफ़ाज़त में देने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल० के पास एक आदमी आया और उसने कहा, "या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! मैं अपनी जान, अपने अहलो अयाल और माल के बारे में बहुत डरता हूँ।' हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया "सुबह और शाम यह कलिमात कहा करो :

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِىْ وَنَفْسِىْ وَ وَلَدِىْ وَ أَهْلِىْ وَمَالِىْ

"मैं अपने दीन पर, अपनी जान पर, अपनी औलाद पर, अपने घरवालों पर और अपने माल पर अल्लाह का नाम लेता हूँ।"

उस आदमी ने ये कलिमात कहने शुरू कर दिए और फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, "तुम्हें जो डर लगता था उसका क्या हुआ?" उसने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिसने आप सल्ल० को हक़ देकर भेजा! वह डर बिल्कुल जाता रहा। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज, 389)

शैतान के शर से बचने का एक नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्ल० मस्जिद में दाख़िल होते तो ये कलिमात कहते :

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

"मैं मर्दूद शैतान से अज़्मतवाले अल्लाह की, उसकी करीम ज़ात की और उसकी क़दीम सल्तनत की पनाह चाहता हूँ।"

आदमी जब ये कलिमात कहता है तो शैतान कहता है, बाक़ी सारे दिन में इस आदमी की मुझसे हिफ़ाज़त हो गई। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 394)

इब्ने आदम! ग़ुस्से के वक़्त मुझे याद कर लिया कर, मैं भी ग़ज़ब के वक़्त तुझे माफ़ी अता करूँगा

इब्ने अबी हातिम में हज़रत वहैब बिन वरद रज़ि० से मरवी है कि अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है कि

"ऐ इब्ने आदम! अपने ग़ुस्से के वक़्त तू मुझे याद कर लिया कर, मैं भी अपने ग़ज़ब के वक़्त तुझे माफ़ी अता करूँगा। और जिन पर मेरा अज़ाब नाज़िल होगा, मैं तुझे उनसे बचा लूँगा, बर्बाद होनेवालों के साथ तुझे बर्बाद न करूँगा। ऐ इब्ने आदम! जब तुझ पर ज़ुल्म किया जाए तो सब्र व सहार के साथ काम ले, मुझ पर निगाह रख, मेरी मदद पर भरोसा रख, मेरी इमदाद पर राज़ी रह। याद रख! मैं तेरी मदद करूँगा यह उससे बहुत बेहतर है कि तू आप अपनी मदद करे।"

अल्लाह तआला हमें भलाइयों की तौफ़ीक़ दे, अपनी इमदाद नसीब फ़रमाए। आमीन। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, सफ़ा 444)

नीचे लिखी दुआ जो पढ़ेगा वह आज़माइश में मुब्तला नहीं होगा

हज़रत बसर बिन अबी अरतात रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह दुआ माँगते हुए सुना :

اَللّٰهُمَّ أَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْأُمُوْرِ كُلِّهَا وَأَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْآخِرَةِ.

"ऐ अल्लाह! तमाम कामों में हमारा अंजाम अच्छा फ़रमा और हमें दुनिया की रुसवाई से और आख़िरत के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाँ"

तबरानी की रिवायत में उसके बाद यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "जो यह दुआ माँगता रहेगा वह आज़माइश में मुब्तला होने से पहले ही मर जाएगा।" (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 403)

घबराहट और वहशत दूर करने का नबवी तावीज़

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को बताया कि वह रात को कुछ डरावनी चीज़ें देखते हैं जिनकी वजह से वह रात को तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ सकते। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "ऐ ख़ालिद बिन वलीद रज़ि०! क्या मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न सिखा दूँ कि जब तुम उनको तीन मर्तबा पढ़ लोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारी यह तकलीफ़ दूर कर देगा।" हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने कहा या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान हों, ज़रूर सिखाएँ। मैंने आपको अपनी यह तकलीफ़ इसी लिए तो बताई है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया ये कलिमात कहा करो :

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَأَنْ يَّحْضُرُوْنِ.

"मैं अल्लाह के गुस्से और उसकी सज़ा से और उसके बनदों के शर से और शयातीन के वसाविस से और शयातीन के मेरे पास आने से उसके कामिल कलिमात की पनाह चाहता हूँ।"

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं चन्द रातें ही गुज़री थीं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने आकर अर्ज किया, "या रसूल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान हों और उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! जो कलिमात आपने मुझे सिखाए वह मैंने तीन मर्तबा पूरे ही किए थे कि अल्लाह तआला ने मेरी वह तकलीफ़ दूर कर दी और

अब तो मेरा यह हाल है कि शेर के बन (जंगल) में उसके पास रात को भी बिला ख़ौफ़ व ख़तर जा सकता हूँ।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : जब तुममें से कोई नींद में घबरा जाए तो यह दुआ पढ़े, *"अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति"* आख़िर तक।

नसई की रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० नींद में घबरा जाया करते थे, उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से इसका ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : जब तुम लेटा करो तो यह दुआ पढ़ लिया करो— *"अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति"* आख़िर तक। इमाम मालिक रह० ने मोवत्ता में लिखा है कि मुझे यह बात पहुँची है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं सोते में डर जाता हूँ। हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि यह दुआ पढ़ लिया करो— और पिछली दुआ बताई। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे घबराहट और वहशत महसूस होती है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जब तुम बिस्तर पर लेटा करो तो यह दुआ पढ़ा करो, फिर पिछली दुआ बताई की। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 409-410)

विलायत के लिबास मुख़्तलिफ़ होते हैं

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ रह० नक़्शबंदिया के अकाबिर औलिया में से हैं, लेकिन बादशाहों की वह शान नहीं होती थी जो उनकी शान थी। मस्नद अलग थी। सफ़ाई-सुथराई अलग, ख़ुद्दाम अलग खड़े हुए हैं, दरवाज़े के ऊपर दरबान अलग मौजूद हैं और सफ़ाई का यह आलम कि अगर एक तिनका भी सामने पड़ा हुआ होता था तो सर में दर्द हो जाता था। फ़रमाते थे, "कूड़ा-कबाड़ घर के अंदर भर रखा है।" बहुत नज़ाकत थी।

बादशाहे वक़्त ने मिलने की आरज़ू की। बहुत चाहा कि मुझे इजाज़त मिल जाए मगर इजाज़त नहीं थी। आख़िर हज़रत मिर्ज़ा साहब रह० के ख़ादिमे ख़ास को अपने पास बुलाया और कहा कि तुम उनके दिल में घर किए हुए हो। तुम्हारा मामला बहुत रुसूख़ का है, तुम मेरे लिए एक पाँच मिनट की मोहलत ले लो।

उसने कुछ उतार-चढ़ाव करके हज़रत रह० से अर्ज़ किया तो पाँच मिनट की इजाज़त हो गई कि बादशाह आ सकते हैं। बादशाह सलामत आए। बहुत अदब के साथ दो-ज़ानू एक तरफ़ बैठ गए। हज़रत मिर्ज़ा साहब रह० ने कुछ नसीहतें फ़रमाईं। उस दौरान में हज़रत मिर्ज़ा साहब रह० को प्यास मालूम हुई तो ख़ादिम को पानी पिलाने के लिए इशारा किया। बादशाह ने समझ लिया कि पानी चाहते हैं। तो खड़े होकर हाथ जोड़कर अर्ज़ किया। अगर मुझे इजाज़त हो? इजाज़त हो गई कि अच्छा तुम पानी पिलाओ। तो बादशाह पानी लेने गए तो घड़े के ऊपर जो बडोली ढकी हुई थी, पानी लेकर जो उसे रखा तो वह कुछ टेढ़ी रखी गई, बस मिज़ाज में तग़य्युर पैदा हो गया।

फ़रमाया, "तुम्हें पानी पिलाना तो आता नहीं, तुम बादशाहत कैसे करते होगे? हटो यहाँ से!" अपने ख़ादिम ख़ास को हुक्म दिया कि वही पानी पिलाएगा। इस शान के भी बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनकी विलायत में कोई कमी नहीं, वली-ए-कामिल हैं। उनकी निस्बत व तसर्रुफ़ और तर्बियत से हज़ारों औलिया बन गए। एक शान यह है।

और एक शान हज़रत शाह ग़ुलाम अली साहब की है। शाह ग़ुलाम अली साहब रह० का यह हाल कि न घर, न दर, न कपड़ा, न लत्ता। ज़ुहद व क़नाअत और फ़क्र व फ़ाक़े और उस पर मेहमानों की यह कसरत कि तीन-तीन सौ, चार-चार सौ मेहमान हर वक़्त उनके दस्तरख़्वान पर होते थे। लेकिन ज़ाहिर में ज़रिया मआश कुछ नहीं। रियासत टोंक के नवाब, नवाब मीर ख़ाँ, वह हज़रत रह० के मुरीद थे। उन्होंने देखा कि शैख़ के यहाँ तीन-तीन सौ, चार-चार सौ मेहमान होते हैं। आख़िर कहाँ से आता होगा? बड़ी तंगी उठाते होंगे, बड़ी परेशानी होती होगी तो रियासत टोंक का एक ज़िला जिसकी एक साल की कई लाख रुपये आमदनी थी, वह पूरे-का-पूरा हज़रत शाह ग़ुलाम अली साहब रह० की ख़िदमत में पीतल के पत्तर पर लिखकर भेजा कि मैं आपको हदिया करता हूँ ताकि मेहमानों और घरवालों का ख़र्चा चले। आप इसे ख़ुदा के लिए क़बूल फ़रमा लें। शाह ग़ुलाम अली साहब रह० ने उसी पत्तर पर जवाब लिखा और उस पर एक शेर लिखकर भेज दिया। लिखा :

मा आबरूए फ़क्र व क़नाअत नमी बरयम।
बा मीर ख़ाँ बगूए कि रोज़ी मुक़द्दर अस्त ॥

हम अपने फ़क्र व फ़ाक़ा की आबरू खोना नहीं चाहते। मेरी तरफ़ से उन्हें कह दो कि रोज़ी मुक़द्दर है, तुम्हारे ज़िले की हमें ज़रूरत नहीं है।

तो एक तरफ़ यह ज़ुहद व क़नाअत और एक तरफ़ यह ठाठ-बाठ जो मिर्ज़ा मज़हर जाने जाना रह० के यहाँ है। हैं यह भी वली-ए-कामिल और वह भी वली-ए-कामिल। विलायत के लिबास मुख़्तलिफ़ होते हैं। विलायत का ताल्लुक़ कपड़ों से नहीं, क़ल्ब से है। क़ल्ब जब अल्लाह रसीदा बन जाए, वह वली-ए-कामिल है। अपने हुस्ने नीयत से कोई लिबासे फ़ाख़रा पहनता है, उसमें भी नेकी की नीयत पोशीदा होती है। उसमें भी मस्लेहत है, किसी पर ज़ुहद व क़नाअत का ग़लबा होता है। (ख़ुतबाते हकीमुल इस्लाम, जिल्द 4, पेज 343-345)

रमज़ान की पहली रात में ही मुसलमानों की मग़फ़िरत कर दी जाती है

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं जब माहे रमज़ान क़रीब आ गया तो हुज़ूर सल्ल० ने मग़रिब के वक़्त मुख़्तसर बयान फ़रमाया, उसमें इरशाद फ़रमाया :

"रमज़ान तुम्हारे सामने आ गया है और तुम उसका इस्तक़बाल करने वाले हो। ग़ौर से सुनो! रमज़ान की पहली रात ही में अहले क़िबला (मुसलमानों) में से हर एक की मग़फ़िरत कर दी जाती है।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 439-440)

दुआ की क़बूलियत के लिए हज़रत जिब्रील अलैहि० ने हज़रत याक़ूब अलैहि० को वज़ीफ़ा सिखाया

तफ़्सीर रूहुल मआनी में हज़रत अल्लामा आलूसी रह० तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत यूसुफ़ अलैहि० ने अपने भाइयों को माफ़ कर दिया और *"ला तसरी-ब अलैकुमुल यौम"* का एलान कर दिया तो भाइयों ने कहा कि ऐ अब्बा जान और ऐ हमारे भाई! आप लोगों ने तो माफ़ कर दिया, लेकिन अगर अल्लाह तआला ने हमको माफ़ न फ़रमाया तो आप हज़रात का अफ़्व हमको कुछ मुफ़ीद न होगा, इसलिए आप हज़रात अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाइए कि हमारी ख़ताओं की माफ़ी बज़रिये

वह्य नाज़िल फ़रमा दें। चूंकि अंबिया अलैहि० अर्रहमुल ख़लाइक़ होते हैं, इसलिए हज़रत याक़ूब अलैहि० ने फ़रमाया : *"सौ-फ़ अस्तग़फ़िरु लकुम रब्बी इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम"* अंक़रीब तुम्हारे लिए अपने रब से दुआए मग़फ़िरत करूँगा, बेशक वह ग़फ़ूरुर्रहीम है।

फिर हज़रत याक़ूब अलैहि० आगे किबला रू दुआ के लिए खड़े हुए और हज़रत यूसुफ़ अलैहि० उनके पीछे और उन दोनों के पीछे सब भाई खड़े हुए और निहायत ज़िल्लत और ख़ुशूअ के साथ दुआ की लेकिन बीस साल तक दुआ क़बूल न हुई, फिर हज़रत जिब्रील अलैहि० तशरीफ़ लाए और यह दुआ सिखाई :

(۱) يَارَ جَاءَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَا تَقْطَعْ رَجَاءَ نَا.

"ऐ ईमान वालों की उम्मीद! हमारी उम्मीदों को क़ता न फ़रमाइए।"

(۲) يَا غِيَاثَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَغِثْنَا.

"ऐ ईमान वालों के फ़रियाद रस! हमारी मदद फ़रमाँ"

(۳) يَا مُعِيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَعِنَّا.

"ऐ ईमान वालों के मददगार! हमारी मदद कीजिए।"

(۴) يَا مُحِبَّ التَّوَّابِيْنَ تُبْ عَلَيْنَا.

"ऐ तौबाकरने वालों से मुहब्बत करने वाले! हमारे ऊपर तवज्जोह फ़रमाँ"

यह दुआएँ जब बवक़्त सहर की तो तौबा क़बूल हो गई। (रूहुल मआनी, पारा 13, जिल्द 7, पेज 56)

सख़्ततरीन मुक़द्दमे में कामयाबी हासिल करने का बेहतरीन वज़ीफ़ा

एक लाख इक्यावन हज़ार (1,51,000) मर्तबा पढ़ें :

يَا حَلِيْمُ، يَا عَلِيْمُ، يَا عَلِيُّ، يَا عَظِيْمُ.

या हलीमु, या अलीमु, या अलिय्यु, या अज़ीमु

या हलीमु, या अलीमु, या अलिय्यु, या अज़ीमु

मुजद्दिदे मिल्लत हज़रत थानवी रह० ने लिखा है कि सख़्त-से-सख़्त मुक़द्दमे के लिए इस असमा का पढ़ना मुफ़ीद है, कई मर्तबा का आज़मूदा है। यह वज़ीफ़ा एक लाख इक्यावन हज़ार (1,51,000) मर्तबा बतौर ख़त्म पढ़े। इंशाअल्लाह तआला कामयाब होगा। यह अमल बराए इफ़ाद-ए-आम दर्ज है। इंशाअल्लाह तआला बाद तजुर्बा के बहुत मुफ़ीद साबित होगा। मकान और कपड़े पाक होने चाहिएँ। ख़ुश्बू लगाएँ। वह असमा ये हैं : *याहलीमु, या अलीमु, या अलिय्यु, या अज़ीमु।*

(अत-तराइफ़ वज़-ज़राइफ़, हिस्सा 2, पेज : 26, कश्कोल मारिफ़त, पेज 29)

मामूली नेकी भी मग़फ़िरत का सबब बनती है

अल्लाह तआला शकूर है, और शकूर की तारीफ़ मिश्क़ात में यह है कि : जो क़लील अमल पर अज़ीम जज़ा अता फ़रमाए उसको शकूर कहते हैं।

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक शख़्स को ख़्वाब में देखा गया। दरयाफ़्त किया गया कि हक़ तआला ने तुम्हारे साथ क्या मामला फ़रमाया? कहा, मेरा हिसाब हुआ, पस मैं डर गया कि नेकियों का पल्ला हल्का था। अचानक उसमें मिट्टी की थैली आ गिरी और वज़न नेकियों का बढ़ गया। मैंने अर्ज़ किया कि यह थैली कहाँ से आ गई? इरशाद हुआ कि यह वह मिट्टी है जो तूने किसी मुसलमान की क़ब्र में डाली थी। (कश्कोल मारिफ़त, पेज 60-61)

एक बेवा का अजीब क़िस्सा

अगर बेवा बच्चों की तर्बियत की ख़ातिर दूसरा निकाह न करे तो बाक़ी पूरी ज़िंदगी उसको ग़ाज़ी बनकर ज़िंदगी गुज़ारने का सवाब दिया जाता है। (बुख़ारी, बाब अस्साई अलल् अर्रमिला रक़म 6006)

एक वाक़िआ सुनिए और दिल के कानों से सुनिए। हज़रत हसन बसरी रह० का दौर है। आपकी एक शागिर्दा थी जो बाक़ायदा आपका दर्स सुनने के लिए आया करती थी। उसका एक बेटा था, ख़ाविन्द का अच्छा कारोबार था। यह नेक औरत थी, इबादत गुज़ार ख़ातून थी,

बाक़ायदा दर्स सुनती और नेकी पर ज़िंदगी गुज़ारती थी। उस बेचारी का जवानी में ख़ाविन्द चल बसा। उसने दिल में सोचा कि एक बेटा है, अगर मैं दूसरा निकाह कर लूंगी, मुझे तो ख़ाविन्द मिल जाएगा, मगर बच्चे की ज़िंदगी बर्बाद हो जाएगी। पता नहीं वह उसके साथ क्या सुलूक करेगा? अब वह जवान होने के क़रीब है, यही मेरा सहारा सही। लिहाज़ा यह सोच कर माँ ने जज़्बात की क़ुरबानी दी। ऐसी औरत के लिए हदीस पाक में आया है कि जो इस तरह अगली शादी न करे और बच्चों की तर्बियत व हिफ़ाज़त के लिए उसी तरह ज़िंदगी गुज़ारे, तो बाक़ी पूरी ज़िंदगी उसको ग़ाज़ी बनकर ज़िंदगी गुज़ारने का सवाब दिया जाएगा। क्योंकि वह जिहाद कर रही है अपने नफ़्स के ख़िलाफ़।

वह माँ घर में बच्चे का पूरा-पूरा ख़्याल रखती थी, लेकिन यह बच्चा जब घर से बाहर निकल जाता तो माँ से निगरानी न हो पाती। अब उसके पास माल की भी कमी नहीं थी। उठती हुई जवानी भी थी, यह जवानी दीवानी और मस्तानी होती है। चुनांचे वह बच्चा बुरी सोहबत में गिरफ़्तार हो गया। शबाब और शराब के कामों में मसरूफ़ हो गया। माँ बराबर समझाती लेकिन बच्चे पर कुछ असर न होता, चिकना घड़ा बन गया। वह उनको हज़रत हसन बसरी रह० के पास लेकर आती। हज़रत भी उसको कई-कई घंटे समझाते, लेकिन उसका नेकी की तरफ़ ध्यान ही नहीं था। कभी-कभी माँ से मिलने आता, माँ फिर समझाती और फिर उसको हज़रत के पास ले जाती। हज़रत भी समझाते, दुआएँ भी करते, मगर उसके कान पर जूँ न रेंगती। यहाँ तक कि हज़रत के दिल में यह बात आई कि शायद अब उसका दिल पत्थर बन गया है, मुहर लग गई है, माँ तो बहरहाल माँ होती है। दुनिया में माँ ही तो है जो अच्छों से भी प्यार करती है, बुरों से भी प्यार करती है। उसकी नज़र में तो उसके बच्चे, बच्चे ही होते हैं। माँ तो उनको नहीं छोड़ सकती, बाप भी कह देता है कि घर से निकल जाओ, इसको धक्का दो। मगर माँ कभी नहीं कहती। उसके दिल में अल्लाह ने मुहब्बत रखी है। चुनांचे माँ उसके लिए फिर खाना बनाकर देती है, उसके लिए दरवाज़ा खोलती है, और फिर प्यार से समझाती है, मेरे बेटे! नेक बन जा, ज़िदंगी अच्छी कर ले।

अब देखिए अल्लाह की शान कि कई साल बुरे कामों में लग कर उसने सेहत भी तबाह कर ली और दौलत भी तबाह कर दी। उसके जिस्म

में बीमारियाँ पैदा हो गईं, डॉक्टरों ने बीमारी भी लाइलाज बताई। अब उठने की भी सकत नहीं रही, और बिस्तर पर पड़ गया, इतना कमज़ोर हो गया कि अब उसको आख़िरत का सफ़र सामने नज़र आने लगा। माँ फिर पास बैठी हुई मुहब्बत से समझा रही है कि मेरे बेटे! अब तूने जो ज़िंदगी का हश्र कर लिया वह तो कर लिया, अब भी वक़्त है तू माफ़ी माँग ले, तौबा कर ले। अल्लाह तआला गुनाहों को माफ़ करनेवाला है।

जब माँ ने फिर प्यार व मुहब्बत से समझाया। उसके दिल पर कुछ असर हुआ। कहने लगा कि माँ मैं कैसे तौबा करूँ! मैंने तो बहुत बड़े-बड़े गुनाह किए हैं। माँ ने कहा बेटा! हज़रत से पूछ लेते हैं। कहा, अम्मी! मैं चलकर जा नहीं सकता, आप उठाकर ले जा नहीं सकतीं, तो मैं कैसे उन तक पहुँचूँ? अम्मी! आप ऐसा करें कि आप ख़ुद ही हसन बसरी रह० के पास जाएँ और हज़रत को बुलाकर ले आएँ। माँ ने कहा ठीक है बेटा, मैं हज़रत के पास जाती हूँ। बच्चे ने कहा कि अम्मी अगर आपके आने तक मैं दुनिया से रुख़्सत हो जाऊँ तो हसन बसरी रह० से कहना कि मेरे जनाज़े की नमाज़ वही पढ़ाएँ।

चुनांचे माँ हज़रत हसन बसरी रह० के पास गई। हज़रत खाने से फ़ारिग़ हुए थे और थके हुए थे और दर्स भी देना था इसलिए क़ैलूला के लिए लेटना चाहते थे। माँ ने दरवाज़ा खटखटाया। पूछा, कौन? अर्ज़ किया हज़रत! मैं आपकी शागिर्दा हूँ। मेरा बच्चा अब आख़िरी हालत में है। वह तौबा करना चाहता है, लिहाज़ा आप घर तशरीफ़ ले चलें और मेरे बच्चे को तौबा करा दें। हज़रत ने सोचा कि अब फिर वह उसको धोखा दे रहा है, फिर वह उसका वक़्त ज़ाया करेगा और अपना भी करेगा। सालों गुज़र गए अब तक तो कोई बात असर न कर सकी, अब क्या करेगी। कहने लगे मैं अपना वक़्त क्यों ज़ाया करूँ? मैं नहीं आता। माँ ने कहा, हज़रत उसने तो यह भी कहा कि अगर मेरा इंतक़ाल हो जाए तो मेरे जनाज़े की नमाज़ हसन बसरी रह० पढ़ाएँ। हज़रत ने कहा मैं उसके जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ाऊँगा, उसने तो कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी। अब वह शागिर्दा थी। चुप करके उठी मग़मूम दिल से, एक तरफ़ बेटा बीमार दूसरी तरफ़ से हज़रत का इंकार। उसका ग़म तो दोगुना हो गया था। वह बेचारी आँखों में आँसू लिए अपने घर वापस आई। बच्चे ने माँ को ज़ार व क़तार रोता हुआ देखा। अब उसका दिल और मोम हो गया

कहने लगा, अम्मी! आप क्यों इतना ज़ार व क़तार रो रही हैं? माँ ने कहा, बेटा! एक तेरी यह हालत है और दूसरी तरफ़ हज़रत ने तेरे पास आने से इंकार कर दिया। तू इतना बुरा क्यों हैं कि वह तेरे जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ाना नहीं चाहते! अब यह बात बच्चे ने सुनी तो उसके दिल पर चोट लगी, उसके दिल पर सदमा हुआ, कहने लगा कि अम्मी! मुझे मुश्किल से साँसें आ रही हैं, ऐसा न हो मेरी सांस उखड़ने वाली हो, लिहाज़ा मेरी एक वसीयत सुन लीजिए। माँ ने पूछा बेटा वह क्या?

अजीब वसीयत

कहा अम्मी! मेरी वसीयत यह है कि जब मेरी जान निकल जाए तो सबसे पहले अपना दुपट्टा मेरे गले में डालना और मेरी लाश को कुत्ते की तरह सेहन में घसीटना जिस तरह मरे हुए कुत्ते की लाश घसीटी जाती है। माँ ने पूछा कि बेटा वह क्यों? कहा, अम्मी! इसलिए कि दुनियावालों को पता चल जाए कि जो अपने रब का नाफ़रमान और माँ-बाप का नाफ़रमान होता है उसका अंजाम यह हुआ करता है। और अम्मी! मुझे क़ब्रिस्तान में दफ़न न करना।" माँ ने कहा, बेटे तुझे क़ब्रिस्तान में दफ़न क्यों न करूँ? कहा, "अम्मी! मुझे इसी सेहन में दफ़न कर देना, ऐसा न हो कि मेरे गुनाहों की वजह से क़ब्रिस्तान के मुर्दों को तकलीफ़ पहुँचे।"

जिस वक़्त नौजवान ने टूटे दिल से आजिज़ी की यह बात कही तो परवरदिगार को उसकी यह बात अच्छी लगी, रूह क़ब्ज़ हो गई। अभी रूह निकली ही थी और माँ उसकी आँखें बन्द कर रही थी कि बाहर से दरवाज़ा खटखटाया गया और औरत ने अंदर से पूछा : कौन है जिसने दरवाज़ा खटखटाया? जवाब आया कि मैं हसन बसरी रह० हूँ। कहा कि हज़रत! आप कैसे? फ़रमाया, जब मैंने तुम्हें जवाब दे दिया मैं सो गया, ख़्वाब में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का दीदार नसीब हुआ, परवरदिगार ने फ़रमाया, हसन बसरी तू मेरा कैसा वली है? मेरे एक वली का जनाज़ा पढ़ने से इंकार करता है। मैं समझ गया कि अल्लाह ने तेरे बेटे की तौबा को क़बूल कर लिया है, तेरे बच्चे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिए हसन बसरी रह० खड़ा है।

13

प्यारे अल्लाह! जब तू इतना करीम है कि मरने से चन्द लम्हा पहले अगर कोई बन्दा शर्मिन्दा होता है तो तू उसकी ज़िंदगी के गुनाहों को माफ़ कर देता है, तो मेरे मालिक! आज हम तेरे घर में बैठे हुए हैं, आज

हम अपने जुर्म की माफ़ी माँगते हैं, अपनी ख़ताओं की माफ़ी माँगते हैं, मेरे मालिक हम मुजरिम हैं, हम अपने गुनाहों का ऐतिराफ़ करते हैं। ऐ अल्लाह! हम झूठ नहीं बोल सकते, हमारी हक़ीक़त तेरे सामने खुली हुई है। मेरे मोला हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमाँ हमें तो धूप की गर्मी बरदाश्त नहीं होती, ऐ अल्लाह! जहन्नम की गर्मी कहाँ से बरदाश्त होगी। ऐ परवरदिगारे आलम! हमारी तौबा को क़बूल कर ले और बाक़ी ज़िंदगी ईमानी, इस्लामी, क़ुरआनी बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाँ आमीन (दवाए दिल, पेज 87-91)

मुनाजात

दिले मग़मूम को मसरूर कर दे,
दिले बेनूर को पुर नूर कर दे

फ़िरोज़ाँ दिल में शम्मा तूर कर दे
यह गोशा नूर से मामूर कर दे

मेरा ज़ाहिर सँवर जाए इलाही
मेरे बातिन की ज़ुल्मत दूर कर दे

मए वहदत पिला मख़्मूर कर दे
मुहब्बत के नशे में चूर कर दे

न दिल माइल हो मेरा उनकी जानिब
जिन्हें तेरी अदा मग़रूर कर दे

है मेरी घात में ख़ुद नफ़्स मेरा
ख़ुदाया उसको बे-मक़दूर कर दे।

अल्लाह तआला जब किसी तालिबे इल्म या आलिम से ख़ुश होता है तो उसके लिए जन्नत में शहर आबाद कर देता है

हमारे असलाफ़ ने इल्म हासिल करने के लिए बड़ी क़ुरबानियाँ दीं। बड़ी मेहनतें कीं, बड़ी लगन के साथ अपने काम में मगन रहे, बस लगे

रहते थे। मदरसे को अपना वतन समझते थे और किताबों के काग़ज़ को अपना कफ़न समझते थे। ज़िंदगियाँ लगा देते थे पढ़ने पढ़ाने में, इसी लिए हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाया करते थे कि अगर नेक नीयत हो तो तालिबे इल्म से अफ़ज़ल और कोई नहीं होता, इतनी बरकतवाली यह शख़्सियत होती है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़रिश्ते भी उसकी ताज़ीम में अपनी परवाज़ रोक कर खड़े हो जाते हैं। इसी लिए फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जब किसी आम मोमिन से ख़ुश होता है तो उसके लिए जन्नत में एक महल बनवाता है, लेकिन जब किसी तालिबे इल्म या आलिम से ख़ुश होता है तो उसके लिए जन्नत में शहर आबाद करवा देता है। जैसे दुनिया में नवाब होते हैं; उनका अपना एक इलाक़ा होता है, तो अल्लाह आलिम से ख़ुश हुआ तो जन्नत के अंदर उसके लिए शहर आबाद फ़रमाएगा। उसकी अपनी स्टेट होगी। इसलिए फ़रमाया : "मन काना फ़ी त-ल-बिल् इल्मि का-न-तिल जन्न-तु फ़ी त-ल-बिही"जो इंसान इल्म की तलब में लगा रहेगा जन्नत उसकी तलब में रहेगी।

यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का बड़ा एहसान है कि वह अपने बन्दों को इल्मे दीन के हुसूल के लिए क़बूल फ़रमा ले। आप हज़रात बड़े ख़ुश नसीब हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के पसन्दीदा बन्दे हैं, क़ुरआन इस पर दलील है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता है :

"सुम-म औरसनल किताबल्लज़ी-न-स-तफ़ैना मिन इबादिना"

फिर मैंने इस किताब का वारिस अपने उन बन्दों को बना दिया जिनको मैंने चुन लिया था। जो मेरे चुने हुए बन्दे थे। मेरे लाडले थे, मेरे प्यारे थे, मेरे महबूब बन्दे थे, तो जो किताब का वारिस होता है वह अल्लाह का प्यारा होता है। कितनी रहमत है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की कि उसने इस किताब के इल्म के लिए हमारी ज़िंदगियों को क़बूल कर लिया। हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का एहसान मानते हुए मेहनत के साथ इल्म हासिल करें, निहायत लगन के साथ। (दवाए दिल, पेज 44)

इमाम मालिक की साहबज़ादियों का इल्मी मेयार

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मिना के बाज़ार में था, हज के दिनों में। फ़रमाते हैं कि जमरात से फ़राग़त हो गई। मुझे एक बूढ़ा आदमी मिला। थोड़ी देर उसने मुझे देखा और कहने लगा तुझे

अल्लाह का वास्ता तू मेरी दावत को क़बूल कर ले। फ़रमाते हैं, मैंने उसकी दावत को क़बूल कर लिया और वह भी ऐसा बेतकल्लुफ़ कि जो उसके पास था पेश कर दिया, उसने रोटी का एक टुकड़ा निकाला और वही दस्तरख़्वान पर रख दिया और कहने लगा खाओ। मैंने खाना शुरू कर दिया। वह मुझे देखता रहा और कहने लगा कि मुझे लगता है कि तू क़ुरैशी है। मैंने कहा हाँ, लेकिन तुझे कैसे पता चला? उसने कहा कि यह क़ुरैशी दावत देने में भी बेतकल्लुफ़ होते हैं और क़बूल करने में भी। फिर बातें करते रहे। मुझे पता चला कि यह मदीना से आया है। फ़रमाते हैं मैंने उससे इमाम मालिक रह० के बारे में पूछा। उसने मुझे उनके कुछ हालात सुनाए।

जब उसने देखा कि मैं बड़े शौक़ से उनके हालात पूछ रहा हूँ तो वह कहने लगा कि अगर आप मदीना जाना चाहते हैं तो यह ख़ाकी रंग का ऊँट हमारे पास ख़ाली है। यह हम आपको दे देंगे, आप मदीना पहुँच जाएंगे। कहने लगे कि मैं तो पहले ही से तैयार था, लिहाज़ा मैंने हामी भर ली। फ़रमाते हैं कि मैं क़ाफ़िला के साथ सवार, हुआ हमें रास्ते में मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा पहुँचने में सोलह दिन लगे, इस दौरान मैंने सोलह क़ुरआन मजीद पढ़ लिए।

आज यह हाल है कि हज करके आते हैं, दस-दस दिन मदीना गुज़ार कर आते हैं, एक क़ुरआन मजीद भी मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ नहीं होती। हमारे अस्लाफ़ जब हज के लिए आते-जाते थे तो सैकड़ों लोग उनके हाथों पर कलिमा पढ़कर मुसलमान हुआ करते थे और आज हज करके आते हैं ख़ुद मुसलमान बनकर सही तरह से नहीं आते, वापस आकर फिर गुनाहों की तरफ़ चल देते हैं।

अलग़र्ज़ इमाम शाफ़ई रह० ने हालते सफ़र में सोलह दिन में सोलह क़ुरआन मजीद पूरे किए। फ़रमाते हैं, जब हम मस्जिदे नबवी में पहुँचे तो नमाज़ के बाद मैंने देखा कि एक आदमी ऊँचे क़द का है और उसने एक तहबन्द बाँधा है और एक चादर लपेटी हुई है, वह एक ऊँची जगह बैठ गया और कहने लगा कि क़ाल-क़ाल रसूलुल्लाहि सल्ल०ल्लाहु अलैहि व सल्लमु और लोग उसके इर्द गिर्द बैठ गए तो मैं समझ गया कि यही इमाम मालिक रह० होंगे। यह वह दिन थे जब इमाम मालिक रह० अहादीस का इमला करा रहे थे। मोवत्ता इमाम मालिक की जो अहादीस

हैं, उनको लिखवा रहे थे। मैंने एक तिनका उठा लिया और दिल में यह सोचा कि यह मेरा क़लम है और हाथ सामने कर लिया और सोचा कि यह मेरी कापी है, और मैंने अपनी ज़बान से उस तिनके को लगाया कि जैसे मैं उसको स्याही लगा रहा हूँ और हथेली पर लिखना शुरू कर दिया। अब तलबा काग़ज़ों पर लिख रहे हैं, चुनांचे मैंने भी उनसे इमला की निस्बत हासिल करने के लिए हथेली पर लिखना शुरू कर दिया। कहने लगे, इस दौराने इमाम मालिक रह० ने मेरी तरफ़ देखा। उन्होंने उस महफ़िल में एक सौ सत्ताइस (127) अहादीस लिखवाईं। जब अगली नमाज़ का वक़्त हो गया तो महफ़िल बरख़ास्त हो गई, तलबा चले गए।

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि इमाम मालिक रह० ने मुझे देखा तो अपनी तरफ़ बुलाया और मुझसे कहा कि तू अजनबी मालूम होता है। मैंने कहा, जी हाँ! मैं मक्का-मुकर्रमा से आया हूँ। कहने लगे कि तू हथेली पर क्या कर रहा था? मैंने कहा, मैं अहादीस लिख रहा था। कहने लगे कि दिखाओ। मैंने जो दिखाया तो हथेली पर तो कुछ लिखा हुआ ही न था। उन्होंने कहा, यहाँ तो कुछ नहीं लिखा। मैंने कहा कि हज़रत न मेरे पास क़लम था, न काग़ज़। मैं तो आप जो इमला लिखवा रहे थे उसकी निस्बत हासिल करने के लिए एक तिनका से बैठा हुआ हथेली पर लिख रहा था। इस पर इमाम मालिक रह० नाराज़ हुए कि यह तो हदीस पाक के अदब के ख़िलाफ़ है कि तुमने इस तरह से लिखा। मैंने कहा कि हज़रत मैं तो ज़ाहिरी मुनासिबत के लिए हाथ पर तिनका चला रहा था, हक़ीक़त में तो हदीस पाक दिल में लिख रहा था। इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तू दिल में लिख रहा था तो मुझे चन्द रवायतें उसमें से सुना दे तो मैं तुझे जानूँ। फ़रमाने लगे, मैंने उनको एक से लेकर एक सौ सत्ताइस (127) हदीसें मतन और सनद के साथ सुना दी। यह इल्म!! 127 हदीसें जिस तर्तीब से लिखवाई थीं, तमाम उसी तर्तीब पर उनको सुना दीं।

फ़रमाते हैं, इमाम मालिक रह० बड़े ख़ुश हुए; कहने लगे कि अच्छा ऐ नौजवान! तू मेरा मेहमान बन जा। अंधे को क्या चाहिए? दो आँखें। मैं तो पहले ही से तैयार था, कहने लगा कि हज़रत! मैं तैयार हूँ। इमाम मालिक रह० घर तशरीफ़ ले गए। इमाम मालिक रह० के घर में उनकी बेटियाँ थीं और वह आलिमा क़ुरआन और हदीस की हाफ़िज़ा थीं। बहुत

मुत्तक़ी, पाक-साफ़ ज़िंदगी गुज़ारने वाली औरतें, यहाँ तक कि किताबों में लिखा है कि इतना इल्म रखती थीं कि इमाम मालिक रह० कई मर्तबा हदीस का दर्स मस्जिदे नबवी में देते, वह पर्दे के पीछे बैठकर हदीस के दर्स में शरीक होतीं और उनका इल्मी मेयार इतना ऊँचा था कि कई मर्तबा उनका शागिर्द जब किसी हदीस पाक की तिलावत करता और इबारत में कहीं ग़लती करता तो उनकी बेटियाँ लकड़ी के ऊपर लकड़ी मारकर आवाज़ करतीं, जिससे इमाम मालिक रह० समझ जाते कि पढ़नेवाले ने ग़लती की है।

आपने जाकर घर में बताया कि आज एक आलिम आ रहे हैं और वह बड़े दाना हैं और बड़ा इल्म का शौक़ है। वह तो बहरहाल इमाम शाफ़ई रह० थे। उन्होंने घर में खाने का बड़ा एहतिमाम किया। बिस्तर लगाया, मुसल्ला बिछाया, एक लोटा पानी का भरकर रखा। इमाम शाफ़ई रह० ने खाना खाया, लेट गए। सुबह को इमाम मालिक रह० के साथ मस्जिद में आ गए। जब इशराक़ की नमाज़ पढ़कर वापस घर गए तो इमाम मालिक रह० ने इमाम शाफ़ई रह० से फ़रमाया कि मेरी बेटियों को आप पर एक ऐतिराज़ वाक़ेअ हुआ है और मैं आपसे पूछता हूँ। यह सच्चे लोग थे, खरे लोग थे, साफ़ बात करते थे, फ़रमाया कि बच्चियाँ कह रही हैं कि अब्बू! आपने तो यह कहा था कि यह बड़े नेक और अच्छे इंसान हैं, लेकिन हमें इन पर इशकाल वाक़ेअ हुआ है :

1. पहला ऐतिराज़ यह है कि जितना खाना हमने पकाकर भेजा था वह तो कई आदमियों के लिए काफ़ी था। माशाल्लाह यह अकेले मेहमान, सुब्हानल्लाह बिल्कुल साफ़ होकर बर्तन वापस आए कि हमें धोने की भी ज़रूरत पेश न आई।

आज दुनिया कहती है कि बच्चों को आलिम बनाओगे तो ये रोटी कहां से खाएंगे? आप बताइए आज तक आपने कभी सुना कि कोई आलिम बाअमल हो या हाफ़िज़ बाअमल हो और वह भूख-प्यास से ऐड़ियाँ रगड़ते हुए मर गया हो? कोई एक मिसाल नहीं दे सकते। मैंने दुनिया के कई मुल्कों में यह सवाल पूछा। कोई एक मिसाल तो बता दो, लेकिन हमें मालूम है कि एम.बी.बी.एस डॉक्टर, पी.एच.डी. डॉक्टर कई ऐसे थे कि बुढ़ापे में उनका वह वक़्त भी आया कि भूख व प्यास से एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर मर गए। तो रिज़्क़ किस लाइन से ज़्यादा मिला?

दीनी लाइन से ज़्यादा। हमारे पास ये मिसालें तो हैं कि खाना ज़्यादा खा लिया और मौत आ गई। इमाम मुस्लिम रह० हदीस तलाश कर रहे थे और खजूरें पास में रखी हुई थीं और हदीस पाक को ढूँढने के अंदर इतने मुंहमिक थे कि खाते रहे, यहाँ तक कि ज़्यादा खाने की वजह से मौत वाक़ेअ हो गई। तो ज़्यादा खाकर मर जाने की मिसालें तो हैं लेकिन भूख प्यास से मरने की मिसालें इस लाइन में नहीं हैं। अलहम्दुलिल्लाह रिज़्क़ की अल्लाह तआला ख़ूब फ़रावानी कर देता है और दुनिया उस रिज़्क़ से डरती है। कहते हैं कि ये आलिम बनेंगे तो खाएंगे कहाँ से? वे अल्लाह के बन्दे वहाँ से खाएंगे, जहाँ से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने अंबिया को खिलाया करता था। तो ख़ैर इमाम शाफ़ई रह० से एक बात तो उन्होंने यह पूछी कि सारा खाना तनहा खा गए।

2. दूसरा यह कि हमने मुसल्ला बिछाकर रखा और पानी का बर्तन रखा लेकिन जैसा मुसल्ला बिछा था सुबह को वैसा ही रखा मिला और पानी भी ज्यों का त्यों था तो लगता है कि तहज्जुद की नमाज़ भी नहीं पढ़ी और फिर मस्जिद में तो वुज़ू का इंतिज़ाम भी नहीं। लोग घरों से वुज़ू करके जाते हैं और यह इसी तरह आपके साथ उठकर मस्जिद में चले गए। पता नहीं नमाज़ भी इन्होंने कैसे पढ़ी? यह बात हमारी समझ से बालातर है।

इमाम शाफ़ई रह० ने जवाब दिया कि हज़रत बात यह है कि जब मैंने आपके यहाँ खाना खाया तो खाने में इतना नूर था, इतना नूर था कि हर-हर लुक़मा खाने पर मुझे सीना नूर से भरता हुआ नज़र आता था। मैंने सोचा कि मुमकिन है इतना हलाल माल ज़िंदगी में फिर मयस्सर न हो, क्यों न मैं इसे जुज़्वे बदन बनाऊँ? इसलिए मैंने उस सारे खाने को अपने बदन का जुज़ बना लिया। अल्लाहु अकबर!

फ़रमाते हैं कि फिर मैं लेट गया, लेकिन उस खाने का नूर इतना था कि नींद ग़ायब, तो मैं अहादीस में ग़ौर करता रहा। फ़रमाने लगे कि एक हदीस मेरे पेश नज़र रही कि नबी अलैहि० ने छोटे बच्चे को जिसका परिन्दा मर गया था, प्यार-मुहब्बत से कहा था : *या अबा उमैर! मा फ़-अ-लन नुग़ीर* तो ये जो चन्द अल्फ़ाज़ थे, मैं उनके अंदर ग़ौर करता रहा और आज की रात मैंने इन चन्द अल्फ़ाज़ से फ़िक़्ह के चालीस (40) मसाइल अख़्ज़ कर लिए। इतनी-सी इबारत या अब्बा उमैर! कि कुन्नियत

कैसी होनी चाहिए? बच्चों से अंदाज़े तख़ातिब कैसा होना चाहिए? किसी के दिल की मुलातफ़त के लिए कैसे बात करनी चाहिए? और फिर फ़रमाया चूंकि मेरा वुज़ू बाक़ी था इसलिए मैं उठा और फ़ज्र की नमाज़ इसी वुज़ू से अदा की। हमारे अस्लाफ़ का यही हाल था। तो सबसे पहला क़दम इल्म हासिल करना और दूसरा क़दम उस इल्म के ऊपर अमल करना, लेकिन अमल करने के साथ काम ख़त्म नहीं होता, एक क़दम और उठाना ज़रूरी है, उसको कहते हैं, इख़्लास पैदा करना।

(दवाए दिल, पेज 44-50)

हर फ़िक्र व परेशानी से नजात हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया कि जो आदमी सुबह व शाम ये कलिमात सात मर्तबा कहेगा :

حَسْبِیَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَا عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ.

"अल्लाह मुझे काफ़ी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं उस पर मैंने तवक्कुल किया और वह अज़ीम अर्श का रब है।"

तो अल्लाह तआला हर फ़िक्र व परेशानी से उसकी किफ़ालत करेगा। चाहे सच्चे दिल से कहे या झूठे दिल से।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 342)

क़ियामत के दिन तंगी से बचने का एक नबवी नुस्ख़ा

इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत बशीर ग़िफ़ारी रज़ि० से फ़रमाया : तू क्या करेगा जिस दिन लोग ख़ुदाए रब्बुल आलमीन के सामने तीन सौ साल तक खड़े रहेंगे, न तो कोई ख़बर आसमान से आएगी, न कोई हुक्म किया जाएगा। हज़रत बशीर रज़ि० कहने लगे, अल्लाह ही मददगार है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो! जब बिस्तर पर जाओ तो अल्लाह तआला से क़ियामत के दिन की तकलीफ़ों से और हिसाब की बुराई से पनाह माँग लिया करो। सुनन अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० क़ियामत के दिन के खड़े होने की जगह की तंगी से पनाह माँगा करते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि चालीस साल तक लोग सर ऊंचा किए खड़े रहेंगे, कोई बोलेगा नहीं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि सौ साल तक खड़े रहेंगे।" (इब्ने जरीर)

अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल० जब रात को उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करते तो दस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहते, दस मर्तबा *अलहम्दुलिल्लाह* कहते, दस मर्तबा *अस्तग़फ़िरुल्लाह* कहते, फिर कहते *अल्लाहुम-मग़फ़िरली वहदिनी वरज़ुकनी व आफ़िनी।* ख़ुदाया मुझे बख़्श दे, मुझे हिदायत दे, मुझे रोज़ी दे और आफ़ियत इनायत फ़रमाँ फिर अल्लाह तआला से क़ियामत के दिन के मक़ाम की तंगी से पनाह माँगते थे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, 5 : 521)

ज़बान अच्छी भी है और बुरी भी

मुस्नद अहमद में है कि इंसान एक कलिमा अल्लाह की रज़ामंदी का कह गुज़रता है जिसे वह कोई बहुत बड़ा अज्र का कलिमा नहीं जानता, लेकिन अल्लाह तआला उसकी वजह से अपनी रज़ामंदी उसके लिए क़ियामत तक लिख देता है, और कोई कलिमा बुराई का ख़ुदा की नाराज़गी का इसी तरह बेपरवाही से कह गुज़रता है, जिसकी वजह से ख़ुदा अपनी नाराज़गी उस पर अपनी मुलाक़ात के दिन तक लिख देता है। हज़रत अल-क़्मा रह० फ़रमाते हैं कि इस हदीस ने मुझे बहुत-सी बातों से बचा लिया। तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी रह० इसे हसन बतलाते हैं।

अहनफ़ बिन क़ैस रह० फ़रमाते हैं : दाईं तरफ़ वाला नेकियां लिखता है और यह बाईं तरफ़ वाले पर अमीन है। जब बन्दे से कोई ख़ता हो जाती है तो यह कहता है ठहर जा, अगर उसने उसी वक़्त तौबा कर ली तो उसे लिखने नहीं देता, और अगर उसने तौबा न की तो वह लिख लेता है। (इब्ने अबी हातिम)

इमाम हसन बसरी रह० इस आयत *"व इन-न अलैकुम लहाफ़िज़ीन"* की तिलावत करके फ़रमाते थे, "ऐ इब्ने आदम! तेरे लिए सहीफ़ा खोल दिया गया है और दो बुज़ुर्ग फ़रिश्ते तुझ पर मुक़र्रर कर दिए गए हैं। एक तेरे दहिने, दूसरा बाएँ। दाईं तरफ़ वाला तो तेरी नेकियों की हिफ़ाज़त करता है और बाईं तरफ़ वाला बुराइयों को देखता रहता है। अब तू जो

चाहे अमल कर, कमी कर या ज़्यादती कर। जब तू मरेगा तो यह दफ़्तर लपेट दिया जाएगा और तेरे साथ तेरी क़ब्र में रख दिया जाएगा और क़ियामत के दिन जब तू अपनी क़ब्र से उठेगा तो यह तेरे सामने पेश कर दिया जाएगा।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 164)

मर्द तीन क़िस्म के होते हैं

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मर्द तीन क़िस्म के होते हैं :

1. पाक दामन, मुंकसिरुल मिज़ाज, नर्म तबीअत, दुरुस्त राय-वाला, अच्छे मश्विरे देनेवाला। जब उसे कोई काम पेश आता है तो ख़ुद सोच कर फ़ैसला करता है और हर काम को उसकी जगह रखता है।
2. वह मर्द है जो समझदार नहीं, उसकी अपनी कोई राय नहीं है लेकिन जब उसे कोई काम पेश आता है तो वह समझदार दुरुस्त राय वाले लोगों से जाकर मश्विरा करता है और उनके मश्विरे पर अमल करता है।
3. वह मर्द जो हैरान व परेशान हो, उसे सही और ग़लत का पता नहीं चलता, यूँ ही हलाक हो जाता है क्योंकि अपनी समझ पूरी नहीं और समझदार और सही मश्विरा देनेवालों की मानता नहीं।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 562)

परेशानी और तंगदस्ती दूर करने का नबवी इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम सब घर में थे, हुज़ूर सल्ल० ने दरवाज़े की दोनों चौखटों को पकड़ कर फ़रमाया : ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब! जब तुम लोगों को कोई परेशानी, सख़्ती या तंगदस्ती पेश आए तो ये कलिमात कहा करो :

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبُّنَا لَا نُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا (حیاۃ الصحابہ، جلد ۳، صفحہ ۴۱۱)

अल्लाहु अल्लाहु रब्बुना ला नुशरिकु बिही शैआ।

(हयातुस सहाबा, जिल्द 3, पेज 411)

दिल की सख़्ती दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० से अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया :

"यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो।"

हज़रत अबू दरदा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अपने दिल की सख़्ती की शिकायत करने लगा। आप सल्ल० ने फ़रमाया : "क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए और तुम्हारी यह ज़रूरत पूरी हो जाए? तुम यतीम पर शफ़क़त किया करो और उसके सर पर हाथ फेरा करो और अपने खाने में उसे शरीक किया करो, इससे तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा और तुम्हारी ज़रूरत पूरी हो जाएगी।"

हज़रत बशीर जहनी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जंगे उहुद के दिन मेरी हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात हुई। मैंने पूछा कि मेरे वालिद का क्या हुआ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : वह तो शहीद हो गए। अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाए। मैं यह सुनकर रोने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे पकड़ कर मेरे सर पर हाथ फेरा और मुझे अपने साथ सवारी पर सवार कर लिया और फ़रमाया : क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हारा बाप बन जाऊं और आइशा रज़ि० तुम्हारी माँ। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 638-639)

एक दीनी बहन पर तोहमत लगी, रजम का हुक्म हो गया मगर अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से उसे बचा लिया

एक वाक़िआ इब्ने असाकिर में है कि एक ख़ूबसूरत औरत से एक रईस ने मिलना चाहा, लेकिन औरत ने न माना। इस तरह तीन और शख़्सों ने भी उससे बदकारी का इरादा किया लेकिन वह बाज़ रही इस। पर वे रऊसा अकड़ गए और आपस में इत्तिफ़ाक़ करके हज़रत दाऊद अलैहि० की अदालत में जाकर सबने गवाही दी कि वह औरत अपने कुत्ते

से ऐसा काम कराती है। चारों के मुत्तफ़िक़ा बयान पर हुक्म हो गया कि उसे रजम किया जाए।

उसी शाम को हज़रत सुलैमान अलैहि० अपने हमउम्र लड़कों के साथ बैठकर आप हाकिम बने और चार लड़के उन लोगों की तरह आपके पास इस मुक़द्दमे को लाए और एक औरत की निस्बत यही कहा। हज़रत सुलैमान अलैहि० ने हुक्म दिया कि इन चारों को अलग-अलग कर दो। फिर एक को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि उस कुत्ते का रंग कैसा था? उसने कहा, स्याह। फिर दूसरे को तंहा बुलाया, उससे भी यही सवाल किया? उसने कहा, सुर्ख़। तीसरे ने कहा : ख़ाकी, चौथे ने कहा सफ़ेद। आपने उसी वक़्त फ़ैसला कर दिया कि औरत पर यह निरी तोहमत है और उन चारों को क़त्ल कर दिया जाए।

हज़रत दाऊद अलैहि० के सामने भी यह वाक़िआ बयान किया गया। आपने उसी वक़्त फ़िल फ़ौर उन चारों अमीरों को बुलाया और इसी तरह अलग-अलग उनसे उस कुत्ते के रंग की बाबत सवाल किया। ये गड़बड़ा गए। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा। आपको उनका झूठ मालूम हो गया और हुक्म फ़रमाया कि इन्हें क़त्ल कर दिया जाए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 388)

इब्ने मसऊद के घर से तहज्जुद के वक़्त एक ख़ास आवाज़ आती थी

हज़रत उमर रज़ि० मस्जिद में आते तो सुनते कि कोई कह रहा है कि ख़ुदाया! तूने पुकारा, मैंने मान लिया। तूने हुक्म दिया, मैं बजा लाया। यह सहर का वक़्त है, पस तू मुझे बख़्श दे। आपने कान लगाकर ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के घर से यह आवाज़ आ रही है। आपने उनसे पूछा। उन्होंने कहा, यही वह वक़्त है जिसके लिए हज़रत याक़ूब अलैहि० ने अपने बेटों से कहा था कि मैं तुम्हारे लिए थोड़ी देर बाद इस्तिग़फ़ार करूँगा। हदीस में है यह रात जुमा की रात थी।

एक शराबी के नाम हज़रत उमर रज़ि० का ख़त

अगर आप शराब के आदी हैं तो हज़रत उमर रज़ि० का यह ख़त पढ़ें, इंशाअल्लाह आपकी आदत छूट जाएगी।

हज़रत यज़ीद इब्ने असम रह० कहते हैं कि शाम देश का एक आदमी बहुत ताक़तवर और ख़ूब लड़ाई करने वाला था। वह हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में आया करता था। वह चन्द दिन हज़रत उमर रज़ि० को नज़र न आया तो फ़रमाया : फ़लाँ इब्ने फ़लाँ का क्या हुआ? लोगों ने कहाँ ऐ अमीरुल मोमिनीन! उसने तो शराब पीनी शुरू कर दी है और मुसलसल पी रहा है। हज़रत उमर रज़ि० ने अपने मुंशी को बुलाकर फ़रमाया, ख़त लिखो :

यह ख़त उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की तरफ़ से फ़लां बिन फ़लां के नाम।

सलामुन अलैक

मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो गुनाहों को माफ़ करने वाला, तौबा क़बूल करने वाला, सख़्त सज़ा देनेवाला और बड़ा इनाम व एहसान करनेवाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अपने साथियों से फ़रमाया : तुम लोग अपने भाई के लिए दुआ करो कि अल्लाह तआला उसके दिल को अपनी तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा दे और उसे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। जब उसके पास हज़रत उमर रज़ि० का ख़त पहुँचा तो वह उसे बार-बार पढ़ने लगा और कहने लगा, वह गुनाहों को माफ़ करने वाला, तौबा को क़बूल करने वाला और सख़्त सज़ा देने वाला है। (इस आयत में) अल्लाह ने मुझे अपनी सज़ा से डराया है और माफ़ करने का वादा भी फ़रमाया है।

अबू नईम की रिवायत में मज़ीद यह भी है कि उसे बार-बार पढ़ता रहा, फिर रोने लगा, फिर उसने शराब पीनी छोड़ दी और मुकम्मल तौर से छोड़ दी, जब हज़रत उमर रज़ि० को उसकी यह ख़बर पहुँची तो फ़रमाया, ऐसा किया करो। जब तुम देखो कि तुम्हारा भाई फिसल गया है तो उसे राहे रास्त पर लाओ और उसे अल्लाह की माफ़ी का यक़ीन दिलाओ और अल्लाह से दुआ करो कि वह उसे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, और

तुम उसके ख़िलाफ़ शैतान के मददगार न बनो। (और उसे अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न करो।) (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 366-367)

आप डरावना ख़्वाब देखकर घबरा जाते हैं तो यह नबवी नुस्ख़ा इस्तेमाल करें

जब कभी ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई नापसन्दीदा और डरावना ख़्वाब देखें, तो हरगिज़ किसी से बयान न कीजिए और उस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह की पनाह माँगिए। ख़ुदा ने चाहा तो उसके शर से महफ़ूज़ रहेंगे। हज़रत अबू सलमा रह० फ़रमाते हैं कि मैं नागवार ख़्वाबों की वजह से अकसर बीमार पड़ जाया करता था। एक रोज़ मैंने हज़रत अबू क़तादा रज़ि० से शिकायत की तो आप रज़ि० ने मुझे नबी करीम सल्ल० की यह हदीस सुनाई, "अच्छा ख़्वाब ख़ुदा की जानिब से होता है। अगर तुममें से कोई अच्छा ख़्वाब देखे तो अपने मुख़्लिस दोस्त के सिवा किसी और से बयान न करे और कोई नापसन्दीदा ख़्वाब देखे तो क़तअन किसी को न बताए, बल्कि जागते ही *अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर्रजीम* पढ़कर तीन बार बाईं जानिब थुत्कारे और करवट बदल ले तो वह ख़्वाब के शर से महफ़ूज़ रहेगा।"

नबी करीम सल्ल० आम तौर पर फ़ज्र की नमाज़ के बाद पालती मारकर बैठ जाते और लोगों से फ़रमाते कि जिसने जो ख़्वाब देखा हो बयान करे और ख़्वाब सुनने से पहले यह फ़रमाते : ख़्वाब की भलाई तुम्हें नसीब हो और उसकी बुराई से तुम महफ़ूज़ रहो, हमारे हक़ में ख़ैर हो और हमारे दुश्मनों के लिए वबाल हो, और हम्द व शुक्र ख़ुदा ही के लिए है जो तमाम जहानों का रब है।

कभी ख़्वाब में डर जाएँ या कभी परेशानकुन ख़्वाब देखकर परेशान हो जाएँ तो ख़ौफ़ और परेशानी दूर करने के लिए यह दुआ पढ़ें और अपने होशियार बच्चों को भी यह दुआ याद कराएँ:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ۔

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन ग़-ज़ बिही व इक़ाबिही व शर्रि-इबादिही व मिन ह-म ज़ातिश-शयातीनि व अयं-यहज़ुरून।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रज़ि० कहते हैं कि जब कोई ख़्वाब में डर जाता या परेशान हो जाता तो नबी करीम सल्ल० उसकी परेशानी दूर करने के लिए यह दुआ तल्क़ीन फ़रमातेः

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَ عِقَابِهٖ وَ شَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ۔

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन ग़-ज़ बिही व-इक़ाबिही व शर्रि-इबादिही व मिन ह-म ज़ातिश-शयातीनि व अयं-यहज़ुरून। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

मैं .ख़ुदा के कलिमाते कामिला की पनाह माँगता हूँ उसके ग़ज़ब व ग़ुस्से से, उसकी सज़ा से, उसके बन्दों की बुराई से, शयातीन के वसवसों से और इस बात से कि वह मेरे पास आएँ।

(रियाज़ुस्सालेहीन, मुस्लिम, आदाबे ज़िंदगी, पेज : 50-51)

काबा पर पर्दे की इब्तिदा कैसे हुई?

गिरामी क़द्र हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

सवाल : बाद सलाम अर्ज़ गुज़ारिश है कि कई अर्से से मेरे क़ल्ब में यह सवाल जगह पकड़े हुए है कि काबा पर ग़िलाफ़ (पर्दा) की इब्तिदा कैसे हुई? कौन-सा सबब पेश आ गया? बराए करम तसल्ली बख़्श जवाब इनायत फ़रमाएँ; ऐन नवाज़िश होगी। फ़क़त, वस्सलाम।

आपकी दीनी बहन, मुम्बई-8

जवाब : एक बादशाह को हासिदों ने मश्विरा दिया कि इस बैतुल्लाह को गिरा दो। रास्ते में उसे यहूदी उलमा ने कहा, अगर अपनी और अपने ख़ानदान की सलामती चाहता है तो ऐसा मत कर। वह काम कर जो यहाँ किए जाते हैं— एहराम व तवाफ़ व सई व हलक़ व ज़िब्ह व नमाज़, ज़िक्र, रोना, दुआ वग़ैरह। दिल उसका मान गया। हासिदों को क़त्ल करा दिया। हज वाले सारे काम किए। फिर ख़्वाब में देखा कि उस घर पर पर्दा डाला गया, उसने पर्दा डाला। दूसरे ख़्वाब में उससे अच्छा पर्दा डालने का हुक्म हुआ। और उसने ऐसा ही किया। तीसरे ख़्वाब में उससे भी

अच्छे पर्दे का हुक्म हुआ, उसने उस हुक्म को भी पूरा कर दिया। उस वक़्त से पर्दा बैतुल्लाह का शुरू हुआ जिसने बैतुल्लाह की हुरमत को क़ायम रखा। ख़ुदा ने उसकी नस्ल को बाक़ी रखा, और जो बैतुल्लाह की हुरमत को गिराएगा उसका हश्र जीशे अबरहा की तरह होगा।

(माख़ज़ जवाब : ख़ुसूसी तक़ारीर हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब, पेज 125-126)

हर ग़म से नजात हासिल करने का बेहतरीन हज़रमी नुस्ख़ा

इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन वलीद रह० किताबुद-दुआ में मुतरफ़ बिन अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं। वे फ़रमाते हैं कि मैं ख़लीफ़ा मंसूर के पास गया तो उन्हें सख़्त ग़मज़दा पाया। वह अपने बाज़ अहबा को खोने की वजह से चुप साधे बैठे थे। उन्होंने मुझे कहा, "ऐ मुतरिफ़! मुझ पर ऐसा ग़म सवार हो चुका है जिसे अल्लाह तआला के सिवा—जिसने मुझे आज़माइश में डाला है, कोई दूर नहीं कर सकता। क्या कोई ऐसी दुआ है जिसे पढ़ने की बरकत से अल्लाह तआला मुझसे ग़म को दूर फ़रमा दे? मैंने जवाब दिया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे मुहम्मद बिन साबित रह० ने बताया है कि बसरा के रहने वाले एक शख़्स के कान में मच्छर घुस गया और उसके दिमाग़ तक जा पहुँचा। वह शख़्स सख़्त तकलीफ़ में मुब्तला था और दिन रात नींद से महरूम था, तब उसे हज़रत हसन बसरी रह० के साथियों में से एक ने कहा, "हुज़ूर अकरम सल्ल० के सहाबी हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० वाली दुआ पढ़ो जो उन्होंने जंगल और समुन्द्र में पढ़ी थी तो अल्लाह तआला ने उनकी नुसरत फ़रमाई थी।" बीमार शख़्स ने कहा, "अल्लाह जल्ले जलालुहू तुम पर रहम करे, वह कौन-सी दुआ है?"

उन्होंने कहा, "हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० को एक लश्कर के साथ बहरैन की तरफ़ भेजा गया, मैं भी उस लश्कर में शामिल था। हम एक वीरान सहरा में से गुज़रे जहाँ सख़्त प्यास ने हमें इतना सताया कि हमें हलाकत का ख़ौफ़ होने लगा। तब हज़रत अला रज़ि० सवारी से उतरे और उन्होंने दो रकअत नमाज़ अदा की फिर कहा : *या हलीमु या अलीमु या अलिय्यु या अज़ीमु*

असक़िना (हमें सैराब फ़रमा)। पस उसी वक़्त एक बदली आई जैसे किसी परिन्दे का पर हो, वह हम पर ख़ूब बरसी यहाँ तक कि हमने बर्तन भी भर लिए और अपने जानवरों को भी सैराब कर लिया।

फिर हम चल पड़े यहाँ तक कि एक समुन्द्री ख़लीज पर पहुंचे जो इस क़दर गहरी थी कि उस दिन से पहले और न उस दिन के बाद उसमें कोई दाख़िल हुआ। हमें वहाँ कोई कश्ती नहीं मिली तो हज़रत अला रज़ि० ने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया : *या हलीमु या अलीमु या अलिय्यु या अज़ीमु अजिरना* (हमें पार फ़रमा), फिर उन्होंने अपने घोड़े की लगाम पकड़ी और फ़रमाया *"अल्लाह जल्ले जलालुहू* के नाम से पार करो।" हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम पानी पर चल रहे थे, ब ख़ुदा हममें किसी के पाँव या हमारे किसी जानवर के खुर तक गीले नहीं हुए। यह हमारा लश्कर चार हज़ार नुफ़ूस पर मुश्तमिल था।

यह वाक़िआ सुनकर बीमार आदमी ने उन असमा के ज़रिये दुआ की। अल्लाह तआला की क़सम हम अभी वहीं थे कि मच्छर उसके कान से निकल गया, वह भिनभिना रहा था यहाँ तक कि दीवार से जा टकराया और वह आदमी ठीक हो गया।

यह सुनकर ख़लीफ़ा मंसूर क़िबला रू हुए और उन्होंने थौड़ी देर उन असमा के ज़रिये दुआ माँगी। फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे कि ऐ मुतरफ़! अल्लाह तआला ने मेरे ग़म को दूर फ़रमा दिया है। फिर उन्होंने खाना मँगवाया और मुझे अपने साथ बिठा लिया और मैंने उनके साथ खाना खाया। (हयातुल हैवान, जिल्द 1, पेज 190)

हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत के आख़िर में यह भी है कि जिहाद से वापसी पर हज़रत अला रज़ि० इंतिक़ाल फ़रमा गए। हमने उन्हें ग़ुस्ल व कफ़न के बाद क़ब्र खोदकर दफ़ना दिया। दफ़न के बाद एक मक़ामी शख़्स आया और कहने लगा यह (मदफ़ून) कौन हैं? हमने कहा यह एक बेहतरीन इंसान अला बिन हज़रमी रज़ि० हैं। उसने कहा, यह ज़मीन मुर्दों को बाहर उगल देती है। तुम लोग इन्हें अगर मील-दो-मील दूर ले जाओ तो वहाँ की ज़मीन मुर्दों को क़बूल करती है। हमने कहा कि हमारे साथी (हज़रत अला रज़ि०) का क्या क़ुसूर है कि हम इन्हें दरिन्दों का लुक़्मा बनाकर छोड़ जाएँ? चुनांचे हमने क़ब्र खोदने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया। जब हमने क़ब्र खोदी तो हज़रत अला रज़ि० उसमें मौजूद नहीं थे और

क़ब्र ताहद नज़र नूर से जगमगा रही थी। हमने यह देखकर वापस मिट्टी डाल दी और अपने सफ़र पर रवाना हो गए। (इब्ने कसीर फ़िल बिदाया वन्नहाया)

अल्लाह तआला की चन्द नेमतों का तज़्किरा

अल्लाह तआला की यूँ तो बेशुमार और अनगिनत नेमतें हैं, लेकिन चन्द बड़ी-बड़ी नेमतों का यहाँ ज़िक्र हो रहा है कि वह आसमान से बक़द्रे हाजत व ज़रूरत बारिश बरसाता है। न तो बहुत ज़्यादा कि ज़मीन ख़राब हो जाए और पैदावार सड़-गल जाए। और न बहुत कम कि फल-अनाज वग़ैरह पैदा ही न हों, बल्कि इस अंदाज़ से कि खेती सरसब्ज़ रहे। बाग़ात हरे-भरे रहें। हौज़, तालाब, नहरें, नदियाँ, नाले, दरिया बह निकलें। न पीने की कमी हो, न पिलाने की; यहाँ तक कि जिस जगह बारिश की ज़्यादा ज़रूरत होती है, ज़्यादा होती है, और जहाँ कम की, कम होती है और जहाँ की ज़मीन इस क़ाबिल ही नहीं होती वहाँ पानी नहीं बरसता। लेकिन नदियों और नालों के ज़रिए वहाँ क़ुदरत बरसाती पानी पहुँचाकर वहाँ की ज़मीन को सेराब कर देती है।

सुब्हानल्लाह! उस लतीफ़ व ख़बीर ग़फ़ूर व रहीम ख़ुदा की क्या-क्या क़ुदरतें और हिक्मतें हैं। ज़मीन में ख़ुदा पानी को ठहरा देता है ज़मीन में उसके चूस लेने और जज़्ब करने की क़ाबिलियत ख़ुदा तआला पैदा कर देता है ताकि दानों को और गुठलियों को अंदर-ही-अंदर वह पानी पहुंचा दे।

फिर फ़रमाता है हम उसके ले जाने और दूर कर देने पर, यानी न बरसाने पर भी क़ादिर हैं। अगर चाहें शोर-संगलाख़ ज़मीन पर और पहाड़ों और बेकार जंगलों में बरसा दें। अगर चाहें पानी को कड़वा कर दें, न पीने के क़ाबिल रहे न पिलाने के, न खेत और बाग़ात के मतलब का रहे, न नहाने-धोने के मक़्सद का। अगर चाहें ज़मीन में वह क़ुव्वत ही न रखें कि वह पानी को जज़्ब कर ले, चूस ले, बल्कि ऊपर ही ऊपर-तैरता रहे। फिर यह भी हमारे इख़्तियार में है कि ऐसी दूर-दराज़ झीलों में पानी पहुँचा दें कि तुम्हारे लिए बेकार हो जाए और तुम कोई फ़ायदा उससे न उठा सको। यह ख़ास ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम और उसका लुत्फ़ व रहम है कि वह बादलों से मीठा उम्दा हल्का और ख़ुश ज़ाइक़ा पानी बरसाता है। फिर

उसे ज़मीन में पहुँचाता है और इधर-उधर रेल-पेल कर देता है, खेतियां अलग पकती हैं, बाग़ात अलग तैयार होते हैं, ख़ुद पीते हो, अपने जानवरों को पिलाते हो, नहाते-धोते हो, पाकीज़गी और सुथराई हासिल करते हो। फ़-अलहम्दुलिल्लाह! आसमानी बारिश से रब्बुल आलमीन तुम्हारे लिए रोज़ियाँ उगाता है। लहलहाते हुए खेत हैं, कहीं सरसब्ज़ बाग़ हैं, जो अलावा ख़ुशनुमा और ख़ुशमंज़र होने के मुफ़ीद और फ़ैज़ वाले हैं। खजूर, अंगूर जो अहले अरब का दिलपसन्द मेवा है और इसी तरह हर मुल्कवालों के लिए अलग-अलग तरह-तरह के मेवे उसने पैदा कर दिए हैं जिनकी पूरी शुक्रगुज़ारी भी किसी के बस की नहीं, बहुत मेवे तुम्हें उसने दे रखे हैं जिनकी ख़ूबसूरती भी तुम देखते हो और ख़ुशज़ाइक़ी से भी खाकर फ़ायदा उठाते हो।

फिर चौपायों का ज़िक्र हो रहा है और उनसे जो फ़वाइद इंसान उठा रहे हैं उन नेमतों का इज़्हार हो रहा है कि उनका दूध पीते हैं, उनका गोश्त खाते हैं, उनके बालों और ऊन से लिबास वग़ैरह बनाते हैं, उन पर सवार होते हैं, उन पर अपना सामान व असबाब लादते हैं और दूर-दराज़ तक पहुंचते हैं कि अगर ये न होते तो वहाँ तक पहुँचने में जान आधी रह जाती। बेशक अल्लाह तआला बन्दों पर मेहरबान और रहमत वाला है। जैसे फ़रमान है : *"अ-व-लम् यरौ अन्ना ख़लक़ना लहुम्"* (आख़िर तक) क्या वे नहीं देखते कि ख़ुद हमने उन्हें चौपायों का मालिक बना रखा है कि यह उनके गोश्त खाएँ और उन पर सवारियाँ लें और तरह-तरह के नफ़े हासिल करें। क्या अब भी उन पर हमारी शुक्रगुज़ारी वाजिब नहीं। यह ख़ुश्की की सवारियाँ हैं, फिर तरी की सवारियाँ कश्ती, जहाज़ वग़ैरह अलग हैं।"

"ऐ मेरे बन्दो! तुमने मेरी क़द्र न की, न कर रहे हो। मैंने तुम्हारे लिए आसमान व ज़मीन बनाए, सूरज को तुम्हारा बावरची बनाया, चाँद को तुम्हारा हलवाई बनाया, चाँद की किरणों से फलों में मिठास पैदा की, ज़मीन को हुक्म दिया कि मेरे बन्दों के लिए निकालती रह अपने पानी को भी, अपने ख़ज़ानों को भी, अपने दफ़ीनों को भी। हवा को हुक्म दिया कि ठंडी होकर भी चल, गर्म होकर भी चल, आहिस्ता भी चल, तेज़ भी चल। दरख़्तों को हुक्म दिया कि फल निकालो, परिन्दों को हुक्म दिया कि उनकी ज़रूरियात का सामान मुहय्या करो। गाय-भैंसों को हुक्म दिया कि

उनको दूध पिलाओ, घोड़े-ख़च्चर को हुक्म दिया कि उनके सामान उठाकर चलो। तुम गाय को सब्ज़ घास खिलाते हो, अंदर ख़ून बनता है सुर्ख़, गोबर बनता है पीला, गोबर भी नापाक, ख़ून भी नापाक, पीली और सुर्ख़ गन्दगी के दर्मियान सफ़ेद पाक दूध का कारख़ाना अल्लाह ही लगाता है। सारे जहाँ को हमारी ख़िदमत पर लगा दिया, हमसे कह दिया कि मेरी भी मान लेना कुछ, दुनिया में जाकर मुझे मत भूल जाना।"

पर्दे का हुक्म उलमा का ईजाद करदा नहीं है बल्कि यह अल्लाह का हुक्म है जो क़ुरआन से साबित है

क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला का इरशाद है :

"ऐ नबी! अपनी बीवियों से और अपनी साहबज़ादियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वे अपने ऊपर अपनी चादर लटका लिया करें। (सूरह अहज़ाब, आयत 59)

जलाबीब, जिलबाब की जमा है। जो ऐसी बड़ी चादर को कहते हैं जिससे पूरा बदन ढक जाए, अपने ऊपर चादर लटकाने से मुराद अपने चेहरे पर इस तरह घूँघट निकालना है कि जिससे चेहरे का बेशतर हिस्सा भी छुप जाए और नज़रें झुकाकर चलने से उसे रास्ता भी नज़र आता जाए। दीगर इस्लाम मुमालिक में बुर्क़े की जो मुख़्तलिफ़ सूरतें है, अहदे रिसालत में ये बुर्क़े आम नहीं थे, फिर बाद में मुआशिरत में वह सादगी नहीं रही जो अहदे रिसालत और सहाबा व ताबईन के दौर में थी। औरतें निहायत सादा लिबास पहनती थीं। बनाव, शृंगार और ज़ेब व ज़ीनत के इज़्हार का कोई जज़्बा उनके अंदर नहीं होता था। इसलिए एक बड़ी चादर से भी पर्दे के तक़ाज़े पूरे हो जाते थे, लेकिन बाद में यह सादगी नहीं रही। इसकी जगह तजम्मुल और ज़ीनत ने ले ली और औरतों के अंदर ज़ौक़ बर्क़ लिबास और ज़ेवरात की नुमाइश आम हो गई जिसकी वज़ह से चादर से पर्दा करना मुश्किल हो गया और उसकी जगह मुख़्तलिफ़ अंदाज़ के बुर्क़े आम हो गए– गो इससे बाज़ दफ़ा औरत को बिलख़ुसूस सख़्त गर्मी में कुछ दिक़्क़त भी महसूस होती है लेकिन यह ज़रा-सी तकलीफ़ शरीअत के तक़ाज़ों के मुक़ाबले में कोई अहमियत नहीं रखती। ताहम जो औरत बुर्क़े के बजाये पर्दे के लिए बड़ी चादर इस्तेमाल करती है और पूरे बदन को ढाँकती और चेहरे पर सही मानों में घूंघट

निकालती हैं, वह यक़ीनन पर्दे के हुक्म को बजा लाती है। क्योंकि बुर्क़े की कोई मख़्सूस शक्ल ऐसी लाज़िमी शै नहीं है जिसे शरीअत ने पर्दे के लिए लाज़िमी क़रार दिया हो। लेकिन आजकल औरतों ने चादर को बेपर्दगी इख़्तियार करने का ज़रिया बना लिया है। पहले वे बुर्क़े की जगह चादर ओढ़ना शुरू करती हैं, फिर चादर भी ग़ायब हो जाती है, सिर्फ़ दुपट्टा रह जाता है और बाज़ औरतों के लिए इसका लेना भी गिराँ होता है। इस सूरते हाल को देखते हुए कहना पड़ता है कि अब बुर्क़े का इस्तेमाल ही सही है क्योंकि जब से बुर्क़े की जगह चादर ने ली है, बेपर्दगी आम हो गई है, बल्कि औरतें नीम बरहंगी पर भी फ़ख़्र करने लगी हैं। बहरहाल इस आयत में नबी करीम सल्ल० की बीवियों, बेटियों और आम मोमिन औरतों को घर से बाहर निकलते वक़्त पर्दे का हुक्म दिया गया है जिससे वाज़ेह है कि पर्दे का हुक्म उलमा का ईजाद करदा नहीं है जैसा कि आजकल बाज़ लोग बावर कराते हैं या उसको क़रारे वाक़ई अहमियत नहीं देते, बल्कि यह अल्लाह का हुक्म है जो क़ुरआन करीम की नस से साबित है। इसलिए ऐराज़, इंकार और बेपर्दगी पर इसरार कुफ़्र व फ़िस्क़ तक पहुँचा सकता है। (तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 1192-1193)

किसी का नाम लेकर सलाम करना क़ियामत की अलामत है

मज्लिस में जाएँ तो पूरी मज्लिस को सलाम कीजिए। मख़्सूस तौर पर किसी का नाम लेकर सलाम न कीजिए। एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० मस्जिद में थे कि एक साइल आया और उसने आपका नाम लेकर सलाम किया। हज़रत ने फ़रमाया, ख़ुदा ने सच फ़रमाया और रसूलुल्लाह सल्ल० ने तब्लीग़ का हक़ अदा कर दिया, और फिर आप घर में तशरीफ़ ले गए। लोग इंतिज़ार में बैठे रहे कि आपके फ़रमाने का मतलब क्या है? ख़ैर जब आप आए तो हज़रत तारिक़ रज़ि० ने पूछा : हज़रत! हम लोग आपकी बात का मतलब नहीं समझ सके। तो फ़रमाया, नबी करीम सल्ल० का इरशाद है कि क़यामत के क़रीब लोग मज्लिसों में लोगों को मख़्सूस करके सलाम करने लगेंगे। (अल अदबुल मुफ़रद, आदाबे ज़िंदगी)

बनी उमैया के बाज़ मकानात में चांदी का एक डिब्बा मिला जिस पर सोने का ताला लगा हुआ था और उस पर लिखा हुआ था

"हर बीमारी से शिफ़ा इस डिब्बे में है"

इमाम शाफ़ई रह० से रिवायत है कि बनी उमैया के बाज़ मकानात में चांदी का एक डिब्बा मिला, जिस पर सोने का ताला लगा हुआ था और उस पर लिखा हुआ था—"हर बीमारी से शिफ़ा इस डिब्बे में है"—उसमें यह दुआ लिखी हुई थी :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اُسْكُنْ اَيُّهَا الْوَجَعُ سَكَّنْتُكَ بِالَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اُسْكُنْ اَيُّهَا الْوَجَعُ سَكَّنْتُكَ بِالَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا.

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि इस दुआ के बाद मैं कभी तबीअत का मोहताज नहीं हुआ। यह दुआ दर्द सर के लिए मुफ़ीद व मुजर्रब है। (हयातुस-सहाबा, जिल्द 1, पेज 40)

माँ-बाप अपनी औलाद के साथ तीन सुलूक करें इंशाअल्लाह औलाद कभी नाराज़ न होगी

एक बार हज़रत मुआविया रज़ि० ने अहनफ़ बिन क़ैस रज़ि० से पूछा कि कहिए औलाद के सिलसिले में क्या सुलूक होना चाहिए? अहनफ़ बिन क़ैस रज़ि० ने कहा : अमीरुल मोमिनीन! औलाद हमारे क़बूल का समरा हैं, कमर की टेक हैं, हमारी हैसियत उनके लिए ज़मीन की तरह है जो निहायत नर्म और बेज़रर है। हमारा वुजूद उनके लिए सायाफ़िगन

आसमान की तरह है। हम उन्हीं के ज़रिए बड़े-बड़े काम अंजाम देने की हिम्मत करते हैं।

1. अगर वे आपसे कुछ मुतालबा करें तो उनको ख़ूब दीजिए।
2. अगर कभी गिरफ़्ता दिल हों तो उनके दिलों का ग़म दूर कीजिए। नतीजे में वे आपसे मुहब्बत करेंगे। आपकी पिदराना कोशिशों को पसन्द करेंगे।
3. कभी उन पर नाक़ाबिले बरदाश्त बोझ न बनिए कि वे आपकी ज़िंदगी से उक्ता जाएँ और आपकी मौत के ख़्वाहाँ हों, आपके क़रीब आने से नफ़रत करें।

हज़रत मुआविया रज़ि० यह हकीमाना बातें सुनकर बहुत मुतास्सिर हुए और फ़रमाया : "अहनफ़! ख़ुदा की क़सम जिस वक़्त आप मेरे पास आकर बैठे, मैं यज़ीद के ख़िलाफ़ ग़ुस्से में भरा बैठा था।"

फिर जब हज़रत अहनफ़ रज़ि० तशरीफ़ ले गए तो हज़रत मुआविया रज़ि० का ग़ुस्सा ठंडा हो गया और यज़ीद से राज़ी हो गए और उसी वक़्त यज़ीद को दो सौ दिरहम और दो सौ जोड़े भिजवाए। यज़ीद के पास जब यह तोहफ़े पहुँचे तो यज़ीद ने ये तोहफ़े दो बराबर हिस्सों में तक़्सीम करके सौ दिरहम और सौ जोड़े हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस रज़ि० की ख़िदमत में भिजवा दिए। (आदाबे ज़िंदगी, पेज 164)

सुल्तान मलिक शाह का मिसाली इंसाफ़

सलजूक़ी सल्तनत का एक बादशाह सुल्तान मलिक शाह नामी हुआ है। एक दिन अस्फ़हान के जंगल में शिकार को निकला। एक गांव से गुज़र रहा था कि शाही आदमियों को भूख लगी। एक ग़रीब बुढ़िया की गाय बंधी हुई थी जिसके दूध से बुढ़िया के तीन बच्चे पलते थे। उन्होंने उसको ज़िब्ह किया और ख़ूब कबाब बनाकर खाए। बुढ़िया रोई-पीटी चिल्लाई, मगर किसी ने परवा न की। दिल में कहने लगी कि बादशाह से क्यों न फ़रियाद की जाए। एक दिन ख़बर मिली कि बादशाह नहर के पुल से गुज़रेगा। वह वहाँ जाकर खड़ी हो गई। बादशाह की सवारी वहाँ पहुँची तो उसने आगे बढ़कर घोड़ी की लगाम थाम ली। कहने लगी, "बादशाह सलामत! मेरा इंसाफ़ नहर के पुल पर कीजिएगा या पुलसिरात पर?"

बादशाह के हमराही बुढ़िया की जुर्रत देखकर हैरान हो गए और उसको वहाँ से हटाना चाहा। लेकिन बादशाह घोड़े पर से उतर पड़ा कहने लगा, "पुलसिरात की ताक़त नहीं, यहीं इंसाफ़ करूँगा।"

बुढ़िया ने सारा माजरा कह सुनाया। बादशाह को बहुत अफ़सोस हुआ जिन लोगों का क़ुसूर था उनको सज़ा दी और बुढ़िया को एक गाय के एवज़ सत्तर गायें अता कीं। बुढ़िया बहुत ख़ुश हुई और कहने लगी, "ऐ बादशाह तूने मेरे साथ इंसाफ़ किया, ख़ुदा इसका बदला तुझे देगा।" इंसाफ़ दिलाने वाला बादशाह ख़ुदा की रहमत में होता है। (तामीरे हयात, जिल्द 42, पेज 21)

क़सम खाने से सामान तो बिक जाता है लेकिन बरकत ख़त्म हो जाती है, बयान में क़समें खाने से लोग तो ख़ुश हो जाते हैं मगर रूहानियत ख़त्म हो जाती है

हज़रत अबू मतर रह० कहते हैं कि एक दिन मैं मस्जिद से बाहर निकला तो एक आदमी ने मुझे पीछे से आवाज़ देकर कहा, "अपनी लुंगी ऊँची कर ले क्योंकि लुंगी ऊँचा करने से पता चलेगा कि तुम अपने रब से ज़्यादा डरने वाले हो और इससे तुम्हारी लुंगी ज़्यादा साफ़ रहेगी, और अपने सर के बाल साफ़ कर ले अगर तू मुसलमान है।" मैंने मुड़कर देखा तो वह हज़रत अली रज़ि० थे और उनके हाथ में कोड़ा भी था।

फिर हज़रत अली रज़ि० चलते-चलते ऊंटों के बाज़ार में पहुँच गए तो फ़रमाया : "बेचो ज़रूर! लेकिन क़सम न खाओ क्योंकि क़सम खाने से सामान तो बिक जाता है लेकिन बरकत ख़त्म हो जाती है।"

फिर एक खजूरवाले के पास आए तो देखा कि एक ख़ादिमा रो रही है। हज़रत अली रज़ि० ने उससे पूछा कि क्या बात है? उस ख़ादिमा ने कहा इसने मुझे एक दिरहम की खजूरें दीं लेकिन मेरे आक़ा ने इन्हें लेने से इंकार कर दिया है। हज़रत अली रज़ि० ने खजूर वाले से कहा, तुम इससे खजूरें वापस ले लो और इसे दिरहम दे दो क्योंकि यह तो बिल्कुल बेइख़्तियार है (अपने मालिक की मर्ज़ी के बग़ैर कुछ नहीं कर सकती)। वह लेने से इंकार करने लगा। अबू मतर ने कहा, क्या तुम जानते हो, यह कौन हैं? उस आदमी ने कहा नहीं। मैंने कहा, यह हज़रत अली, अमीरुल

मोमिनीन रज़ि० हैं। उसने फ़ौरन खजूरें लेकर अपनी खजूरों में डाल लीं और उसे एक दिरहम दे दिया और कहा, "ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं चाहता हूँ कि आप मुझसे राज़ी रहें।" हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, "जब तुम लोगों को पूरा दोगे तो मैं तुमसे बहुत ज़्यादा राज़ी रहूँगा।" फिर खजूर वालों के पास से गुज़रते हुए फ़रमाया, "मिस्कीन को खिलाया करो, इससे तुम्हारी कमाई बढ़ जाएगी।"

फिर मछलीवालों के पास पहुँच गए तो फ़रमाया, "हमारे बाज़ार में वह मछली नहीं बिकनी चाहिए जो पानी में मरकर ऊपर तैरने लग गई हो।"

फिर आप कपड़े के बाज़ार में पहुँच गए। यह खद्दर का बाज़ार था। एक दुकानदार से कहा, "ऐ बड़े मियाँ! मुझे एक कमीज तीन दिरहम की दे दो।' उस दुकानदार ने हज़रत अली रज़ि० को पहचान लिया तो उससे क़मीज न ख़रीदी। फिर दूसरे दुकानदार के पास गए, जब उसने भी पहचान लिया तो उससे भी न ख़रीदी, फिर एक नौजवान लड़के से तीन दिरहम की क़मीज ख़रीदी (वह हज़रत अली रज़ि० को न पहचान सका), और उसे पहन लिया, उसकी आस्तीन गट्टे तक लम्बी थी और ख़ुद क़मीज टख़ने तक थी। फिर असल दुकानदार कपड़ों का मालिक आ गया तो उसे लोगों ने बताया कि तेरे बेटे ने अमीरुल मोमिनीन के हाथ तीन दिरहम में क़मीज बेची है। तो उसने बेटे से कहा, तुमने उनसे दो दिरहम क्यों न लिए, चुनांचे वह दुकानदार एक दिरहम लेकर हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि यह दिरहम ले लें। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, क्या बात है? उसने कहा कि इस क़मीज की क़ीमत दो दिरहम थी; मेरे बेटे ने आपसे तीन दिरहम ले लिए। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : उसने अपनी रज़ामंदी से तीन दिरहम में बेची और मैंने अपनी ख़ुशी से तीन में ख़रीदी है। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 712-713)

जिसके पास ईमान की दौलत है उससे बढ़कर कोई दौलतमंद नहीं हो सकता

एक बुज़ुर्ग जा रहे थे। बुज़ुर्गों का यही हाल होता है कि लिबास की कुछ ज़्यादा ख़बर नहीं होती। बस जैसा मिल गया पहन लिया। कभी

शाहाना लिबास, कभी फटे-पुराने कपड़े। वे बुज़ुर्ग फटे-पुराने कपड़ों में चले जा रहे थे। एक शहर सामने आया तो सारे शहर के दरवाज़े बन्द। अब हज़ारों गाड़ियाँ अंदर जाने वाली, वह बाहर रुकी हुई हैं और अंदर की अंदर, तिजारत और कारोबार भी सब बन्द। उन्होंने लोगों से पूछा कि भई यह दरवाज़े क्यों बन्द हो गए।

लोगों ने कहा कि इस शहर का जो बादशाह है उसका बाज़ खो गया है। बाज़ एक परिन्दा होता है जिससे चिड़ियों का शिकार करते हैं वह खोया गया है तो बादशाह ने कहा, चूंकि बाज़ खो गया, इसलिए शहर के दरवाज़े बन्द करो और उसे कहीं से पकड़ लाओ।

उन्होंने कहा, कैसा अहमक़ बादशाह है। भई! परिन्दे को इससे क्या मतलब कि दरवाज़े बन्द किए जाएँ। वह उड़कर बाहर नहीं चला जाएगा? उसे दरवाज़े की क्या ज़रूरत है? ऐसा अहमक़ आदमी है। परिन्दे को अगर पकड़ना था तो शहर पे जाल लगा देता कि ऊपर से उड़कर न निकले। दरवाज़े बन्द कराने की कौन सी तुक है? और उस बुज़ुर्ग ने कहा, या अल्लाह यह तेरी अजीब क़ुदरत है कि इस कुन्दा ना-तराश को तूने बादशाह बना दिया, जिसको यह भी तमीज़ नहीं कि बाज़ को रोकने के लिए जाल डालना चाहिए या शहर के दरवाज़े बन्द कराने चाहिएँ और मुझ जैसे आलिम-फ़ाज़िल को भीख मंगा बना रखा है कि जूतियाँ चटख़ाते फिर रहा हूँ। कोई पूछता नहीं, अजब तेरी क़ुदरत है और तेरा निज़ाम कि उस अहमक़ को सल्तनत दे दी और मुझे जूतियाँ चटख़ाने के लिए छोड़ दिया।

उस बुज़ुर्ग के दिल में यह वसवसा गुज़रा। हक़ तआला की तरफ़ से इल्हाम हुआ कि क्या तुम इसके लिए तैयार हो कि तुम्हारे दिल की, ईमान की दौलत उस बादशाह को दे दें और उसकी सल्तनत तुम्हें दे दें।

थर्रा गए। अर्ज़ किया नहीं, या अल्लाह! मैं ईमान नहीं देना चाहता।

फ़रमाया इतनी बड़ी दौलत दे दी फिर भी बेवक़ूफ़ अपने को भीखमंगा समझ रहा है। यह दौलते ज़ाहिरी जिसके पास है वह कल को ख़त्म होगी, जिसके पास ईमान है वह दौलत है जो अब्दल-अबाद तक चलने वाली है, तो तुझे अबदी दौलत दी और उसे आरज़ी दौलत दी, तूने उसकी क़दर न की।

फिर तौबा की और कहा कि या अल्लाह! मुझसे ग़लती हो गई, मुझे

माफ़ कर। वाक़ई तूने मुझे दौलतमंद बनाया। जिसके पास ईमान की दौलत है उससे बढ़कर कौन दौलतमंद है? दुनिया की दौलत आग तक जाने वाली है। मुसलमानों को अगर माद्दी दौलत मिले तो शुक्र अदा करना चाहिए कि ईमान की दौलत अलग दी और दुनिया की दौलत भी दी। (ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम, जिल्द 3, पेज 326-327)

इम्तेहान आशिक़ का होता है, मुनाफ़िक़ का नहीं

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० के तर्जुमे में यह वाक़िआ ज़िक्र किया है कि आपको रूमी कुफ़्फ़ार ने क़ैद कर लिया और अपने बादशाह के पास पहुँचा दिया। उसने आपसे कहा कि तुम नसरानी बन जाओ, मैं तुम्हें अपने राज-पाट में शरीक कर लेता हूँ और अपनी शाहज़ादी तुम्हारे निकाह में देता हूँ। सहाबी रज़ि० ने जवाब दिया कि यह तो क्या? अगर तू अपनी तमाम बादशाहत मुझे दे दे और तमाम अरब का राज भी मुझे सौंप दे और यह चाहे कि मैं एक आँख झपकने के बराबर भी दीने मुहम्मदी से फिर जाऊँ, तो यह नामुमकिन है। बादशाह ने कहा, फिर मैं तुझे क़त्ल करूँगा। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने जवाब दिया कि हाँ, यह तुझे इख़्तियार है।

चुनांचे उसी वक़्त हुक्म दिया और उन्हें सलीब पर चढ़ा दिया गया और तीरंदाज़ों ने क़रीब से बहुक्मे बादशाह उनके हाथ-पाँव और जिस्म छेदना शुरू किया। बार-बार कहा जाता था कि अब भी नसरानियत क़बूल कर लो, मगर आप पूरे इस्तक़लाल और सब्र से फ़रमाते जाते कि हरगिज़ नहीं। आख़िर बादशाह ने कहा कि इसे सूली से उतार लो। फिर हुक्म दिया कि पीतल की देग या पीतल की बनी हुई गाय ख़ूब तपाकर आग बनाकर लाई जाए। चुनांचे वह पेश हुई। बादशाह ने एक और मुसलमान क़ैदी की बाबत हुक्म दिया कि इसे इसमें डाल दो। उसी वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की मौजूदगी में आपके देखते हुए उस मुसलमान क़ैदी को उसमें डाल दिया गया। वह मिस्कीन उसी वक़्त चुरमुर होकर रह गए, गोश्त-पोस्त जल गया, हड्डियाँ चमकने लगीं।

फिर बादशाह ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से कहा, "देखो, अब भी हमारी मान लो और हमारा मज़हब क़बूल कर लो, वरना इस आग की देग में तुम्हें भी डाल कर जला दिया जाएगा।" आपने फिर भी अपने

ईमानी जोश से काम लेकर फ़रमाया कि नामुमकिन है कि मैं ख़ुदा तआला के दीन को छोड़ दूँ। उसी वक़्त बादशाह ने हुक्म दिया कि इन्हें चरख़ी पर चढ़ाकर इसमें डाल दो, जब यह उस आग की देग में डाले जाने के लिए चरख़ी पर उठाए गए तो बादशाह ने देखा कि उनकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं। उसी वक़्त उसने हुक्म दिया कि रुक जाओ। उन्हें अपने पास बुला लिया इसलिए कि उसे उम्मीद बँध गई थी कि शायद इस अज़ाब को देखकर अब उसके ख़यालात पलट गए हैं, मेरी मान लेगा और मेरा मज़हब क़बूल करके मेरी दामादी में आकर मेरी सल्तनत का साझी बन जाएगा।

लेकिन बादशाह की यह तमन्ना और यह ख़्याल महज़ बेसूद निकला। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं सिर्फ़ इस वजह से रोया था कि आह! आज एक ही जान है जिसे राहे ख़ुदा तआला में इस अज़ाब के साथ मैं क़ुरबान कर रहा हूँ। काश कि मेरे रोएँ-रोएँ में एक-एक जान होती कि आज मैं सब जानें राहे ख़ुदा में इसी तरह एक-एक करके फ़िदा करता।

बाज़ रिवायतों में है कि आपको क़ैदख़ाने में रखा, खाना-पीना बन्द कर दिया। कई दिन के बाद शराब और ख़िन्ज़ीर का गोश्त भेजा, लेकिन आपने उस भूख पर भी उसकी तरफ़ तवज्जोह तक न फ़रमाई। बादशाह ने बुलवा भेजा और उनसे न खाने का सबब दरयाफ़्त किया। तो आप रज़ि० ने जवाब दिया कि इस हालत में यह मेरे लिए हलाल तो हो गया है लेकिन मैं तुझ जैसे दुश्मन को अपने बारे में ख़ुश होने का मौक़ा देना चाहता ही नहीं हूँ। अब बादशाह ने कहा, अच्छा तो मेरे सर का बोसा ले तो मैं तुझे और तेरे साथ के और तमाम मुसलमान क़ैदियों को रिहा कर देता हूँ। आपने इसे क़बूल फ़रमा लिया। उसके सर का बोसा ले लिया और बादशाह ने भी अपना वादा पूरा किया और आपको और आपके तमाम साथियों को छोड़ दिया। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० यहाँ से आज़ाद होकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० के पास पहुँचे तो आपने फ़रमाया कि हर मुसलमान पर हक़ है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० का माथा चूमे, और मैं इब्तिदा करता हूँ। यह फ़रमा कर पहले आपने उनके सर पर बोसा दिया।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 147-148)

दीन के काम में ऑडर नहीं दिया जाता, बल्कि माहौल बनाया जाता है

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० एक दफ़ा एक शादी के सिलसिले में थाना भवन तशरीफ़ ले गए। तो ख़्याल हुआ कि हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह० साहब की ज़ियारत भी कर लूँ। हज़रत हाजी साहब रह० को मालूम हो गया कि यह फ़ितरते सलीमा रखते हैं। तो आप रह० ने पूछा कि आप किसी से बैत भी हुए या नहीं? आपने कहा, नहीं। हज़रत हाजी साहब रह० ने फ़रमाया कि फिर मुझसे बैत हो जाओ। हज़रत गंगोही रह० ने क़हा कि मैं इस शर्त पर बैत हूँगा कि आप मुझे ज़िक्र व शग़ल का हुक्म न फ़रमाएंगे। हाजी साहब रह० ने फ़रमाया कि मैंने तो बैअ़त होने को कहा है। शग़ल का तो मैंने कहा ही नहीं और वादा भी फ़रमाया कि आइंदा भी नहीं कहूँगा। हज़रत हाजी साहब रह० ने बैअ़त फ़रमाया और यह फ़रमाया कि दो तीन दिन यहाँ ठहर जाओ। आप वहीं थाना भवन में तीन दिन ठहरे। जब रात के वक़्त ढाई-तीन बजे देखा कि सब लोग उठकर नमाज़े तहज्जुद अदा कर रहे हैं। हज़रत गंगोही रह० को शर्म आई, उन्होंने भी उठकर नमाज़े तहज्जुद पढ़ी फिर जब दूसरे लोगों को ज़िक्र व शग़ल में देखा तो आप भी ज़िक्र में मशग़ूल हो गए।

दूसरे दिन फिर यही हालत हुई। तीसरे दिन ख़ुद-ब-ख़ुद ख़ुशी से तहज्जुद पढ़ी और ज़िक्र व शग़ल में मशग़ूल हुए। तीसरे दिन हज़रत के पास गए और कहने लगे कि हज़रत आपने तो सब कुछ ही करा दिया। हज़रत हाजी साहब रह० ने फ़रमाया कि मैंने थोड़े ही कहा था कि मैंने वादा ख़िलाफ़ी नहीं की। अब आप जा सकते हैं। हज़रत गंगोही रह० ने अर्ज़ किया कि अब तो मैं नहीं जाता। चालीस दिन वहाँ ठहरे और इस थोड़े अर्से के बाद ख़िलाफ़त लेकर वापस हुए। पस यह इबादत पहले रिया थी, फिर आदत हुई, फिर इबादत हो गई और साथ ही ख़िलाफ़त भी मिल गई।

हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब रह० फ़रमाते थे कि मेरा अपना मुशाहिदा है जब कि मेरी उम्र आठ साल की थी। एक बार मेरा गंगोह जाना हुआ, वहाँ ज़िक्र व शग़ल का माहौल तो था ही। गंगोह की

मस्जिद में बहुत से धोबी कपड़े धोते थे। वे जब कपड़े को मारते तो इल्लल्लाह भी साथ कहते। यह माहौल का असर था, वरना उनको पढ़ने का हुक्म नहीं दिया गया था। मक़ूला मशहूर है *"हर चे दर कान नमक रफ़्त नमक शुद"* बस माहौल का असर यही है। जो नेक माहौल में होगा, उसका भी असर ज़रूर होगा। हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का भी एक माहौल था कि जो भी उसमें आता वह मुतास्सिर हुए बग़ैर न रहता और उनका माहौल भी बहुत क़वी था। यहाँ तक कि हज़रात अंबिया अलैहि० के बाद उन्हीं का दर्जा था। उम्मत का इज्माअ है कि वे मासूम तो नहीं थे लेकिन महफ़ूज़ ज़रूर थे। उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि कोई शख़्स कितना बड़ा ग़ौस और क़ुतुब बन जाए लेकिन अदना सहाबी को नहीं पहुँच सकता। इसलिए कि जो माहौल उनको मयस्सर आया, वह किसी को मयस्सर न आ सका। ऐसे माहौल से अबू जहल जैसा बदबख़्त ही मुतास्सिर हुए बग़ैर रह सकता है। और जबरी तौर पर तो वह भी मोमिन था, चुनांचे अपने घर में कहता था कि बात तो ठीक है लेकिन अगर हम मुहम्मद (सल्ल०) को रसूलुल्लाह सल्ल० मान लें, तो उनकी ग़ुलामी करनी पड़ेगी, इसी से उसको आर थी। बहरहाल अगर एक घराना यह अहद करे कि हम गुनाह छोड़ दें तो उनके माहौल में जो दाख़िल होगा उन्हीं की तरह हो जाएगा। (ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम, जिल्द 2, पेज 9-11)

क़ियामत के दिन हर हाकिम की गर्दन में तौक़ होगा

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि रसूले करीम सल्ल० ने फ़रमायाः "हर अमीर व हाकिम चाहे वह दस ही आदमियों का अमीर व हाकिम क्यों न हो क़ियामत के दिन इस तरह लाया जाएगा कि उसकी गर्दन में तौक़ होगा, यहाँ तक कि उसको उस तौक़ से या तो उसका अद्ल नजात दिलाएगा या उसका ज़ुल्म हलाक करेगा।" (दारमी)

मतलब यह है कि एक बार तो हर हाकिम को चाहे वह आदिल हो या ज़ालिम। बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में बाँध कर लाया जाएगा और फिर तहक़ीक़ के बाद अगर वह आदिल साबित होगा, उसको नजात दे दी जाएगी और अगर ज़ालिम साबित होगा तो हलाकत, यानी अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा। (मज़ाहिरे हक़ जदीद, जिल्द 4, पेज 431)

आंहज़रत सल्ल० ने इंतक़ाल के वक़्त फ़रमाया

सिर्फ़ अबू बक्र का दरवाज़ा खुला रहने दो क्योंकि मैंने उस पर नूर देखा है

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : एक मर्तबा (मर्ज़े वफ़ात में) मुख़्तलिफ़ कुओं से सात मश्कों में (पानी भरकर) मेरे ऊपर डालो ताकि (मुझे कुछ इफ़ाक़ा हो जाए और) मैं लोगों के पास बाहर जाकर उन्हें वसीयत करूँ। चुनांचे (पानी डालने से हुज़ूर सल्ल० को कुछ इफ़ाक़ा हुआ तो) हुज़ूर सल्ल० सर पर पट्टी बाँधे हुए बाहर आए और मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए फिर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया :

> "अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दे को यह इख़्तियार दिया गया है कि या तो वह दुनिया में रह ले या अल्लाह के यहाँ जो अज्र व सवाब है उसे ले ले। उस बन्दे ने अल्लाह के यहाँ अज्र व सवाब को इख़्तियार कर लिया।"

(यहाँ उस बन्दे से मुराद ख़ुद हुज़ूर सल्ल० हैं और मतलब यह है कि आप सल्ल० इस दुनिया से जल्द तशरीफ़ ले जाने वाले हैं।)

हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का मतलब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के अलावा और कोई न समझ सका और इस पर वह रोने लगे और अर्ज़ किया कि हम अपने माँ-बाप और आल-औलाद सब आप सल्ल० पर क़ुरबान करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "(ऐ अबू बक्र) ज़रा आराम से बैठे रहो, (मत रोओ) माल ख़र्च करने और साथ रहने के ऐतिबार से मुझ पर सबसे ज़्यादा एहसान करने वाले अबू बक्र हैं। मस्जिद में जितने दरवाज़े खुले हुए हैं सब बन्द कर दो, सिर्फ़ अबू बक्र का दरवाज़ा खुला रहने दो, क्योंकि मैंने उस पर नूर देखा है।" (हयातुस-सहाबा, जिल्द 3, पेज 471)

क़ियामत के दिन गुनाहगार की आँख तीन मील लम्बी और तीन मील चौड़ी होगी

हज़रत यज़ीद बिन हारून रह० कहते हैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने एक मर्तबा बयान फ़रमाया, और उसमें इरशाद फ़रमाया कि एक

ऐसे बन्दे को क़ियामत के दिन लाया जाएगा जिसे अल्लाह ने दुनिया में बहुत नेमतें दी थीं, उसे रिज़्क़ में ख़ूब वुसअत दी थी और उसे जिस्मानी सेहत भी दी थी, लेकिन उसने अपने रब की नाशुक्री की थी। उसे अल्लाह के सामने खड़ा किया जाएगा और कहा जाएगा, तुमने आज के दिन के लिए क्या किया? और अपने लिए कौन-से अमल आगे भेजे? वह कोई नेक अमल आगे भेजा हुआ नहीं पाएगा। उस पर वह रोने लगेगा और इतना रोएगा कि आँसू ख़त्म हो जाएंगे।

फिर अल्लाह तआला के अहकाम ज़ाया करने की वजह से उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा। उस पर ख़ून के आँसू रोएगा, फिर उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा जिस पर वह अपने दोनों हाथों को कोहनियों तक खा जाएगा, फिर अल्लाह के अहकाम ज़ाया करने पर उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा जिस पर वह ऊँची आवाज़ से रोएगा और उसकी आँखें निकल कर उसके रुख़्सारों पर आ गिरेंगी और दोनों आँखों में से हर आँख तीन मील लम्बी और तीन मील चौड़ी होगी। फिर उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा यहाँ तक कि परेशान होकर कहेगा ऐ मेरे रब! मुझे दोज़ख़ में भेज दे और मुझ पर रहम फ़रमा कर मुझे यहाँ से निकाल दे। (हयातुस्सहाबा, 3 : 483)

इमाम अहमद बिन हंबल की आज़माइश

मैमून बिन असबग़ फ़रमाते हैं कि मैं बग़दाद में था, अचानक शोर की आवाज़ सुनी। दरयाफ़्त किया कि यह कैसा शोर व ग़ुल है? लोगों ने बताया कि आज इमाम अहमद बिन हंबल रह० का इम्तेहान हो रहा है।

हज़रत मैमून बिन असबग़ फ़रमाते हैं कि पस मैं भी वहाँ पहुँचा। जब पहला कोड़ा मारा गया तो इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया, बिसमिल्लाह। जब दूसरा कोड़ा मारा गया तो फ़रमाया, ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि। जब तीसरा कोड़ा मारा गया तो फ़रमाया, क़ुरआन अल्लाह का कलाम है जो मख़्लूक़ नहीं।

मुझको जी भर के सता लें शौक़ से
मैं न खोलूँगा ख़िलाफ़े हक़ ज़बाँ

जब चौथा कोड़ा मारा गया तो फ़रमाया, *लंय-यूसीबना इल्ला मा क-त-बल्लाहु लना* यानी हमको हरगिज़ कोई मुसीबत नहीं पहुंच सकती मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है।

(सूरा तौबा, आयत 51)

हो ख़ुशी या दर्द व ग़म की दास्ताँ
सब में शामिल उनका है लुत्फ़ निहाँ
उनकी मर्ज़ी पर मेरी क़ुरबान जाँ
अल्लाह अल्लाह मैं था इस क़ाबिल कहाँ
है मदद पर जब मकीन लामकाँ
फिर करेंगे क्या मेरे नामेहरबाँ

इस तरह से कुल उन्तीस (29) कोड़े मारे गए।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० की करामत

जिस वक़्त कोड़े लग रहे थे आपके पाजामे का अज़ारबंद जो कपड़े का था, टूट गया और पाजामा आपके पेडू (नाफ़ के नीचे) तक उतर गया। आप डर गए कि नीचे गिर जाएगा, फ़ौरन आपने आसमान की तरफ़ देखा और होठों को हिलाया। तो पाजामा बहुत तेज़ी से उठकर नाफ़ तक पहुँचकर ख़ुद-ब-ख़ुद बँध गया और गिरने नहीं पाया।

मैमून बिन असबग़ कहते हैं कि मैं सात दिन के बाद उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप आसमान की तरफ़ देखते हुए अल्लाह तआला से क्या कह रहे थे? फ़रमाया कि मैंने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ بِاسْمِکَ الَّذِیْ مَلَئْتَ بِهِ الْعَرْشَ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّیْ عَلَی الصَّوَابِ فَلَا تَهْتِکْ لِیْ سِتْرًا.

"ऐ अल्लाह! मैं आपसे सवाल करता हूँ, आपके उस नाम के साथ जिससे अर्शे अज़ीम को आपने भर दिया है, अगर आप जानते हैं कि मैं हक़ पर हूँ तो आप मेरा सतर न खुलने दें।"

वाक़िये की तफ़्सीलात इमाम अहमद रह० की ज़बान से

इमाम अहमद रह० ने इस वाक़िये को ख़ुद तफ़्सील के साथ बयान किया है। वे फ़रमाते हैं मैं जब उस मक़ाम पर पहुँचा जिसका नाम बाबुल बुस्तान है तो मेरे लिए सवारी लाई गई और मुझको सवार होने का हुक्म दिया गया। मुझे उस वक़्त कोई सहारा देने वाला नहीं था और मेरे पाँव में बोझल बेड़ियाँ थीं। सवार होने की कोशिश में कई मर्तबा अपने मुँह के बल गिरते-गिरते बचा। आख़िर किसी न किसी तरह सवार हुआ और मोतसिम के महल में पहुँचा। मुझे एक कोठरी में दाख़िल कर दिया गया और दरवाज़ा बन्द कर दिया गया, आधी रात का वक़्त था और वहाँ कोई चिराग़ नहीं था। मैंने नमाज़ के लिए मसह करना चाहा और हाथ बढ़ाया तो पानी का एक प्याला और तश्त रखा हुआ मिला, मैंने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी।

अगले दिन मोतसिम का क़ासिद आया और मुझे ख़लीफ़ा के दरबार में ले गया। मोतसिम बैठा हुआ था। क़ाज़ी अल-क़ुज़्ज़ात इब्ने अबी दुवाद भी मौजूद था और उनके हम ख़्यालों की एक बड़ी जमीअत थी। अबू अब्दुर्रहमान शाफ़ई भी मौजूद थे। उसी वक़्त दो आदमियों की गर्दनें भी उड़ाई जा चुकी थीं। मैंने अबू अब्दुर्रहमान शाफ़ई से कहा कि तुमको इमाम शाफ़ई से मसह के बारे में कुछ याद है? इब्ने अबी दुवाद ने कहा कि इस शख़्स को देखो कि उसकी गर्दन उड़ाई जाने वाली है और यह फ़िक़्ह की तहक़ीक़ कर रहा है। मोतसिम ने कहा कि इनको मेरे पास लाओ। वह बराबर मुझे पास बुलाता रहा यहाँ तक कि मैं उसके बहुत क़रीब हो गया। उसने कहा, बैठ जाओ। मैं बेड़ियों से थक गया था और बोझल हो रहा था। थोड़ी देर के बाद मैंने कहा कि मुझे कुछ कहने की इजाज़त है? ख़लीफ़ा ने कहा, कहो। मैंने कहा कि मैं पूछना चाहता हूँ कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने किस चीज़ की तरफ़ दावत दी है? थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद उसने कहा कि *ला इला-ह इल्लल्लाहु* की शहादत की तरफ़। मैंने कहा "तो मैं इसकी शहादत देता हूँ।" फिर मैंने कहा कि आपके जद अमजद इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत है कि जब क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़्द आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप सल्ल० ने उनसे सवाल किया कि तुम्हें मालूम है कि ईमान क्या है? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को ज़्यादा मालूम है।

आप सल्ल० ने फ़रमाया, "इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं। नमाज़ की पाबन्दी, ज़कात की अदायगी, और रमज़ान के रोज़े रखना और माले ग़नीमत में से पाँचवें हिस्से का निकालना।" इस पर मोतसिम ने कहा कि अगर तुम मेरे पेश रू के हाथ में पहले न आ गए होते तो मैं तुमसे तआरुज़ न करता। फिर अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा कि मैंने तुमको हुक्म नहीं दिया था कि इस आज़माइश को ख़त्म करो? इमाम अहमद रह० कहते हैं कि मैंने कहा, अल्लाहु अकबर! इसमें तो मुसलमानों के लिए कशाइश है। ख़लीफ़ा ने उलमाए हाज़िरीन से कहा कि इनसे मुनाज़िरा करो और गुफ़्तुगू करो। फिर अब्दुर्रहमान से कहा कि इनसे गुफ़्तुगू करो (आगे इमाम अहमद रह० उस मुनाज़िरे की तफ़्सील बयान करते हैं) :

एक आदमी बात करता और मैं उसका जवाब देता, दूसरा बात करता और मैं उसका जवाब देता। मोतसिम कहता, अहमद तुम पर ख़ुदा रहम करे, तुम क्या कहते हो? मैं कहता अमीरुल, मोमिनीन! मुझे किताबुल्लाह या सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ल० में से कुछ दिखाइए तो मैं उसका क़ाइल हो जाऊँ। मोतसिम कहता है कि अगर यह मेरी बात क़बूल कर लें तो मैं अपने हाथ से उनको आज़ाद कर दूँ। और अपने फ़ौज व लश्कर के साथ उनके पास जाऊँ और उनके आस्ताना पर हाज़िरी दूँ। फिर कहता "अहमद! मैं तुम पर बहुत शफ़ीक़ हूँ और मुझे तुम्हारा ऐसा ही ख़्याल है जैसे अपने बेटे हारून का। तुम क्या कहते हो?" मैं वही जवाब देता कि मुझे किताबुल्लाह या सुन्नत रसूलुल्लाह सल्ल० में से कुछ दिखाओ तो मैं क़ाइल हो जाऊँ। जब बहुत देर हो गई तो वह उकता गया और कहा, जाओ।" और मुझे क़ैद कर दिया और मैं अपनी पहली जगह पर वापस कर दिया गया। अगले दिन फिर मुझे तलब किया गया और मुनाज़िरा होता रहा और मैं सबका जवाब देता रहा, यहाँ तक कि ज़वाल का वक़्त हो गया। जब उक्ता गया तो कहा कि इनको ले जाओ।

तीसरी रात को मैं समझा कि कल कुछ होकर रहेगा। मैंने डोरी मँगवाई और उससे अपनी बेड़ियों को कस लिया और जिस इज़ारबंद से मैंने बेड़ियाँ बाँध रखी थीं, उसको अपने पाजामे में फिर डाल लिया कि कहीं कोई सख़्त वक़्त आए और मैं बरहना हो जाऊँ। तीसरे दिन मुझे

फिल तलब किया गया। मैंने देखा दरबार भरा हुआ है, मैं मुख़्तलिफ़ डेवड़िया और मक़ामात तय करता हुआ आगे बढ़ा। कुछ लोग तलवार लिए खड़े थे, कुछ लोग कोड़े लिए, अगले दोनों दिन के बहुत-से लोग आज नहीं थे। जब मैं मोतसिम के पास पहुँचा तो कहा, बैठा जाओ। फिर कहा, इनसे मुनाज़िरा करो और गुफ़्तुगू करो। लोग मुनाज़िरा करने लगे। मैं एक का जवाब देता, फिर दूसरे का जवाब देता। मेरी आवाज़ सब पर ग़ालिब थी। जब देर हो गई तो मुझे अलग कर दिया और उनके साथ तख़्लिया में कुछ बात कही। फिर उनको हटा दिया और मुझे बुला लिया। फिर कहा, अहमद! तुम पर ख़ुदा रहम करे, मेरी बात मान लो, मैं तुमको अपने हाथ से रिहा करूँगा। मैंने पहला-सा जवाब दिया। उस पर उसने बरहम होकर कहा कि इनको पकड़ो और खींचो और इनके हाथ उखेड़ दो। मोतसिम कुर्सी पर बैठ गया और जल्लादों और ताज़ियाना लगानेवालों को बुलाया। जल्लादों से कहा, आगे बढ़ो, एक आदमी आगे बढ़ता और मुझे दो कोड़े लगाता। मोतसिम कहता ज़ोर से कोड़े लगाओ। फिर वह हट जाता और दूसरा आता और दो कोड़े लगाता। उन्नीस (19) कोड़ों के बाद फिर मोतसिम मेरे पास आया और कहा, क्यों अहमद अपनी जान के पीछे पड़े हो? बख़ुदा मुझे तुम्हारा बहुत ख़्याल है। एक शख़्स मुझे अपनी तलवार के दस्ते से चीरता और कहता कि तुम इन सब पर ग़ालिब आना चाहते हो? दूसरा कहता, अल्लाह के बन्दे! ख़लीफ़ा तुम्हारे सर पर खड़ा हुआ है, कोई कहता है कि अमीरुल मोमिनीन! आप रोज़े से हैं, और आप धूप में खड़े हुए हैं। मोतसिम फिर मुझसे बात करता, और मैं उसको वही जवाब देता, वह फिर जल्लाद को हुक्म देता कि पूरी क़ुव्वत से कोड़े लगाओ। इमाम अहमद बिन हंबल रह० कहते हैं कि फिर इस असना में मेरे हवास जाते रहे, जब मैं होश में आया तो देखा कि बेड़ियाँ खोल दी गई हैं। हाज़िरीन में से एक शख़्स ने कहा कि हमने तुमको ओंधे मुँह गिरा दिया, तुमको रोंदा। अहमद रह० कहते हैं कि मुझको कुछ एहसास नहीं हुआ।

बेनज़ीर अज़ीमत व इस्तिक़ामत

उसके बाद अहमद बिन हंबल रह० को घर पहुँचा दिया गया। जब से वह गिरफ़्तार किए गए, रिहाई के वक़्त तक अट्ठाइस (28) महीने उनको हब्स में गुज़रे। उनको 33-34 कोड़े लगाए गए, इबराहीम इब्ने

मुसअब जो सिपाहियों में से थे कहते हैं कि मैंने अहमद रह० से ज़्यादा जरी और दिलेर नहीं देखा। उनकी निगाह में हम लोगों की हक़ीक़त बिल्कुल मक्खी की-सी थी। मुहम्मद बिन इस्माईल कहते हैं कि मैंने सुना है कि अहमद को ऐसे कोड़े लगाए गए कि अगर एक कोड़ा हाथी पर पड़ता तो चीख़ मारकर भागता। एक साहब जो वाक़िये के वक़्त मौजूद थे, बयान करते हैं कि इमाम रोज़े से थे, मैंने कहा भी कि आप रोज़े से हैं, और आपको अपनी जान बचाने के लिए इस अक़ीदे का इक़रार कर लेने की गुंजाइश है, लेकिन उन्होंने उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं किया। एक मर्तबा प्यास की बहुत शिद्दत हुई तो पानी तलब किया। आपके सामने बर्फ़ के पानी का प्याला पेश किया गया। आपने उसको हाथ में लिया और कुछ देर उसको देखा फिर बग़ैर पिये वापस कर दिया।

आपके साहबज़ादे कहते हैं कि इंतिक़ाल के वक़्त मेरे वालिद के जिस्म पर ज़र्ब के निशान थे। अबुल अब्बास अर-रक़्क़ी कहते हैं कि अहमद जब "रिक़्क़ा" में महबूस थे तो लोगों ने उनको समझाना चाहा और अपना बचाव करने की हदीसें सुनाईं। उन्होंने फ़रमाया कि ख़ब्बाब की हदीस का क्या जवाब है? जिसमें कहा गया है कि पहले बाज़ लोग ऐसे थे जिनके सर पर आरा रखकर चला दिया जाता था फिर भी वे अपने दीन से हटते नहीं थे। यह सुनकर लोग नाउम्मीद हो गए और समझ गए कि यह अपने मस्लक से नहीं हटेंगे और सब कुछ बरदाश्त करेंगे।

इमाम अहमद का कारनामा और उसका सिला

इमाम अहमद रह० की बेनज़ीर साबित-क़दमी और इस्तक़ामत से यह फ़ितना हमेशा के लिए ख़त्म हो गया और मुसलमान एक बड़े दीनी ख़तरे से महफ़ूज़ हो गए। जिन लोगों ने उस दीनी इब्तला में हुकूमते वक़्त का साथ दिया था और मौक़ापरस्ती और मस्लेहत-शनासी से काम लिया था वे लोगों की निगाहों से गिर गए और उनका दीनी व इल्मी एतिबार जाता रहा। इसके बिल मुक़ाबिल इमाम अहमद रह० की शान दोबाला हो गई। उनकी मुहब्बत अहले सुन्नत और सहीहउल अक़ीदा मुसलमानों का शेआर और अलामत बन गई। उनके एक मआसिर क़ुतीबा का मक़ूला है कि :

"जब तुम किसी को देखो कि उसको अहमद बिन हंबल रह०

से मुहब्बत है तो समझ लो कि व सुन्नत का मुत्तबिअ है।"

एक दूसरे आलिम अहमद बिन इबराहीम अद्दूरक़ी का क़ौल है :

> "जिसको तुम अहमद बिन हंबल रह० का ज़िक्र बुराई से करते सुनो उसके इस्लाम को मश्कूक नज़र से देखो।"

इमाम अहमद रह० हदीस में इमामे वक़्त थे। मुस्नद की तर्तीब व तालीफ़ उनका बहुत बड़ा इल्मी कारनामा है। वह मुज्तहिद फ़िल मज़हब और इमामे मुस्तक़िल हैं। वह बड़े ज़ाहिद व आबिद थे। यह सब फ़ज़ीलतें अपनी जगह पर मुसल्लम हैं लेकिन उनकी आलमगीर मक़बूलियत व महबूबियत और अज़्मत व इमामत का असल राज़ उनकी अज़ीमत और इस्तक़ामत इस फ़ितनए आलमे आशोब में दीन की हिफ़ाज़त और अपने वक़्त की सबसे बड़ी बादशाही का तनहा मुक़ाबला था। यही उनकी क़बूले आम और बक़ाए-दवाम का असल सबब है।

उनके मआसिरीन ने, जिन्होंने इस फ़ितने की आलमे आशोबी देखी थी, उनके इस कारनामे की अज़्मत का बड़ी फ़राख़दिली से एतिराफ़ किया है, और इसको दीन की बरवक़्त हिफ़ाज़त और मक़ामे सिद्दीक़ियत से ताबीर किया है। उनके हमअस्र और हम-उस्ताद मशहूर मुहद्दिसे वक़्त अली इब्नुल मदीनी (जो इमाम बुख़ारी के माइय-ए-नाज़ उस्ताद हैं) का इरशाद है :

> "अल्लाह तआला ने इस दीन का ग़लबा व हिफ़ाज़त का काम दो शख़्सों से लिया है जिनका कोई तीसरा हमसर नज़र नहीं आता। इरतदाद के मौक़े पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० और फ़ितन-ए-ख़ल्क़े क़ुरआन के सिलसिले में अहमद बिन हंबल रह०।"

इस अज़्मत व मक़बूलियत का नतीजा यह था कि सन् 241 हि० में जब उस इमामे सुन्नत ने इंतिक़ाल किया तो सारा शहर उमड़ आया। किसी के जनाज़े पर ख़िल्क़त का ऐसा हुजूम इससे पहले देखने में नहीं आया था। नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की तादाद का अंदाज़ा यह है कि आठ लाख मर्द और साठ हज़ार औरतें थीं। (तारीख़ दावत व अज़ीमत, जिल्द 1, पेज 96-102)

इमाम शाफ़ई रह० ने इमाम अहमद बिन हंबल रह० की क़मीस को धोकर उसका पानी पिया

इमाम शाफ़ई रह० ने जब यह ख़बर सुनी कि आपके कोड़े मारे गए हैं तो फ़रमाया कि मुझे वह क़मीस भेज दीजिए जो कोड़े मारने के वक़्त आपके जिस्म पर थी। चुनांचे इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने वह क़मीस भिजवा दी और इमाम शाफ़ई रह० ने उस क़मीस को धोकर उसका पानी पी लिया। मुल्ला अली क़ारी रह० फ़रमाते हैं कि यह उनके मनाक़िब में अज़ीमुश्शान वाक़िआ है। क्योंकि इमाम शाफ़ई रह०, इमाम अहमद रह० के उस्ताद थे। जिस दिन आपकी वफ़ात हुई और बग़दाद की सड़कों से आपका जनाज़ा गुज़र रहा था उस दिन बीस हज़ार ग़ैर मुस्लिम मुसलमान हो गए।

यह है अल्लाहवालों के जनाज़े की शान कि जिसे देखकर इतने कुफ़्फ़ार मुसलमान हो गए।

अल्लाह ने इमाम अहमद बिन हंबल रह० से फ़रमाया : यह मेरा चेहरा है तू जी भर के देख ले

अहमद बिन मुहम्मद अलकंदी कहते हैं कि मैंने इमाम अहमद रह० को ख़्वाब में देखा। मैंने दरयाफ़्त किया कि अल्लाह ने आपके साथ क्या मामला फ़रमाया? इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे बख़्श दिया और फ़रमाया : ऐ अहमद! क्या मेरे रास्ते में तुझे कोड़े मारे गए थे? मैंने अर्ज़ किया कि हाँ मेर रब। फ़रमाया, "यह मेरा चेहरा है तू जी भर के देख ले। मैंने अपना दीदार तेरे लिए मुबाह कर दिया।"

अल्लाह तआला ने हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० की लाश की हिफ़ाज़त फ़रमाई

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रह० फ़रमाते हैं कि दो सौ तीस (230) साल के बाद जब आपकी क़ब्र के क़रीब किसी मुअज़्ज़िज़ शहरी को उनके पहलू में दफ़न किया जा रहा था तो उनकी क़ब्र अचानक खुल गई, पस आपका कफ़न बिल्कुल सही व सालिम पाया गया और आपके जिस्म मुबारक में किसी क़िस्म का तग़य्युर नहीं था। गोया कि अभी-अभी दफ़न किया गया है। (ख़ुत्बाते जमील, जिल्द 1, पेज 166)